

६ सभा में उपस्थित सब सामन्तों का बल पराक्रम वर्णन ।	६६६
७ पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिये तय्यारी करने को कहना ।	६७२
८ सामन्तों का राजाज्ञा मानना ।	"
९ जैचन्द के ऊपर चढ़ाई की तैयारी होना ।	६७३
१० कमधञ्ज पर चढ़ाई करने वाली सेना के वीर सेनापति सामन्तों के नाम और सेना की तैयारी का वर्णन ।	"
११ उन छः सामन्तों के नाम जो सब सामन्तों में सब से अधिक मान्य थे ।	६७४
१२ उक्त छः सामन्तों का पराक्रम वर्णन ।	६७५
१३ सामन्तों का जैचन्द पर चढ़ाई करने का मुहूर्त शोधन करने के लिये कहना ।	"
१४ प्रत्येक सामन्त पृथ्वीराज की इच्छा का प्रतिबिम्ब स्वरूप था ।	"
१५ पृथ्वीराज के सब सच्चे सेवकों का एकही मत ठहरा ।	६७६
१६ चढ़ाई के लिये बैसाख सुदि ५ का सुदिन पक्का करके सब का अपने अपने घर जाना ।	"
१७ मरने के लिये मूर्त साव कर सब वीरों का आनन्द में मतवाला होना ।	"
१८ प्रातःकाल सामन्तों का बड़े बड़े मतवाले हाथियों पर चढ़ कर जुड़ना ।	"
१९ पृथ्वीराज की सेना के जुटाव की पावस के मेवों से उपमा वर्णन ।	"
२० सामन्तों की सर्प से उपमा वर्णन ।	६७७
२१ सामन्तों के क्रोध और तेज की प्रशंसा वर्णन ।	"
२२ अरु वीर सामन्तों का उत्साह वर्णन ।	६७८
२३ फौज की शोभा वर्णन ।	"
२४ पृथ्वीराज का सेना को वर्णन प्रति	

वर्णन श्रेणी वृद्ध करना ।	
२५ सामन्तों की वीरता वर्णन ।	
२६ युद्ध के लिये प्रस्तुत सूरवीर सामन्तों के बीच में स्थित निहडुर का वीर मत वर्णन ।	
२७ धुड सवार शूरवीरों की चाल वर्णन ।	
२८ राजा का सामन्तों को अच्छे अच्छे घोड़े देना ।	
२९ घोड़े की शोभा वर्णन ।	
३० शहाबुद्दीन से निस्स्वार्थ युद्ध करने की पृथ्वीराज की प्रशंसा ।	
३१ शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज की राह छोड़ कर डट रहना ।	
३२ राजा की आज्ञा बिना चावंडराय का आगे बढ़ जाना ।	
३३ चावंडराय, जैतसी, लोहाना आजान बाहु का पाच कोस आगे बढ़ कर तत्तार खा खुरसान खां पर आक्रमण करना ।	
३४ उक्त सामन्तों के आक्रमण करने पर मुसल्मानों का कमान पर बाण चढ़ा कर अपने शत्रुओं से युद्ध करने को प्रस्तुत होना ।	
३५ पृथ्वीराज का ससैन्य उज्जैन पर आक्रमण करने को यात्रा करना और जैचन्द की सहायता लेकर शहाबुद्दीन का राह छेकना ।	
३६ मनुष्य की कल्पनाएँ सब व्यर्थ हैं और हरीच्छा बलवती है ।	
३७ पृथ्वीराज की राजा बली से पटतर देकर कवि का उक्ति वर्णन ।	६
३८ युद्ध आरंभ होना ।	
३९ स्वामी धर्म रत शूरवीर मुक्ति के पथ पर पाव देने को उद्यत थे ।	

- ० दोनों ओर के गुरूवीर साम तों का पराक्रम और तल वर्णन । ६८६
- ४१ कन्हू, गोइन्दराय, लगरायाय, और अत्ताई की वीरता और उनको पराक्रम से मुसलमानों की फौज का विचजाना । दासव खा खुरसान खा का मारा जाना । "
- ४२ गुरूवीरों का रणरंग में मत्त होना, गुराबुदीन का कुपित होना और पृथ्वीराज का उसे कैद करने की प्रतिज्ञा करना । ६८७
- ४३ युद्ध की पावस से उपमा वर्णन । "
- ४४ घोर युद्ध वर्णन । "
- ४५ चालुक्य की प्रशंसा वर्णन । ६८८
- ४६ जामदेव पादव का आग्रह कोस आगे डटना और उसकी वीरता की प्रशंसा वर्णन । "
- ४७ पृथ्वीराज का अपनी सेना की मोर व्यूह रचना । ६८९
- ४८ न्याजी खा, तत्तार खा, और गोरी का उधर से आक्रमण करना और इतर से पीप (पडिहार) नरिंद का हराजल सम्हालना । "
- ४९ युद्ध होते होते रात हो जाना । ६९०
- ५० छन्दहार दीपक जला कर भारत की भाति युद्ध होना । "
- ५१ आधी रात हो जाने पर तोंवर और पडिहार का गुराबुदीन पर आक्रमण करना और मुसलमान फौज का पैर उसड़ना । "
- ५२ पीप (पडिहार) का गुराबुदीन को पकड़ लेने का दृढ़ संकल्प करना । ६९१
- ५३ प्रसगराय खीची, पञ्जनराय के पुत्र, वीरमान, जामदेव, अत्ताई के भाई और गुराबुदीन के भाई हुजान खा का मारा जाना । "

- ५४ गुराबुदीन का पकड़ा जाना । ६९२
- ५५ पीपा युद्ध का परिणाम, और पृथ्वीराज की निर्मल कीर्ति का वर्णन । ६९३
- ५६ सुस्तान का मुक्त होना, पृथ्वीराज का तेज वर्णन । "
- (३२) करहे रो जुद्ध मस्ताव ।
- (पृष्ठ ९९९ से १०१३ तक)
- १ पृथ्वीराज का मालव (देश) में शिकार खेलने को जाना । ६९४
- २ पृथ्वीराज का ६४ साम तों के साथ उज्जैन की तरफ जाना और वहा के राजा भीम प्रमार को जीत लेना । "
- ३ इद्रानती और पृथ्वीराज का योग्य वधाति होना । "
- ४ इद्रानती की छानि वर्णन । "
- ५ पचमी मंगलवार को ब्राह्मण का लग्न चलाना । ६९५
- ६ पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इद्रानती के रूप, गुण और वय इत्यादि के विषय में प्रश्न करना । "
- ७ ब्राह्मण का इद्रानती की प्रशंसा करना । "
- ८ ब्राह्मण के वचनों को पृथ्वीराज का चित्त देकर सुनना । "
- ९ इद्रानती की अस्त्या रूप गुण और सुल छनो का वर्णन । "
- १० उज्जैन में इद्रानती के ब्याह की जब तय्यारी हो रही थी उसी समय गुज्जरराय का चित्तौर गढ़ घेर लेना । ६९७
- ११ पृथ्वीराज का राजल की सहायता के लिये चित्तौर जाना । ६९८
- १२ पृथ्वीराज का पञ्जनराय को अपना

खड्ग बँधा कर उज्जैन को भेजना और आप चितौर की तरफ जाना ।	६६८	२६ धर्मासाम युद्ध वर्णन ।	१००४
१३ ससैन्य पृथ्वीराज के पयान का वर्णन ।	"	३० समय पाकर रावल समरसिंह जी का तिरछा रुख देकर धावा करना ।	१००५
१४ पृथ्वीराज का सैन सज कर चितौर की यात्रा करना और उधर से रावल के प्रधान का भ्राना और पृथ्वीराज का रावल की कुशल पूछना ।	१०००	३१ युद्ध लीला कथन ।	"
१५ प्रधान का उत्तर देना ।	"	३२ सामन्तों का जोश में आकर प्रचार प्रचार युद्ध करना ।	१००६
१६ पृथ्वीराज का कहना कि भीमदेव को जुड़ते ही परास्त करूँगा ।	"	३३ भोलाराय के १० सेनानायक मारे गए, उनका नाम ग्राम कथन ।	"
१७ पृथ्वीराज का आगे बढ़ना ।	१००१	३४ आधी घड़ी दिन रहने पर पृथ्वीराज की तरफ से हुसैनखा का चालुक्य पर आक्रमण करना ।	"
१८ रणभूमि की पावस ऋतु से उपमा वर्णन ।	"	३५ एक दिन रात और सात घड़ी युद्ध होने पर पृथ्वीराज की जीत होना ।	१००७
१९ चालुक्य सेना की सर्प से उपमा वर्णन ।	"	३६ गुरजर राय भीमदेव का भागना ।	"
२० पृथ्वीराज की सेवा की पारधि से उपमा वर्णन ।	"	३७ कविवंद द्वारा पृथ्वीराज की कीर्ति अमर हुई ।	"
२१ चहुआन और चालुक्य का परस्पर साम्हना होना ।	१००२	३८ पृथ्वीराज की कीर्ति को उज्ज्वल वेप धारण कर स्वप्न में पृथ्वीराज के पास आकर दर्शन देना ।	"
२२ दोनों ओर से युद्ध के बाजे बजते हुए युद्धारम्भ होना ।	"	३९ कीर्ति का कहना कि हे चत्री मैं तुम्हें दर्शन देने आई हूँ ।	"
२३ इधर से पृथ्वीराज उधर से रावल समरसी जी का चालुक्य सेना पर आक्रमण करना ।	१००३	४० कीर्ति का निज पराक्रम और प्रशंसा कथन ।	१००८
२४ पृथ्वीराज और हुसैन का अपनी सेना की गजव्यूह रचना रचना ।	"	४१ प्रातःकाल पृथ्वीराज का उक्त स्वप्न कविवंद और गुरुराम को सुनाना और फल पूछना ।	"
२५ युद्ध वर्णन ।	"	४२ गुरुराम का कहना कि वह भोला राय को परास्त करने वाली कीर्ति देवी थी ।	"
२६ चालुक्य राय का अकेले रावल और पृथ्वीराज से ५ प्रहर संग्राम करना और उनके १००० वीरों का मारा जाना ।	१००४	४३ रात के समय भोलाराय का ५००० सेना सहित पृथ्वीराज के सिविर पर सहसा आक्रमण करना ।	१००६
२७ दूसरे दिन तीन घड़ी रात्रि रहते से फिर युद्ध होना ।	"	४४ रात का युद्ध वर्णन ।	"
२८ भोला राय का नदी उतर कर लड़ाई करना ।	"	४५ पृथ्वीराज के प्रधान प्रधान वीर काम आए, उनके नाम ।	"
	"	४६ दोनों तरफ के डेढ़ हजार सैनिकों	

का मारा जाना ।	१००६	१ इद्रावती का उत्तर देना कि मैं राजकुमारी हूँ मेरा कहा वचन कदापि पलट नहीं सकता ।	१०१६
४७ पृथ्वीराज का खेत को तिरछा देकर चालुक्य पर आक्रमण करनी ।	१०१०	७ भीम का कविचन्द से कहना कि तुम यहाँ फौज लेकर क्या पड़े हो, क्या मेरे प्रताप को नहीं जानते ।	"
४८ प्रभात होते ही युद्ध आरम्भ होना ।	"	८ कविचन्द का कहना कि समय देख कर कार्य करना ही बुद्धिमत्ता है ।	१०१७
४९ दोनों सेनाओं का जी छोड़ कर लड़ना ।	"	९ भीमदेव का पञ्चून से कहना कि तुम्हें बादशाह के नकाबने का बड़ा अभिमान है इसी से तुम और को गुरगिर ही नहीं जानते ।	"
५० दो पहर दिन चढ़ते चढ़ते पाच हजार सैनिकों का मारा जाना ।	१०११	१० जैतराव का कहना कि भीमदेव तुम बात कह कर क्या पलटते हो ।	"
५१ पृथ्वीराज की जीत होना और चालुक्य का भागना ।	१०१२	११ भीम का गुरु राम से कहना कि स्वार्थ के लिये विग्रह करना कौन सा धर्म है ।	१०१८
५२ चालुक्य की सभ सेना का मारा जाना ।	"	१२ गुरु राम का ऐतिहासिक घटनाओं के प्रमाण देकर उत्तर देना ।	"
५३ पृथ्वीराज का रण क्षेत्र छोड़ कर धापलों को उठाना और मृतकों की दाह क्रिया करवाना ।	"	१३ भीम का गुरु राम को मुख जना कर कविचन्द से कहना कि जैतराव को तुम समझाओ ।	"
५४ पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना ।	"	१४ कविचन्द का सप्रमाण उत्तर देना ।	"
५५ इसके पीछे पृथ्वीराज का इद्रावती को व्याहता ।	१०१३	१५ भीम का अपने प्रधान से मन पूछना ।	१०१६
*			
(३३) इद्रावती व्याह प्रस्ताव ।			
(पृष्ठ १०१५ से १०२९ तक)			
१ उज्जैन के राजा भीम का चन्द से कहना कि पृथ्वीराज का हृदय नीरस है मैं उसको अपनी कन्या न बिनाहूँगा ।	१०१५	१६ मरी का कहना कि इद्रावती पृथ्वीराज को व्याह दीजिए । पर भीम का इस बात को न मान कर क्रोध करना ।	"
२ कविचन्द का कहना कि समय पाय सगों की सहायता करने गए तो क्या नुदा किया ।	"	१७ साम तों का परस्पर निचार बाँधना ।	"
३ भीमदेव का प्रत्युत्तर देना ।	"	१८ ध्रुवस राम पेंडार का वचन ।	"
४ यह समाचार सुनकर इद्रावती का शोकानुर होना ।	१०१६	१९ चहुआन की फौज के भीमदेव के गौओं को घेर लेने पर पद्दन पुर में खलभली पड़ना ।	१०२०
५ सखियाँ का इद्रावती को समझाना ।	"	२० चहुआन सेना का मालना राज्य की प्रजा को दुख देना और भीम	

- का उसका साम्हना करना । १०२०
- ३१ भीम का चतुरगिनी सेना सज कर
समझ होना । १०२१
- ३२ रघुवत्स का नाका बांधना और
पञ्जून का भीम की गाँँ घेर कर
हाकना । "
- ३३ जैतराव और भीम का युद्ध वर्णन । "
- ३४ युद्ध विषयक उपमा और अलंकारादि । १०२२
- ३५ सायबाल के समय युद्ध बन्द होना । १०२३
- ३६ दूसरे दिवस प्रातःकाल होते ही
पुनः सामन्तों का पान व्यूह रच
कर युद्ध करना । "
- ३७ युद्ध वर्णन । "
- ३८ युद्ध होते होते उत्तरार्ध के सामन्तों
का उज्जैन मंत्री को घेर कर पकाड़
लेना और इन्द्रावती का चहुआन के
साथ व्याह करना स्वीकार करने
पर कविचन्द का उसे छुड़ा देना । १०२४
- ३९ भीम का सब सामन्तों का आतिथ्य
स्वीकार करके उनके धायलों की
औषधि करना । "
- ४० इन्द्रावती का विवाह उत्सव वर्णन
और सामन्तों का पृथ्वीराज को
पत्र लिखना की भीमदेव ने विवाह
स्वीकार कर लिया है । १०२५
- ४१ इन्द्रावती का शृंगार वर्णन । "
- ४२ इन्द्रावती का भव में सखियों सहित
आना और पृथ्वीराज के साथ गठ-
बंधन होना । १०२६
- ४३ भीम का चहुआन को भावरी दान
वर्णन । "
- ४४ गमन समय इन्द्रावती की माता
की इन्द्रावती के प्रति शिचा । "
- ४५ पृथ्वीराज का बंदियों को दान देना । १०२७
- ४६ सामन्तों की प्रशंसा वर्णन । "

- ४७ विवाह के समय उज्जैन की शोभा
वर्णन । १०२७
- ४८ दहेज वर्णन । "
- ४९ शुक्ला अष्टमों को सामन्तों का
दिहली के निकट पड़ाव डालना । "
- ४० उसी समय लोहाना का पृथ्वीराज
को शहाबुद्दीन का पत्र देना । १०२८
- ४१ लोहाना का कहना कि सुरतान
दंड देने से फिर कर, दिहली पर
आक्रमण करना चाहता है । "
- ४२ पृथ्वीराज का इन्द्रावती को घर
पहुँचा कर युद्ध की तैयारी करना । "
- ४३ इन्द्रावती की रक्षाइस । "
- ४४ सुहागस्यान की शोभा वर्णन
और इन्द्रावती का सखियों सहित
पृथ्वीराज के पास आना । "
- ४५ इन्द्रावती की लज्जामय मद चाल का
वर्णन । १०२९
- ४६ सुहाग रात्रि के सुख समाचार की
सूचना । "

(३४) जैतराव युद्ध समय ।

(पृष्ठ १०३१ से १०४३ तक ।)

- १ पृथ्वीराज का सप्रताप दिहली का
राज्य करना । १०३१
- २ ढाई वर्ष पश्चात् पृथ्वीराज का खट्खट
बन में शिकार खेलने को जाना और
नीतराव कुटवार का शहाबुद्दीन को
भेद देना । "
- ३ पृथ्वीराज के साथ में जाने वाले
शिकारी जन्तुओं की गणना और
खट्खट बन में शहाबुद्दीन को दूत
का आना । "
- ४ पृथ्वीराज का सामन्तों से सलाह
लेना । १०३२

- ५ गहाबुद्दीन के दूत का वचन । १०३२
- ६ पृथ्वीराज का कहना की ऐ दीठ बसीठ
मू नहीं जानता कि अभी कौन जीता
और कौन हारा राजमुख के लिये
कर्तव्य छोड़ना परे है । ”
- ७ कहा गजनी है और कहा दिल्ली और
के वार मैंने उसे बदी किया । १०३३
- ८ ऋतु से उमा वर्णन । ”
- ९ शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज और पृथ्वीराज
का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना १०३४
- १० शहर से चहुआन और उधर से
शहाबुद्दीन का युद्ध के लिये उत्प्रेरणा
होना । ”
- ११ गहाबुद्दीन का सिंध नदी तक आना
और चहुआन को दूर्ता द्वारा समाचार
मिलना । १०३५
- १२ पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ
बढ़ना ।
- १३ चहुआन सेना में शूर वीरों का उत्साह
करना और कायरों का मयमोत
होना । ”
- १४ चलते समय सेना का आतंक वर्णन । ”
- १५ गहादी सेना की सजावट का वर्णन । १०३६
- १६ गहाबुद्दीन का स्वयं सम्मेलन कर सेना
को उत्प्रेरणा देना कि अब की पृथ्वीराज
अनश्य पकड़ लिया जाय । ”
- १७ प्रातःकाल होते ही जमसोज खा
और नवरोज खा का युद्ध के लिये
सेना तयार करना । १०३८
- १८ चहुआन का सेना तयार करना । ”
- १९ दोनों सेनाओं का मुहजोड होना । ”
- २० युद्ध समय के नचन योगादि का
वर्णन । ”
- २१ दोनों सेनाओं में रणराज्य बनना और
उससे सूर वीर लोगों तथा घाडे हाथी

- इत्यादि का भी प्रसंग हो कर सिंह
नाद करना और क्रुद्ध हो युद्ध करना । १०३९
- २२ लड़ाई होते होते तीसर पहर गहा
बुद्दीन का साम्हने से पृथ्वीराज पर
आक्रमण करना । १०४०
- २३ पृथ्वीराज का अपना वीरता से
शत्रु सेना को भिडार देना । ”
- २४ इस युद्ध में दोनों ओर के मृत
सर्दारों के नाम । ”
- २५ सूर्यादय के समय की शोभा
वर्णन । १०४१
- २६ दूसरे दिन प्रहर रात्रि रहने से दोनों
सेनाओं की तप्यारी होना । ”
- २७ दोनों सेनाओं का परस्पर घोर युद्ध
वर्णन । ”
- २८ शहाबुद्दीन का हाथी पर से गिर
पड़ना और चहुआन सेना का जोर
पकड़ना । १०४२
- २९ शहाबुद्दीन के गिरने पर सलख
राज का आक्रमण करना और
पवन वीरों का शाह की रक्षा
करना ।
- ३० जैतराव (प्रमार) का गहाबुद्दीन
को पकड़ कर पृथ्वीराज के सम्मुख
प्रस्तुत करना । १०४३

(३५) कागुरा जुद्ध प्रस्ताव ।

(पृष्ठ १०४५ से १००४ तक ।)

- १ पृथ्वीराज से जालधर रानी की
माता का कहना कि मैं कागडा
दुग को जना चाहती हूँ और आप
इसका वचन भी दे चुके है । १०४५
- २ पृथ्वीराज का कागडे के राजा के
पाम दत्त भेजना ।

३ दूत को वचन सुन कर कागड़े के राजा भान का क्रुद्ध होकर दूत को वधटना । १०४५

४ दूत का पीछे आकर पृथ्वीराज को वहा की बात निवेदन करना । १०४६

५ इधर से पृथ्वीराज का चढ़ाई करना उधर से भान राज का बढ़ना और दोनों में युद्ध छिडना । ”

६ युद्ध वर्णन और उस समय योगिनियों का प्रसन्न होकर नृत्य करना । ”

७ युद्ध से प्रसन्न हो गधवों का गान करना । १०४७

८ पृथ्वीराज का जय पाना । ”

९ सायंकाल के समय राजा भान की सेना का भागना । ”

१० राजा भान का सोच वश होकर कगुर देवी का ध्यान करना और देवी का आकार कहना कि मैं होनहार नहीं भेट सकती । ”

११ सबेरा होते ही भोटी राजा का मंत्री को बुला कर स्वप्न का हाल सुनाना । १०४८

१२ प्रधान कन्ह का कहना कि भरे रहते आप कुछ चिन्ता न करें मैं शत्रु का मान मर्दन करूंगा । ”

१३ भोटी राजा भान का अपने स्वप्न का हाल कहना । ”

१४ पृथ्वीराज का रघुवशराय और हाडुलीराय हम्मीर को कगुर गढ़ पर आक्रमण करने की आज्ञा देना । १०४९

१५ हाडुलीराय का कहना कि इस दुर्गम वन प्रान्त को सहज ही जीतूंगा । ”

१६ कंगुर गढ़ के पहाड़ जंगल इत्यादि की सधनता और उसके विकट पन का वर्णन । ”

१७ उक्त दोनों धीरों का घुड़चढ़ी सेना को हुसैन खा को सुपुर्द करके आप पैदल सेना सहित किले पर चढ़ाई करना । १०५०

१८ नारेन और नीति राव का घाड़ों पर सवार होकर चढ़ाई करना । ”

१९ कगुरा दुर्ग पर आक्रमण करने वाले धीरों की प्रशंसा वर्णन । ”

२० नारेन (पीठ सेना के नायक) के चढ़ाई करते ही शुभ शकुन होना । १०५१

२१ सेना का हल्ला करके क्रोध से धावा करना । ”

२२ युद्ध और धीरों की वीरता वर्णन । ”

२३ अकेले रघुवस राम का किले पर अधिकार कर लेना । १०५२

२४ सब सामन्तों का सलाह करके (रामरेन) रामनरिंद को गढ़ रक्षा पर छोड़ना और सबका गढ़ के नीचे पृथ्वीराज के पास जाकर विजय का हाल कहना । ”

२५ सब भोटी भूमि पर बहुआन को आन फिर जाना और भान रघुवंश का हार भान कर पृथ्वीराज को अपनी पुत्री व्याहना । ”

२६ नियत तिथि पर व्याह होना । ”

२७ भोटी राज की कन्या के रूप गुण का वर्णन । १०५३

२८ भोटी राज की तरफ से जो दहेज दिया गया उसका वर्णन और पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर नव दुलहिन के साथ भोग विलास करना । ”

(३६) हंसावती विवाह नाम प्रस्ताव

(पृष्ठ १०५५ से १०९७ तक ।)

१ पृथ्वीराज का शिकार के लिये पट्टपुर को जाना । १०५४

- २ रणथम में राजा भान राज्य करता था उसकी हस्तावती नामक एक सुन्दर कन्या थी और चंदेरी में विशुपाल वशी पचाइन नाम राजा राज्य करता था । १०५५
- ३ हस्तावती की शोभा का वर्णन । "
- ४ चन्देरी के राजा का हस्तावती पर मोहित होकर रणथम के दूत भेजना । १०५६
- ५ चंदेरी के दूत का रणथम में जाकर पत्र देना । "
- ६ रणथम के राजा भानुराय का क्रुद्ध होकर उत्तर देना मि में चन्देरीपति से युद्ध कहना, उसके धुडकाने से नहीं डरता । "
- ७ चन्देरी पति का कुपाति होकर रणथम पर चढ़ाई करना । १०५७
- ८ चन्देरीपति का एक दूत राजा भान को समझाने को भेजना और एक यक्षगुर्जन के पास मदद को लिये । "
- ९ स्त्री क पीछे राख दुर्गोधन इत्यादि का मान प्राण और राख गया । "
- १० जीव रक्षा के लिये देव दानवादि मंत्र उपाय करते हैं । "
- १० भानुराय जदव का बसीठ की बात न मानना । १०५८
- ११ जसीठ का लौट कर चन्देरीपति की फौज में जा पहुँचना । "
- १२ पचाइन की सहायता के लिये गजनी से नूरी खा हुआव खा आदि सदाँरों का आना । "
- १३ दोनों धन घोर सेनाओं सहित चंदेरी के राजा का आगे बढ़ना । "
- १४ चन्देरीराज की चढ़ाई का वर्णन । "
- १५ रणथम पति भान का पृथ्वीराज से महायता मार्गना । १०५९

- १६ भानुराय को पृथ्वीराज का पत्र लिखना । १०५९
- १७ उक्त पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का समरसिंह जी के पास कन्ह को भेजना । "
- १८ कन्ह का समर सिंह के पास पहुँच कर समाचार कहना । "
- १९ समर सिंह जी का सेना तय्यार करके कह से कहना कि हम अमुक स्थान पर आ मिलेंगे । १०६०
- २० तथा यहा से रणथम केवल ६५ कोस है इस लिये तुमसे आगे जा पहुँचेग । "
- २१ कह का कहना कि पृथ्वीराज दिल्ली से १३ को चले हैं और राजा भान पर बड़ी विपत्ति है । "
- २२ समरसिंह का कहना कि हमारे कुल की यह रीति नहीं है कि यरथागत को त्यागें और बात कहके पलटें । "
- २३ समर सिंह का कह की दी हुई नजर को रखना । १०६१
- २४ कन्ह का यह कह कर कूच करना कि तेरस को युद्ध होगा । "
- २५ दसमी सोमवार को समरसिंह जी की यात्रा का सुहूर्त वर्णन । "
- २६ यात्रा के समय समरसिंह जी की चतुर्गिनी सेना की शोभा वर्णन । "
- २७ सुसज्जित सेनाओं सहित रणथम गढ़ के बाएँ ओर पृथ्वीराज और दाहिने ओर से समरसिंह जी का आना । १०६२
- २८ पूर्वे में पृथ्वीराज और पश्चिम में समर सिंह जी का पडान था और बीच में रणथम का किला और शत्रु की फौज थी । १०६३
- २९ किले और आस पास की रणभूमि की पची से उपमा वर्णन । १०६४

- ३० उस युद्धि भूमि की यत्र स्थल और पावस से उपमा वर्णन । १०८४
- ३१ चन्देरी की सेना और रस्तगलां के बीच में रावल समरसिंह जी का निरजाना । १०८५
- ३२ पृथ्वीराज का रावल की मदद करना । "
- ३३ रणवंग के राजा भान का समरसिंह जी से मिलना और पृथ्वीराज का भी चरन छू कर भेंट करना । "
- ३४ समरसिंह, पृथ्वीराज और राजा भान तीनों का मिलकर युद्ध के लिये प्रस्तुत होना । "
- ३५ चन्देरी के राजा की फौज से युद्ध के समय दोनों सेना के वीरों का उत्साह और ओजस्विता एवं युद्ध का दृश्य वर्णन । १०८६
- ३६ युद्ध में मारे गए सैनिक वीरों का गणना । १०८७
- ३७ पृथ्वीराज का अपनी सेना की पाँच अनी करके आक्रमण करना । "
- ३८ युद्ध के लिये सन्नद्ध हुए वीरों के विचार और उनका परस्पर वार्तालाप । "
- ३९ हसावती की धरधार से और दोनों सेनाओं की छाया से उपमा वर्णन । १०८८
- ४० सेना के बीच में समरसिंह की शोभा वर्णन । "
- ४१ प्रातःकाल होते ही समरसिंह जी का अपनी सेना को चक्रव्यूहाकार रचना । "
- ४२ समरसिंह जी के रचित चक्रव्यूह का आकार और क्रम वर्णन । "
- ४३ युद्ध वर्णन । १०८९
- ४४ समरसिंह की युद्ध चातुरी से राजा भान का उत्साह बढ़ना और तिरछे
- रक्त पर पूर्वोक्त का आक्रमण करना । १०९०
- ४५ चन्देरी की सेना का समुल्लुखित करना । "
- ४६ गजल समरसिंह जी और चन्देरी के राजा का द्वन्द्व युद्ध और चन्देरी के राजा (श्री पद्मराज) का मारा जाना । १०९०
- ४७ युद्ध के अन्त में रणवंग गजल मुक्त होना : हुसैन भा और कन्दराय का वायल होना । "
- ४८ पृथ्वीराज का स्नान में एक चन्द-वदनी स्त्री के साथ प्रेमालिङ्गन करना और नींद गुलने पर उसे न पाना । १०९१
- ४९ पृथ्वीराज से कविचन्द्र का कहना कि वह स्त्री आप की भविष्य स्त्री हसावती है, कहिए तो मैं उसका स्वरूप रंग कह दालूँ । "
- ५० हसावती के स्वरूप गुण और उसकी वयःसन्धि अवस्था की सुखमा और उसके लालित्य का वर्णन । "
- ५१ पृथ्वीराज उक्त बातों को सुन ही रहा था कि उसी समय भान के भेजे हुए प्रोहित का लग्न लेकर आना । १०९२
- ५२ और उक्त रणवंग के युद्ध की रत्नाकर से उपमा वर्णन । १०९३
- ५३ लग्न के समय के अन्तरगत पृथ्वीराज का वारु वन को शिकार खेलने के लिये जाना । "
- ५४ पृथ्वीराज के वाख्यान में शिकार करते समय सारंग राय सौलकी का पितृवैर लेने का विचार करना । "

- ५५ सारगदेव का कहना कि पितृरै का लेना वीरा का मुख्य कर्तव्य है । १०७३
- ५६ सारगदेव का नागौद के पास मग लगद के राजा हाड़ा हम्मीर से मिलकर उसे अपने कपट मत में बाँधना । १०७४
- ५७ सारगदेव का पृथ्वीराज और समर सिंह जी के पास चोता भेजना । १०७५
- ५८ यहाँ एक एक मकान में पाँच पाँच शत्रुधारी नियत करते कपट चक्र रचना । "
- ५९ हाड़ा राज का पृथ्वीराज और समर सिंह से मिलकर शिष्टाचार करना । "
- ६० कवि का हाड़ा राज पर कटाव । "
- ६१ पृथ्वीराज को नगर में पैठते ही अगदुन होना । "
- ६२ व्यापार होते हुए वार्तालाप होना । १०७६
- ६३ उसी समय किले के किनारे फिर गए और पृथ्वीराज पर चारों ओर से आक्रमण हुआ । "
- ६४ सारगदेव के सिपाहियों का सन को घेरना और पृथ्वीराज के सामानों का उनका सम्भालना करना । "
- ६५ रायल जी और भीम भट्टी का हृन्द युद्ध । "
- ६६ पृथ्वीराज का नागफनी से शत्रुओं को मारना । १०७७
- ६७ घोर धमासान युद्ध होता और समस्त राज्य भइल में गरमर मच जाना । "
- ६८ रामराय बडगूलर का हाथी पर से किले के भीतर पैठ कर पारस करना । १०७८
- ६९ कविचन्द द्वारा युद्ध एव सारगदेव के कुठाय का परिणाम कथा । "
- ७० पञ्चनराय के पुत्र कूरमराय का घड़ी वीरता के माथ मारा जाना । १०७९
- ७१ इस युद्ध में एक राजा, तीन राज, सोलह रायत, और ५ दह भारी घोड़ा काम आए । "
- ७२ रेन पवार (सामंत) की प्रशंसा । "
- ७३ रेन पवार के भाई का सारग को पकड़ना और पृथ्वीराज का उसे छुड़ा कर हम्मीर को तलाश करके उससे पुन मित्रभाज से पेश आना । १०८०
- ७४ तेरह तोमर, सरदार और अन्य बारह सरदार सारग की तरफ के काम आए । "
- ७५ हुसेन गाँ का अमर सिंह की बहिन को पकड़ लेना और राजन जी का उसे छुड़ा देना । "
- ७६ राजन समर सिंह जी की प्रशंसा और सारगदेव का उनको अपनी बहिन ब्याह देना । १०८१
- ७७ आधी रात को समाचार मिला कि रणधम के राजा को च देल ने घेर लिया है । "
- ७८ पुमान और 'प्रसंगराय' रीची का रणधम की रक्षा के लिये जाना । "
- ७९ पृथ्वीराज का रणधम ब्याहने जाना । १०८२
- ८० पृथ्वीराज की स्तुति वर्णन । "
- ८१ पृथ्वीराज का आगमन सुन कर चढ़ देखने की इच्छा से हसानती का कपोरे से काफाना । "
- ८२ गौल में से देखती हुई हसानती की दशा का वर्णन । १०८३
- ८३ हसानती के शृंगार की तय्यारी । "
- ८४ हसानती की अनस्था की धृक्मता का वर्णन । "
- ८५ हसानती का स्वाभाविक सौंदर्य वर्णन । "

८६ नेत्रों की शोभा वर्णन ।	१०८४	१०२ थोड़ी ही देर युद्ध होने पर मुस-	
८७ हंसावती के स्नान समय की शोभा ।	"	स्नान सेना के पैर उगड़ गए ।	"
८८ हंसावती के शरीर में सुगन्धादि		१०३ युद्ध के अन्त में लड़ में एक क्षण का	
लेपन होकर सोलहों शृंगार और		असंख्य शोध लगना और पोरों	
बारहों आभूषण सहित शृंगार की		गंधों का भाग जाना ।	"
उपमा उपमेय सहित शोभा वर्णन ।		१०४ पृथ्वीराज का सब सामन्तों को हृदय	
८९ हंसावती के वस्त्र आभूषणों की	१०८७	से लगा कर कहना कि मैं आप	१०८२
शोभा वर्णन ।		का बहुत ही अनुगृहीत हूँ ।	
९० हंसावती के केशर कलित छात्र	"	१०५ पृथ्वीराज का सबत समर्पित के	
पावों की शोभा वर्णन ।	"	पुत्र कुभा जी को संभर की जगह	
९१ पृथ्वीराज का विवाह मंडप में	"	का पट्टा लिपना ।	"
प्रवेश ।	"	१०६ संभर सिंह का उस पट्टे को अस्वी-	
९२ पृथ्वीराज के रत्न जटित मीर		कार लौटा देना ।	"
(व्याह मुकुट) की शोभा और	१०८८	१०७ संभर सिंह का चितौर जाना ।	१०८३
दीप्ति वर्णन ।		१०८ पृथ्वीराज का हंसावती के प्रेम में	
९३ हंसावती का सखियों सहित मंडप	"	मस्त होजाना ।	"
में आना ।	"	१०९ हंसावती के प्रथम समागम का वर्णन ।	"
९४ पृथ्वीराज का हंसावती का सौन्दर्य	"	११० मुन्हा हंसावती की कोक काना में	
देख कर प्रफुल्लित होना ।	"	पृथ्वीराज का मुग्ध होकर कामान्व	
९५ पृथ्वीराज का हंसावती के साथ गठ-	"	बृषभ की नाई मस्त होना ।	१०८४
बन्धन होना ।	"	१११ हंसावती के मन का पृथ्वीराज के	
९६ हंसावती के अंग प्रत्यंग में काम	"	प्रेम में निर्मल चन्द्रमा की भाँति	
की अलौकिक लालिमा का वर्णन ।	"	प्रफुल्लित हो जाना ।	"
९७ इसी समय दिल्ली पर मुसल्मान सेना		११२ सनैः शनैः हंसावती के डर और	
का आक्रमण करना और ५०		लज्जा का हास होना और उसकी	
सामन्तों का उस आक्रमण को	१०८९	कामेच्छा का बढ़ना ।	"
रोकना ।		११३ हंसावती के बढ़ते हुए प्रेम रूपी	
९८ पृथ्वीराज के सामन्तों और मुस-	"	चन्द्रमा को देख कर पृथ्वीराज के	
ल्मान सेना का युद्ध वर्णन ।	"	हृदय समुद्र का उमड़ना ।	"
९९ दूसरे दिवस प्रातःकाल सुरतान खां	१०९०	११४ दिवस के समय रात्रि को पृथ्वीराज	
का आक्रमण करना ।		से मिलने के लिये हंसावती ऐसी	
१०० हिन्दू मुसल्मान दोनों सेनाओं की	"	व्याकुल रहती जैसी चकोर चन्द्र	१०९५
चढ़ाई के समय की शोभा वर्णन ।	"	के लिये ।	
१०१ तब तक पृथ्वीराज का भी युद्ध के	१०९१	११५ पावस का अन्त होने पर सरद का	
लिये तय्यार होना ।		आगम और शीत का बढ़ना ।	"

- १६ शीतकाल की बढ़ती हुई रात्रि के
साथ दशते में प्रेम बढ़ना । १०६५
- १७ हमावती पृथ्वीराज की और पृथ्वी
राज हमावती की चाह में अहि
निधि मस्त रहते थे । १०६६
- १८ इस समय की कथा का अन्तिम
परिणाम वर्णन । "
- १९ समरामिह जी और पृथ्वीराज की
अवस्था वर्णन । १०६७

—

(३७) पहाडराय समय ।

(पृष्ठ १०९९ स १११८ तक ।)

- १ कनिच द का स्त्री का पूछना कि
पहाड राय तोंअर ने शहाबुदीन को
किस प्रकार पकड़ा । १०६८
- २ शहाबुदीन का उत्तर खा से पूछना
कि पृथ्वीराज का क्या हाल है । "
- ३ उत्तर खा का उत्तर देना । "
- ४ शहाबुदीन का पृथ्वीराज पर चढ़ाई
करना का सलाह करना । "
- ५ दूसरे दिन गजनी राज्यमहल के
दरवाजे पर सहस्र मुसलमान सेना
का सज कर इनाहा होना । ११०१
- ६ समस्त सेना का दस कोस पूर्व की
बढ़ कर पकान डालना । "
- ७ शहाबुदीन का आनानुसार
दीवान खास में गोष्ठी के लिये
उपस्थित हुए सत्सय योद्धाओं के
नाम । "
- ८ सभा में उत्तर खा का नियमित
कार्य के लिये प्रस्ताव करना । ११
- ९ अन्तिम खा का समर्थ अपना परा
क्रम कहना । "

- १० सुरमान खा का राजनाति करना । ११०३
- ११ वादशाह का (लारकासय) खत्री को
पत्र देकर धर्मायन के पास दिल्ली
भेजना । "
- १२ दुन का दिल्ली को जाना और
इधर चढ़ाई के लिये तयारी होना । ११०४
- १३ दत का दिल्ली पहुँचना । "
- १४ दत का धर्मायन से मिलना । "
- १५ धर्मायन का पत्र पढ़ कर नादराह
के मन पर शोक करना । "
- १६ धर्मायन का दरबार में जाकर वह
पत्री कैमास को देना । "
- १७ शहाबुदीन की पत्री का लेख । ११०५
- १८ धर्मायन का कैमास के हाथ में
पत्र देना । "
- १९ कैमास का पत्र पढ़ कर सुनाना । "
- २० पत्री सुन कर पृथ्वीराज का सामंतों
की सभा करना । "
- २१ पृथ्वीराज का उक्त पत्री का मर्म
सब सामंतों को समझाना । "
- २२ सामंतों का उत्तर देना । ११०६
- २३ पृथ्वीराज का पच्चीस हजार सेना
के साथ आगे जाना । "
- २४ कूच के समय सेना की शोभा और
उमका आनन्द वर्णन । "
- २५ पृथ्वीराज का पकान डालना । ११०७
- २६ अश्वोदय होते ही पृथ्वीराज का
शत्रु पर आक्रमण करना । "
- २७ हिन्दू और मुसलमान दोनों सेनाओं
का परस्पर मिलना । "
- २८ शहाबुदीन का अग्रे सैनिका को
उत्तेजित करना । "
- २९ अश्वोदय होते होते दोनों सेनाओं में
रणनाथ वर्णन और कोलाहल
होना । "

- ३० दोनों सेनाओं का एक दूसरे पर धावा करना । ११०७
- ३१ दोनों सेनाओं के उत्कर्ष से मिलने की शोभा और यवन सेना का व्यूह वर्णन । ११०८
- ३२ हिन्दू सेना की शोभा और उपस्थित युद्ध के लिये उसके अनी भाग और व्यूह बद्ध होने का वर्णन । "
- ३३ दोनों सेनाओं की अनियों का परस्पर यथाक्रम युद्ध होना । ११०९
- ३४ युद्ध का दृश्य वर्णन । १११०
- ३५ सायंकाल होने पर दोनों सेनाओं का विश्राम करना । "
- ३६ प्रातःकाल होते ही डधर से कैमास का और शहाबुद्दीन का अपनी अपनी सेना को सम्हालना । "
- ३७ सूर्योदय होते ही दोनों सेनाओं का आगे बढ़ना और अपने अपने स्वामियों का जै जैकार शब्द करना । ११११
- ३८ दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे पर बाणों की वर्षा करना । "
- ३९ दोनों सेनाओं का एक दूसरे में पैठ कर शस्त्रों की मार करना । "
- ४० युद्ध भूमि में बैताल और योगिनियों के नृत्य की शोभा वर्णन । १११२
- ४१ योगिनी भूत बैताल और अप्सराओं का प्रसन्न होना और सूर बीरों का वीरता के साथ प्राण देना । "
- ४२ युद्ध रूपी समुद्र मथन की उक्ति वर्णन । १२१४
- ४३ इस युद्ध में जो जो वीर सदाँर मारे गए उनके नाम और उनका पराक्रम वर्णन । १११४
- ४४ युद्ध होते होते रात्रि हो गई । १११५
- ४५ उपरोक्त वीरों के मारे जाने पर

- पहाड़ राय तोंमर का हरावल में होकर स्वयं सेनापति होना । १११५
- ४६ पहाड़ राय तोंमर का बल और पराक्रम वर्णन । "
- ४७ दुतिया का चन्द्रमा अस्त होने पर युद्ध का अवमान होना । १११६
- ४८ तृतिया को दोनों सेनाओं में शान्ति रही और चतुर्थी को पुनः युद्ध-रंभ हुआ । "
- ४९ चतुर्थी के युद्ध में वीरों का उत्साह क्रोध उत्कर्ष वर्णन और युद्ध का जलमय वीभत्स दृश्य वर्णन । "
- ५० मौका पाकर पहाड़ राय का शहाबुद्दीन के हाथी के ऊपर तलवार का चार करना और हाथी का महरा कर गिरना । १११७
- ५१ मुसल्मान सेना का ध्वरा कर भाग उठना । "
- ५२ अपनी सेना भाग उठने पर शहाबुद्दीन का चक्रित होकर रह जाना और पहाड़ राय का उसका हाथ जा पकड़ना और लाकर उसे पृथ्वी-राज के पास हाजिर करना । १११८
- ५३ सुल्तान सहित पृथ्वीराज का दिल्ली को लौटना और दण्ड लेकर उसे छोड़ देना । "

(३८) बरुण कथा ।

(पृष्ठ १११९ से ११२८ तक ।)

- १ सोमेश्वर सासारिक सम्पूर्ण सुखों का आनन्द लेते हुए स्वतंत्र राज्य करते थे । १११९
- २ चन्द्रग्रहण पर सोमेश्वर जी का समाज सहित जमुना जी पर ग्रहण स्नान करने जाना । "

- ३ सोमेश्वर जा के साथ में जाने वाले
योद्धाओं के नाम और पराक्रम
वर्णन । १११६
- ४ उक्त समय पर पूर्णिमा की शोभा
वर्णन । ११२०
- ५ अर्द्ध रात्रि के समय ग्रहण का लग्न
आने पर सप्त का यमुना के किनारे
पर जाना । ११२१
- ६ ग्रहण के पीरों का जाग्रत होना । "
- ७ इधर सामंत लोग शस्त्र रहित केवल
द्वार और अर्धत आदि लिए हुए
खड़े थे । "
- ८ वारों का गहरे जन में शब्द करना । "
- ९ जनवीरा के सहज भयानक और
निकाराल स्वरूप का वर्णन । "
- १० सामंतों का प्राव पर चला जाना । ११२२
- ११ जल पीरों के उछारने से वेग से जो
जल प्राव पर पड़ता था उसका
दृश्य वर्णन । "
- १२ जल के पीरों में जल पीरों की आसुरी
भाषा का वर्णन । "
- १३ जलवारों के बहुत उपद्रव करने पर
भी सोमेश्वर के सामंतों का भयभीत
न होना । ११२३
- १४ वीरों को स्वयं अपना पराक्रम वर्णन
करके सामंतों का भय दिखाना । ,
- १५ वीरों का राजा सहित सामंता पर
आसुरी शस्त्र प्रहार करना । "
- १६ सामंतों का वीरा सयथाशक्ति युद्ध
करना । ,
- १७ इसी प्रकार अरण्योदय की लालिमा
प्रगट होते देख पीरा का बल कम
होना और सामंतों का जोर बढ़ना । ११२४
- १८ प्रातःकाल के बालसूर्य का प्रतिभा
वर्णन । "

- १६ सूर्योदय होते ही वीरा का अत
ध्यान होना और सोमेश्वर सहित सब
सामंता का मूर्छित होना । ११२५
- २० सप्त मूर्छित पड़े हुए थे उन्हीं समय
पृथ्वीराज का वहा पर आना । "
- २१ निज पिता एव सामंतों की ऐसी
दशा देखकर पृथ्वीराज के हृदय में
दुःख होना । "
- २२ यमुना के सम्मुख हाथ जोध कर
खड़े हो पृथ्वीराज का स्तुति करना । "
- २३ यमुना जी की स्तुति । "
- २४ स्तुति के अंत में पृथ्वीराज का
यमुना जी से वर मागना । ११२६
- २५ सोमेश की मूर्छा भंग होने पर पृथ्वी
राज का पुनः ब्रह्म ज्ञान की युक्ति
मय स्तुति करना । ११२७
- २६ इस प्रकार मूर्छा जागने पर पृथ्वीराज
का गर्धर यज्ञ का जप करना जिससे
मूर्छित लोगों का शिथिल शरीर
चेतन होना । "
- २७ पृथ्वीराज का सोमेश्वर को सिर
नगाना । ११२८
- २८ सोमेश्वर को लिया कर पृथ्वीराज का
राजमहल में आना । ,

—

[३९] सोमवध समय ।

(पृष्ठ ११२० से पृष्ठ ११२७ तक)

- १ भीमदेव की इच्छा ११२९
- २ भीमदेव का दिल्ली पर आक्रमण
करने की सलाह करना "
- ३ सप्त सर्वारों का कदना कि पैर का
बदला अश्व लेना चाहिए । ११३०
- ४ भीमदेव के सैनिक बल की प्रशंसा । "
- ५ भीमदेव की मेना का झुड़ा होना । ,

- ६ भीमदेव की सेना की सजावट और सैनिक ओजस्विता का दृश्य । ११३०
- ७ भोलाराय भीम का साम दाम दण्ड और भेद स्वरूप अपने चारों मंत्रियों को बुलाकर उचित परामर्श की आज्ञा देना । ११३२
- ८ मंत्रियों का कहना कि इस कार्य में विलंब न करना चाहिए । ”
- ९ राज्य प्राप्त करने की लालसा से गत भीमराज घटनाओं का ऐतिहासिक उदाहरण । ११३३
- १० पुनः मंत्रियों का आख्यान कहना । ”
- ११ भोलाराय का सेना सजकर तय्यारी करना । ”
- १२ सेना को जुड़ाव का वर्णन । ”
- १३ भीमदेव के सिर पर छत्र की छाया होना । ११३४
- १४ कवि की उक्ति कि भत्री सदैव भला भत्र देते हैं परन्तु वे हौनहार को नहीं जानते । ”
- १५ सेना का श्रेणीबद्ध खड़ा होना । ”
- १६ सेना समूह का क्रम वर्णन ”
- १७ उक्त सेना समूह की सजावट के अंतक की प्रावस ऋतु से उपमा वर्णन । ”
- १८ इसी अवसर में मुख्य सामन्तों सहित पृथ्वीराज का उत्तर की तरफ जाना और कैमास के सग कुछ सामन्तों को पीछे सेना की तरफ आने की आज्ञा देना । ११३५
- १९ पृथ्वीराज के चले जाने पर उन सब सामन्तों का भी चला जाना जिनके भुज बल के आश्रित दिल्ली नगर था । ”
- २० उसी समय पूर्व बैर का बदला लेने

- के लिये भीमदेव का अजमेर पर चढ़ आना, प्रातःकाल की उसकी तय्यारी का वर्णन । ११३६
- २१ इधर कन्ह और नैसिह के साथ सोमेश्वर का भीमदेव के सम्मुख युद्ध करने के लिये तय्यार होना । ”
- २२ सोमेश्वर की सेना की तय्यारी वर्णन । ”
- २३ सैनिकों का उत्साह, सोमेश्वर की वीरता और कन्हाराय का बल वर्णन । ११३७
- २४ युद्ध आरम्भ होना । ”
- २५ कन्ह का वीरमत और तदनुसार सेनापति का व्याख्यान । ”
- २६ कन्ह की आखों की पट्टी खुलना । ११३८
- २७ दोनों हिन्दू सेनाओं की परस्पर ओजस्विता का वर्णन । ”
- २८ कन्हाराय के युद्ध का पराक्रम वर्णन । ”
- २९ कन्हाराय का कोप । ११३९
- ३० अपनी सेना को छितर बितर देखकर भीमदेव का रोश में आकर स्वयं युद्ध करना । ११४०
- ३१ कन्ह और भीमदेव का परस्पर घोर युद्ध होना । ”
- ३२ कवि की उक्ति । ”
- ३३ युद्ध स्थल की उपमा वर्णन । ११४१
- ३४ कन्हाराय का भीमदेव के हाथी को मार गिराना । ”
- ३५ दोनों सेनाओं में परस्पर घोर युद्ध । ”
- ३६ जामराय यादव और उसके सम्मुख खंगार का युद्ध करना, दोनों की मतवाले हाथियों से उपमा वर्णन । ११४२
- ३७ उक्त दोनों वीरों की मदान्ध बैलों से उपमा वर्णन । ”
- ३८ इन वीरों का युद्ध देखकर देवताओं

- का प्रिस्मित होना और पुष्प वृष्टि
करना । ११४३
- ३६ सोमेश्वर जी के वाम सेनाध्यक्ष
बलभद्र का पराक्रम वर्णन । "
- ४० भीमदेव की सेना का भीमानस की
रात्रि के समान जुट कर आगे
बढ़ना । "
- ४१ सोमेश्वर जी की तरफ से कछ
गह्वे गिरों का मारा जाना । "
- ४२ भीमदेव की सेना का चारों ओर
से सोमेश्वर को घेर लेना । ११४४
- ४३ उस समय चक्रान वीरों का जीवन
की आशा छोड़ कर युद्ध करना । "
- ४४ सोमेश्वर और भीमदेव का साह्वना
होना । "
- ४५ भीमदेव और सोमेश्वर दोनों की
सेनाओं का परस्पर युद्ध करना । ११४५
- ४६ अपना मरण निश्चय जानकर
सोमेश्वर का अतुलित वीरता से
युद्ध करना और उसका मारा जाना । ११४६
- ४७ सोमेश्वर के साथ मारे गए हाथी
घोड़े आदी एव राक्षस सामंतों का
संज्ञा करना । ११४७
- ४८ सोमेश्वर का मरना और भीमदेव
का घायल होकर मूर्च्छित होना । "
- ४९ सोमेश्वर की मुक्ति सङ्ग ही मिली । "
- ५० पृथ्वीराज का सोमेश्वर की मृत्यु
सुनकर भूमि राव्या धारण करना
और मोक्षी आदि मृत्यु कर्म करना ।
- ५१ पृथ्वीराज का भूमि, गो, स्वर्णादि
दान करना और पण्य करना कि
जन्म तक भोला राय को न मार लूंगा
न पाग न भ्रम न धी खाऊंगा । ११४८
- ५२ पृथ्वीराज का भोला राय पर चढ़ाई
करने की इच्छा करना पर दू मंत्रियों

- का पृथ्वीराज को अजमेर की गद्दी
पर बैठने का मंत्र देना । ११४८
- ५३ पृथ्वीराज का राज्याभिषेक । "
- ५४ पृथ्वीराज का दर्बार में बैठना और
मित्रों का स्वस्त्ययन पढ़ कर तिलक
करना । ११४९
- ५५ पृथ्वीराज का भावगंगा को दान देना
और दर्बार में नृत्य गान होना । "
- ५६ दर्बार में सत्र सामंतों सहित बैठे
हुए पृथ्वीराज की शोभा वर्णन । ११५०
- ५७ इच्छना से गठन होकर पृथ्वी-
राज का कुलाचार सन्ध्या पूजन
मित्रान करना । ११५१
- ५८ पृथ्वीराज का राजगद्दी पर बैठना ।
पहिले कह का और तिस पीछे
कमानुसार अथ सत्र सामंतों का
टीका करना । "
- ५९ पृथ्वीराज की शोभा का वर्णन । ११५२

[४०] पञ्चून छोंगा नाम प्रस्ताव ।

(पृष्ठ ११५३ से पृष्ठ ११५३ तक)

- १ पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर
दिहड़ी आना । ११५३
- २ पञ्चूनराय काछनाहे की पट्टन के
समाधि में गिरता वर्णन । "
- ३ पृथ्वीराज का पञ्चूनराय के सिर
पर छोंगा बाँध कर लड़ाई पर जाने
की आज्ञा देना । "
- ४ दूत का पृथ्वीराज को समाचार
देना कि भोला राय इस समय सोनि
गर के किले में है और वहा पर
पञ्चूनराय का चढ़ाई करना । ११५४
- ५ पञ्चूनराय की चढ़ाई की शोभा
वर्णन । "

६ पञ्जूनराय का घेरा डालना । मलय-
सिंह का मुकाबला करना । ११५५

७ पञ्जूनराय का चाबुक भूल जाना
और फिर सात कोस से लौट कर
चाबुक की भरी सेना में से चाबुक
ले जाना । ”

८ चालुक सेना का पीछा करना और
पञ्जूनराय का उसे परास्त करना । ”

९ छोंगा देकर भीमदेव का पट्टन को
जाना और मलयसिंह और पञ्जून
राय की कीर्ति का स्थापित होना । ११५६

१० पञ्जूनराय का पृथ्वीराज को छोंगा
नजर करना । ”

११ पृथ्वीराज का पञ्जूनराय को ही छोंगा
दे देना और एक घोडा और देना । ”

१२ चन्द कवि की उक्ति से पञ्जूनराय
के वीरशिरोमणि होने की प्रशंसा । ”

[४१] पञ्जून चालुक नाम प्रस्ताव ।

(पृष्ठ ११५६ से पृष्ठ ११६३ तक)

१ जैचंद के उभाड़ने से बालुकाराय
सौलकी और शहाबुद्दीन की सेना का
दिल्ली पर आक्रमण करना । ११५७

२ दूत का पृथ्वीराज को यह खबर देना । ”

३ पृथ्वीराज का विचार करना कि
पञ्जून राय से यह कार्य होना
संभव है । ”

४ पृथ्वीराज का पञ्जूनराय को बुलाना ११५८

५ पृथ्वीराज का सभा में बड़ा रखना और
किसी का बीडा न उठाना सब का
पञ्जूनराय की प्रशंसा करना । ”

६ पञ्जूनराय का भरी सभा में बीडा उठा
कर दोनों शत्रुओं के ध्वंस करने की
प्रतिज्ञा करना । ”

७ सुल्तान और कमधुज के दल की
सर्प और अफीम से उपमा और
पञ्जूनराय की गरुड़ और ऊट से
उपमा वर्णन । ११५८

८ पञ्जूनराय के बीडा उठाने पर सभा
में आनन्द ध्वनि होना । ११५९

९ पृथ्वीराज का पञ्जूनराय को घोडा
देना । ”

१० चढ़ाई के लिये तय्यार होकर पञ्जून
राय का अपने कुटुम्ब से मिलना
और उसके पाँचों भाइयों का साथ
होना । ”

११ पञ्जूनराय की चढ़ाई की शोभा वर्णन । ”

१२ पञ्जूनराय के कूच की तिथि
वर्णन । ११६०

१३ पञ्जूनराय की कृत वीरताओं का
वर्णन । ”

१४ पञ्जूनराय की चढ़ाई का आतंक
वर्णन । ”

१५ पञ्जूनराय का यवन सेना के मुका-
बिले पर पहुँचना । ”

१६ कमधुज और यवन सेना से पञ्जून
का साम्हना होना । ११६१

१७ दोनों प्रतिपक्षी सेनाओं का आतंक
वर्णन । ”

१८ पञ्जून सेना के व्यूह बध्य होने का
स्पष्टीकरण । ”

१९ युद्ध की तिथि । ”

२० पञ्जूनराय की सेना का बड़ी वीरता
से युद्ध करना । ११६२

२१ इस युद्ध में पञ्जूनराय के भाइयों
का मारा जाना । ”

२२ पञ्जूनराय की जीत होना, और
शत्रु सेना का माल मत्ता लूटा जाना । ”

२३ पृथ्वीराज के प्रताप की प्रशंसा । ११६३

२४ पञ्जूनराय का भाइयों की किया
करना और २५ दिन गमी मना कर
दान देना । ११६३

[४२] चन्द द्वारिका समयौ ।

(पृष्ठ ११६५ से पृष्ठ ११७७ तक)

१ कनिचन्द का द्वारिका को जाना । ११६५

२ कनिचन्द का यात्रा समय का साज
सामान और उसके साथियों का
वर्णन । "

३ चन्द का चितौर के पास पहुंचना । "

४ चितौरगढ़ की स्थापना का वर्णन । ११६६

५ चित्रकोट गढ़ की पूर्व कथा । "

६ उक्त मोरी का गोमुप कुंड बनवाना । "

७ एक सिंहनी का ऋषि के शिष्य को
खा लेना । "

८ सिंहनी की पूर्व कथा । "

९ कनिचन्द का आना सुनकर पृथाकु
मारी का कनि के डेरे पर जाना । ११६७

१० कनि का चितौर जाना । ११६८

११ कनि का किले में भोजन करने
जाना । पृथा का उसे भोजन
परोसना । "

१२ कह अमरसिंहदि साम तों का पृथा
कुमारी को उपहार देना । ११६९

१३ चन्द का चितौर से चलना । "

१४ द्वारिकापुरी में पहुंच कर श्रद्धा भक्ति
से दर्शन और यथाशक्ति दान
करना । "

१५ कनिचन्द कृत रणछोड भी की स्तुति । ११७०

१६ देवी की स्तुति । "

१७ कनि का होम करने ब्राह्मण भोज
नादि कराना । ११७१

१८ द्वारिकापुरी में छाप लगवाने का
माहात्म्य । "

१९ द्वारिकापुरी से लौटकर चन्द का

भीमदेव की राजधानी पट्टनपुर में
आना । ११७२

२० पट्टनपुर के नगर एव धन धाय
का शोभा वर्णन । "

२१ पट्टनपुर के आनन्द मय नगर
और वहा की सुन्दरी स्त्रियों की
शोभा वर्णन । ११७३

२२ राज्य उपवन में चन्द का डेरा दिया
जाना । "

२३ भीमदेव का कनिचन्द के पास अपने
भाट जगदेव को भेजना । ११७४

२४ जगदेव का कनिचन्द से मिलना । "

२५ जगदेव का अपने स्थायी भीमदेव
के बल वैभय की प्रशंसा करना । "

२६ कनिचन्द का पृथ्वीराज की कीर्ति का
उच्चार करना । ११७५

२७ जगदेव का कहना कि अच्छा तो
तुम अपने पृथ्वीराज को लिया लाओ । "

२८ भोराय भीमदेव का चन्द को डेरे
पर आना । ११७६

२९ कनिचन्द का भीमदेव को अगवानी
देकर मिलना । "

३० कनिचन्द का भोराय भीमदेव को
आयीराद देना । "

३१ कनिचन्द और अमरसिंह सेनरा का
परस्पर वाद होना और कनिचन्द
का जीतना । ११७७

३२ भीमदेव का अपने महल को लौट
जाना । "

३३ कनिचन्द का मुस्तान की चलाई की
खबर सुनकर दिल्ली को प्रस्थान
करना । "

[४३] कैमास युद्ध ।

(पृष्ठ ११७९ से पृष्ठ ११९८ तक)

- १ एक समय शहाबुद्दीन का तत्तारखा से पृथ्वीराज के विषय में चर्चा करना । ११७६
- २ तत्तारखा का वचन । ”
- ३ कैमास युद्ध समय की कथा का खुलासा या अनुक्रमणिका और शाह की फौजकशी का वर्णन । ”
- ४ शहाबुद्दीन का सिन्धु पार करके पारसपुर में डेरा डालना । ११८०
- ५ दिल्ली से गुप्तचर का आना । ”
- ६ पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना । ”
- ७ शाह का समाचार पाकर गुप्त गोष्ठी करना । ”
- ८ शहाबुद्दीन का आगे बढ़ना और पृथ्वीराज के पास समाचार पहुँचना । ११८१
- ९ पृथ्वीराज का कैमास सहित सामंतों से सलाह करना । ”
- १० पृथ्वीराज की सेना की चढाई और सामंतों के नाम कथन । ११८२
- ११ शहाबुद्दीन की सेना की चढाई और यवन योद्धाओं के नाम । ”
- १२ दोनों सेनाओं का चार कोस के फासले पर डेरा पड़ना । ११८३
- १३ पृथ्वीराज की सेना का आतक वर्णन । ”
- १४ शहाबुद्दीन की सेना का पट्टवन की तरफ कूच करना । ११८४
- १५ शाह के सारुंड में आने पर पृथ्वीराज का पुनः सामंतों से सलाह करना । ”
- १६ पृथ्वीराज का चामडराय की प्रशंसा करना और प्रातःकाल होते ही तय्यारी की आज्ञा देना । ”

- १७ शाह का मुकाम, लाइन में मुनकर पृथ्वीराज का पचासर में डेरा डालना । ११८५
- १८ कैमास को शाह के प्रातःकाल पहुँचने का खबर मिलना । ”
- १९ पृथ्वीराज की सेना की तय्यारी होना और कन्ह का हरावल बाधना । ”
- २० पृथ्वीराज की पच अनी सेना का वर्णन । ”
- २१ शहाबुद्दीन का भी अपनी फौज को पाँच अनी में सजे जाने की आज्ञा देना । ११८६
- २२ रणक्षेत्र में दोनों फौजों का बीच में दो कोस का मैदान देकर डटना और व्यूह रचना । ११८७
- २३ युद्ध सम्बन्धी तिथिवाक्य वर्णन । ”
- २४ अनीपति योद्धाओं की परस्पर कारनी वर्णन और अग्न्यास्त्र युद्ध । ११८८
- २५ द्वादसी का युद्ध । ”
- २६ पृथ्वीराज का यवन सेना में अकेले धिर जाना और चामडराय का पराक्रम । ११८९
- २७ चार यवन सर्दारों का मिलकर चामडराय पर आक्रमण करना । ”
- २८ कैमास का चामडराय की सहायता करना । ११९०
- २९ चामडराय का चारों यवन योद्धाओं को पराजित करना । ”
- ३० लाल खा का वर्णन । ”
- ३१ लाल खा का भारा जाना । ११९१
- ३२ कैमास और चामडराय का वार्तालाप । ”
- ३३ कैमास का युद्ध वर्णन । ११९२
- ३४ मध्याह्न के उपरान्त सूर्य की प्रखरता कम होने पर दोनों दलों में

- धमासान युद्ध होना । ११८०
- ३५ द्वादसी का युद्ध वर्णन । ११८३
- ३६ दोनों सेनाओं के मुखिया सर्दारों का उत्तर-तुल्य युद्ध वर्णन । ११८४
- ३७ अपनी फौज हारती हुई देख कर शहाबुद्दीन का अपने हाथों को आगे बढ़ाना । "
- ३८ शाह के आगे उठने पर यवन सेना का उत्साह बढ़ना । ११८५
- ३९ शहाबुद्दीन का बान रखा करके सामंतों को धायल करना । "
- ४० कैमास और चामडराय का शाह पर आक्रमण करना और यवन सर्दारों का रक्षा करना । ११८६
- ४१ चक्रसेन का मारा जाना । "
- ४२ चक्रसेन का वश और उसका यश वर्णन । "
- ४३ त्रयोदशी बुधवार को पृथ्वीराज की जय होना । "
- ४४ कैमास और चामडराय का शहाबुद्दीन को दो तरफ से दबाना और उनके हाथों को मार गिराना । ११८७
- ४५ दोनों भाइयों का शाह को पकड़ कर पृथ्वीराज के पास लेजाना । "
- ४६ कैमास का गणपति में से धायल और मतरानना को दुँदवाना । ११८८
- ४७ रण में नष्ट होने का प्रशंसा । "
- ४८ पृथ्वीराज का दण्ड लेकर सुल्तान को छोड़ देना और यह दंड सामंती का बांट देना । "

[४४] भीम वध समय ।

(पृष्ठ ११९० से पृष्ठ १२०७ तक)

१ पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर शोक करना और सिंघ प्रमार का

- वीर शक्या म धैर्य देना । ११८९
- २ पृथ्वीराज प्रति सिंह प्रमार के चक्र । "
- ३ पृथ्वीराज का पिता के नाम से अन्न देकर दान करना और पितृ भैर लेने का प्रतिज्ञा करना । १२००
- ४ प्रातः काल पृथ्वीराज का मंत्र सामन्त और मैनिना की सभा करके अपने भैर लेने का पण्य उनसे कहना । "
- ५ ज्यातिपा का गुनरात पर चढ़ाई का लिये मुहूर्त माधन करना । १२०१
- ६ ज्यातिपा का प्रह योग और मुद्गल मुद्गल वगन करना । "
- ७ पृथ्वीराज का लग्न साधकर अपना तन्त्राारी करना । १२०२
- ८ पृथ्वीराज का शिकार के मिस पश्चिम दिशा को कच करना । १२०३
- ९ राजा के साथ सेव सहित निद्राश्रय का आन मिलना । "
- १० पृथ्वीराज की तन्त्राारी का उगन, भामदेव को इसकी खबर होना और उमका भी तन्त्राारी करना । "
- ११ भामदेव का तन्त्राारी का समाचार पृथ्वीराज को मिलना । १२०४
- १२ पृथ्वीराज की प्रतिज्ञा । १२०५
- १३ पृथ्वीराज का शिकार खेलते हुए आग करना । "
- १४ पृथ्वीराज का गहन वन में पड़ा पचना । "
- १५ कैमासादि सत्र सामंतों का रात्रि को राजा के पहरे पर रहना । १२०६
- १६ एक प्रहर रात्रि रहने से शिकार किए जाने की सलाह । "
- १७ कह का रात्रि को स्वप्न देखना

और साथियों से कहना कि संवरे युद्ध होगा ।	१२०६	३४ भीमदेव का अपने भाट जगदेव को चन्द के पास भेजकर अपनी तय्यारी की मूचना देना ।	१२१४
१८ स्वप्न का फल ।	१२०७	३५ जगदेव वचन ।	"
१९ संवरे कविचन्द का आशीर्वाद देना और राजा का स्वप्न कथन ।	"	३६ चन्द वचन ।	"
२० राजा के स्वप्न का फल ।	१२०८	३७ जगदेव का चन्द का सखा उत्तर मुनकर भीमदेव के पास फिर जाना ।	१२१५
२१ कन्ह के ज्ञानमय वचन ।	"	३८ पृथ्वीराज का निदूदुर को युद्ध का भार सौंपना ।	"
२२ पृथ्वीराज का सेना सहित शिकार करना, वन की हकाई होना ।	"	३९ निदूदुर का पृथ्वीराज को भरोसा देकर स्वामिधर्म की प्रशंसा करना ।	"
२३ वन में खर भर होतेही एक भूखे सिंह का निकलना ।	१२०९	४० निदूदुर का कन्हरीय की प्रशंसा करना ।	"
२४ सिंह का वर्णन ।	"	४१ पृथ्वीराज का निदूदुर को मोती की माला पहनाना ।	१२१६
२५ सिंह का कन्ह के ऊपर झपट कर वार करना ।	"	४२ निदूदुर का सेना की तय्यारी करके स्वयं युद्ध के लिये तय्यार होना ।	"
२६ कन्ह का सिंह का सिर मसका कर मार डालना ।	१२१०	४३ पृथ्वीराज का कन्ह को पवाई पहिनाना ।	"
२७ कन्ह के बल और उसकी वीरता की प्रशंसा ।	"	४४ कन्ह का युद्ध में अपने रहते हुए सोमेश्वर के मारे जाने पर पछतावा करना ।	"
२८ अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर सामन्तों सहित राजा का आगे कूच करना ।	"	४५ निदूदुर का कन्ह को सतोष दिला कर उत्साहित करना ।	"
२९ कूच के समय पृथ्वीराज की फौज का आतंक वर्णन ।	१२११	४६ सेना का सज कर आगे बढ़ना ।	१२१७
३० पृथ्वीराज का भीमदेव के पास एक चुल्लू भेजना ।	१२१२	४७ चहुआन और चालुक्य की सेनाओं का परस्पर मुठभेड़ होना ।	"
३१ चन्द का भीमदेव के पास जाकर युक्तिपूर्वक कहना कि पृथ्वीराज अपने पिता का बदला लेने को तय्यार है ।	"	४८ भीमदेव के घोड़े की चंचलता का वर्णन ।	"
३२ भीमदेव का उत्तर देना कि मैं भी उसे दब देने को प्रस्तुत हूँ जो मेरे संमुख आवे ।	१२१३	४९ दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे से भिड़ना और उनका विषम युद्ध ।	"
३३ चन्द का भीमदेव के द्वार से कुपित होकर चला आना ।	१२१४	५० कन्हरीय की पट्टी छूटना और वीर मकवाना से कन्ह का युद्ध होना ।	१२१९
		५१ मकवाना का मारा जाना ।	१२१९

५२	सामंतों का पराक्रम और शूर नीर योद्धाओं की निरपेक्ष वीरता की प्रशंसा ।	१२१९	३	तदनुसार राम रावण युद्ध ।	१२२६
५३	रणक्षेत्र की सरित सरिताओं से उपमा वर्णन ।	१२२०	४	राम रावण युद्ध का आतंक ।	"
५४	प्रसंगपर खींची का पराक्रम वर्णन ।	"	५	मेघनाद और कुम्भकर्ण का युद्ध वर्णन ।	१२३२
५५	भीमदेव की फीज का निचलना ।	१२२१	६	राम रावण का युद्ध ।	१२३३
५६	नूरनार पुरों के पराक्रम की प्रशंसा ।	"	७	रामचंद्र जी की उदारता ।	१२३४
५७	परस्पर घमासान युद्ध का दृश्य उल्लेख	१२२२	८	इंद्र का बचन ।	"
५८	कानि का कहना कि कायर पुरों की अप्रगति होती है ।	"	९	इंद्र का एक गर्ज को आज्ञा देना कि वह पृथ्वीराज आर जय चंद्र में शत्रुता का सत्र डाल ।	"
५९	पृथ्वीराज और भीमदेव का साम्हना हाना और काह का भीमदेव को मार गिराना ।	१२२३	१०	कनोज की शोभा वर्णन ।	१२३५
६०	काह की तलवार की प्रशंसा ।	१२२५	११	गर्ज की स्त्री का उससे संयोगिता के पत्र जन्म का कथा पढ़ना ।	"
६१	चक्रान्त के पितृ वैर बदलने पर कानि का बधाई देना ।	"	१२	गर्जका उत्तर देना कि वह पूर्ण जन्म की अप्सरा है ।	"
६२	पृथ्वीराज के सामंता की प्रशंसा ।	"	१३	कनिचंद का अपनी स्त्री से सया गिता के जमा तर म शापन होने का करा रहना ।	"
६३	सायंकाल के समय युद्ध का बंद होना ।	"	१४	शिव स्थान पर ऋषि का तपस्या का वर्णन ।	"
६४	प्रभात समय की शोभा वर्णन ।	"	१५	एक तलवार स्त्री को देवदत्त ऋषि का चित्त चंचल होना ।	" ३६
६५	रणक्षेत्र का सफाई होकर लार्थ हूँटी गई ।	१२२६	१६	उक्त स्त्री का सौंदर्य वर्णन ।	"
६६	युद्ध में मरे हुए शूर नीर और हाथी घोड़ों की संख्या ।	"	१७	परंतु ऋषि का अपने मन का मात्र कर नदिकाश्रम पर्यंत पर्यटन करके धार तप करना ।	१२३७
६७	सत्तार की असारता का वर्णन ।	१२२७	१८	ऋषि का तप का तेज वर्णन और इसमें इंद्र का भयभीत पाना	"
६८	गुजरात पर चढ़ाई करके एक मास में पृथ्वीराज का दिल्ली को वापिस आना ।	"	१९	इंद्र का अप्सराओं को आज्ञा देना कि वे तेजस्वा तापस का तप भूष्ट कर ।	"
(४५) संयोगिता पूर्व जन्म कथा ।			२०	अप्सराओं का सौंदर्य वर्णन ।	१२३८
(पृष्ठ १२२९ से पृष्ठ १२५८ तक)			२१	मजुघोषा का सुभक्त ऋषिकों छलने के लिये मृत्यु लोक में आना ।	"
१	पृथ्वीराज का इंद्र प्रति बचन ।	१२२६			
२	इंद्र का उत्तर देना ।	"			

- २२ मनुष्या का लावण्य भाव विलास और शृंगार वर्णन । १२३८
- २३ अप्सरा के गान से ऋषि की समाधि जगत् के लिये उगमगाई । १२३९
- २४ अप्सरा का शक्ति चित्त होकर अपना कर्तव्य विचारना । "
- २५ तब तक से पुनः ऋषि का अप्रभ रूप से ध्यानमग्न होना । १२४०
- २६ मुनि की ध्यानावस्थित दशा का वर्णन । "
- २७ वाद्य वजना और अप्सरा का गाना । "
- २८ मुनि का समाधि भग होकर कामातुर हो, अप्सरा के आलिङ्गन करने की इच्छा करना । १२४१
- २९ अप्सरा का अन्तर्धान हो जाना । "
- ३० मुनि का मूर्छित हो जाना, परन्तु पुनः सम्भल कर ध्यानावस्थित होना । "
- ३१ कविचन्द्र की स्त्री का अप्सरा के सौन्दर्य के विषय में जिज्ञासा करना । १२४२
- ३२ अप्सरा का नख सिख वर्णन । "
- ३३ अप्सरा के सर्वाङ्ग सौन्दर्य की प्रशंसा । १२४३
- ३४ कवि की उक्ति कि ऐसी स्त्रियों के ही कारण ससार चक्र का लौट फेर होता है । "
- ३५ अप्सरा का योगिनी भेष धारण करके सुमन्त ऋषि के पास आना । १२४४
- ३६ अप्सरा के योगिनी भेष की शोभा वर्णन । "
- ३७ मुनि का छद्म भेष धारिणी योगिनी को नादर आसन देकर बतने करना । १२४५

- ३८ तपसी लोगो की क्रिया का सन्नेप प्रस्तार वर्णन । १२४५
- ३९ अप्सरा की सगुन उपासना की प्रशंसा करना । १२४६
- ४० इसी अवतारो का सन्निध वर्णन । "
- ४१ अप्सरा का कहना कि परमेश्वर प्रेम में है अस्तु तुम प्रेम करो । "
- ४२ नृसिंहावतार का वर्णन । "
- ४३ मुनि का कामातुर होकर अप्सरा को स्पर्श करना १२४७
- ४४ अप्सरा का कहना कि ऐसा प्रेम ईश्वर से करो मुक्त से नहीं । "
- ४५ उसी समय सुमन्त के पिता जरज मुनि का आना । "
- ४६ मुनि का लज्जित होकर पिता की परिक्रमा पूजनादि करना । "
- ४७ जरज मुनि का अप्सरा को शाप देना । १२४८
- ४८ सुमन्त का लज्जित होना और जरज मुनि का उसे धिक्कारना । "
- ४९ जरज मुनि के शाप का वर्णन । "
- ५० अप्सरा का भयभीत होकर जरज मुनि से क्षमा प्रार्थना करना और मुनि का उसे मोक्ष का उपाय बतलाना । "
- ५१ अप्सरा के स्वर्ग से पात होने का प्रकाश । तीनों देवताओं का इन्द्र के द्वार में जाना और द्वारपालों का उन्हें रोकना । १२४९
- ५२ विष्णु का सनत्कुमारो के शाप से पतित द्वारपालों की कथा कहना । १२५०
- ५३ हिरण्यक हिरणाकुय वध । १२५१
- ५४ रावण और कुम्भकर्ण वध । १२५२
- ५५ त्रिदेवताओं के पास इन्द्र का आप आकर स्तुति करना । १२५३

- ५६ इन्द्राणी का त्रिदेवताआ का चरण स्पर्श करना । १२५३
- ५७ अप्सराओं का नृत्य गान करना और शिव का उक्त अप्सरा को शाप देना । "
- ५८ अप्सरा का शिव से अपने उद्धार के लिये प्रार्थना करना । १२५४
- ५९ उपरोक्त अप्सरा का स्वर्ग से पतित होकर कन्नौज के राजा के घर जन्म लेना । "
- ६० कन्नौज के राजा विजयपाल का दास्य ग दिया पर चढाई करना । १२५५
- ६१ समुद्र किनारे के राजा मुकुन्द देव सामन्त का विजयपाल को अपना पुत्र देना । "
- ६२ मुकुन्द देव का पुत्र का जयचन्द के साथ याह होना । "
- ६३ विजयपाल का रामेश्वर लों विजय प्राप्त करके अनक राजाओं का वश में करना । १२५६
- ६४ सेतु दरामेश्वर के पडाव पर गुज रात के राजा के पुत्र का विजयपाल के पास आना और उसे नजर देना । "
- ६५ दिग्विजय से लौट कर विजयपाल का यज्ञ करना । १२५७
- ६६ विजयपाल की दिग्विजय में पाई हुई जयचन्द की पत्नी को गर्भ रहना और उससे सयोगिता का जन्म लेना । "

- जन्म लेकर शाप से उद्धार पाने का वर्णन । १२५८
- २ शाप देकर जरज ऋषि का अत ध्यान हो जाना और सुमत का तप में दत्तचित्त होना । "
- ३ सन्त ११३३ में सयोगिता का जन्म वर्णन । "
- ४ सयोगिता का दिन प्रति दिन बढ़ना और आयु के तेरहवें वर्ष में उस के शरीर में कामादापन होना । १२६०
- ५ सयोगिता के हृदय मंदिर में काम देव का यथापन्न स्थान पाना । "
- ६ सयोगिता के सौन्दर्य की बढाई । "
- ७ सयोगिता का भविष्य होनहार वर्णन । "
- ८ सयोगिता प्रति जयचन्द का स्नेह । १२६२
- ९ सयोगिता के विधारम्भ करने की तिथि आदि । "
- १० सयोगिता का योगिनी वेप धारण कर अपनी पाठिका (मदन बन्धनी) के पास जाना । "
- ११ योगिनी वेप में सयोगिता के सौन्दर्य की छटा वर्णन । १२६३
- १२ सयोगिता का लय लगा कर पढ़ना और पाठिका का उसे पढ़ाना । "
- १३ एक दिन ब्राह्मणी का अपने पति से सयोगिता के विषय में प्रश्न करना । "
- १४ ब्राह्मणी का सयोगिता के भविष्य लक्षण कहना । १२६४
- १५ सयोगिता का मदन वृद्ध ब्राह्मणी के घर पढ़ने जाना और सयोगिता का यौवन काल जान कर ब्राह्मणी का उसे विनय भगल पढ़ाना । १२६५

[४६] विनय भगल प्रस्ताव ।

(पृष्ठ १२५२ से पृष्ठ १२७४ तक)

१ अप्सरा के सयोगिता के नाम से

- १६ अथ विनय मंगल पाठ का प्रारम्भ । १२६६
 १७ विनय मंगल की भूमिका । ”
 १८ पति का गौरव कथन । १२६७
 १९ स्त्रियों की पति, प्रति अनन्य प्रेम भावना । ”
 २० पाठिका का उपरोक्त व्याख्या को दृढ करना । ”
 २१ विनय भाव की मर्यादा गौरव और प्रशंसा । ”
 २२ सुआ सार विनय का एक आख्यात वर्णन करता है और रति और कामदेव उसे सुनते हैं । १२६८
 २३ मान एवं गर्व की अयोग्यता और निन्दा । ”
 २४ विनय का गौरव । १२६९
 २५ विनय की प्रशंसा उस के द्वारा स्त्रियोचित साधनों का वर्णन । ”
 २६ उपरोक्त कथनोपकथन के प्रमाण में एक सन्क्षेप आख्यान । १२७०
 २७ स्त्रियों के लिये विनय धारणा की आवश्यकता । ”
 २८ विनय हीन स्त्री समाज में सुशोभित नहीं होती । ”
 २९ एक मात्र विनय की प्रशंसा और उप-योगिता वर्णन । १२७१
 ३० इति विनय मंगल कांड समाप्त । १२७३
 ३१ ब्राह्मणी का रात्रि को पुनः अपने पति से सयोगिता के विषय में पूछना और उसका उत्तर देना । ”
 ३२ दुर्गा का दुर्ग से कथा कहने को कहना । ”
 ३३ दुर्ग का उत्तर । ”
 ३४ पृथ्वीराज का वर्णन । ”
 ३५ कथा सुनते सुनते ब्राह्मणी का निद्रा भंग हो जाना । १२७४

[४६] सुक वर्णन ।

(पृष्ठ १२७५ से पृष्ठ १२९१ तक)

- १ सयोगिता का यौवन अवस्था में प्रवेश । १२७५
 २ शुक और शुक्री का दिल्ली की ओर जाना । ”
 ३ शुक का ब्राह्मण के वेष में पृथ्वी-राज के दरबार में जाना । ”
 ४ ब्राह्मणी का सयोगिता के पास जाना । ”
 ५ दुर्ग का पृथ्वीराज से सयोगिता के विषय में चर्चा करना । ”
 ६ सयोगिता के जन्म पत्र के ग्रह नक्षत्रादि का वर्णन । १२७६
 ७ छ. महीने में विनय मंगल प्रकरण का समाप्त होना । १२७७
 ८ विनयमंगल समाप्त होने पर ब्राह्मणी का सयोगिता से पृथ्वीराज और दिल्ली के सम्बन्ध की कथा कहना । ”
 ९ अनंगपाल के हृदय में वैराग उत्पन्न होने का वर्णन । ”
 १० मंत्रियों का अनंगपाल को राज्य देने के लिये मना करना । ”
 ११ अनंगपाल का पृथ्वीराज को राज्य दे देना । १२७८
 १२ पृथ्वीराज की कूट नीति से प्रजा का दुःखित होकर अनंगपाल के पास जाना । ”
 १३ अनंगपाल का पुनः बदरिकाश्रम को चला जाना । ”
 १४ दसों दिशाओं में सुविस्तृत पृथ्वीराज की उज्ज्वल कीर्ति का आकाश में दर्शन होना । १२७९
 १५ सयोगिता का वर्णन । ”

- १६ बारह के बाद और तेरह के भीतर जो स्त्रियों की वय सप्ति अस्त्रा होती है उसका वर्णन । १२७६
- १७ स्त्रियों के यौन से वसत ऋतु का उन्मा गणन । १२८०
- १८ सयोगिता की बड़ी बहिन का व्याह और उसकी सु दरता । १२८१
- १९ सयोगिता के सर्वाङ्ग शरीर की शोभा का वर्णन " "
- २० ब्राह्मण के मुख से सयोगिता के सौ द र्प्य की कथा सुन कर पृथ्वीराज का उस पर मोहित हो जाना । १२८३
- २१ पृथ्वीराज की कामवेदना और सयो गिता से मिलने के लिये उसकी उत्सुकता का वर्णन । १२८४
- २२ सती का ब्राह्मणी स्वरूप में कनौज पहुंचना । " "
- २३ यहा पर ब्राह्मणी का पृथ्वीराज की प्रेयसा करना । " "
- २४ पृथ्वीराज के स्वाभाविक गुणों का वर्णन । " "
- २५ उक्त वर्णन सुन कर सयोगिता के हृदय में पृथ्वीराज प्रति प्रीति का उदय होना । १२८५
- २६ पृथ्वीराज की कीर्ति का वर्णन । " "
- २७ ब्राह्मण का कहना कि चहुआन अद्वितीय पुरुष है । १२८६
- २८ सयोगिता का पृथ्वीराज से बिदा करने की प्रतिज्ञा करना । " "
- २९ सयोगिता की पृथ्वीराज के प्रेम में चूर होकर अहिर्निशि उसीके ध्यान में मग्न रहना । १२८७
- ३० वसत ऋतु का पूर्ण यौनमास वर्णन । " "
- ३१ निर्जन वन में यच्चों के एक उपवन का वर्णन । " "

- ३२ पृथ्वीराज का दरान को जीत कर भीतर बगाये म जाना । १२८७
- ३३ यच्च यच्चिनी और पृथ्वीराज का वार्तालाप । १२८८
- ३४ यच्च का कहना कि अस्त्र कोई बड़े राजा है । " "
- ३५ पृथ्वीराज का वहा पर नाना भाति की सुख सामग्री भगवा कर प्रस्तुत करना । " "
- ३६ गार्धर्य राज का आना और नाटक अरम्भ होना १२८९
- ३७ अप्सराओं का दिव्य रूप और शृंगार वर्णन । " "
- ३८ पृथ्वीराज के आतिथ्य से प्रसन्न होकर गार्धर्य का उन्हें एक सर्व सिद्धि काय देना । १२९१

[४८] बालुकाराय समय ।

(पृष्ठ १२६२ से पृष्ठ १३२९ तक)

- १ राजसूय यज्ञ सम्बन्धी काव्यों के सम्पादन करने के लिये राजाश्री को निमन्त्रण भेजा जाना । १२९३
- २ यज्ञ की सामग्री का वर्णन । " "
- ३ यज्ञ के हेतु आह्वान के लिये दसों रियाश्रों में जयचंद का दूत भेजना । १२९४
- ४ जयचंद का प्रताप वर्णन । " "
- ५ जयचंद का पृथ्वीराज को दिल्ली का आघा राज्य देने के लिये सदेसा भेजने की इ द्धा करना । " "
- ६ जयचंद का पृथ्वीराज के लिये सदेसा । १२९५
- ७ जयचंद की आज्ञानुसार कवियों का जयचन्द की विरदावली पढ़ना और

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20	मयोगिना के हृदय में निद्रा के रोग का संचार होना ।	१२०३	...
21	मयोगिना का मलिन मूर्ति को देखते हुए उसकी मानसिक एवं दैहिक अवस्था का वर्णन ।	१२०४	...
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46
47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96
97
98
99
100

३५ सेना सज कर पृथ्वीराज का चलना और कन्नौज राज्य की सीमा में पैठ कर वहा की प्रजा को दुख देना ।	१३१२	५१ बालुकाराय का रथकोशल ।	१३१८
३६ बालुकाराय का परदेस की तरफ यात्रा करना ।	"	५२ सूरता की प्रशसा ।	"
३७ पृथ्वीराज की सेना की सख्या तथा उसके साथ में जानेवाले योद्धाओं का वर्णन ।	"	५३ बालुकाराय का धिरजाना और उसका पराक्रम ।	१३१९
३८ बालुकाराय की प्रजा का पीडित होकर हाहाकार मचाना ।	१३१३	५४ युद्ध स्थल का चित्र दर्शन ।	"
३९ चहुआन की चढ़ाई का आतंक वर्णन ।	"	५५ बालुकाराय का पृथ्वीराज पर आक्रामण करना । पृथ्वीराज का उसके हाथी को मार भगाना ।	"
४० पृथ्वीराज का भुज्ज पर अधिकार करना ।	१३१४	५६ पृथ्वीराज की सेना का पुन दृढ़ता से व्यवहृत होना । व्यवहृत का वर्णन ।	१३२०
४१ पृथ्वीराज की चढ़ाई की खबर सुन कर बालुकाराय का आश्चर्यान्वित और कुपित होना ।	"	५७ बालुकाराय का अपने वीरों को प्रचार कर उत्साहित करना ।	"
४२ पृथ्वीराज का नाम सुनकर बालुकाराय का सेना सजना ।	१३१५	५८ दोनों सेनाओं में परस्पर घोर सप्राम होना ।	१३२१
४३ बालुकाराय का सैन्य सहित पृथ्वीराज के सम्मुख आना ।	"	५९ कन्ह और बालुकाराय का युद्ध, बालुकाराय का मारा जाना ।	१३२०
४४ चहुआन से युद्ध करने के लिये बालुकाराय को हार्दिक उत्कर्ष और प्रोत्साहन ।	"	६० बालुकाराय के मारे जाने पर उसके वीर योद्धाओं का झूझजाना ।	१३२३
४५ चहुआन राय की सेनसख्या ।	१३१६	६१ बालुकाराय की राजधानी का लूटा जाना ।	"
४६ दोनों सेनाओं की परस्पर देखा देखी होना ।	"	६२ बालुकाराय के साथ मारे गए वीरों की सख्या वर्णन ।	१३२४
४७ बालुकाराय की सुसज्जित सेना को देख कर चहुआन सेना का सन्नद्ध और व्यवहृत होना ।	"	६३ बालुकाराय के शीघ्र की प्रशसा वर्णन ।	"
४८ दोनों हिन्दू सेनाओं का परस्पर युद्ध वर्णन ।	१३१७	६४ बालुकाराय के पचताती यवन योद्धाओं की वीरता का वर्णन ।	"
४९ बालुकाराय का युद्ध करना ।	"	६५ जयचन्द की सेना और मुसल्मानों की सेना का पृथ्वीराज का मुख रोकना ।	"
५० बालुकाराय की वारता और उसका फुर्तीलापन ।	"	६६ पृथ्वीराज की उक्त सेना पर चढ़ाई और वीरों के मोच पाने के विषय में कवि की उक्ति ।	१३२५
		६७ दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना ।	"
		६८ चहुआन और मुसल्मान सेना का घोर युद्ध ।	१३२६
		६९ कन्नौज की सेना का भागना और	

- पृथ्वीराज की जीत होना । १३२६
- ७० बालुकाराय की स्त्री का स्वप्न । १३२७
- ७१ बालुकाराय की स्त्री की विलाप नार्ता । "
- ७२ पृथ्वीराज का बालुकाराय को मार कर दिल्ली को आना । १३२८
- ७३ गन धटना का परिणाम वर्णन । "
- ७४ बालुकाराय की स्त्री का जयचन्द के यहाँ जाकर पुकार करना । "

- १० पृथ्वीराज का शिकार गैलने समय शत्रु को फौज में विरताना । १३२९
- ११ मन मंता का भाग जाना । १३३०
- १२ केवल १०६ सामंतों मन्त्रिण पृथ्वीराज का शत्रु पर जैताना । "

(५०) संयोगिता नाम प्रस्ताव ।

(पंचामर्शों समय ।)

(४९) पंग जय विध्वंस प्रस्ताव ।

(उच्चासवां समय ।)

- १ यज्ञ के बीच में बालुकाराय की स्त्री का कर्वाज पहुँचना । १३३१
- २ यज्ञ के समय कन्नौजपुर की सजावट बनावट का वर्णन और जयचन्द को बालुकाराय के मारे जाने की खबर मिलना । "
- ३ सान समुद्रों के नाम । १३३२
- ४ दसों दिशाओं और दिग्पालों के नाम । "
- ५ बालुकाराय की वध सुनकर जयचन्द का क्रोध करना । १३३३
- ६ यज्ञ का ध्वंस होना और जयचन्द का पृथ्वीराज के ऊपर चढ़ाई करने की तैयारी करना । "
- ७ यह सब सुनकर संयोगिता का अपने प्रण को और भी दृढ़ करना । १३३४
- ८ समय उपयुक्त देखकर जयचन्द का संयोगिता के स्वयंवर करने का विचार करना । "
- ९ यह सुन कर संयोगिता का चौहान प्रति और भी अनुराग बढ़ना । १३३५

- १ पृथ्वीराज का शिकार गैलने जाना और कन्नौज के गुप्त चर का जयचन्द को समाचार देना । १३३७
- २ पृथ्वीराज का शिकार गैलने फिरना और साफ होने ही माठ हजार शत्रु सेना को उभे आ घेरना । "
- ३ सब सामन्तों का शत्रु सेना को मार कर बिड़ार देना । १३३८
- ४ सामन्तों की स्वामिभाक्ति का वर्णन । "
- ५ जयचन्द का अपने मंत्री से संयोगिता का स्वयंवर करने की सलाह करना । १३३९
- ६ जयचन्द का संयोगिता को समझाने के लिये दूतों को भेजना । "
- ७ दूतिका के लक्षण और उसका स्वभाव वर्णन । १३४०
- ८ दूतों का संयोगिता से वचन । "
- ९ दूतों की बातों पर कुपित होकर संयोगिता का उत्तर देना । १३४१
- १० पृथ्वीराज की प्रशंसा और संयोगिता के विचार । "
- ११ संयोगिता का वचन । "
- १२ धा का वचन । १३४२
- १३ सहचरी का वचन । "

- १४ पृथ्वीराज के मारुत का सर्जीर्तन ।
सयोगिता का वाक्य । "
- १५ सखी का वाक्य । १३४३
- १६ सयोगिता की सकोच दशा का वर्णन । "
- १७ सखी का बचन । १३४४
- १८ सयोगिता का बचन । "
- १९ सखी का बचन । "
- २० सयोगिता बचन (निज पण वर्णन) । "
- २१ दूतों का निराश होकर जयचन्द से सयोगिता का सब हाल कह सुनाना । १३४५
- २२ सयोगिता के हठ पर चिढ़ कर जयचन्द का उसे गंगा किनारे निवास देना । "
- २३ गंगा किनारे निजाम करती हुई मया गिता को पाठिका का योग ज्ञान उपदेश । "
- २४ सयोगिता का अपना हठ न छोड़ना । १३४६

(५१) हासीपुर युद्ध ।

(इक्यावनवा समय ।)

- १ दिल्ली राज्य का सरहद्द में कन्नौज का पौज का उपद्रव करना । १३४७
- २ पृथ्वीराज का हासीपुर का रक्षा के लिये सामंतों का भेजना । "
- ३ हासीपुर का मोरचा पक्का कर के पृथ्वीराज का निकार खेलने को जाना । "
- ४ बलोच पहारी का शहाबुद्दीन के साथ हामीगढ पर चढ़ाई करने का पडयत्र रचना । १३४८
- ५ पृथ्वीराज का उक्त वर्ष अजमेर में रहना । "

- ६ बलोच पहार का पत्र पाकर शहाबुद्दीन का प्रसन्न होना । १३४९
- ७ शहाबुद्दीन का अपनी बेगमों को मक्के भेजना । "
- ८ हासीपुर में उपस्थित पृथ्वीराज के सामन्ता का उगण । "
- ९ बलोच पहार का सन्धिम वर्णन । १३५०
- १० बलोच पहार का हासीपुर में स्थानागत होना ।
- ११ बलोच पहार का शहीद बेगमों के लिये रास्ता देने को पञ्जनराय से कहना और खुशखबर का उमसे नहीं करना । १३५१
- १२ बड़े साज बाज के साथ बेगम का आना और चामडराय का उसे लूटने की तय्यारी करना । "
- १३ बेगम के पडाव का वर्णन । "
- १४ बलोच पहारी का सामंतों के पास जाकर शाह का वर्णन करना । १३५२
- १५ सामंतों का रात को घाना करके बेगम को लूटना । "
- १६ बेगम के सब साथियों का भाग जाना और बेगम का सामन्ता से प्रार्थना करना । १३५३
- १७ घन द्रव्य लूटकर चामडराय का हासीपुर को लौटना और गमों का शहाबुद्दीन के यहां जा पुकारना । १३५३
- १८ बेगम का शाह के मुखमंथी सेमकों को धिक्कार देना । १३५४
- १९ माता के मित्राप वाक्य सुनकर शाह का सकुचिन और क्रोधित होना । "
- २० शहाबुद्दीन का अपने दरबारियों से सब हाल कहना । १३५५
- २१ शहाबुद्दीन का 'माता की मर्यादा कथन कर के दिल्ली पर चढ़ाई के लिये तय्यारी का हुक्म देना । "

- २२ तत्तार खा का शाह की आज्ञा मान
कर मद के लिये फरमान भेजना । १३५६
- २३ शहाबुद्दीन का दृढ़ता का वर्णन । ”
- २४ शहाबुद्दीन का राजसी तेज वर्णन । १३५७
- २५ शहाबुद्दीन का अपने योद्धाओं की
खातिर करना । ”
- २६ शहाबुद्दीन का अपने मंत्री से वीर
चहुआन पर अवश्य विजय प्राप्त
करने की तरकीब पूछना । ”
- २७ राजमंत्रियों का उपयुक्त उत्तर देना । १३५८
- २८ शाह का तत्तार खा से प्रश्न करना । ”
- २९ तत्तार खा का हासीपुर पर चढ़ाई
करने की कहना । ”
- ३० हासीपुर पर चढ़ाई होने का मसौदा
पक्का होना । १३५९
- ३१ शहाबुद्दीन की आशा । ”
- ३२ तत्तार खा की प्रतिज्ञा । ”
- ३३ शाही दरबार में बलोच पहारी का
उपस्थित होना । ”
- ३४ गजनी के राजदूतों का सिन्ध पार
होना । १३६०
- ३५ यवन सेना का हिन्दुस्तान की हद्द
में बढ़ना । ”
- ३६ तत्तार खा और खुरसान खा की
अनी सेनाओं का आतक और
शोभा वर्णन । ”
- ३७ तत्तार खा का पड़ाव दस कोस
आगे चलाना । १३६१
- ३८ शाही सेना का हासीपुर के पास
पड़ाव डालना । ”
- ३९ शाही सेना का हासीपुर को घेरना । १३६२
- ४० मुसलमानी जातियों का वर्णन । ”
- ४१ यवन सेना की व्यूह रचना का
वर्णन । ”
- ४२ युद्ध वर्णन । १३६३

- ४३ शाही फौज का बल कर के किले
का फाटक तोड़ देना । १३६३
- ४४ चामुंडराय के उत्कर्ष वचन । १३६४
- ४५ युद्ध होते होते शाम होजाना और
युद्ध बन्द होना । ”
- ४६ प्रातःकाल होते ही पुनः युद्धारंभ
होना । ”
- ४७ गढ में उपस्थित सामन्तों के नाम । १३६५
- ४८ दोनों सेनाओं में युद्ध आरम्भ होना । ”
- ४९ युद्ध का वर्णन और दस चोट में
यवन सेना का परास्त होना । ”
- ५० इस युद्ध में खेत रहे जीवों की
संख्या । १३६६
- ५१ अलौल खा का प्रतिज्ञा करके धावा
करना । १३६७
- ५२ दोनों ओर से बड़े जोर से लड़ाई
होना । ”
- ५३ लड़ाई का वाक्चित्र वर्णन । ”
- ५४ सामन्तों की जीत होना और यवन
सेना का परास्त होकर भागना । १३६८

(५२) द्वितीय हांसी युद्ध ।

(वाचनवां समय ।)

- १ तत्तार खा का पराजित होना सुन
कर शहाबुद्दीन का क्रोध करके
भाति भाति की यवन सेना एक-
त्रित करना । १३६९
- २ वरन वरन की व्यूहबद्ध यवन
सेना का हासीपुर को घेरना । १३७०
- ३ शहाबुद्दीन का सामन्तों को किला
छोड़ देने का सदेसा भेजना । ”
- ४ शहाबुद्दीन का सदेसा पाकर साम-

- तों का परस्पर सलाह और बाद
विवाद करना । १३७१
- ५ सामन्तों का भगवती का ध्यान करना । "
- ६ हासी के किले में स्थित सामन्तों के
नाम और उनका वर्णन । "
- ७ कुछ सामन्तों का किला छोड़ देने
का प्रस्ताव करना परंतु देवराज
बगरी का उसे न मानना । १३७२
- ८ कवि का कहना कि समानुसार
सामन्त लोग चक गए तो क्या । "
- ९ देवराज बगरी का वचन । १३७३
- १० कहन और कमधुज का बगरी
राय के वचनों का अनुमोदन करना । "
- ११ सातों भाई तत्तार खा का तलवारें
बाधना और हासीगढ़ पर आक्रमण
करना । "
- १२ अथवा सामन्तों की अकर्मव्यपत्ता
और देवराज की प्रशंसा वर्णन । १३७४
- १३ देवराज बगरी का वीरता । १३७५
- १४ युद्धारम्भ और युद्धस्थल का चित्र वर्णन । "
- १५ देवराज बगरी का वीरता के साथ
मारा जाना । १३७६
- १६ वीर बगरी का मोक्ष पाना । "
- १७ इन युद्ध में मृत वीर सैनिकों की
नामावली ।
- १८ एक सहस्र सिपाहियों के मारे जाने
पर भी सामन्तों का किला न
छोड़ना । १३७७
- १९ पृथ्वीराज को स्वप्न में हासीपुर का
दर्शन देना । ,
- २० पृथ्वीराज प्रति हासीपुर का वचन । १३७८
- २१ हासीपुर की यह गति जान कर
पृथ्वीराज का धक्का कर कैमास से
सलाह पढ़ना । "
- २२ कैमास का राजल समरसी जी को
बुलाने के लिये कहना । १३७९
- २३ राजल समरसी जी का हासीपुर की
तरफ चलना । ,
- २४ हासीपुर को छोड़कर आए हुए सा-
मन्तों का पृथ्वीराज से मिलना । "
- २५ पृथ्वीराज का सब सामन्तों को समझा-
बुझा कर सात्वना देना । १३८०
- २६ पृथ्वीराज का सामन्तों के सहित
हासीपुर पर चढ़ाई करना । "
- २७ पृथ्वीराज के हासीपुर पर चढ़ाई की
तिथि । "
- २८ सुसज्जित सेना सहित पृथ्वीराज की
चढ़ाई का आतंक वर्णन । १३८१
- २९ राजल का बहुआन के पहलेही
हासीपुर पहुँच जाना । १३८२
- ३० समरसीजी के पहुँचतेही यवन सेना
का उनसे भिड़ पड़ना । "
- ३१ समरसिंह जी की सिपाहगिरी और
कुतिलेपन का वर्णन । १३८३
- ३२ यवन और राजल सेना का युद्ध
वर्णन । "
- ३३ समरसीजी की वीरता का बखान । १३८४
- ३४ समरसीजी के भाई अमरसिंह का
मरण । ,
- ३५ युद्धस्थल का चित्र वर्णन । "
- ३६ यवन सेना की ओर से तत्तार खा का
धारा करना । १३८५
- ३७ घोर युद्ध वर्णन । "
- ३८ इसी युद्ध के समय पृथ्वीराज का आ-
पहुँचना । १३८६
- ३९ अमर की वीर मृत्यु और उसको
मोक्ष प्राप्त होना । १३८८
- ४० पृथ्वीराज के पहुँचतेही खाही सेना
का बल हास होना । "
- ४१ पृथ्वीराज का यवन सेना को दवाना । "

४२ रावल और चहुआन की सम्मिलित शोभा वर्णन ।	१३८८
४३ रणस्थल की बसत ऋतु से उपमा वर्णन ।	"
४४ मुख्य मुख्य वीरों के मारे जाने से शाह का हतोत्साह होना ।	"
४५ यवन सेना के मृत योद्धाओं के नाम ।	"
४६ यवन वीरों की प्रशंसा ।	१३९०
४७ हिन्दू पक्ष की प्रशंसा ।	३३८१
४८ सामन्तों का वीरता मय युद्ध करना ।	"
४९ युद्धस्थल का वाकचित्र दर्शन ।	"
५० धोर युद्ध उपस्थित होना ।	१३८२
५१ पृथ्वीराज के वीर वेप और वीरता की प्रशंसा ।	१३९३
५२ पृथ्वीराज के युद्ध करने का वर्णन ।	"
५३ युद्ध का आतंक वर्णन ।	१३८४
५४ कविकृत वीर गत-मुक्ति वर्णन ।	"
५५ वीर रस प्रभात वर्णन ।	"
५६ प्रातःकाल होतेही दोनों सेनाओं का सज्ज होना ।	१३८५
५७ प्रभात वर्णन ।	१६८६
५८ सूर्य की स्तुति ।	"
५९ सूर्यीर लोगों का युद्ध उत्साह वर्णन ।	१३८७
६० सामन्तों की रणोद्यत श्रेणी का क्रम वर्णन ।	"
६१ यवन सैनिकों का उत्साह ।	"
६२ युद्ध का अचम आनन्द कथन ।	१३८८
६३ युद्ध में मारे गए वीरों के नाम ।	"
६४ तत्तार खा का मनहार होकर भागना ।	"
६५ खेत भरना होना और लार्शों का उठवाया जाना ।	"

६६ युद्ध में मृत वीरों के नाम ।	१३८६
६७ हासी युद्ध सम्बन्धी तिथि वारों का वर्णन ।	"
६८ रावल और पृथ्वीराज का दिल्ली को जाना ।	१४०१
६९ रायल का दिल्ली में बीस दिन रहना ।	"

(५३) पञ्जून महुवा प्रस्ताव ।

(तिरपनवां समय ।)

१ कविचन्द की स्त्री का पूछना कि महुवा युद्ध क्यों हुआ ।	१४०१
२ कविचन्द का उत्तर देना ।	"
३ खुरसान खा का महुवा पर आक्रमण करना ।	"
४ शाही सेना का वर्णन ।	"
५ निर्दुर्ग का पृथ्वीराज के पास दूत भेजना ।	१४०२
६ राजा का दरबार में कहना कि महुवा की रक्षा के लिये किसे भेजा जाय ।	"
७ सब लोगो का पञ्जूनराय के लिये राय देना ।	"
८ पञ्जून राय की प्रशंसा ।	"
९ पञ्जून राय को जागीर और सिरोपाव देकर आज्ञा देना ।	१४०३
१० पञ्जून की प्रतिज्ञा ।	"
११ पञ्जूनराय और शहाबुद्दीन का मुकाबिला होना ।	१४०४
१२ युद्ध वर्णन ।	"
१३ पञ्जूनराय की वीरता ।	"
१४ यवन सेना का भाग उठना ।	१४०५

- १५ पञ्जनराय की प्रशंसा । १४०५
 १६ पञ्जनराय का दिल्ली आना और
 शाह का गजनी को जाना । "

१४) पञ्जन पातसाह युद्ध प्रस्ताव ।

(चौथनवा समय ।)

- १ और साम तों को छोड़कर पञ्जन का
 नागौर जाना । १४०७
 २ मनहीन शाह का गजनी को जाना
 और पञ्जन राय को परास्त करने
 की चिन्ता करना । "
 ३ धर्मापन का गजनी को समाचार देना । "
 ४ शहाबुद्दीन का मंत्री से पञ्जनराय
 के पास दूत भेजने की आज्ञा देना ।
 इधर सेना तय्यार करना । १४०८
 ५ यवनदूत का नागौर पहुँचना । "
 ६ पञ्जन राय का हँस कर निधडक
 उत्तर देना । "
 ७ दूत का गजनी जाकर शाह से

- पञ्जनराय का सदेसा कहना । १४०६
 ८ शहाबुद्दीन का कुपित होना । "
 ९ इधर नागौर में किलेबंदी होना । "
 १० पञ्जन राय की नीर व्याख्या । १४१०
 ११ यवन सेना का नागौर गढ़ घेर
 कर नोल चलाना । "
 १२ राजपूत सेना का घबड़ाना और
 पञ्जनराय का उसे धैर्य देना । "
 १३ पञ्जनराय का यवन सेना पर रात
 को धावा मारना । १४११
 १४ मुसल्मान सेना के पहुरुओं का शोर
 मचाना और सेना का सचेत होना । "
 १५ हिंदू और मुसल्मान दोनों सेनाओं
 का युद्ध । १४१२
 १६ दोनों में तलवार का युद्ध होना । "
 १७ पञ्जनराय के पुत्रों का पराक्रम । १४१३
 १८ पञ्जनराय का शहाबुद्दीन को पकड़-
 ना और किले में चला जाना । १४१४
 १९ यवन सेना का भागना । "
 २० पृथ्वीराज का दड लेकर शहाबुद्दीन
 को पुन छोड़ देना । "



Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-9

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF
CHAND BARDÁI,
EDITED

BY

Mohunlal Vishnulal Pandia, Radha Krishna Das

AND

Syam Sundar Das, B A
CANTOS XXIX and XXXVI



महाकवि चंद वरदाई

द्वारा

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णदास

और

इयामसुन्दरदास की प

से

सम्पादित किया ।

ग्रन्थ २६ से ३६ तक ।

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS AND PUBLISHED BY THE
NAGARI-PRACHARINI SABHA BENARES

1907

सूचीपत्र ।

०

(२६) घधर की लड़ाई	पृष्ठ ९४५ से ९५८ तक
(३०) करनाटी बध	" ९५९ " ९६६ "
(३१) पीपा युद्ध	" ९६७ " ९९३ "
(३२) करहे रो जुद्ध	" ९९५ " १०१३ "
(३३) इन्द्रावती व्याह	" १०१५ " १०२९ "
(३४) जैतराव जुद्ध	" १०३१ " १०४३ "
(३५) कांगुरा जुद्ध	" १०४५ " १०५४ "
(३६) हंसावती व्याह (अपूर्ण)	" १०५६ " १०७२ "
रासोसार	" ४१ " ७२ "

०

पृथ्वीराज रासो ।

तीसरा भाग ।

अथ धधर की लड़ाई रो प्रस्ताव लिख्यते ।

(उन्तीसवां समय ।)

पृथ्वीराज साठ हजार सवार लेकर दिल्ली का प्रबन्ध कैमास
को सौंप कर शिकार खेलने गया, यह समाचार
गजनी में पहुंचा ।

कवित्त ॥ दिल्लीपति प्रथिराज । अरविन आपेटक पिस्सिय ॥

साठ सहस असवार । जाइ लग्गा घर दिल्लीय ॥

धूनि घरा पतिसाह । रहे पेसोर सुथनाय ॥

सध्य लिये सामत । दिल्ली कैमास सु जानय ॥

अगया सु रमय प्रथिराज घर । गज्जन वै घर धूसियै ॥

दूसरौ इद्र दिल्लेस वर । सुभर सरस ढिग सुम्भियै ॥ छ० ॥ १ ॥

दूतों ने जाकर गजनी में शाह को समाचार दिया कि पृथ्वीराज
धूमधाम के साथ शिकार खेलने को निकला है ।

दूहा ॥ गई पवर अमान की । उट्ट चढे असवार ॥

दिल्ली घर लिये तपत । दिसि गज्जनै पुकार ॥ छ० ॥ २ ॥

प्रथीराज साजत पर्वग । है गै नर भर भार ॥

दिल्लीपति आपेट चढ़ि । कुहकवान छयनारि ॥ छ० ॥ ३ ॥

छेरा करि पेसोर नृप । सहस सट्टि सुभ वाज ॥

सोन पंथ विच पथ दोइ । गल ग्रज्जै अगाज ॥ छ० ॥ ४ ॥

(१) ए पिस्सिय, दिल्लीय । (२) ए क को धरसिय (३) ए ह को मत्तिय । (४) ए पच ।

शहाबुद्दीन के भेजे हुए गुप्त चर ने पृथ्वीराज के शिकार खेलने का समाचार लेकर गज़नी में जाहिर किया।

कवित्त ॥ गोरी पठए दूत । चले चारों चतुरन्तर ॥

लीय धरि प्रथिराज । चले पछे गजजन धर ॥

किय सलाम जब दूत । तवहि ततार सु बुगिभय ॥

कहा करंत दिलेस । चढ़त गिरवर धर धुज्जिय ॥

संग सत षट् सामंत चलि । तीन पाव लप्पह तुरी ॥

अनि स्वर वीर नरवर सकल । उड़ी पेह धर उप्परी ॥ छं० ॥ ५ ॥

आपेटक दिन रमय । संग स्वानं घन चीते ॥

नावक पावक विपुल । जकि दिन जामह जीते ॥

सहस तुरी बध्यह सु । संत मेधा कलि कंठिय ॥

सौहगोस पुच्छिय सु । लंब सिरपां सिर पुच्छिय ॥

जुरा रू वाज कूही गुहा । धानुकी दारु धरा ॥

वहु काल भाल वदकं विला । जम भय तव जित्तिय धरा ॥ छं० ॥ ६ ॥

सुलतान ने प्रतिशा की कि जब मैं पृथ्वीराज को जीत

लूंगा तभी हाथ में तराबीह (गाला) लूंगा ।

रमै राज आपेट । सत एकल बल भंजै ॥

पंच पश्य परिगाह । रंग अप्पन मन रंजै ॥

सहस एका वाजिच । स्वर किरनह संपेपै ॥

सुनि गोरी साहाब । दाह दिल महन बिसेपै ॥

जितौब जव्व प्रथिराज को । तव तसबी कर मंडिहौ ॥

टामंक सह नदह करो । जुगति साह तव छंडिहौ ॥ छं० ॥ ७ ॥

खुरारान, रूम, हबश और बलख आदि देशों में सुलतान का

सहायता के लिये पत्र भेजना ।

(१) क. को. ए.-सित्त ।

(२) मो. को. क.-पुच्छिय ।

(३) ए. क. को.-जु ।

(४) मो.-ठडिहौ ।

दूहा ॥ देस देस कागद फटे । पैसगी पुरसान ॥

रोम हवस अए वलक मै । फट्टे पहु अप्पान ॥ छ० ॥ ८ ॥

पांच लाख सेना लिए सुलतान का पृथ्वीराज की ओर आना
और दूत का यह समाचार पृथ्वीराज को देना ।

कवित्त ॥ सिलह लोह सज्जत । लण्य पचह मिलि पध्पर ॥

कूच कूच परि पैर । गुरज धारी लप गध्पर ॥

कोस दह दह कूच । आइ गिरवान सपत्तौ ॥

दौरि दूत दिलेस । जाम कर चय दिन वित्तौ ॥

मुकाम कियौ प्रथिराज नृप । तहा पवरि कहि दूत सब ॥

गोरी नरिद है नै सुभर । सजि आयौ उप्पर सु अप ॥ छ० ॥ ९ ॥

चैत्र शुक्ल ३ रविवार को दो पहर के समय पृथ्वीराज ने
कूच किया और वह धध्धर नदी पहुचा ।

चैत मास रवि तीज । सेत पध्पह काल चदह ॥

भयौ सुदिन मध्यान । चय्यौ प्रथिराज नरिदह ॥

काटका सवर हिलोर । भार सेसह करि भगिय ॥

चडि सामत सकज्ज । नह सुर 'अमर जगिय ॥

गज रोर सोर बधे घटा । सिलह बीज सिलकावलिय ॥

पप्पीह चौह सहनाइ सुर । नदि धध्धर मेलान दिय ॥ छ० ॥ १० ॥

शहाबुद्दीन की सेना के कूच का वर्णन ।

दूहा ॥ आयौ आतुर उप्परह । पैसगी पतिसाह ॥

पप्पारै वादल प्रवल । भग्गे राह विराह ॥ छ० ॥ ११ ॥

वरन वरन तहा देपिये । घटा रव गजराज ॥

सन्नाह । सन्नाह रजि । पध्पर सध्पर साज ॥ छ० ॥ १२ ॥

भई हलोहल सेन सब । पान व्यूह बर घेत ॥

लण्य एक भर अग मै । छव ध-यो सिर जैत ॥ छ० ॥ १३ ॥

हुअ टासंका सु दिसि विदिसि । हुअ संनाह सनाह ॥

हूअ हलोहल सुभमरन । दोज दिन इके राह ॥ छं० ॥ १४ ॥

सेना का वर्णन ।

चोटका ॥ हुअ सद सु सदह नद भरं । धन धेरिका कीय सु फौजवरं ॥

लप लप मिले दल संमिलयं । नर भदव वाहल संमिलयं ॥

छं० ॥ १५ ॥

सु अगे हथनारि अपार सजं । तिन देषत काडर दूरि भजं ॥

तिन पिठु हजार उमत चले । छह रित 'अरंत' करी तिहजे ॥

छं० ॥ १६ ॥

तिन पिठुह फौज गहव्वरयं । धरि गोरिय सुठु करं धरियं ॥

कामनेत अभूल सु लप्य लियं । तिन मध्य ततारह छव दियं ॥

छं० ॥ १७ ॥

लप दीय गुरज्ज स गप्परियं । पुरसान दियं दल पप्परियं ॥

बलकी उभराव सु सत सयं । निसुरतह लप्य हुकास भयं ॥

छं० ॥ १८ ॥

पुरसान तनं दल उप्पटयं । मनुं साडर सत उलटु भयं ॥

'जल बानिय' 'पानिय' अइ सरं । लोहानिय पानिय धेत घरं ॥

छं० ॥ १९ ॥

हवसी उजवक्क हलीर भरं । कलवानिय रुमिय अण्ण धरं ॥

सरबानि ऐराकि सुगल कती । बहु जाति अनेक अनेक भती ॥

छं० ॥ २० ॥

मुसलमान सेना का व्यूहवद्ध होकर नदी पार करना ।

कवित्त ॥ फौज बंधि सुरतान । मुष्प अगे ततारिय ॥

मधि नायक सुरतान । नील पुरसान सु भारिय ॥

भोती निसुरति घान । लाल हवसी कोलंजर ॥

पाचि पीठि रुतांस । पना बहु भांति अवर नर ॥

उत्तरिय नह गोरौस पहु । वज्ज। दस दिसि वज्जिया ॥

मानो कि भइ उलटी नही । साइर 'अबु गरज्जिया ॥ छ० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना को सज्जित कर

चामण्डराव को आगे किया ।

दृष्टा ॥ दिखीपति फौजह रची । दियौ जैत सिर छच ॥

चामण्ड रा अगौ भयौ । मनो सु गिरवर गत ॥ छ० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज ने अपनी सेना की गरुडव्यूहाकार रचना की ।

कवित्त ॥ फौज रची सामत । गरुडव्यूह रचि गड्डिय ॥

पय भाग प्रथिराज । चच चावड सु गड्डिय ॥

गावरि अत्ताताइ । पाइ गोइद सु ठड्डिय ॥

पुच्छ कण्ठ चौहान । पेट पम्मारह पड्डिय ॥

सुडाल काल अगो धरे । 'काढे दोइ कलहन्न किय ॥

चालत बान गोरै प्रवल । मानहु अधिकि मार दिय ॥ छ० ॥ २३ ॥

दोनों सेनाओं का साम्हना होना । एक हजार मीरों

का कैमास को धेरना ।

तत्तारह उप्पर । चित्त चावड चलायौ ॥

दुहु फौज अगज । दुहु भुज भार भलायौ ॥

मीर बान वरपत । धार धार। हर लगौ ॥

बाही चामण्डराइ । भूमि तत्तारह भगौ ॥

उतरे मीर सै पच दुइ । दाहिमै किनौ दहन ॥

पहिलै जु भुम्भक दिन पहिलकै । मच्यौ जुध जानै मदन ॥ छ० ॥ २४ ॥

तत्तार खा का धायल होना । मीरों की वीरता ।

भूमि पच्यौ तत्तार । मारि कमनेत प्रहारै ॥

एक धाव दोइ टूक । परे धारन मुहु धारै ॥

१पुर बजै पुरतार । चमकि चामंड चलायौ ॥
 भरै बज्य सिर हथ्य । एक बहु लष्यन धायौ ॥
 जब परै बूंद तब बीर हुआ । सत धरी साहस धरै ॥
 तिनमा २कटक त्रिविधी घड़ा । एक एक पग अनुसरै ॥ छं० ॥ २५ ॥

कैमास का धायल होना और जैतराव का
 आगे बढ़ कर उसे बचाना ।

पान पान आघूंद । अठ सहसं बहु गप्पर ॥
 परिय पंति अवनैस । पारि बहु ३अप्पर गप्पर ॥
 ४हयौ नेज चामंड । बीर दो सहस लरै भर ॥
 हस्ति एक विन दंत । तमह तिन मयौ सहस कर ॥
 दाहिगराव मुखयौ पयौ । दौयौ जैत महा बलिय ॥
 मानों कि अग्न जग्जर वही । कलि मरगो रिन बट कलिय ॥
 छं० ॥ २६ ॥

चावंडराव ने ऐसा धोर युद्ध किया कि सुलतान की
 सेना में कहर मच गया ।

धपौ ५सेन सुरतान । ६मुट्टि छुट्टी चोवहिसि ॥
 मनु कपाट उधयौ । कूह फुट्टिय दिसि विहिसि ॥
 मार मार भुष किन । लित्र चावंड ७उपारे ॥
 परे सेन सुरतान । जाम इकह परि धारे ॥
 गल बज्य धत गाढ़ौ ग्रह्यौ । जानि सनेही भिंटयौ ॥
 चामंडराइ करि वर काहर । गोरी दल बल ८कुट्टयौ ॥ छं० ॥ २७ ॥

जैतराव के युद्ध का वर्णन ।

जैत राइ जडधार । लियौ कर दंत मुष कर ॥
 परे बज्य सिर धार । मनो सेना सिर उपर ॥

(१) ए.-पुर ।

(२) ए.-कमंध ।

(३) मो.-परिकर, क.-पप्पर ।

(४) क.-पयौ, ए.-भयौ ।

(५) मो.-मुट्टि ।

(६) मो.-तुट्टि ।

(७) ए.-उपारे ।

(८) ए. क. को.-छुट्टयौ ।

पुरसानी वगाल । मनहु 'डहूर रमावै ॥
 भरै पच जोगिनी । डक नारद वजावै ॥
 अपहरा गीत गावत इला । तुवर तत वजावही ॥
 सुरतान सेन दिसैत वर । 'मग्य मग्य जस गावही ॥ छ० ॥ २८ ॥
 युद्ध का रङ्ग देख कर सुलतान सिर धुनने लगा, जैतराव
 और खुरासान खा का तुमुल युद्ध हुआ ।

सिर धुनत पतिसाह । धाह सुनि सेना रुथिय ॥
 लुथिय लुथिय मुह धार । परे बथन सों बथिय ॥
 जम सों जम आहुरै । स्हर जुटै दोइ घुट्टै ॥
 नई गठि तन जोग । स्हर मुडावलि घुट्टै ॥
 पुरसान जैत अन्वूधनिय । धार धार लुह कटिया ॥
 ऐसो न जुह दिग्यौ सुन्यौ । दासन मेछ दवटिया ॥ छ० ॥ २९ ॥
 मनु दादस स्हरज्ज । हथ्य चद्रमा महा सर ॥
 जिन उप्पर पलमलै । ताहि धर गोरिय सुभर ॥
 काटका क्लृह किलकार । सार परमार वजायौ ॥
 भिरि भेज्यौ सुरतान । एक एकह सुप धायौ ॥
 सिर सार धार जुयौ प्रहर । तव दौ-थौ पञ्जून भर ॥
 निसुरति पान लप्पह वली । लप्प एक पाइल सुभर ॥ छ० ॥ ३० ॥

घोर युद्ध हुआ । निसुरत खा मारा गया । दोपहर के
 समय पृथ्वीराज की विजय हुई ।

भुजगी ॥ मचे 'कूह कूह, बहै सार 'सार । चमकै चमकै, करार सु 'धार ॥
 भभकै भभकै, बहै रत्त धार । सनकै सनकै, बहै वान 'भार ॥
 छ० ॥ ३१ ॥
 हवकै हवकै, बहै सेल मेल । हलकै हलकै मची ठेल ठेल ॥
 कुकै कूक फूटी, सुरतान ठान । वकौ जोग माया, सुर अप्प यान ॥
 छ० ॥ ३२ ॥

(१) ए रु को दहूक ।

(२) ए-वग्य ।

(३) ए रु को हूक हूक ।

(४) ए रु को धार ।

(५) मो धार ।

वहै चट्ट पट्ट, उधट्ट उलट्ट । कुलट्टा 'धरै' अण्ण, अण्ण उधट्ट ॥
 दडक बजै सथ्य, मथ्य सुट्ट ॥ कडक बजै सैन, सेना सुधट्ट ॥
 छं० ॥ ३३ ॥

वहै हथ्य परभार, सिरदार सार ॥ परे सेन गोरी, वहै रत 'धार' ॥
 पन्थौ पान भिसुरति, सेना सहित ॥ हुऔ स्वर मध्यान, दिखे सजित ॥
 छं० ॥ ३४ ॥

एक लाख कालंजरी का धावा, कन्ह चौहान के आंख की
 पट्टी का खुलना और उसका घोर युद्ध करना ।

कवित्त ॥ कालंजर दूक लण्ण । सार सिंधुरह गुड़ावै ॥
 भार भार मुष चवै । सिंध सिंधा मुष धावै ॥
 दौरि कण् नरनाह । पट्टी छुट्टी 'अंघिन' पर ॥
 हथ्य लाइ 'किरवान' । रुंड भाला किनिय हर ॥
 बिहु बाह लण्ण लोहै परिय । जानि करिन्नर दाह किय ॥
 उच्छारि पारि धरि उपरें । कलह कियो कि उधान किय ॥
 छं० ॥ ३५ ॥

भुजंगी ॥ छुट्टी अंघि पट्टी, मनो उगि स्वर ॥ गिरे काइर, स्वर बद्धे सनूर ॥
 लियं हथ्य करि वार, भंजै कपार ॥ पियै जोगनी पच, कौयै डकार ॥
 छं० ॥ ३६ ॥

वहै अण्णरी हथ्य, अन्नेक सथ्य ॥ करं स्वर संहालियै, धलि बथ्य ॥
 करै काज साइ, समप्य सुधट्ट ॥ लियं कण् गोरी, तनं भारि थट्ट ॥
 छं० ॥ ३७ ॥

कालंजर के टूटते ही सुलतान की सेना का भागना । कन्ह
 चौहान का कमान डाल कर सुलतान को पकड़ लेना ।

कवित्त ॥ कालंजर जब परिय । भगिय सेना पतिसाहिय ॥
 पंच फौज एकट्ट । कण् करवारि 'संहारिय' ॥

(१) ए.-धरा ।

(२) मो.-पारं ।

(३) ए.-अंघनि ।

(४) ए. क. को -करिवार ।

(५) क.-सम्माहिय ।

घर पारे बहु मीर । सथ्य जब सेना भगिये ॥

गर यती कमान । लियौ गोरीय उछगिय ॥

उतरे मीर पच्छे फिरे । दाय दाय सुप हुकयौ ॥

पञ्जून ब्रेलि सुप मीर कौ । कन्ह लोइ गोरी बयौ ॥ छ० ॥ ३८ ॥

पञ्जूनराव का मीरों को काट काट कर ढेर कर देना ।

कन्ह का सुलतान को पकड कर अपने घर ले आना ।

जतु उद्योन हलाइ । पवन चसै ज्यौ बाधै ॥

त्यो पञ्जून नरिद । मीर जमदहूँ साथै ॥

परे मीर सै सत । बिए रन छडिव भञ्जे ॥

चामर छच रपत । तपत लुट्यै ज्यों सज्जे ॥

कन्ह नरिद पतिसाह लै । गयौ थान अम्पन बलिय ॥

पमार सिध लग्यौ सु पय । पाव भावकीरति चलिय ॥ छ० ॥ ३९ ॥

कन्ह का सुलतान को अजमेर लेजाना और उसे

वहाँ किले में रखना ।

*रहै कन्ह अजमेर । * गयौ चहुआन जैत लिय ॥

धरि अगोरी नरिद । दौरि प्रथिराज सुद्ध दिय ॥

गयौ अम्प अजमेर । * लिए पतिसाह नरिदह ॥

दिन किम्पै महिमान । पास ठह्रा रहै दृढ़ ॥

बैठारि तपत सिर छच दिय । सभा विराजे सु पद्मवर ॥

सिर फेरि पैर दिज्जै दुनौ । यों रण्यै पतिसाह दर ॥ छ० ॥ ४० ॥

पृथ्वीराज की जीत होने का वर्णन और

लूट के माल की संख्या ।

एक लण्य बाजिच । सहस तीनह मय मत्तह ॥

लण्य एक तोपार । तेज ऐराकी तत्तह ॥

(१) ए को हरै ।

* ए रु को लिए पतिसाह नरिद हिय ।

* ए रु को तहा चहुआन जैत लिह ।

आरावा हथिनी । सत्त सै सत्त सु भारिय ॥
 चामर छत्र रषत्त । साहि लिन्निय घर सारिय ॥
 सामंत स्वर बहुविधि भरिग । पट्टे धाव सु बंधियै ॥
 रन जीत सोधि संभर धनी । बज्जे अनत सु वज्जियै ॥ छं० ॥ ४१ ॥

पृथ्वीराज को सब सामंतों का सलाह देना कि अबकी
 बार शहाबुद्दीन को प्राण दंड दिया जाय ।

रचौ सभा प्रथिराज । स्वर सामंत बुलार ॥
 गोथँद निददुर सलष । कन्ह पतिसाह पठार ॥
 करौ दंड सिर छत्र । राम प्रोहित पुंडीरह ॥
 रा पज्जून प्रसंग । राव हाहुंलि हंमौरह ॥
 इतने मत मगभूह मिले । हम मारै छोरे न अब ॥
 छैहै न हास्य अबकें हमें । फिर न आइहै इह सु काव ॥ छं० ॥ ४२ ॥
 कन्ह का कहना कि अबकी पंजाब देश ले कर
 दरो छोड़ दिया जाय ।

दिए देस घंधार । दिए पंछिवानं सारं ॥
 कासमीर कविलास । दिए धरटिला पहारं ॥
 गज्जन रष्यै देस । वियौ समपै प्रथिराजह ॥
 ना तर छुट्टै नाहिं । कर हम उपपर काजह ॥
 बोलयौ कन्ह नरनाह सुनि । अबकें मारै कोद नह ॥
 पंजाब दियौ छुट्टै सु अब । यह हमीर दिग्गें हमहि ॥ छं० ॥ ४३ ॥

पृथ्वीराज का कन्ह की बात मानकर कुछ फौज के साथ लोहाना
 को राथ दे कर शाह को धर गेज देना ।

तब बुल्यौ प्रथिराज । कहै काका त्यों किजिय ॥
 जेता रंजक होइ । तिता लादा भरि लिजिय ॥
 जग्य कियौ पंडवन । हेम काचौ उन आन्यौ ॥

त्यू लभ्यौ पतिसाहि । लप्प लोहा हम मान्यौ ॥

करि दड कन्ह पतिसाह को । लोहानौ सथ्यै दियौ ॥

असवार सहस सथ्यो चले । कर सिर कन्ह इतौ कियौ ॥छ०॥४४॥

कन्ह का अजमेर से वादगाह को दिल्ली लाना । शाह का
कन्ह को एक मणि और राजा को अपनी तलवार
नजर दे कर धर जाना ।

करि जुहार म्व कन्ह । गयौ अजमेर दुरगाह ॥

तज्यौ कन्ह पतिसाह । बत सब जयौ अघपह ॥

ह्वै पुसाल गजनेस । दर्ई इके लाल सहित मनि ॥

कन्ह लेइ पतिसाह । गयौ दिल्ली सु ततच्छन ॥

मनुहार करिय सामत सब । तेग दर्ई दिल्लीसे वर ॥

दो अश्व करौ दोइ देय करि । साहि चलायौ अप्य घर ॥

छ० ॥ ४५ ॥

सुलतान का कुरान बीच मे दे कर कसम खाना कि अव
कभी आप से विग्रह न करुगा ।

करि सलाम गजनेस । करिय नव निह दिल्लीसर ॥

तम रपियो हम प्रीति । वरप मन सतह केसर ॥

पेसगी धर सौम । बीच पौरान कुरान ॥

जा तको तुम अवे । तवै तुम कडियो मान ॥

उतारौ अटक तौ मैं अवर । सुसलमान नाही धरौ ॥

तुम हम सु प्रीत चलिहै बहुत । छून अबै ऐसी करौ ॥छ०॥४६॥

सुलतान के अटक पार पहुचने पर उधर से

तत्तार खां का आकर मिलना ।

पहु चलयौ सुरतान । दियौ लोहानौ सथ्यै ॥

दूत चारि अनुसार । काल छुथ्यौ सें हृष्ट्यै ॥

गयौ बीस ग्दोलान । अटक उत्तरि इन पार ॥

(१) ९ को चाहि, चाह ।

सोवन पथ मेलान । सहस सह्ये असवारं ॥

निसुरति सुतन दरिया सुतन । आइ कियौ नहाम तहां ॥

आजान बाह महिमान किय । पल्यौ अप्पगज्जन रहां ॥छं०॥४७॥

रयसल को दूतों का स्वभाव देना उराका रोना ले कर
अटक उतर रास्ते में रोकना ।

रयसल हरी नवदृ । सहस अठारह सथ्ये ॥

हेरौ करि पतसाह । पुले लगाइन पथ्ये ॥

दूत चार अनुसार । कटक देण्यौ असवारह ॥

काह्यौ चरन सब सथ्य । सहस दोइ सेना सारह ॥

तिन बार वज्जि चंवाल बहु । सिलह सज्जि सिरदार सहुं ॥

उत्तय्यौ कटक छोरिय अटक । नहिं हुअौ उगंत पहु ॥छं०॥४८॥

गाथा ॥ वज्जै भुठि चंवालं । हथिय नेजं सु उप्परं फहरं ॥

जानि समुद उहालं । किय गजनेस हुकमयं मौरं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

लोहाना का शहाबुद्दीन को आगे भेज कर आप

रयसल का मुकाबला करना ।

कावित ॥ काह्यौ साह लोहान । कौन वज्जा वज्जाए ॥

दौरि दूत तिन बेर । धनी पछिवानह धाए ॥

कूच कूच पर कूच । कौन पछिवान धनी कहि ॥

तब जान्यौ रयसल । सेन आजान बयौ सह ॥

पतिसाह चलौ हौं पछि रहौं । सहस डेढ़ असवार दिय ॥

बंधेव फौज लोहान बर । दुहुं फौज टामंकं किय ॥ छं० ॥ ५० ॥

सबेरा होते ही रयसल आ पहुंचा, लोहाना से युद्ध होने लगा ।

अरुन किरन परसंत । आइ पहुंच्यौ रयसल ॥

वज्जै वान बिहंग । जानि जुटा दोइ मल ॥

संभाही आजान । तेग मानहु हवि दिठिय ॥

जानि सिपर मस्ति बीज । कंध रैसलह बुठिय ॥

लोहान तनी बज्जै लहरि । कोउ हस्यै कोउ उत्तरै ॥
 परनाल रुधिर चस्यै प्रबल । एक थाव एकह मरै ॥ छ० ॥ ५१ ॥
 दूहा ॥ मुह मुह चमकै दामिनी । लोह बज्यौ लोहान ॥
 इक उप्पर इक इक तर । लुथ्यै लुथ्य समान ॥ छ० ॥ ५२ ॥
 रयसल्ल का मारा जाना सुलतान का निर्भय गज़नी पहुंचना ।
 पयौ लुथ्य रयसल्ल तह । दुडि घेत लोहान ॥
 सुवर साह गोरी निभय । गयौ सु गज्जन थान ॥ छ० ॥ ५३ ॥
 तातार खां खुरासान खा आदि मुसाहबों का सेना सहित
 सुलतान से आकर मिलना और बहुत कुछ न्योछावर करना ।
 कवित्त ॥ ततारिय पुरतान । सुतन गोरी पय लग्गा ॥
 न्योछावर करि पैर । बहुत मनसा भय भग्गा ॥
 लप्प एक असवार । मित्यौ गोरी दल पप्पर ॥
 लप्प भये दरवेस । आइ पइ लग्गे गप्पर ॥
 उछछाह भयौ गज्जन इला । गयौ मझिक्त गोरी धनिय ॥
 दरबार भौर भौरन धन । मिलत आइ अप अपनिय ॥ छ० ॥ ५४ ॥
 दस दिन लोहाना वहा रहा, शाह ने सात हाथी और पचास
 घोडे लोहाना को दिए और पृथ्वीराज का दण्ड दिया ।
 डेरा दिय लोहान । करिय मनुहारि रोज दस ॥
 करिय सत आजान । तुरिय पचास अप्य बस ॥
 इह दिनौ लोहान । बियौ भेज्यौ न्यप राज ॥
 लादे दाइ हजार । सत सै तोजा साज ॥
 इक इक तुरी हथ्यौ सु इक । सामतन दीनौ सबै ॥
 मुह करिय कित्ति अनेक विधि । सुवर छरे फेरिय जबै ॥ छ० ॥ ५५ ॥
 लोहाना बिदा होकर दिल्ली की ओर चला । पृथ्वीराज ने
 एक एक घोडा और एक एक हाथी एक एक सरदारों
 को दिया और सब सोना चित्तौर भेज दी ।

सौध दर्ई लोहान । चल्थौ दिक्षीय पंथानं ॥
 संग सहस असवार । अप्प रिध वासव थानं ॥
 दिक्षीपति सामंत । कली छत्तीसछ दप्यै ॥
 मिल्यौ बाह आजान । वत्त सुरतान सु अप्यै ॥
 इक इक तुरिय हथ्यौ सु इक । सामंतन पठए धरै ॥
 सोब्रन्न रासि रंजक पहर । मुकलियै चिचंगपुरै ॥ छं० ॥ पूई ॥

चन्द कवि ने चित्तौर गें आकर सब रेना आदि रावल की
 भेट की, रावल ने चन्द का बड़ा सम्मान किया ।

गढ़ ^१चीतौड़ ^२दुरग । भट्ट पठयौ परिमानं ॥
 लादे सित्त सुरंग । सित्त लै ^३तुला प्रमानं ॥
 दोइ हथ्यौ मय मत । सत्त हैवर कुल राकिय ॥
 छत्र लियौ पतिसाह । जड़ित मनि मानिक साकिय ॥
 लै चंद चल्थौ चित्तौर गढ़ । जाइ समण्यौ रावरह ॥
 बहु दान दियौ रावर समर । चल्थौ भट्ट अप्पन धरह ॥ छं० ॥ पू० ॥

इति श्री कवि चन्द विरचिते प्रथिराज रासके धधर नदी
 की लड़ाई कन्ह पतिसाह ग्रहनं नाम ओगनतीरामो
 प्रस्ताव संपूरणम् ॥ २९ ॥

(१) ए. क. को.-चित्रकोट । (२) ए. क. को.-दुरगा । (३) ए. क. को.-तोल, तोल



अथ करनाटी पात्र समयौ लिख्यते ।

(तीसरा समय ।)

दूतों का दिल्ली का हाल समझ कर जैचंद से जाकर कहना ।

दूह । ॥ दूत चरित दिल्ली तनौ । देपि गयौ 'कमधञ्ज ॥

चढत पग सग्यौ मिल्यौ । सुवर बीर कमधञ्ज ॥ छ० ॥ १ ॥

करि पलपठ सुरतान सौ । दल भग्यौ सु विद्वान ॥

अब करनाटी देस पर । चढि चल्यौ चहुआन ॥ छ० ॥ २ ॥

यदुव की सेना सहित पृथ्वीराज का दक्षिण पर चढ़ाई करना ।

करनाटक देश के राजा का कर्नाटकी नामक वेश्या का

पृथ्वीराज को नजर करके संधि करना ।

कवित्त ॥ चढ्यौ सुवर चहुआन । बीर कर्नाट देस पर ॥

मिलि जइव वर सेन । तारि क्यौ सु तुग नर ॥

दधिन दछिन नरिद । सबै प्रथिराज सु गाही ॥

तिन राजन इक पाच । पठय नाइक घर थाही ॥

बर बीर जुइ कमधञ्ज करि । भीर भगी बर बीर 'अचि ॥

तिहि दिना बीर पञ्जून पर। पग मार वोहिथ्य 'मचि ॥ छ० ॥ ३ ॥

करनाटकी को लेकर पृथ्वीराज का दिल्ली लौट आना ।

दूह । ॥ लौ आयौ नाइक सथ । करनाटी प्रथिराज ॥

जच तच एकठ भये । 'सबै साज समाज ॥ छ० ॥ ४ ॥

संवत् ११४१ में दक्षिण विजय करके पृथ्वीराज का दिल्ली

में आकर करनाटकी को संगीतकला में अत्यंत

विद्वान केलहन नायक को सौंप देना ।

(१) ए - कसवञ्ज ।

(२) ए क को -अगि ।

(३) ए क को -मार्ग ।

(४) मो सब कमधञ्जहि साज ।

कवित्त ॥ संवत इकतालीस । दिवस प्रथिराज राज भर ॥
 अति सोमंत उभार । आइ अति अभ्र ठिसि धर ॥
 दिय थानक नाइक । नाम केएहन गुन देयं ॥
 अति संगीत सु विद्य । कला संजुत सुनेयं ॥
 ता सध्य चीय रतिरूप तन । वर चवद चातुर सकल ॥
 दुव तीस सु लच्छित मति विमल । अति मति अगनित विद्यधल ॥
 छं० ॥ ५ ॥

करनाटकी के नृत्य गान की प्रशंसा सुन कर पृथ्वीराज का
 उस के लिये कामातुर होना ।

बाधा ॥ संमलि वत सुयं प्रथिराज । अति अंगनि विद्योवल साजं ॥
 कला सपूरन पूरेन चंदं । पूरेन छाटका वरन विवदं ॥ छं० ॥ ६ ॥
 बानी जेम बीन कल सारं । स्वर जनु पंचम मंगल गुंजारं ॥
 नय सिध रूप रूपगति उत्तं । सुभ सोमंत प्रसंस प्रभुत्तं ॥
 छं० ॥ ७ ॥

देसन ताहि अवर नन दिष्यै । वासन महल मंगल तन दिष्यै ॥
 सुनि सुनि रूप कला गुन सुंदरि । जयौ काम नृपति उर अंदरि ॥
 छं० ॥ ८ ॥

अति सनमान सु नाइक दीनौ । बहुर प्रसंसन साधक कीनौ ॥ छं० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज की अंतरंग सभा का वर्णन ।

दुहा ॥ संक्र समय अंदर महल । किय सुराज ग्रह धाम ॥
 अप्य वयठौ राज तहँ । अनत सजगित काम ॥ छं० ॥ १० ॥

पृथ्वीराज के रामामंडप की प्रशंसा वर्णन ।

नराज ॥ जयं सु अति जगियं । सु धाम तेज तगियं ॥
 सजे सुमाल आसनं । अमोल रोहि वासनं ॥ छं० ॥ ११ ॥

सु दीप साम सोमय । सुगंध गंध ओमय ॥
 कपूर पूर जंभर । मृगज्ज वास अगर् ॥ छ० ॥ १२ ॥
 सु सज्जि सिध आसन । समोल रोहि वासन ॥
 कनक छत्र दंडय । सु रग रग मंडय ॥ छ० ॥ १३ ॥
 अबीर 'जघ्न कर्दम । सरोहि ग्रहे सदर्म ॥
 अभूत साय लोभयं । अबीर भूर ओमय ॥ छ० ॥ १४ ॥
 अयास धूम धोमर । प्रसार वास ओमर ॥
 प्रसून व्रत्र वन्नय । स भूषण स अम्भय ॥ छ० ॥ १५ ॥
 धन सु सार सम्भर । अभूत वास अम्भर ॥
 धुअ कुसम्भ केसर । सुर अभूत जे सुर ॥ छ० ॥ १६ ॥
 तेहां सु राज आसन । सरोहि सिध सासन ॥
 सुपाय अग रणिय । कला जु काम लणियं ॥ छ० ॥ १७ ॥
 प्रवीन भाव पायस । विचिच चिच पासय ॥
 भवति कति भूषण । सुबुद्धिय विदूषणं ॥ छ० ॥ १८ ॥
 प्रसून 'विद्धि वासन । अभूत 'सिद्धि आसन ॥
 वरप्य पोडस सम । अदोस रूपय 'रम ॥ छ० ॥ १९ ॥
 कला विद्यान विद्यथ । सु पास भूप सिद्धय ॥
 सिंगार सार सारय । अभूषण स धारय ॥ छ० ॥ २० ॥
 ग्रहे विदूषण चामर । सु विभक्त राजसामर ॥
 धरत कश्चि पन्नय । सु कठ यान सन्नय ॥ छ० ॥ २१ ॥
 सु धन्नसार पानय । सुगंध विद्ध मानय ॥
 करै सु 'द्रव्यक कर । सु सधि 'अद्धि समर ॥ छ० ॥ २२ ॥
 मृगार ग्रहे सोमय । अभूत दुत्ति ओमय ॥
 समोम धामय सज । सुवास वासव लज ॥ छ० ॥ २३ ॥

पृथ्वीराज की उक्त सभा में उपस्थित सभासदों के नाम ।

(१) क ए दच्छ, जच्छ, जछ ।

(२) मो विद्ध ।

(३) मो मद्धि ।

(४) को ए सम ।

(५) क-दर्प, ए-दण ।

(६) मो-अद्ध ।

कवित्त ॥ रच्चि धाम अभिराम । राज छरि यान वयट्टौ ॥
 दिपत ^१दीह सुभ लीह । तेज उम्भर तप जिट्टौ ॥
 बोलि ^२चंद चंडीस । बोलि जहवरा जाम ॥
 निडुर बोलि कमधज्ज । अत्ति जामनि वल साम ॥
 बलिभट्ट बोलि कूरंभ भर । लोहानौ आजानभुअ ॥
 बैठक बैठि आसन सजि । ताप सतप्पै तेज धुअ ॥ छं० ॥ २४ ॥

कलहन नट का करनाटी राहित सभा में आना और
 पृथ्वीराज का उससे करनाटी की शिक्षा
 के विषय में पूछना ।

बोल ताम नाइक । सथ्य सथ्यह सव साजं ॥
 बोलि पात्र कर्नाटि । बैठि गानं वर वाजं ॥
 नाटका भेद निबंध । वूक्ति राजन वर वत्तं ॥
 कवण कला क्त पात्र । कहौ नाइक निज सत्तं ॥
 नाइक कहै प्रथिराज सुनि । एह पात्र देख्यो सु पथ ॥
 इह रूप रंग जोवन सु वथ । कला मनोहर चिंति मथ ॥ छं० ॥ २५ ॥
 कविचंद का कहना कि ऐसा नाटक खेलो जिरा में

निडुर राय प्रान्न हों ।

पद्धरी ॥ उच्चयौ ताम कविचंद वानि । नायक अहोमति मरम जानि ॥
 सो धरौ कला विचार साज । निडुरह वयट्टौ पास राज ॥ छं० ॥ २६ ॥
 नाटक विविध वृत्तौ बिनान । विचार चार सुर तान गान ॥
 नाइक का पूछना कि राजाके पारा बैठे हुए सुभट ये कौन हैं
 नाइक जं पि हो चंद भट्ट । नृप पास वयट्टौ को सुभट्ट ॥ छं० ॥ २७ ॥
 कविचंद का निडुरराय का इतिहास कहना ।
 उच्चयौ चंद नायक सरीस । कनवज्ज नाथ जैचंद जीस ॥
 ता अनुज बंध वरसिंध देव । ता सुअन कमध निडुरह एव ॥ छं० ॥ २८ ॥

नायक कहै हय वत सच । आवन्न केम हुअ दिली तच ॥
 वरदाइ कहै नायक चित । आवन्न कित करनमि ॥ छ० ॥ २६ ॥
 जै सिध कियौ तहा उइ काज । अति तेज अप्प जैचद राज ॥
 लधु वेंस उभय बधव सरूप । श्रुत थान उभय पेलत भूप ॥ ३० ॥
 आइयौ महल निदुर समेक । कछि कुमर राज सझौ सु एक ॥
 उच-यौ ताम निदुर देव । कर कुमर हम मिच्छत सेव ॥ ३१ ॥
 जयचद समुप निरपेत ताम । कल 'कलिय लग्न चामठ धाम ॥
 कारि सभा सु निदुर आइ ग्रहे । सुप धाम काम विलसत देह ॥
 ॥ छ० ॥ ३२ ॥

निदुर का शिकार खेलने जाना और प्रधान पुत्र सारंग
 के वगीचे में गोठ रचना ।

कवित ॥ समय एक निदुर । काम ध आपेट सपत्तौ ॥
 विधि कुरग दुअ तीन । उभय एकल निज धत्तौ ॥
 आइ वग्न सारंग । सुवन सोवत प्रधानह ॥
 करिय गोठि उचार । सथ्य सभरे सवानह ॥
 ता आग गोठि सारंग सजि । धन पकवान असान रस ॥
 ग्रिह गये वाग आगम सकल । लहयौ निदुर भेव तस ॥ छ० ॥ ३३ ॥

यह खबर सुन कर उसी समय सारंग का वहां आकर
 निदुर के रंग में भग करना ।

सुरिल ॥ निदुर ताम 'गोठिलिय अप्प । तर सेवक सारंग सु दप्प ॥
 घन पकवान सरस गति सार । रच्ये मस विवह विसवार ॥ छ० ॥ ३४ ॥
 करि कौडा सो गोठि अहारे । 'चपतौ सथ्य सवै विधि भारे ॥
 सुमनह द्राव सुमन सब सोहै । कासमौर चदन सुर रोहै ॥ छ० ॥ ३५ ॥
 आहारे तमोल 'सुगध । मादक आइ अग्नि जहा जग्ग ॥
 सुनौ अवन सारंग सुवत । आयौ आतुर 'वग्न तुरत ॥ छ० ॥ ३६ ॥

(१) ए छ को मलिय ।

(२) ए-गोगिय ।

(३) मो नृप ती ।

(४) मो सुरग ।

(५) मो-त्रेगि ।

१कठिन वाच निद्धुर सम वाचे । तरस्यौ निद्धुर तामँत राचे ॥
 गयौ अथ जैचंद सु रावं । लुट्टी वस्त गोठि मनि सावं ॥छं०॥३७॥
 निद्धुर का जैचंद से सारंग की बुराई करना और
 जैचंद का सारंग का पक्ष करना ।

संभलि वचन क्षुप्यौ रा पंगं । कलमलि कोप रोस सब अंगं ॥
 निसा महल निद्धुर सँपत्तौ । फेरे भुष जैचंद विरत्तौ ॥छं०॥३८॥
 न संग्रह्यौ रस वसि सिर नायौ । निद्धुर ताम अप्य अह आयौ ॥
 सजि सु सथ्य जुगनिपुर आयौ । अति आदर करि पिथ्य वधायौ ॥
 ॥ छं० ॥ ३९ ॥

यह कथा सुन नायक का प्रसन्न होकर कहना कि मैं ऐसाही
 नाट्य कौशल करूंगा जिससे राजा का पिरा प्रसन्न हो ।

दुहा ॥ सुनि नाइक हरष्यौ सुमन । धनि धनि वैन उचार ॥
 लहै सुविद्या अर्थ गुन । जै जै अर्थ उचार ॥ छं० ॥ ४० ॥
 गाथा ॥ राजनीति गति खवं । गुन संपूर चौस एकंगं ॥
 जे रंजे रज आनं । सुनि कविराज सब संपूरं ॥ छं० ॥ ४१ ॥

राजाओं के स्वभाविक गुणों का वर्णन ।

साटक ॥ विद्या विनय विवेक ३वानि विमलं वर्णौ कुवेरप्रभा ॥
 १सुविचारो सु विचक्षणो रु सुमनं सौजन्य सौदंध्यता ॥
 २भाग्यं रूप अनूपयं रस रसं संजोग विभोगयं ॥
 भांगल्यं संपूर सौम्य कलसं जानंत केली कला ॥ छं० ॥ ४२ ॥
 मृदु तत्वं मृदु गान कंच रसना मर्यादयं मंडनं ॥
 ४उदायं उदार दाव उच्छं एते गुना राजयं ॥

- (१) ए.-कनिक । (२) ए. क. को.-मार सल्यं, विवेक विचारय ।
 (३) ए. क. को.-विचारं ससु तप्य सोप सुमन सौजन्य सौभाग्यं ।
 (४) ए. क. को.-भाग्यं ।
 (५) ए.-जदाय ।

सोय जान विचार चारु चतुरे विव्वेक विच्चारय ॥

सोय ^१नीति सनीत किति अतुल प्राप्त जय ^१जोरय ॥ छ० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ फुनि नाइक जपै सु नमि । अछो चद वरदोइ ॥

राग विनोदह चीसपट । कहौ सुनौ विधिसाय ॥ छ० ॥ ४४ ॥

* दडमाली ॥ दरसन नाद विनोदय । सुरवध नृत्य समोदय ॥

गीताद्य अधि नव वाद्य । अमिलाप अर्थ पदाद्य ॥ छ० ॥ ४५ ॥

^१वक्रात जग्यपवीतय । प्रासन्न प्रभुत प्रनीतय ॥

पडौत पालक तल्पय । ते पढ्य तर्क विजल्पय ॥ छ० ॥ ४६ ॥

प्रमान सरन प्रमोदय । प्रातापय च प्रमोदय ॥

प्रारभ परिछद सग्रह । निग्राह पुष्टित तुष्टिछ ॥ छ० ॥ ४७ ॥

प्रासस प्रीति स प्रापय । प्रातिग्र यासु प्रतिष्ठय ॥

धीरज्ज धीर जुध वर । सो रज्जएव सत नर ॥ छ० ॥ ४८ ॥

राजा का करनाटी को आने की आज्ञा देना ।

दूहा ॥ सुनि नायक राजगन मति । जपहि दिली नरेस ॥

पाज प्रगट गुन सकल विधि । विद्या भाव विसेस ॥ छ० ॥ ४९ ॥

कर्नाटी का सुर अलाप करना और बाजे बजना ।

प्रथम गान सुरतान गुन । वादी नेक विनान ॥

पाछे नृत्य प्रचार भर । प्रगट करहु परिमान ॥ छ० ॥ ५० ॥

नाटक का क्रम वर्णन ।

भुजगौ ॥ तबै वीलिय अप्प नाइकअ ग । सुष पाच आरोह उचार जग ॥

घरै आप बीना सुरसाज सोरे । सुर पच घोर घरे थान भारे ॥

छ० ॥ ५१ ॥

धुनि रूप राग सुहान उपाए । रचे चार राह सुभा सुभभ भाए ॥

गिय गान अप्प सुर तति मान । रचे मडली राय आयास थान ॥

छ० ॥ ५२ ॥

(१) मो ताग ।

(२) ए को चोवर ।

* ए रु को में यह छंद गीता मालवी नाम से लिखा है ।

(३) रु ए वक्षत, वक्षत ।

मनं सर्व मोहे अतिं राग रूपं । तनं लग्गए तारं आरंग भूपं ॥
 तनं पेद रोमच उच्छाह अंगं । वयं विरायं वेपथं मोदरंगं ॥ छं० ॥ ५३ ॥
 दया दीन चित्तं अभिलाष जगं । गुनं रूप रागं जिते चित्त लग्गं
 नपं सिध्द जग्यौ तनं मीनकेतं । चट्टी मत वेली चित्तं पत्र हेतं ॥
 छं० ॥ ५४ ॥

कर्नाटी के नाच गान पर प्रसन्न हो कर राजा का नाइक से
 गूल्य पूछना और नायक का कहना कि
 आपसे क्या मोल कहूं ।

तबै बोलि नाइक राजन्न तामं । कहा मोल पाचं कही द्रव्य नामं
 कहै नाम नाइक पाचं सरीसं । कहा मोल पाचं नृपं जोग जीसं ॥
 छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज का नाइक को १० गान स्वर्ण देकर वेश्या को
 गहनों में रखना ।

मनं सारधं हेम अप्पेव तासं । ग्रिहं रण्णियं अप्प पाचं सुमासं ॥
 विसज्जे मिहल्लं करे अप्प उट्ठे । कला काम क्कत्थं निसा पाच तुट्ठे
 छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज का कर्नाटकी के साथ त्रीड़ा करना और रात
 दिन सैकड़ों दारियों का उसके पहरे पर रहना ।

दुहा ॥ काम कला तुट्ठिय नृपति । सु ग्रह पवारी दार ॥
 तिन अवास दासी सधन । अह निस रह रषवार ॥ ५७ ॥

इति श्री कवि पंद विरचिते प्रथिराज रासके कर्नाटी
 पात्र वर्णनं नाम तीरामो प्रस्ताव

संपूरणम् ॥ ३० ॥

अथ पीपा युद्ध प्रस्ताव लिख्यते ।

(एकतीसवां समय ।)

प्रातःकाल होतेही पृथ्वीराज का और चामुंडराय आदि
सामंतों का अपने अपने स्थानों पर आकर
बैठना और कैमास का आकर राजा
के पास बैठना ।

कवित्त ॥ महल भयौ न्य प्रात । आइ सामंत खर भर ॥
ठट्टा दिसि ^१उत्तरिय । राय चामुंड वीर वर ॥
बभन वास जु राज । ^२कोइ मुक्कलि इन काज ॥
चावदिसि अरि नन्ह । सौम कहै नह आज ॥
कैमास बोलि मची तहा । मच लाज जिहि लाज भर ॥
सिर नाइ आइ बैठे ढिगह । मनो इंद्र ढिग इद्र नर ॥ छ० ॥ १ ॥

सभा जम जाने पर राज्यकार्य के विषय में वार्तालाप
होना और उज्जैन और देवास धार इत्यादि
पर चढ़ाई होने का संतव्य होना ।

पद्मरी ॥ बैठे सु राज आरभ गुम्भ । पद्मरी छद वरनैति मम्भ ॥
बुलिय नरिद जै मत धीर । सबै सु जुझ सत्राम श्रीर ॥ छ० ॥ २ ॥
दिसि मत मत उज्जैन काम । बचाइ राज कग्गद सु ताम ॥
सामंत खर तपि तोन बधि । आवत रोस चलि सेन सधि ॥ छ० ॥ ३ ॥
दिन सुझ राज चलिथै सु आज । सम बैर वीर बकान साज ॥
जैचद सेन दुस्सह प्रमान । पुरसान सेन सुलतान मान ॥ छ० ॥ ४ ॥

(१) ए रु को उत्तरिय ।

(२) ए रु को कोदक ।

चालुक्य बीर गुज्जर नरेस । कित करै जुद्ध करनी विसेस ॥
थल वटिय बीर भक्षित्य हुआव । रघुपति स्वर तिन मध्य आव ॥
छं० ॥ ५ ॥

सब सवर अरौ चहुँ दिस नरिंद । तिन मध्य दर पृथ्वीराज इंद ॥
सो वरन बीर उज्जेन ठाम । महि मंह काल सुभयान ताम ॥
छं० ॥ ६ ॥

तिन वरन ठाम देवास तीय । संग्राम राज मंडन सु वीथ ॥
बंचौ सु राज कागद प्रमान । घर धनुह धार अर्जुन समान ॥
छं० ॥ ७ ॥

पृथ्वीराज को कुध होकर कहना कि इस तुच्छ जीवन
में कीर्ति ही सार है ।

द्विग करन धरन घर धरनि पाल । सामंत स्वर तिन मध्य लाल ॥
देवास धीय देवास आह । मंचौ सु राज संभरि उछाह ॥छं०॥८॥
जैचंद करहु अप्पर निधान । कलि काल बत चखै प्रमान ॥
सा पुरस जीवतं विय प्रकार । संभरै एक किती संसार ॥छं०॥९॥
जीरन सु जुग इह चलै बत । संभार सार गलहां निरत ॥
इह काच पिंड संचौ सु बत । जैहै सुजोग जोगाधि तत ॥छं०॥१०॥
जैहै सु भान सब ग्रह प्रकार । दिष्टिये भान सो विनसि सार ॥
वापी विरष्य सर मठ प्रमान । मिलिहै सु सर्व भ्रगतिज्ञ जान ॥
छं० ॥ ११ ॥

छंडो न बीर देवा सु मुष्य । रष्यौ सुमंत गलहां पुरुष्य ॥छं० ॥१२॥
राजा का कहना कि कीर्ति के ही लिये राजा दधीच
ने अपनी अस्थि देवताओं को दी । दुर्योधन
ने कीर्ति के लिये ही प्राण दिए ।

कवित ॥ गलहां काज सु देव । अस्ति दधीच दीय वर ॥
गलहां काज सरुष्य । बज किन्नौ सु इंद्र गुर ॥

गल्हा काज नरिद । बस दुरजोध मान रधि ॥

गल्हा काज सु धात । मान अटति भूमि लधि ॥

रधिहै नरन गल्हा सुवर । गल्हा रधि नृपति उष ॥

जयचद बध दल बल सकल । सवर 'साइ किजै सरुष ॥ छ० ॥ १३ ॥

राजा की इस प्रतिज्ञा को सब सामंतों का सिरोधार्य करना ।

दूहा ॥ इह परतग्या नरिंद मन । करै बने प्रथिराज ॥

सकल सूर सामंत ज्यौ । मुहि अग्या सिरताज ॥ छ० ॥ १४ ॥

सभा में उपस्थित सब सामंतों का बल पराक्रम वर्णन ।

चोटक ॥ इति सामंत सूर प्रमान घर । दरबार विराजत राज भर ॥

चढि चसर चद पुडोर किय । सोइ देह धरै फिरि आनंदिय ॥

छ० ॥ १५ ॥

नृप लज्ज नृपतिय सारंगय । सभ पुज्जिन सामंत ता वरय ॥

अतताइय अग उतग भर । सिव सेव कियै तन फेरि धर ॥

छ० ॥ १६ ॥

नर निदुदुर एक नरिद सम । कनवज्ज उपज्जिय जास जम ॥

गहिलौत गरिष्ट गौड़द बली । प्रथिराज समान सु देह कली ॥

छ० ॥ १७ ॥

छिति रघुन छिति पजून भर । तिन पुत्र बली बलिभद्र नर ॥

परमार सलण्य अलण्य गती । तिन पुज्ज न सामंत सूर रती ॥

छ० ॥ १८ ॥

कथमास सु मंचिय राज दर । अरि अंग उछाहन वीर वर ॥

अचखेस उतग नरिद धर । रन मक्क विराजत पग भर ॥

छ० ॥ १९ ॥

धावंड नरिद सु पग बली । नरसिंध सु दंद अरिंद कली ॥

घरे लगरिराइ उतग पल । बय देहिय जानि सुबाहु बल ॥ छ० ॥ २० ॥

(१) ए कृ को माइ । (२) ए कृ को परत ग्यान । (३) ए कृ को उछाहन ।

‘इकरंग सु अंग करंत रनं । कर पाइ सु अंगय दृश्य तनं ॥
लरि लोह लुहानय किति करं । अरि वाइय धूर जो पत २ करं ॥
छं० ॥ २१ ॥

अजि भोह चंदेल सु षेल पगं । घर धूसन भुंमिय अंपि जगं ॥
दिवराज सु बगरि बंध बियं । जिन कितिय जिति जगत्त लियं ॥
छं० ॥ २२ ॥

उदि उद्विग बाध पगार बली । हरि तेज ज्यो रोर फाटंत पली ॥
नरनाह सु क-ए को किति करौं । भर भीषम भारथ सुद्धि धरौं ॥
छं० ॥ २३ ॥

भय भट्टिय भान जिहान जपै । तिहि नाम सुने अरि अंग कपै ॥
भुत नाहर नाहर के क्रमयं । तिन कंकन बंक बियं अमयं ॥
छं० ॥ २४ ॥

रज राम गुरं धग अल्ल बली । जिन किति दिसा दस बट्टि चली ॥
बड़ गुज्जर राम नरिंद समं । जिन ३ कंदल रुद्धि उठंत अमं ॥
छं० ॥ २५ ॥

कविचंद हकारि सु अग्न लियौ । भर भट्टिय भान भयंक बियौ ॥
रघुवंसिय राम सुरंग बली । कनकू जिन नाम नरिंद कली ॥
छं० ॥ २६ ॥

बर राम नरिंद नरिंद समं । तिहि कंदल उठि रुधं सु जमं ॥
जिहि वस्त्र सु सखय अंग करं । धरि दै भर उठिज बूढ़ भरं ॥
छं० ॥ २७ ॥

भगवति भराधन न्याय करै । रघुवंसिय किस्स नरिंद बरै ॥
जिन जितिय जाइ पंजाब घरं । : ॥
छं० ॥ २८ ॥

जिन ४ पंडिय रावर जुद्ध जित्यौ । घर मंडव मुंड चका बरत्यौ ॥
भांवार सलख सु पुत्र बली । नटप जैत सजैत कि किति कली ॥
छं० ॥ २९ ॥

(१) ए. क. को.-इकरंग सुरंग । (२) ए. क. को.-धरं । (३) क. -कंकनि
(४) ए.-मंडिय ।

सु चलै बर भाइ 'दुभाइ भर । तिन सौस सु जगल देस धर' ॥
धनवत धनू नटप 'धावरय । जित तित नही मन सावरय ॥

छ० ॥ ३० ॥

परताप प्रथीपति नाम बर' । उपज्यौ कुल पडव जोति गुर ॥
तन 'तूँअर नेत चिनेत बर । परिहार पक्षर सु नाम धर ॥

छ० ॥ ३१ ॥

सजयौ जय तह पुँडौरे बली । जिनके भुज जगल देस कली ॥
परसग सु धीचिय पग बली । चमराखिय कित्ति नयद हली ॥

छ० ॥ ३२ ॥

नव कित्ति नरि'द सु अहहनय । भजि भारथ कुभज किएहनय ॥
सारग सुर गिय कित्ति बली । बर चालुक चार नक्षत्र हली ॥

छ० ॥ ३३ ॥

परि पारथ कान कुँवार नटप । तिहि पारथ पूजय जुद्ध जप ॥
पग पडिय 'छिचिय छित रन । सब सामँत छर समोह तन ॥

छ० ॥ ३४ ॥

हहकारि उमै नव पास लिए । समतमि सु मचिय मच विए ॥
जित जोध विरोधत राज करै । तिन में सुप भारथ नाउ सरै ॥

छ० ॥ ३५ ॥

कविचद सु नामय जाति कभी । तिनके गुन चपि नरिद अभी ॥
सिर अतय आतप छत्र धर्यौ । कनकावलि मडिय मडि हय्यौ ॥

छ० ॥ ३६ ॥

कवि कित्ति प्रमोदय राज चली । प्रथिराज विराजत देह बली ॥
बर मगल बुद्ध गुर सु धर । सुक सकय वक्रय बुद्धि नर ॥छ०॥३७॥

तिन भाहि विराजत राज तर । सु मनोँ छवि मेरय भान फिर ॥
बर सेंगर छर कल्याण नम । जिहि भारथ कौ प्रथिराज सम ॥

छ० ॥ ३८ ॥

- (१) सो सुभाइ । (२) मोँ धीवरय । (३) ए छ को तूँअर ।
(४) ए कृ को छत्रिय ।

जयचंद जँघारय नाहरयं । न्यप राज सु रप्यन साहरयं ॥
मकवान महीपति मीर बली । प्रथिराज सु जानत जोति छली ॥

छं० ॥ ३८ ॥

काठ हेरिय सारंग सूर बली । प्रथिसाहि न पुज्जत जोति कली ॥
जग जंबुत्र राव हमीर वरं । छिति पति कागूरठ सूर गुरं ॥

छं० ॥ ४० ॥

नर रूप नराइन राज भरं । भर भारथ जुगिनि पाव करं ।
गुरराज सु कश्यप जम्म जिसौ । भग वेद चलंतह प्रह्ल इमौ ॥

छं० ॥ ४१ ॥

गुर ग्यारह सै सकसैन वरं । प्रथिराज चढ़ंतह वाज धरं ॥
बलि सेन मिली करि एकठयं । वजि बंव कि अंवर धुमारयं ॥

छं० ॥ ४२ ॥

अननंकात षष्ठा फरी धरयं । भजि डंका ज्यौं डंकत भूत भयं ॥
गहरात गजिंद सुरिंद सभं । जनु छुट्टि जलह विहह अमं ॥

छं० ॥ ४३ ॥

बलि मल्लन हल्ल ज्यौं रोस रसै । जमजूथ मनो दल दंद ग्रसे ॥
हथनारि सुधारि कैंकां पगी । धरि सिष्ट सुदिष्ट कि इष्ट लगी ॥

छं० ॥ ४४ ॥

कमनैत बनैत कि नेत धरं । मँडि मुष्टि मही जनु रूप करं ॥
फहराति सु बैरप वाइ वरं । सु मनै । धन फुट्टिय अग्नि भरं ॥

छं० ॥ ४५ ॥

सब सेन सभा इह प्रत्र कहै । बरपा ख संत दै छल्लि लहै ॥

छं० ॥ ४६ ॥

पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिए तैयारी करने को कहना ।

दूहा ॥ जो बुलै सामंत सथ । तौ चलै प्रथिराज ॥

फारि उग्यर जैचंद कौ । अरि बंधौ सिरताज ॥ छं० ॥ ४७ ॥

रामंतों का राजशा मानना ।

कवित्त ॥ जो अग्या सामत । स्वामि दीनी सु मानि लिय ॥
 ज्यौ म चह गुन ग्यान । धीय मानत तत लिय ॥
 ज्यो सु भ्रम 'उवरत । वीर चहौ परिमान ॥
 ज्यो गुरु बलहुअ विदुष । तत सोई करजान ॥
 सा भ्रम चिया अग्या नृपति । मान मोह जानै न अंग ॥
 सामत सूर प्रथिराज सम । सबल वीर चलेते संग ॥ छ० ॥ ४८ ॥
 जैचद के ऊपर चढ़ाई की तैयारी होना ।
 दूहा ॥ अति आतुर आर भ वल । गिनौ न तिन गति काज ॥
 तिन उपर जैचद कौ । सो सज्जिय प्रथिराज ॥ छ० ॥ ४९ ॥
 कमधोज पर चढ़ाई करनेवाली सेना के वीर सेनापति
 सामतों के नाम और सेना की तैयारी वर्णन ।
 चोटक ॥ सोई सज्जिय सूर नरिद बल । छिति धारन को छिति छन कल ॥
 मति मच बरघ्यथ सूर वर । धर पर्वत ज्यौ भर कान् कर ॥
 छ० ॥ ५० ॥
 आहत अहीर करै बलथ । सुरघ्यौ गिर एक हरी छलथ ॥
 सु करै बलवीथ अहत भर । नृप राज सु कठिय कठ गुर ॥
 छ० ॥ ५१ ॥
 हरसिध महाबल बधु बियौ । वरसिध बली अरि छन लियौ ॥
 वर जहव जाम जुवान नर । जिन 'कथय दिल्लीय राज गुर ॥
 छ० ॥ ५२ ॥
 नर नाहर टाक नरिद नम । तिहि कठ अरौ धर भ्रम तम ॥
 'पचम पवार सु पुज वर । मद मोष बिछुटिय काल भर ॥
 छ० ॥ ५३ ॥
 परपत सु पलहन अलहनथ । भुज रघिय भारथ दिल्लीनथ ॥
 वर तूअर रावति बान बली । जिन किति कलाधर भ्रम छली ॥
 छ० ॥ ५४ ॥

वर बीर कँठी पुरसान 'रनं । हथ चीय अहुठुपती सुभनं ॥
 कँठीर कलंछत जैत बली । जिहि ओठत जंगल देस भली ॥छं॥५५॥
 नृप रूप नरिंदति वाहनयं । पुरसान दलपिति सा हनयं ॥
 जसरति सुरति सुरत गुरं । पित की पित कंध परै न धरं ॥
 छं० ॥ ५६ ॥

जनएस गुरेस सबंध बली । जिहि निद्धुर उप्पर पंय पुल्ली ॥
 परसंग पविच पविच छती । पुरसान दलं जिन जुद्ध मती ॥
 छं० ॥ ५७ ॥

अवनीस उमाह तुरंग 'तुरं । जिहि बंधन वास उगाहि धरं ॥
 जिन गुजर ताप तिरं तिरनं । कयमासय उप्पर कीय धनं ॥छं॥५८॥
 महनंग महा मुर नैन समं । तिन राज सु रधिय जिति क्रमं ॥
 वरदावलि चंद नरिंद पढी । सु मनो कल जोति सरीर बढ़ी ॥
 छं० ॥ ५९ ॥

सभ सोहत सित्त रु पंच इकं । जिन जानत 'भोद मयं करिकं ॥
 कवि नामति जित्तिथ जानि तिनं । तिनकी विरदावलि अंघि फुनं ॥
 छं० ॥ ६० ॥
 सत सैं षट राजत राज समं । तिनके जुव नाम कहोति क्रमं ॥
 छं० ॥ ६१ ॥

उन छः रामंतों के नाग जो सब रामंतों में
 सब से अधिक मान्य थे ।

कवित्तं ॥ निद्धुर स्वर नरिंद । कण्ठ चहुआन सपूरं ॥
 जिपड़ जैत जैसिंध । सलष पीवारति स्वरं ॥
 जामदेव जहव जुवान । भारथ्य पत्ति सिर ॥
 वर रघुवंसी राम । द्रुग महि कौन तास वर ॥
 वर वीर्य रत्त 'पच्छै सुनिय । रुधिर बूंद कंदल परहि ॥
 मधि मधि मुहूरत इक वर । अरि वर गन रुंधहि भिरहि ॥छं॥६२॥

(१) ए. कृ. को.-नरं ।

(२) मो.-हली ।

(३) मो.-मुरं ।

(४) ए. कृ. को.-मोह ।

(५) ए. कृ. को.-परै ।

उक्त छ. सामतों का पराक्रम वर्णन ।

सौ सामत प्रमान । उगि अक्षर वीर रस ॥
 सखि भली नकपत्त । अग लग्गे सुभत तस ॥
 राजस तम सापुक्ष । साप अगौ अधिकारिय ॥
 जथ्य कथ्य आरुहिय । रत्ति ढिल्लीपति धारिय ॥
 जगलू देस जगल न्यपति । जग खेवै बर खूर पट ॥
 घुरसान धान उप्पर चढिय । बर वीर रस वीर पट ॥ छ० ॥ ६३ ॥

सामतो का जैचंद पर चढाई करने का मुहूर्त शोधन
 करने के लिये कहना ।

अनल दग अरि लगि । उगि अगिवान वीर रस ॥
 सामता सतभाव । पग उप्पर कौजै कास ॥
 पच धटी सौ कोस । राज अग ढिल्ली तँह ॥
 साम दान अरु मेद । दड निर्नय साधौ जँह ॥
 मन बच क्रम कह कह काथ्यौ । अलप न सुर सद्य सुधट ॥
 दुजराज सधि गुरराज कौ । सखि महरत चढिपट ॥ छ० ॥ ६४ ॥

प्रत्येक सामत पृथ्वीराज की इच्छा का प्रतिविव स्वरूप था ।

चोटक ॥ प्रति प्रीति प्रत्य प्रतिविव न्यप । ससि राज इक प्रति ब्यव पय ॥
 प्रतिब्य बह मझम इकत उमै । चहुआनर सामत खूर सुमै ॥
 छ० ॥ ६५ ॥

दिस राकाय अर्काय धान बियौ । तम भजित तेज सु राज लियौ ॥
 सोइ लखि हयगाय मत घुली । रवि कौ किरनावलि तेज डुली ॥
 छ० ॥ ६६ ॥

पर पप्पर स्थाह तुरग रन । सु मनो धन सोभत नैर तन ॥
 सु विचै विच राजत राज रती । सु मनो प्रतिविव किदेव किती ॥
 छ० ॥ ६७ ॥

(१) ए छ को - "सौद्र भयानक रस" ।

(२) मो - राजत ।

(३) मो - साधै ।

पृथ्वीराज के सब राच्चे रोवकों का एकही गंत्र ठहरा ।

दूहा ॥ इत्ते भंतन इक्क सुष । न्यप सेवका अरु इष्ट ॥

एक मंच एकह बुले । विधौ न जंयै जिष्ट ॥ छं० ॥ ६८ ॥

पढ़ाई के लिये वैसाध सुदि ५ का सुदिन पक्का करके
सब का अपने अपने घर जाना ।

तिते स्हर तिहि रति वर । ग्रहे सपत्ते वीर ॥

पंचभि वर बैसाध धुर । लैजु वचन ते धीर ॥ छं० ॥ ६९ ॥

गरने के लिये मुहूर्त साध कर सब बीरों का आनन्द में गतवाला होना ।

अरिस्त ॥ अप्प अप्प गय ग्रहे सस्हरं । मरन महरत मरन न पूरं ॥

चढ़े वीर चावहिसि रंगं । मनो पलह लिय मेघ असंगं ॥ छं० ॥ ७० ॥

प्रातःकाल सामंतों का बड़े बड़े मतवाले हाथियों पर चढ़ कर जुड़ना ।

दूहा ॥ मेघ पंति वहल विषम । बल दंतिय सजि स्हर ॥

चढ़ि जिहाज पर दिष्पियै । धर नहिं परै कस्तर ॥ छं० ॥ ७१ ॥

धरनौधर तिय गुननि वर । लिय कारन परिमान ॥

स्हर उगै सत पच ज्यौ । ज्यौं भदव बल भान ॥ छं० ॥ ७२ ॥

पृथ्वीराज की सेना के जुटाव की पावरा के

मेधों से उपमा वर्णन ।

चोटका ॥ सुअं वर वीर सु चोटक छंद । छिती छिति मत्त हथगय इंद ॥

रनं किय वीर नफोर रवह । ढलकिय ढाल सु ढिलिय भद ॥ छं० ॥ ७३ ॥

षनं किय संकार अंदुन अंद । जग्यौ मनु भारत वीरय कांद ॥

छिती छितिपूर हथगय भार । दिसौ दिसि दिष्पहि ज्यौं जल धार ॥

छं० ॥ ७४ ॥

ढरै दिगपाल सु अठ्य मेर । भये भयभीत भयानक मेर ॥

सुनै स्तुति छत्रिय सह निसान । दिसा पुरसान सु बढ्ढय पान ॥

छं० ॥ ७५ ॥

महे मय मत गहम्महराज । उठै वर अकुर मुख विराज ॥
 काहे कविचद सु उप्पम ताहि । मनो सुर लगिय चद कलाहि ॥
 छ० ॥ ७६ ॥

अपे प्रथिराज समप्पय बाज । तिने दिपि पतिय प्रब्वत लाज ॥
 दुअ दुअ बधि रकेवन जोर । चढे वर छिचिय खरे भकोर ॥
 छ० ॥ ७७ ॥

हयदल पति सुभतिय ठानि । मनो वगपति धनी घट वानि ॥
 मय मय रुद्र सु रुद्रय सार । भयौ जनु अत प्रलै दुति वार ॥ छ० ॥ ७८ ॥
 डहडह वज्जय डकय भात । डलै तिन वीर गिरव्वर गात ॥
 सु दिप्पन वाम पुरकय नैन । चढ्यौ जनु वीर परधत बैन ॥ छ० ॥ ७९ ॥
 इसे दोउ वीर विराजत रिध । गुफा इक मम्भक्त मनो दुअ सिध ॥
 चले ग्रह छडि नहग्रह खर । काहे कविचद सु उप्पम पूर ॥
 छ० ॥ ८० ॥

काहे कलना रस कातहि चौर । उद्यौ तछा जित भयानक वीर ॥
 लिपी लिप चिचय दपति बैन । मनो पलटै दिन चाचिग नैन ॥
 छ० ॥ ८१ ॥

छिपा छिप होम प्रमान प्रमान ॥ कियो चकई सुपमुकय मान ॥
 भयौ मन वीरन वीर प्रमान ॥ भयौ कलना रस तीय प्रमान ॥ छ० ॥ ८२ ॥
 दुहु दिसि चित अचित अलोल । मनो दुअ पास हलत हिडोल ॥
 दोउ मक्त रप्पय खर सनूर । भजै कलना रस काइर पूर ॥ छ० ॥ ८३ ॥
 मिले न्निप आइ सु डिस्सिय धोन । काहे कविचद वपान वपान ॥
 छ० ॥ ८४ ॥

सामतों की सर्प से उपमा वर्णन ।

दूहा ॥ स्वामि भ्रम सों सुद्ध मन । ज्यौ वावी दिसि सप्प ॥
 मग विपान ज्यों अरिन वर । जगि वीर रस जप्प ॥ छ० ॥ ८५ ॥

सामतो के क्रोध और तेज की प्रगशा वर्णन ।

- (१) मो गहम्मग । (२) रु को अप । (३) ए रु को जुद्ध ।
 (४) को वागी । (५) ए रु को सर्प ।

कवित ॥ जगति जग्य जनु वीर । जग्गि चयनेत अग्गि सिव ॥

कै मचकुंद प्रमान । गुफा वारुन सु दैत्य निव ॥

कै 'जग्यौ भसभास । दैत्य भग्ना गौरीमं ॥

इसे खर सामंत । वीर चावदिसि दीमं ॥

दीनी न नृपति किन निरति वर । किहु न सुनी जैचंद क्रम ॥

वग्गं उपारि धार वलिय । अभिलापह भारथ्य अम ॥ छं० ॥ ८६ ॥

शूर वीर सामंतों का उत्साह वर्णन ।

अभिलापह अम गर्व । भयौ किल किंचित स्वरं ॥

ज्यों नल मति दमयंत । सेन मज्जी रन पुरं ॥

भवर सद्द सम सुमन । प्रेम रम छुट्टिय जगं ॥

सुवर राज चहुआन । करन उपपर वर पंगं ॥

माधुरत सधुर वानी तजौ । रजिय स्वर रंजित सुभर ॥

छिति मत्त 'छिती छिचिय 'छितिग । दिपति दीप दिवलोक धर ॥

छं० ॥ ८७ ॥

फौज की शोभा वर्णन ।

मोतीदाम ॥ दंसं दिसि पूरग 'मत्तय भार । चढ्यौ जनु इंद्र धनुष्य धार ॥

तुरंगन तुंग हरष्य ईस । परकिय नारद सारद रीस ॥ छं० ॥ ८८ ॥

छहंमित छोहय शंकर हथ्य । कछै कविचंद सु ओपम कथ्य ॥

गए गजनेस सुसथ्यय वीर । रहै लगि भौर तिनै लगि नीर ॥

छं० ॥ ८९ ॥

मनों कुत कुंतय वारय पुलि । गए मनु आरद शंकर भुलि ॥

करन। रस केलि क्रमीनह वीर । नच्यौ अदबुद स रुद्र डकीर ॥

छं० ॥ ९० ॥

इकं इक रस्त सु संतिय खर । दिषे मुष मत्त महा मति नूर ॥

सुलतानर हिंदुअ बैर प्रमान । सुआदय जुड निदान निदान ॥

छं० ॥ ९१ ॥

(१) ए. क. को.-जग्या ।

(२) ए. क. को.-छित्त ।

(३) मो.-छिपग ।

(१) ए. क. को.-मध्यय ।

दया वर हीन सगप्पन नथि । ॥

उमा कृत काज प्रजापति दक्षि । तज्यौ नन मात उरगिय लक्षि ॥

छ० ॥ ६२ ॥

पिन्ने सिर ईस पटक्किय जट्ट । भयौ तहा जन्म सु वीरय भट्ट ॥

भिरौ भिरि नदिय दद प्रकार । पछै दछि दक्षिथ दप्पि डचार ॥

छ० ॥ ६३ ॥

इत मिति मत सु कतिथ राज । भयौ वर वीर भयानक साज ॥

दिसो दिसि पच्छिम हिदुअ मेछ । बज्यौ रनतूर रवदय रछ ॥

छ० ॥ ६४ ॥

मली जनु जंगम जो गवरीस । दसकधु डुलावत प्रव्वत रीस ॥

तज्यौ जहा मान लगी पिय कंध । नयौ रस सत सु मतिथ सध ॥

छ० ॥ ६५ ॥

सु जाति जरा नृप हक्कि प्रमान । चज्यौ तिन देर वली चहुआन ॥

छ० ॥ ६६ ॥

पृथ्वीराज का सेना को वर्ण प्रति वर्ण श्रेणीवद्ध करना ।

कावित्त ॥ चाहुआन वर वलिय । भार भारथ रस भिन्नौ ॥

मधुर सुधर सिधुरस । अग चावहिसि छिन्नौ ॥

सुवर सेन सानत । सुवर बल वीर निनारे ॥

मक्त ममअह आहत । देव जनु जुद्ध हकारे ॥

कुसमिस्त जुद्ध देवह कारन । रघ सुरथ हय हयति नर ॥

सामत खर पुज्यै नही । वर कदल उठ्यैति धर ॥ छ० ॥ ६७ ॥

सामतो की वीरता का वर्णन ।

उरग विद रवि उठै । सीस हक्कै धर नचै ॥

देवासुर सनाम । देव पूजा देवचै ॥

इद्र जुद्ध तारक । सोइ ततह अधिकारी ॥

पच पच पडव सु । भीम दुर्जोधन भारी ॥

गज मंत दंत कट्टै सु भूत । दैवत जुध सामंत रन ॥
 उद्दयो जुध आहत मिति । नहिन मेव्ह हिंदू छपन ॥छं॥६८॥
 युध के लिये प्रस्तुत गूर वीर रागंतों के बीच में स्थित

निदुदुर का वीर-गत वर्णन ।

मिले खर सामंत । मंत सज्जिय निदुदुर वर ॥
 कहां सु भ्रान संग्रहै । पंच किहि जाइ मिलै धर ॥
 कोन क्रमा संग्रहै । क्रमा को करै सु देहं ॥
 कोन जीव संग्रहै । कोन निमवै सु छेहं ॥
 जैचंद आनि सुरतान वर । अघर राहु लग्यो अवर ॥
 धिन मति दान दिय विप्र वर । रहसि राह लग्यो सु धर ॥
 छं० ॥ ६९ ॥

कह निदुदुर रठौर । सुनहु सामंत प्रकारं ॥
 कहौ देव कौ अगा । किति संग्रहौ सु सारं ॥
 बारि बूंद बुदबुद । हथ्य वारी सु आव इत ॥
 ज्यों बहलवै छांहि । यास अग्यौ सु मति भ्रिति ॥
 इतनिय देह कौ गति वर । तीय ठाम चिंतै सु नर ॥
 मर्यान पुरान रु काम के । अंत चित्त सदगति धर ॥छं॥१००॥
 अंत मति सो गति । अंतजा मति अमत्तिय ॥
 पुष्य अगा संग्रहै । पुष्य गत्तिय सुद्ध गत्तिय ॥
 दैव भाव संग्रहै । काल केवल गुन वत्तिय ॥
 सिंचिये वेलि जंजं बघै । तंतं बुद्धि पुरान वर ॥
 निध्यात धात पत्तिय सु वर । सुवृत्त काल निचरि सु नर ॥छं॥१०१॥
 स्वामि निंद जिन सुनौ । स्वामि निंद न प्रगासौ ॥
 अह निसि वंछौ मरन । भीर संकरै निवासौ ॥
 तब बुल्यौ महनंग । छंडि इह मंच सस्त्रगह ॥
 अति काज दहौचि । दिख सुरपत मत्त बहु ॥
 सुरपति मत्त किनौ सु वर । निवर अंग को अंग मय ॥
 जैचंद भूमि उबैलि कै । चढ़हु भूमि धर सुर्ग मय ॥छं॥१०२॥

गाथ ॥ के के न गया गुर ग्रहे । के के न काल सग्रहे हत ॥
 मची जा प्रथिराजं । रण्ये जा बीर सो सख ॥ छ० ॥ १०३ ॥
 साटक ॥ जाता जा मनसा समस्त गुरय, मानस्य सा सुदरी ॥
 'ता भग्ना मन खर काइर बर, 'किल किंचि किंचित रसै ॥
 अभिलाष छिति गर्व तारुन विधे, ससार सहकार्य ॥
 वार जा पारग दिव्यत गुर, दीसति देवानय ॥ छ० ॥ १०४ ॥

धुड़सवार शूरवीरों की चाल वर्णन ।

सुजगौ ॥ प्रवाहत वाह उचारै पवगा । तिनै धावतैं होइ भागत पगा ।
 भूमै भुंम अंगै सुम तीन सधै । मनो ब्रह्म विधि गठि लै पाइ बधै ॥
 छ० ॥ १०५ ॥
 पुजै पय अपी मन पीन धावै । तिन उप्पमा कोन कविचद लावै ॥
 किधौ कैसपन्न चलै चित भारी । किधौ पकरौ हथ्य 'आवत तारी ॥
 छ० ॥ १०६ ॥
 किधौ वाय छुट्टै नहीं चाइ पावै । अगराज कैसै उपमाति लावै ॥
 अगपाइ दीसे मुप मेह कारै । मनो दिव्य वानी पढै कव्वि भारै ॥
 छ० ॥ १०७ ॥
 धरे पाइ बाजी दडत निभारै । मनो तार सौ तार बज्जै हकारै ॥
 तिन दूरि तैं अग ओपम ऐसे । मनो तार छुट्टै अकोस सु जैसे ॥
 छ० ॥ १०८ ॥
 इसे बाजि सज्जे समझेति राजं । दियै खर सामंत हथ्यै सुपाज ॥
 छ० ॥ १०९ ॥

राजा का सामंतों को अच्छे अच्छे घोड़े देना ।

दूहा ॥ बाज राज नृप 'राज दिय । बिलसि विधान विधान ॥
 तिन उप्पम कविचद कहि । का दिज्जै धपवान ॥ छ० ॥ ११० ॥

(१) मो ना ।

(२) ए रु को कल ।

(३) ए रु को दीसत ।

(४) ए-गज ।

धोड़ो की शोभा वर्णन ।

रसावला ॥ धपै बान भारै, हकारै निनारै । दुरै अय्य छाया, तते अग्नि ताया ॥

छं० ॥ १११ ॥

धवै ^१ अंठ भारी, सुकोटं निनारी । वरं नैन ऐसं, हरी देव जैसे ।

छं० ॥ ११२ ॥

भहा मत्त ग्रीवा, विना वाइ दीवा । उरं पुठु भारी, ^२ सु मासं निनारी ॥

छं० ॥ ११३ ॥

तुला जानि षंभं, पला जानि अंभं । नयं डंड इद्धं, मनो डंड सिद्धं ॥

छं० ॥ ११४ ॥

द्रुमं वीर दुल्लै, कवी किति पुल्लै । मनो वाय कांडं, परी मभ मही ॥

छं० ॥ ११५ ॥

कचोलंत नीरं, पिय वाज जीरं । अवतें निनारे, मनो खामि सो ॥

छं० ॥ ११६ ॥

इसे राज राजी, दिए वाज राजी । सु दै दै रकेवं, चढ़े वीर ^३ वेवं ॥

सुरतान पासं, चढ़्यौ वीर भासं । छं० ॥ ११७ ॥

शहाबुद्दीन से निस्वार्थ युद्ध करने की पृथ्वीराज की प्रशंसा ॥

दूहा ॥ बिना हेत सगपन बिना । इष्टपना बिन राज ॥

धनि राज प्रथिराज कौ । पग गोरी किय साज ॥ छं० ॥ ११८ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज की राह छोड़ कर डट रहना ।

कवित्त ॥ षल गोरी सुरतान । जाइ रुंथ्या रन अग्यौ ॥

हय गय रथ नर सज्जि । वीर पावस धट जग्यौ ॥

महन रंभ आरंभ । रत्त अरुनोदय सारिय ॥

चाहुआन सुरतान । वीर जै पत्त करारिय ॥

डमरू डहकि जुगिनि हसै । जिम जिम बंवर धज लसै ॥

सामंत खर चहुआन सौं । वीर विदुरि सखह कसै ॥ छं० ॥ ११९ ॥

राजा की आज्ञा बिना चावडराय का आगे बढ़ जाना ।

मेछ महरति सति । मत्ति कौनौ रत भारी ॥

बीरा रस विदुुरिय । लोह लग्गी अधिकारी ॥

छित्ति भित्ति छिति सोभ । अँपि आवै न अपि पिन ॥

ज्या नद्व वन दिष्ट । चपि चूवत मत धन ॥

रन हरपि वरपिय मुक्ति जिहि । धपि लोह कोहा करास ॥

चावडराइ दाहर तनौ । न्यप अग्या विन अग्र धसि ॥छ०॥१२०॥

चामंडराय जैतसी लोहाना आजानवाहु का पाच कोस

आगे बढ़ कर तत्तार षा खुरसान पां पर

आक्रमण करना ।

रा चावड जैतसी । लोह आजानवाहु वर ॥

रुपे रन सुरतान । मत्त लग्गे सुवीर भर ॥

पच कोस न्यप छडि । आप रुध्या सुरतान ॥

वज्र धाट वज्रगीय । आइ लग्गा सु विहान ॥

छुट्टा कि सिध पल काज वर । उरसि लोह लग्गा लरन ॥

तत्तार पान पुरसानपति । अप्य महरति मरन मन ॥छ०॥१२१॥

उक्त सोमर्तों के आक्रमण करने पर मुस्लमानों का कमान

पर बाण चढा कर अपने गत्रुओं से युद्ध

करने को प्रस्तुत होना ।

मुजगी ॥ पुरासोन पान सु तत्तार वीर । मनो वज्र टेघे सु वज्र सरौर ॥

महा बाहु वज्री कोढे वज्र हथ्ये । लग्गे अग अग निरथ्ये निरथ्ये ॥

छ० ॥ १२२ ॥

धुलिका सु वान कमानेन साही । इसे स्वर वेग पललै निवाही ॥

उर मत्त मत्ते विमर्ते निनारे । मनौ देपियै वीर रत्तप्रकारे ॥

छ० ॥ १२३ ॥

उरं काल काली जम दंड कट्टी । जिधौ दंड जम दंड जम कर पिठ्ठी ॥
 उरं मत्त मत्त विमत्तं सु मत्ती । परे रंग चंगं छके जानि गती ॥
 छं० ॥ १२४ ॥

दुवं हिंदु मेच्छं तस गीति नंघी । सरै सठि हजार आहत लखी
 तिने हथ्य हथ्यं मुपाती प्रमानं । मनो देवि देवंत देवाधि यानं ॥
 छं० ॥ १२५ ॥

विधं विधि रूपं प्रमानंत न्यारे । भए अंग अंगं तही तथ्य सारे
 नचै कंध बंधं कंधं दुरंगी । मनो बीर आहत भारथ्य रंगी ॥
 छं० ॥ १२६ ॥

इतौ जुद्ध करि बीर भए द्वै निनारे । घुमै सार युगौ मनो ॥
 छं० ॥ १२७ ॥

पृथ्वीराज का सारौन्य उज्जैन पर आक्रमण करने को यात्रा
 करना और जय पंद की सहायता ले कर शहाबुद्दीन
 का राह छेकना ।

* दूहा ॥ चल्थौ राज सब सेन सजि । दिसि उज्जैनिय रंग ॥
 आइ साहि जग हजूरन । लखै सहायक पंग ॥ छं० ॥ १२८ ॥
 गही गैल देवास की । गहन उपज्यौ मिच्छ ॥
 नर चित्तन इच्छै कछू । ईसर औरै इच्छ ॥ छं० ॥ १२९ ॥

मनुष्य की कल्पनाएं सब व्यर्थ हैं और हरीच्छा बलवती है ।

कवित्त ॥ नर करनी कछु और । करै करता कछु औरै ॥
 नर चिंतन कर ईस । जिय सु नर औरै दौरे ॥
 रचे रचन नर कोटि । जोरि जम पाइ बसा सह ॥
 छिनक मथ्य हर हरै । केल किर तथ्य प्रगा इह ॥
 प्रथिराज गमन देवास दिसि । आह विनोद सु मंडि जिय ॥
 अनचित्ति जगि गज्जन बलिय । आनि उतंग सु कंक किय ॥
 छं० ॥ १३० ॥

* मो. प्रति में पद नहीं है और पाठ के प्रसंग से क्षेपक भी ज्ञात होता है ।

पृथ्वीराज का राजा वाली सेपटतर देकर कवि का उक्ति वर्णन ।

ज्यो वावन बलि पास । आनि अनचित्य छलन किय ॥
 उन घर ले उन 'दीन । 'इन सु सुर बधि छ डि जिय ॥
 दसों दिसा दस उमडि । घुमडि धनधोर आइ अनु ॥
 मीर मसद ससद । वान बहु बूद बरषि धन ॥
 दोउ दीन दद दनु देव सम । भ्रम लग्गे लग्गे लरन ॥
 प्रलै काल हाल पिपिय निजरि । मनो मिच दत्तौ करन ॥
 छ० ॥ १३१ ॥

युद्ध आरभ होना ।

सावली ॥ कोह लग्गे पल, सार उड्डै पल । अत तुट्टै रल, पग बेली तुल ॥
 छ० ॥ १३२ ॥
 नैन रत्ते भल, जुट्टि जाल पल । मिट्टि मोहै मल, कोह कै केवल ॥
 छ० ॥ १३३ ॥
 रुड नचै दल, मुड वकै वल । गिद्धि सिद्धी कल, बज्जि कोलाहल ॥
 छ० ॥ १३४ ॥
 छिछ उड्डै लल, जानि तिदू अल । हथ्य तुट्टै नल, दप्य सापा डल ॥
 छ० ॥ १३५ ॥
 पप पपी बल, ईस आसावर । माल सोमै गर, रुद्धि बुदै भर ॥
 छ० ॥ १३६ ॥
 जानि नग पर, च डि पच' भर । 'म ति डक डर, भूत नचै पर ॥
 छ० ॥ १३७ ॥
 उभय चिकर, वकि नैर रर । कपि स्थार नर, स्तार बड्डै वर ॥
 छ० ॥ १३८ ॥
 भभर भारै रूर,
 छ० ॥ १३९ ॥

वामिधर्म रत शूर वीर मुक्ति के पथ पर पाव देने को उद्यत थे ।

- (१) ए रु को दीप । (२) ए रु को दन सुरन बधि छडिय प्रिय ।
 (३) ए रु को वर । (४) ए रु को-मन्त्रि ।

दूहा ॥ सार मंत मर्ते सुभट । पग ढिल्लै गज ठट्ट ॥

स्वामि अल्ल सडै रनच । सुकृति सु भारै वट्ट ॥ छं० ॥ १४० ॥

दोनों ओर के शूर वीर सामंतों का पराक्रम और बल वर्णन

कवित्त ॥ कोह छोह रस पान । वीर मर्ते चावहिसि ॥

बलि उतंग सजि जंग । अंग जनु पंग कपिप जिसि ॥

हय दल बल उवधार । कट्ठि गज दंत नडारै ॥

जनु माली महि मध्य । कट्ठि भूला करि धारै ॥

भय सीतभीत काइर कपहिं । बहत खूर सामंत रिन ॥

कलि काहर कांका बकहि विहसि । गहन गोम मर्तौ महन ॥

छं० ॥ १४१ ॥

कन्ह गोइन्द राय लंगरी राय और अततार्ई की वीरता और

उनके पराक्रम से मुस्लमानों की फौज का विचलाना,

हासब खां खुररान खां का मारा जाना ।

भुजंगी ॥ परी भीर मेच्छं तसव्वी तनप्यं । कले कांका बक हीन जीवं सु लप्यो ॥

पलं कांन्ह गोइंद कोका प्रमानं । मनौ देषियै देवयं दुंद अथानं ॥

छं० ॥ १४२ ॥

बड़े वीर रूपं प्रमानं निनारै । अरी अग्न चेतं न चित्तं धरारै ॥

नचै कांध बंधं असंधं धरंगी । मनो वीर भारथ्य आवत्त रंगी ॥

छं० ॥ १४३ ॥

लभ्यौ लंगरी लोह लंगा प्रमानं । पगे घेत पंड्यौ पुरासान धानं ॥

उडै अततार्ई हयं पाइ तेजं । दलं दिषिये पेट पण्णे करेजं ॥

छं० ॥ १४४ ॥

हन्थौ हासब धान सीसं गुरज्जं । गयं उड्डि गेनं सु पोपरि पुरज्जं ॥

इतौ जुद्ध करि वीर भण्डै निनारे । धुमे सार घुगो मनो मत्त वारै ॥

छं० ॥ १४५ ॥

हो ॥ रत्त मत्तवारे सुभट । विधि विनान उनमान ॥

तहन सुग्घ दुग्घ निजहि । मोह कोह रस पान ॥ छ० ॥ १४६ ॥

शूरवीरों का रणरंग में मत्त होना गहाबुद्धीन का कुपित होना और पृथ्वीराज का उसे कैद करने की

प्रतिज्ञा करना ।

पवित्त ॥ मोह कोह रस पान । वीर मत्ते चावदिसि ॥

तवल तुग वजि जग । वीर लग्गे सु वीर कसि ॥

जा दिग्घै सुरतान । नैन बडवानल धारी ॥

प्रलय करन कारवान । प्रलय इन यग छकारी ॥

सुभि लोह मोह अरुनय तनह । अति उदार चिन्त्य रनह ॥

प्रथिराज राज राजिद गुर । गहन गज्जि लीनो पनह ॥ छ० ॥ १४७ ॥

युद्ध की पावस से उपमा वर्णन ।

साहन बाहन बिरद । साह गोरौ सयन्न सम ॥

हय गय दल विछरहि । रोस उछरहि वीर भ्रम ॥

वजहि यग आरत । जूथ उहुहि असमान ॥

मनहु सिध गुर गज्ज । हकि कारिय सिर मान ॥

दल जोरि विहसि साहाव भर । भर भर भिरि असिवर वजिय ॥

जानेकि मेध मत्ते दिसा । निसा नभ विज्जुल 'लसिय ॥

छ० ॥ १४८ ॥

घोर युद्ध वर्णन ।

चोटक ॥ इति तौटक छद् प्रमान धर । सुनि नागकला तिहि किति गुर ॥

भिरि भारथ पारथ से उचरे । मय मत कला कलि से विदुरे ॥

छ० ॥ १४९ ॥

रननकय नागय वीर सुर । मनो वीर जगावत वीर उर ॥

छिति छच दुहाइय छच धर । सु मनो वरवा हवि वज्ज भर ॥

छ० ॥ १५० ॥

(१) ए मो लजिय ।

धिति सोहत ओन अपुष्व रनं । मनो भारत पूर चली सुभनं ॥
 दोउ दीन विराजत दीन उमै । रंग रत्न रमै धिति छत्र सुमै ॥
 छं० ॥ १५१ ॥

सुमनों मधु माधव रीति इलै । सुजनो हत कंवर वीर फुलै ॥
 इका अंग विमंगन हथ्य चरै । सु मनो कल वीर कला दुसरै ॥
 छं० ॥ १५२ ॥

मिति मत्त अष्टतन धाड़ धटं । सु नचै जनु पारथ वीर भटं ॥
 छं० ॥ १५३ ॥

कवित्त ॥ बरकि वीर भट सुभट । गुग्गि हकै चावहिसि ॥
 इक्क इक्क आष्टत । वीर बरघंत मंत असि ॥
 नचि नारद किलकंत । जग्गि जुग्गनि हक्कारिहि ॥
 सार ताल वेताल । नचि रन वीर डकारहि ॥
 अंमरिय रहसि दल दुअ विहसि । करसि वीर लग्गे सु वर ॥
 बहुआन आन सुरतान दल । करहि केलि समरस अडर ॥ छं० ॥ १५४ ॥

चालुक्य की प्रशंसा वर्णन ।

नव बाजी नव हथ्य । रथ्य नव नवति सुभ्र भर ।
 इन बज्जै असि बरह । सार बज्जै ग्रहार धर ॥
 केक अंत जमकंत । कट्ठी जमदाढ़ निनारी ॥
 मनु कट्ठी जम दढढ । हथ्य सामंत सुभारी ॥
 चालुक चंपि चच्चर कियौ । सार धार सम उत्तयौ ॥
 इह करी कोइ करिहै न कोइ । करौ सु कोगुन विस्तयौ ॥
 छं० ॥ १५५ ॥

दूहा ॥ जंमति जमकिय जंम सम । जम प्रमना दोउ सेन ॥
 मिले वीर उत्तर दिसा । आष्टतह तिन नैन ॥ छं० ॥ १५६ ॥
 जामदेव यादव का आध कोस आगे डटना और उसकी

वीरता की प्रशंसा वर्णन ।

कवित्त ॥ अड कोस नृप अग्गा । सूर रोपे पग गढ्ढै ॥
 सह सह गजराज । चंडि पढ्ढै बल चढ्ढै ॥

लज्ज वध सकरिय । वीर अकुरिय दिष्ट रन ॥
 सार धार वज्जी कापाट । निधात धुमत रन ॥
 कलमलिय क क इम मिच्छ सह । अनु लुअ लगत जेठ महि ॥
 जइव सु जाम घरि इकलो । अनु वडवानल चद कहि ॥
 छं० ॥ १५७ ॥

गाथा ॥ दिप्ये मुप्यय मच्छरय । अरज दुव सन्नाम अवनय ॥
 अछरि वर कर इच्छ । भ्रमत 'फिरत' गौन भग्गाइ ॥ छं० ॥ १५८ ॥
 पृथ्वीराज का अपनी सेना की मोरव्यूह रचना ।

कवित्त ॥ मोरव्यूह रचि राज । सज्जि सब सेन सुइ करि ॥
 चंच पीप परिहार । कन्ह गोइ द नयन सरि ॥
 कठ चद पुडौर । पाव जुग जैत सलप सजि ॥
 निढुर भर बलिभद्र । पप बजि बाय तेज गति ॥
 सम पुछ और सम पुछ मन । वरन वरन छवि सिलह तन ॥
 रन रोहि रछौ प्रथिराज महि । गिलन अण्ण सुरतान रिन ॥
 छं० ॥ १५९ ॥

गाथा ॥ मुधोज वर मछर । त वटे अछरी अ ग ॥
 सोय साध प्रमान । सा पूजी स्वर सामत ॥ छं० ॥ १६० ॥
 याजी खा, तत्तार खा और गोरी का उधर से आक्रमण करना
 और इधर से पीप (पडिहार) नरिद का
 हरावल सम्हालना ।

कवित्त ॥ कर बल पान ततार । पान न्याजी या गोरी ॥
 हरवल 'पीप' नरिद । साहि बधौ बिय जोरी ॥
 मोरव्यूह बहुआन । मार धारइ सधारै ॥
 गिलन अण्ण सुरतान । बोल वडा उच्चारै ॥
 कत अघात सौस धारन मिरवि । जै जै जै चारन सु धुअ ॥
 सुरतान स्वर आहत वर । घनि सुवर सामत सुअ ॥ छं० ॥ १६१ ॥

तन तरफत धर मिच्छ । वला छवि जानि नटकै ॥
 मत दन्ति आरुहैं । दंत सौ दंत कटकै ॥
 समर अमर करि वंदि । भये विस्मत पल चारिय ॥
 जहँ तहँ चंद पुडीर । चंद ज्यौं रेनि उजारिय ॥
 तन ग्रह नेह मन अंत सम । भूम छंद्यौ दल दलि सुभर ॥
 संभरिय स्वर सुरतान दल । महन रंभ मच्चौ सु धर ॥ छं० ॥ १६२ ॥

युद्ध होते होते रात्रि होजाना ।

हनूफाल ॥ इति हनूफालथ छंद । कल विकल कल कृत चंद ॥
 भय निसा उदित प्रमान । चहुआन सेन सुथान ॥ छं० ॥ १६३ ॥
 कर हथ्य वथ्यन याक । मनौं मंडि बंधि चिराक ॥ छं० ॥ १६४ ॥

छः हजार दीपक जला कर भारत की भांति युद्ध होना ।

कवित्त ॥ करि चिराक छह सहस । सेन उभ्रै चावहिस ॥
 रतिवाह सम जुद्ध । वीर धावंत वीर रस ॥
 तेज चिराक रु सख । रत्त द्रिग तेज प्रमानं ॥
 सार धार निरधार । वेद छेदन गुन जानं ॥
 सारुका कारके रंका पल । निसा जुद्ध किन्नौ न किहिं ॥
 सामंत स्वर इम उच्चरै । सुवर वीर भारथ्य नहिं ॥ छं० ॥ १६५ ॥

आधी रात होजाने पर तोंअर और पड़िहार का शहाबुद्दीन
 आक्रमण करना और मुस्लमान फौज का पैर उखड़ना ।

अध्व होत वर रत्ति । साहि गोरी धरुंथ्यौ ॥
 तोंअर वर पाहार । कित्ति सा सिंधुह संथ्यौ ॥
 सेत बंध बंध्यौति । स्वर बंध्यौ रिन पाजं ॥
 जै जै जै उच्चार । धनि सामंत सु लाजं ॥
 सुरतान सेन भग्ना सुभर । तीन बान पुंजान गथ ॥
 गज घंट न घंट न मत्त सुनि । सुनि जंपै वर हयति हय ॥ छं० ॥ १६६ ॥

पीप पड़िहार का शहाबुद्दीन को पकड़ लेने का
दृढ सकल्प करना ।

दोत दोत मध्यान । पीप नैं पन मन मझौ ॥
प्रवल पानि परचड । साहि गोरी गहि बधौ ॥
सेत बधि ज्यौ राम । चद सुर भान खर सधि ॥
यौ लिनो परिहार । बालि दस कथ कप मधि ॥
रन छडि छडि धर मच्छि हुआ । लाजवत के फिरि भरिय ॥
जय जय सु जयै सुप धर अमर । सु कविचद कवितह धरिय ॥
छ० ॥ १६७ ॥

प्रसंगराय खीची, पञ्जूनराय के पुत्र, वीरभान, जामदेव,
अत्तातार्ई के भाई और शहाबुद्दीन के भाई

हुजाव खा का मारा जाना ।

भुजगौ ॥ प-यौ राव तिन वेर खीची प्रसंग । जिने पडिय पित्तपल पगग अग ॥
प-यौ राव पञ्जून पुत्रति राज । गय सुर्ग खोग करे देव गाज ॥
छ० ॥ १६८ ॥

धुक्यौ धार धकै अज मेर राई । दुअ सेन जयौ सुप किति चारै ॥
बध जामदेव बधौ वीरभान । लरी अच्छरी मरुम वीर वरान ॥
छ० ॥ १६९ ॥

प-यौ धाई घेत अत्तातार तात । मनो देपियै भूमि कदर्प गात ॥
प-यौ सेन हुजाव गोरीस बध । हय अट्ट भगौ सु उठै कमर्थ ॥
छ० ॥ १७० ॥

परे ताहि दीनै परे साहि भारे । दिये थान थान मिछ प्रात तारे ॥
छ० ॥ १७१ ॥

शहाबुद्दीन का पकड़ा जाना ।

हा ॥ इन परत सुरतान गहि । ग्रह निग्रह घट बीरे ॥
तिन जस जयत का कवी । जिन करि जञ्जर और ॥ छ० ॥ १७२ ॥

कवित्त ॥ जज्जर पंजर प्रान । साहि गोरी गहि वंध्यौ ॥
 बिन सेवा बिन दान । पान पणह पल संध्यौ ॥
 फिरि ग्रह पत्तौ राज । लूटि चतुरंग विभूतिय ॥
 डोला तेरह तीस । मझि साहाव सुभतिय ॥
 ग्रह गयौ लियैं सुरतान संग । जै जै जै जस लख्यौ ॥
 जयचंद कनाइत चिंति जिय । मान प्रसंसन सिद्धयौ ॥छं०॥१७३॥

पीपा युद्ध का परिणाम और पृथ्वीराज की निर्मल
 कीर्ति का वर्णन ।

कवित्त ॥ मान भंजि सुरतान । मान भंज्यौ सुरतानं ॥
 उन उप्पर नन कियौ । हुतौ बर बैर निदानं ॥
 पंग लज्ज उच्चरै । सुनौ मंची अधिकारिय ॥
 करिय धेत चहुआन । इदं पहु पंथह वारिय ॥
 मुह मुग्ध सुख सोमेस सुअ । ध्रुअ समान संभरि धनिय ॥
 पहरै दीह जस चहुई । धर पहर करि अप्पनिय ॥ छं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ धन्य राज अवसान मन । रन संध्यौ सुरतान ॥
 लच्छि लई चतुरंग जिति । बर बज्जे नौसान ॥ छं० ॥ १७५ ॥

कवित्त ॥ छत्र मुजीक निसान । जीति लीने सुरतानं ॥
 गो धर ठिस्सिय ईस । बज्जि निरधात निसानं ॥
 दिसा दिसा जय कित्ति । जित्ति गावै प्रथिराजं ॥
 बाल दृढ भर जुवन । जंग जंपै धनि लाज ॥
 सा भ्रम धारि छत्री नृपति । दिपति दीप भुअलोक पति ॥
 मुज्जै न कोइ सुरतान को । मुष अयन पारथ्य गति ॥छं०॥१७६॥

दूहा ॥ हालाहल वित्ते सुभर । कोलाहल अरि गान ॥
 सुवर राज प्रथिराज कौं । तपय बीर बहु जान ॥ छं० ॥ १७७ ॥

सुलतान का मुक्त होना, पृथ्वीराज का तेज वर्णन ।

कवित्त ॥ छडिदियौ सुरतान । सुजस पहु पीप मडि सिर ॥
 जित्ति जग राजान । इच्छि पूजा इच्छी थिर ॥
 भूमिय मिलि इक आइ । इक वधे वस किजिय ॥
 इक अप्प पहराइ । मान भजि रुमन दिजिय ॥
 आवै न पार लच्छी सहज । पट्ट वरन सुप्पह रुगन ॥
 बहुआन सूर सभरि धनी । तपै तेज सोमद सुअन ॥छ०॥१७८॥

इति श्री कविचद विरचिते प्रथिराज रासके मोरव्यूह पीपा
 पातिसाह ग्रहन नाम एकतीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥३१॥



अथ करहे रो जुद्ध प्रस्ताव लिख्यते ।

(वत्तीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का मालव (देश) में शिकार खेलने को जाना ।

दूहा ॥ ' कितक दिवस वित्ते न्वप्रति । सारगौपुर साज ॥

धर मालव मझौ न्वपति । आपेटक प्रथिराज ॥ छ० ॥ १ ॥

पृथ्वीराज का द४ सामंतों के साथ उज्जैन की तरफ जाना
और वहा के राजा भीम प्रभार को जीत लेना ।

कवित्त ॥ चौअग्वानी सठि । सूर सामंत ' सु सथ्य ॥

मालव धर प्रथिराज । सज्जि आपेटक तथ्य ॥

वर उज्जेनी राव । जीति पावार सु भीम ॥

बल समर जो गट्ट । गाहि चहुआन ' जु सीम ॥

सगपन सु जीति संभरि धनिय । ग्रहन जोग सम वर न्वपति ॥

सभाग समर सुनयौ समर । समर वीर मडन दिपति ॥ छ० ॥ २ ॥

इन्द्रावती और पृथ्वीराज का योग्य दपति होना ।

दूहा ॥ सुवर वीर चितै न्वपति । वर वरनी दुति काज ॥

वर इद्रावति सुदरी । वरन तकै प्रथिराज ॥ छ० ॥ ३ ॥

इन्द्रावती की छवि वर्णन ।

कवित्त ॥ इद्र सुदरी नाम । बीय इद्रावति सोहै ॥

वर समुद पावार । धरिग अति सम सग लोभै ॥

मनमथ मथन नरिद । छाड करि भाइह गाढी ॥

' रूप तरग झकुरित । तुग दोज करि काढी ॥

(१) रु ण को कितेक, केनेत, पितेक ।

(२) मो जु ।

(३) मो - सुमीम ।

(४) ए रु को रुअत अग, अंग ।

ज्यों छित्त काम जंग्यो परित । अति सुदेह निगमन भवति ।
संकुच सु काम कर 'कनिय तिहि । रिपु सुदेस जाग्यो नवति ॥
छं० ॥ ४ ॥

पंचमी मंगलवार को ब्राह्मण का लग्न चढ़ाना ।

दूहा ॥ श्रीफल दुजवर छथ्य करि । दिन गर्यो चष्ट्यान ॥
दिन पंचाम वर भोम दिन । लग्न कर परमान ॥ छं० ॥ ५ ॥

पृथ्वीराज का ब्राह्मण में इन्द्रावती के रूप, गुण और वय
इत्यादि के विषय में प्रश्न करना ।

दुज पुच्छै आतुर नवति । किहि वय किहि उनहार ॥
किहि लच्छिनमति कौन विधि । किहि कहि सुमति विचार ॥ छं० ॥ ६ ॥

ब्राह्मण का इन्द्रावती की प्रशंसा करना ।

कुंडलिया ॥ वय लच्छन अरु रूप गुन । कहत न बने सु काम ॥
सारद सुप उचारतो । सापि भरे जो काम ॥
सापि भरे जो काम । कहै सारद सुप अपन ॥
सापि चित्त नन धरे । कहिय दिष्यय सु अपन ॥
बलि सरूप सजी मदन । सुभ सागर गुर भेध ॥
सो सज्जिय भजिय दिवह । तकि प्रथिराज बनेव ॥ छं० ॥ ७ ॥

ब्राह्मण के वपनों को पृथ्वीराज का चित देखकर मुनना ।

दूहा ॥ बाल सुनत प्रथिराज गुन । 'दुरि दुरि अवन सुहित ॥
जिम जिम दुजवर उचरेत । तन मन तिम तिम रत ॥ छं० ॥ ८ ॥

इन्द्रावती की अवस्था रूप गुण और सुलच्छनों का वर्णन ।

(१) मो.-कर लीय ।

(२) ए. क. को.-फेरिपु देख ।

(३) मो.-करइ ।

(४) ए.-बुध ।

(५) ए. को.-किहि किहि ।

(६) ए. क. को.-भरे ।

(७) ए. क. को.-दुरि दुरि ।

नूफाल ॥ सुनि प्रथम वालिय रूप । वर वाल लच्छिन नूप ॥
 अहि सधि सैसव पाल । अजु अरक राका हाल ॥ छ० ॥ ८ ॥
 सैसव सु खर समान । वय चद चदन प्रमान ॥
 सैसव जीवत रल । ज्यों पथ पथी मेल ॥ ज० ॥ १० ॥
 परि भोंह भँवर प्रमान । वै बुद्धि अच्छरि आन ॥
 द्विग स्थाम सेत सुभाग । सावक लग छुटि बाग ॥ छ० ॥ ११ ॥
 विथ द्विगन ओपम कोड । सिस भूग यजन होड ॥
 वर वरन नासिक राज । मनि जोति दीपक लाज ॥ छ० ॥ १२ ॥
 गति सिपा पतंग नसाव । ओपम दे कवि आव ॥
 नासिक दीपन साल । भँप देत यजन वाल ॥ छ० ॥ १३ ॥
 विथ वाल जीवन सेव । ज्यों दपती हथलेव ॥
 वैसधि सधि अचिद । ज्यौ मत भुरहि गुविद ॥ छ० ॥ १४ ॥
 * कहि ओपमा कविचद । ॥
 तुछ रोम राजि विसाल । मनो अगि उगिय वाल ॥ छ० ॥ १५ ॥
 कुच तुच्छ तुच्छ समूर । मनो काम फल अकूर ॥
 वय रूप ओपम रह । मनो कामद्रूपन देह ॥ छ० ॥ १६ ॥
 वर छिन्न थकत तेह । जा जनक न्य कर देह ॥
 वैसधि कविवर वधि । ज्यों दृढ़ वाल विवधि ॥ छ० ॥ १७ ॥
 वैसधि सधि समान । ज्यौ खर ग्रहन प्रमान ॥
 वै राह सति गिलि खर । चव ग्रहन मत करूर ॥ छ० ॥ १८ ॥
 वर वाल वैसधि रह । सिकार काम करेह ॥
 लज करे लज लजि छडि । चित रक दीन समडि ॥ छ० ॥ १९ ॥
 कहा लागि कहो वर नाइ । तो जम अत सु जाइ ॥
 फल हथ्य लिय परवान । तप तूग तो चहुआन ॥ छ० ॥ २० ॥
 उज्जैन मे इन्द्रावती के व्याह की जब तयारी हो रही थी उसी
 समय गुज्जर राय का चित्तौर गढ़ घेर लेना ।

(१) ए रूप ।

(२) मो चढत ।

* यह पत्रित मा प्रति न अतिरिक्त अन्य किसी प्रति म नहीं है । (३) ए छ को प्रमान ।

कवित्त ॥ वर उज्जेनीराव । रंग बज्जे नीसानं ॥
 इन्द्रावति सुंदरी । बीर दीनी चहुआनं ॥
 राज मंडि आपेट । समर कागर वर धाइय ॥
 वर गुज्जरवै राव । चंपि चित्तौरै आइय ॥
 उत्तरे बीर प्रज्यत गुहा । धर पद्धर मेलान किय ॥
 जोगिंदराव जग हथ्य वर । गढ़ उत्तरि किरपान लिय ॥ छं० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज का रावल की सहायता के लिये चित्तौर जाना ।

दूहा ॥ छंडि बीर आपेट वर । गौ मेलान नरिंद ॥
 छंडि स्हर सिंगार रस । मंडि बीर वर नंद ॥ छं० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को अपना खड्ग बंधा कर उज्जेनी
 को भेजना और आप चित्तौर की तरफ जाना ।

कवित्त ॥ सतो मंडि चहुआन । सवै सामंत बुलाइय ॥
 दै षंडो पज्जून । बीर उज्जेन चलाइय ॥
 सथ्य कान् चहुआन । सथ्य बड़गुज्जर रामं ॥
 सथ्य चंदपुंडीर । सथ्य दीनौ नृप हामं ॥
 आवृत अत्तताई सुवर । रा पज्जून सु मुकलिय ॥
 मुकल्यौ गोर निहदुर सुवर । मुकलि जैसिंघ पायलिय ॥ छं० ॥ २३ ॥

दूहा ॥ मुकलयौ कविचंद सथ । नृप मुकलि गुरराम ॥
 मुकलयौ कैमास संग । दाहिगों वर ताम ॥ छं० ॥ २४ ॥
 सब सामंत सुसंग लै । लै चल्यौ चहुआन ॥
 वरनि चिन्ह उर सल्लई । कहिग कविय वैवधान ॥ छं० ॥ २५ ॥

सरौन्य पृथ्वीराज के पयान का वर्णन ।

चोटक ॥ प्रथिराज चळ्यौ सिर छत्र उपं । ससि कोटि रबी ज्यों नछिन्न
 गजराज विराजत पंति धनं । धनघोरि घटा जिम गर्जि गनं ॥
 छं० ॥ २६ ॥

(१) ए. कृ. को-करपान ।

(२) ए. कृ. को.-नृप ।

(३) ए. वधान ।

(४) ए. कृ. को.-मन ।

हय पधर वधर तेज 'तुन । किननकहि 'धकहि सेस धुन ॥
 सहनाइ नफेरिय मेरि नद । घुरवान निसानन मेघ 'भद ॥ छ० ॥ २७ ॥
 घन टोप सु ओप अनेक सर । मनु भदव बीज उपम धर ॥
 * किरवान कामानन तान कर । हयनारि हवाइ कुहक वर ॥
 छ० ॥ २८ ॥

भुजय प्रथिराज सु सारथय । दुतिय कहि भारथ पारथ य ॥
 छ० ॥ २९ ॥

(४) मो नम ।

(५) ए-धकाहि ।

(६) मो नद ।

* यह पक्ति मो-प्रति में नहीं है ।

गोतीदाम ॥ चक्षौ न्रप वीर अनदिय चद । सुमुत्तियदाम पयपय छद ॥
 दए नप कामाद भूत सु दष्ट । मिले सब आइस जग न रिष्ट ॥
 छ० ॥ ३० ॥

उडौ घुर धूरि अछादिय भान । दिसा धरि अठ न सुभभय 'सान ॥
 बजे धन सह निसान सुहद । लजे तिन सह समुदय रद ॥
 छ० ॥ ३१ ॥

'सुदे सतपच कामोदन घेरु । करे चतुरगय सकिय मेरु ॥
 द्विगपाल पयाल पुर सरसी । तिनकै वर कण परे धुरसी ॥
 छ० ॥ ३२ ॥

जु अनदिय चंद निसाचरयों । किल कपहि तुड जस वर यों ॥
 बिफुरै वर खर चिहू दिसि यों । डरपै सुर पति उर बसि यों ॥
 छ० ॥ ३३ ॥

फन फूक फनपति को बिसरी । धरके पय बडिज घुर दुसरी ॥
 जु रहे रेकि चपि धजा न धज' । तिनसों वर 'पाति पग उरभ ॥
 छ० ॥ ३४ ॥

वर बडिज तदूर तहा तबल । निभु नन नवीनय बस बल ॥
 जु धरै वर गौर 'उछ ग हर । सु कहै वर कतिन कपि डर ॥
 छ० ॥ ३५ ॥

(१) मो भान ।

(२) ए रु को सुदे ।

(३) ए रु को पषियते ।

(४) मो उवग ।

जु बजावत 'डोह' अ डक सुरं । रन नंकहि जोग जुगाधि हरं ।
सजियं चतुरंग प्रथीपतियं । दुतियं कथि भारथ पारवयं ।
छं० ॥ ३६ ॥

पृथ्वीराज का रौन सज कर पिरौर की यात्रा करना और
उधर से रावल के प्रधान का आना और पृथ्वीराज
का रावल की कूशल पूछना ।

दूहा ॥ सजी सेन प्रथिराज वर । वीर वरन चहुआन ॥
बरद सौर संभय मिल्यौ । चित्रंगी परधान ॥ छं० ॥ ३७ ॥
उत रावर सग्हौ मिल्यौ । चित्रंगी परधान ॥
कहौ समर रावल कहां । पुच्छि कुसल चहुआन ॥ छं० ॥ ३८ ॥
कुंडलिया ॥ मिलत राज प्रथिराज वर । समर कुसल पुछि तीर ॥
कहां सेन चालुक कौ । कहां समरंगी वीर ॥
कहां समरंगी वीर । दियौ उत्तर परधानं ॥
करहेरा चित्रंग । राज आहुठु प्रमानं ॥
गुज्जरवै गुरिजंम । हक उत्तर पद्वर चलि ॥
गढ़ इत दस कोस । समर उभो समरं मिलि ॥ छं० ॥ ३९ ॥

प्रधान का उत्तर देना ।

कवित्त ॥ कहि चित्रंगिय मंत्रि । चंपि आयौ चालुकह ॥
तुम नन दीनौ मेर । आइ मंडोवर चुकह ॥
चित्रंगी चतुरंग । आइ अड्डो करहेरां ॥
जुद्ध रुद्ध चालुक । हुए कोज दिन मेरां ॥
हम दैन पवरे तुम मुकलिय । कहौं कहौं मुष मुष रुष ॥
प्रथिराज राज अगै विवरि । कहौ वत परधान मुष ॥ छं० ॥ ४० ॥
पृथ्वीराज का कहना कि भीमदेव को जुड़ते ही
परास्त करूंगा ।

(१) मो.-मोरे ।

(२) ए. क. को.-मंडहि वर ।

(३) मो.-प्राति पतियां ।

(४) ए. क. को.-जंग ।

नय बुझ्झौ चालुक । सेन कितक परमान ॥
 आइ ग्रह्यौ चित्र ग । निरत दीनी नन आन ॥
 स्वर सुवर आवृत्त । रीति रण्यौ विधि जान ॥
 इन अग्यौ चालुक । वेर कितौ भगान ॥
 जोगिद राव जीयन बलिय । कलिय काल छप्पन विरद ॥
 समर ग वीर सम सिध बल । चपि लैन चालुक दुरद ॥ छ० ॥ ४१ ॥

पृथ्वीराज का आगे वटना ।

पार्श्व ॥ करि अग्यौ लीनौ परधान । आतुर ही चल्थौ चहुआन ॥
 दै गढ दन्धि न तन्धि न आन । समर सजन समुह उठि धान ॥ छ० ॥ ४२ ॥
 रणभूमि की पावस ऋतु से उपमा वर्णन ।

वित्त ॥ पावस रन प्रव्वाह । अम्भ छाथौ छिति छाइय ॥
 छिचौ छिति प्रमान । अम्भ वदर उठि भाइय ॥
 आलस 'नीदय पीक । सत राजस गहि तामस ॥
 धर दुह रन बुझनह । करै उद्दिम रन हामस ॥
 अगार रभ ग्रह वसह । औ कुलटा सुकवीय हुव ॥
 कारन किति औ काल भिसि । ड्रवै इद्र खरह सुलव ॥ छ० ॥ ४३ ॥

चालुक्य सेन की सर्प से उपमा वर्णन ।

ज्यौ गुनाव गारडू । सेन चालुक भिसि साही ॥
 विषम जोर फुकाथौ । सु फान प्रह्लाडन वाही ॥
 जीभ यग जफ्फारि । सेन सज्जे चतुर गौ ॥
 वान मच मने न । रसन कुनन आवगी ॥
 मन धीर वीर तामस तमसि । निधि चखे मन मध्य दिसि ॥
 भोरा भुवग भजन भिरन । पुष्ट दर्ई चितह सु वसि ॥ छ० ॥ ४४ ॥

पृथ्वीराज की सेना की पारधि से उपमा वर्णन ।

यह सभरि चहुआन । वीर पारधि परि आइय ॥

दुहुं निसान बजि समुह । भूमि पुर कंषि हलादिय ॥

बीर सिंध आहुठ । बीर चालुका मुप साछिय ॥

पुच्छ मग्ग चहुआन । दुहुन वर बीर समाहिय ॥

उत्तरिय मनो सामुह ताहि । उदित दीछ मंगल अरक ॥

जोगिंद जेम जोगिंद कास । अष्ट कुली वंछै मुरक ॥ छं० ॥ ४५

चहुआन और चालुक्य का परस्पर साम्हना होना ।

दूहा ॥ चालुकां चहुआन दल । भई सनाह सनाह ॥

दोज सेन कविचंद कहि । वरनि बीर गुन चाह ॥ छं० ॥ ४६

दोनों ओर से युद्ध के वाजे बजते हुए युद्धारंभ होना ।

मोतिदाम ॥ सजी वर सेन सु चालुकराइ । परे वर बीर निसानन धाइ ॥

भए दल सोर चिहूं दिसि वक्त । मनो मरु पुत हकारहि हक ॥

छं० ॥ ४७ ॥

अछादि अक्षत्र न ह्वस्त भल । करे किधों सोर कपी वर गलह ॥

गहक्कर बैन उचारत ओन । इहै जुधकार प्रकारय द्रोन ॥

छं० ॥ ४८ ॥

धरं गज आगम नीम अउद्ध । छुटे वर पाइक फूलय रुद्ध ॥

सुसील अपूल बन्धो हथवान । विचै गुथि मोति कुहक अचान ॥

छं० ॥ ४९ ॥

दुहुं बिच नग्ग मगं नग पंति । परी तहां पट्टनराइ मपंत ॥

जु भाल अंशूर सु सुंदर बिंद । धरी हथनारि छतीसय चंद ॥

छं० ॥ ५० ॥

कसुंमिल डोरि सु पच्छिम संधि । तिठौहर बंध नरिंद सु बंध ॥

लरं मधि ब्रह्म सु चालुकराव । दिसं बुलि भट्टिय दल्लि न काव ॥

छं० ॥ ५१ ॥

दिसि वाम जवाहर मेर अराव । रच्यौ अरगंध नरिंदन चाव ॥

रंग स्याम सनेत कसे घन रूप । तिन में वर छीन सुरंग अनूप ॥

छं० ॥ ५२ ॥

पसरौ वर क्रान्न सनाह न तीर । अचवै उत कालिय के रुचि पीर ॥
 भजी चतुरगन बग्न बनाइ । चडे अरि के उर चालुक गइ ॥
 छ० ॥ ५३ ॥

इधर से पृथ्वीराज उधर से रावल समर सी जी का
 चालुक्य सना पर आक्रमण करना ।

हा ॥ चालुका चित्र गपति । मिले दिष्टि दुअ दौरि ॥
 मना पुब पच्छिमहु तै । उडि डवर इल सौर ॥ छ० ॥ ५४ ॥
 इत चप्यौ चित्रगपति । उत चुहान प्रथिराव ॥
 आइ राज उप्पर करन । बज्ज निसानन घाव ॥ छ० ॥ ५५ ॥
 डलिया ॥ ढाल ढलकि दुअ सेन बर । गज पती हलि जुथ्य ॥
 मनो मल आहूद दीउ । तारी दै दै हथ्य ॥
 तारी दै दै हथ्य । राम अवनौ अन पिप्ये ॥
 दुहुन दिष्ट अकुरिय । पाज बधन बल दिग्घे ॥
 चपि सेन चालुक । बीर अम सो बर भिख ॥
 चाहुआन वर सेन । दुरौ पच्छिम दिसि ठिखे ॥ छ० ॥ ५६ ॥
 पृथ्वीराज और हुसैन का अपनी सेना की गज

व्यूह रचना रचना ।

वित्त ॥ सब सामतर समर । बीर दक्षिण दिसि हडिय ॥
 चाहआन हूसेन । गज बूह रचि गडिय ॥
 एक दत हूसेन । दत दक्षिणह ततारी ॥
 सुड गरुअ गोयद । राज कुमखल भारी ॥
 दिसि वाम सबै आकार गज । महन सीह मोरी सुवर ॥
 बट्टनय अग आहुठपति । महन रभ मचो सुभर ॥ छ० ॥ ५७ ॥

युद्ध वर्णन ।

धरी ॥ घन धाइ धाइ अध्याइ खर । सिधु औ राग वज्रै काहर ॥
 हुकार हक जोगिनिय डक । मुह मार मार वज्रै ववक ॥ छ० ॥ ५८ ॥
 (१) मो इन । (२) मा-हुसेन । (३) गो त्र । (४) गो मुह ।

नंचयौ ईस गौ दरिद सीस । पप्पर उपट्टि धुटै घुरीस ॥
 नाचंत नह नारह तुंव । अच्छरी अच्छनद जानि लुंव ॥ छं० ॥ ६० ॥
 गिद्धिनी सिद्ध बेताल फाल । घेचर पपाल वृद्धै कराल ॥
 ओनित जानि सरिता प्रवाह । कड़कंत रुंड मुंडह सु वाह ॥
 छं० ॥ ६० ॥

चमकंत हंत मथ्यै क्रपान । मानों कि जका लग्यौ गिरान ॥
 पति चिचकोट चहुआन सेन । चालुक्क चूर किनौ सुरेन ॥
 छं० ॥ ६१ ॥

चालुक्क राय का अकेले रावल और पृथ्वीराज से ५ पहा
 संग्राम करना और उनके १००० वीरों का गारा जाना ।

दूहा ॥ चालुक्कां परि स्तर रन । सहस एक मुर सत ॥
 चूका चिंत चूकौ चितन । छै अचिज्ज विधि बत ॥ छं० ॥ ६२ ॥
 पंच पहर वित्यौ समर । दिन अथवंत प्रमान ॥
 उमै सत रावर 'समर । प्रथीराज सत आन ॥ छं० ॥ ६३ ॥

दुसरे दिन तीन घटी रात्रि रहते रो फिर युद्ध होना ।

निस बर घटीति 'सतरहि । सेष जाम पल नीन ॥
 भिरि भोरा रावर समर । रतिवाह सो दीन ॥ छं० ॥ ६४ ॥

भोराराय का नदी उतर कर लड़ाई करना ।

नदि उत्तरि चालुक्क बर । चिंपि सुमर प्रथिराज ॥
 सुमर भीम उप्पर परे । मनो कुलींगन बाज ॥ छं० ॥ ६५ ॥

धर्मासाँन युद्ध वर्णन ।

भुजंगी ॥ परे धाड चहुआन चालुक्क सुष्प । मनो मोष मद मत्त जुष्टे
 बजे कुंत कुंतं समं सेल साही । परी सार टोपं बजी तं चधई ॥
 छं० ॥ ६६ ॥

भरै सार अगगी दमै टोप दमक । मनो त चनेत प्रलै अगि सज्ज ॥
फटै गज्ज सीस सिर मेदि लोही । घसी भारती कासमीर ति सोही ॥

छ० ॥ ६७ ॥

दिए नागमुष्य गजे त तवान । ठनकत घट फटै पीतवान ॥
बजे बज धाई उकातीति चिन्ह । बकै जानि भट्ट प्रसस्ती इन्ह ॥

छ० ॥ ६८ ॥

गहै दत खर चढै कुम तती । फिरै जोगिनी जोग उचारवती ॥
लगी हथ्य गोरी गई अग मेदी । मनो राह खर बटे माहि छेदी ॥

छ० ॥ ६९ ॥

रुधौ धार मती सुमती उछारै । उतकठ मेली जु रभा विचारै ॥
परै घुमि खर महा रोस भौन । मनो वासनी मद् प्रथम सु पीना ॥

छ० ॥ ७० ॥

समय पाकर रावल समर सिंह जी का तिरछा

रुख देकर धावा करना ।

दूहा ॥ औसरि भर पिच्छे परे । समर तिरछी आइ ॥

मानहु पल हुतेसनी । भई बीभछ निधाइ ॥ छ० ॥ ७१ ॥

युद्ध लीला कथन ।

चिभगी ॥ तिय विय अरि सत, बहु वलवत, ग्यारह जत, अति रगी ।

चिभगी छद्, कहि कविचंद, पढत फनिद, बर रगी ॥

विय हुअ नय नाल, बज रिन ताल, असिवर झाल, रन रगी ।

सामत भर खर, दिठ कायर, मिलि 'अरिपूर, अनभगी ॥ छ० ॥ ७२ ॥

मनु मान पयान, चढि बर वान, मिलि बथ्यान, असिभार ।

ओडन कर डार, वेन कारार, तामस भार, तन तार ॥

जुट जुटिय गुड, जोवति दृड, अरिनि अरुड, अरि बक ।

उर धरि चालुक, खर जहक, 'सुर आतक, धक धक ॥ छ० ॥ ७३ ॥

दल बल पर ओठ, सीस विघोट, रन रस वोठ, परि उठ ।

दत उधार, कथय मार, अरि उत्तार, अत छुट ॥

(१) मो आसि ।

(२) ए रु को सुर ।

जोगिन किलकारी, हसिहिं ततारी, दै दै भारी, हिलकारी ।
अरि तन तन कालं, परि वेहालं, चालुक झालं, वर भारी ॥
छं० ॥ ७४ ॥

सासंतों का जोश में आकर प्रचार प्रचार युद्ध करना ।

कवित्त ॥ वीर वीर आरव्व । चढ़िय वीरं तन हर्ष ॥
चावहिसि विद्धुरे । मोह भाया न वासक ॥
एक दिनां आहुरे । आदि जुद्धं पिति लग्यो ॥
कै छुट्टे मद मोष । जानि वीरन द्रग जग्गे ॥
धन धाइन धाड़ आधाड़ धन । मति सुभाइ विरभाइ परि ॥
कविचंद वीर इम उच्चरै । प्रथम जुद्ध आदीत टरि ॥ छं० ॥ ७५ ॥

भोलाराय के १० सेनानायकों मारे गए, उन

का नाम ग्राम कथन ।

दूहा ॥ संभ्र सपट्टिय वीर भर । परिग सुभर दस राइ ॥
तिथ घवास परिगह नृपति । सिर धुम्भै घट धाड़ ॥ छं० ॥ ७६ ॥
कवित्त ॥ पच्यौ समर घावास । जित्यौ जिन सम चालुकिय ॥
परि भट्टी महनंग । छत्र नष्यौ अरि सक्किय ॥
पच्यौ गौर केहरी । रेह अजमेरी लग्गिय ॥
परिग वीर पामार । धार धारह तन भग्गिय ॥
रधुवंस पंच पंचौ मिले । वर पंचानन और कवि ॥
चित्रंग राव रावर लरत । टरय दीह अथवंत रवि ॥ छं० ॥ ७७ ॥

आधी घड़ी दिन रहने पर पृथ्वीराज की तरफ से हुसैन

का चालुक्य पर आक्रमण करना ।

धरौ अद्ध दिन रह्यौ । चलिग हसेन पान अम ॥
चालुकां दिसि चल्यौ । मोह छंड्यौ जु कर्मक्रम ॥
असि अहार चढ़ि धार । मन न मोच्यौ तन तोच्यौ ॥
अस्त वस्त वज्री कापाट । दधीच ज्यों जोच्यौ ॥

वर रभ वरन उतकठती । सूर हूर उत कठ मिलि ॥
 द्वितीय ढोल जीरन जुग । गल्ल वीर जुग जुग चलि ॥ छ० ॥ ७८ ॥
 एक दिन राति और सात घडी युद्ध हाने पर पृथ्वीराज
 की जीत होना ।

हुआ ॥ निसि दिन घटिय तिसत वर । दल चहुआनन चीन् ॥
 भिरि भोर रावर दिनह । रतिवाह सो दीन ॥ छ० ॥ ७९ ॥
 गुरजर राय भीम देव का भागना ।
 भिरि भगौ सुत भुअंग कौ । गल्ल समर गुर राज ॥
 फिरि पच्छौ पुछी पठकि । विन सु गरव तजि लाज ॥ छ० ॥ ८० ॥
 भित्तित ॥ पेत जोति चित्रग । हृथ्य चव्यौ चहुआन ॥
 के भोरी भर सुभर । लीन अप्पह पर आन ॥
 केक किर परलाक । सुक्ति लम्भौ 'जुग जान ॥
 पच तत्त मिलि पच । सार धारह लगान ॥
 चहुआन समर इकतनि मठ । तहा सेन उतरि सुभर ॥
 चालुक्क भीम पट्टन गयो । करो चद कित्तिय अमर ॥ छ० ॥ ८१ ॥
 कविचद द्वारा पृथ्वीराज की कीर्ति अमर हुई ।

बौपाई ॥ अमर कित्ति कविचद सु अप्पी । जा लगि ससि सूरज नभ सय्य
 इह काया माया जिन रथ्यौ । अत काल सोई जम भय्यौ ॥ छ० ॥ ८२ ॥
 पृथ्वीराज की कीर्ति का उज्ज्वल भेष धारण कर स्वप्न में
 पृथ्वीराज के पास आकर दर्शन देना ।

हुई ॥ निसि सुपनतर राज पै । कित्ति आइ कर जोर ॥
 नौतन अति उज्जल तनह । नौद नपति मन चोर ॥ छ० ॥ ८३ ॥
 कीर्ति का कहना की हे क्षत्री मै तुझे दर्शन देने आई हूं ।
 जपि जगाई सोमेस सुअ । मदन भीम चहुआन ॥
 देत रुप छवौ प्रकति । दरसन तवही पान ॥ छ० ॥ ८४ ॥

कोटि लखन सुंदरि सहज । भय सुंदरि तिन प्रेम ॥
 स्वर सुमर डरपै रनह । तौ सुधीर कहि केम ॥ छं० ॥ ८५ ॥

कीर्ति का निज पराक्रम और प्रशंसा कथन ।

कवित्त ॥ तौ कीर्ती चहुआन । निदरि संसारह चम्पौ ॥
 तीन लोक में फिरौं । देव मानौ उर मम्पौ ॥
 थान थान द्विगपाल । फिरिव चावटिसि रुंध्यो ॥
 तन विसाल उज्जल सुरंग । दुग्गन मिर पुंदो ॥
 हूं सार अडर डोरु कहन । जोग प्रमानह उत्तरी ॥
 चहुआन सुनौ सोनेस तन । भूत भविष्यत विस्तरी ॥ छं० ॥ ८६ ॥

दूहा ॥ तौ कीर्ती चहुआन हौं । तीनों लोक प्रसिद्ध ॥
 धीरज धीरं तन धरै । द्रवै भूमि नव निद्ध ॥ छं० ॥ ८७ ॥
 हौं सु देवि सुंदरि सहज । तुम गुन गुंथित देह ॥
 पुंन प्रेम अति आतुरह । लग्यौ प्रेमलह नेह ॥ छं० ॥ ८८ ॥

प्रातः काल पृथ्वीराज का उक्त स्वप्न कवि पंद और गुरु

को सुनाना और फल पूछना ।

कवित्त ॥ जु कछु लिख्यौ लिलाट । सुष्य अरु दुःष समंतह ॥
 धन विद्या सुंदरी । अंग आधार अनंतह ॥
 कल्प कोटि टर जाहि । मिटै नन घटै प्रमानह ॥
 जतन जोर जो करै । रंच नन मिटै विमानह ॥
 सुपनंत राज आचिज दिषि । बुझिग चंद गुरराम तरु ॥
 बरनी विचित्र राजन बरहि । कही सति मत्तौ सु अरु ॥ छं० ॥ ८९ ॥

गुरुराम का कहना कि वह भोलाराये का परास्त करने
 वाली कीर्ति देवी थी ।

दूहा ॥ इह सुपनंतर चिंततह । कहि सु देव जिम कीम ॥
 रति बाह बर नरिंद सों । दीनों भोरा भीम ॥ छं० ॥ ९० ॥

रात के समय भोलाराय का ५००० सेना सहित पृथ्वीराज
के सिविर पर सहसा आक्रमण करना ।

कवित्त ॥ चौकी जैत पँवार । सलप नदन रचि गढ़ौ ॥

ता सत्यह चामड । भीम भट्टी रचि ठढ़ौ ॥

महन सौह वर लरन । मार मारन रन चौकी ॥

उठी दिष्ट अरि भोज । प्रात पिम्भिकय वर सौकी ॥

हजार पच अरि टारि कै । मोरा अरि उप्परि परिय ॥

जाने कि पुराने दग में । अग्नि तिनका अरि परिय ॥ छ० ॥ ८१ ॥

रात का युद्ध वर्णन ।

रेसावला ॥ अत्ति अच्छी रन, तेग कढ़ी धन । रत्ति अच्छी मन, वीज कुद्दी घन ॥

वीर रस्स तन, सार भजे धन । हक मच्चौ रन, बाह बाह तन ॥

छ० ॥ ८२ ॥

रुड मुड धन ईस इच्छै चुन । पग भग तन, ग्राह गग जन ॥

सभ रुठौ मन, तार चौसठिन । भूत प्रेत तन, भय्य दिन्नौ घन ॥ छ० ॥ ८३ ॥

जानि सौल रुधौ, कवि ओपम सुधौ । मन भारथ जल, भेदि उप्पर चल ॥

छ० ॥ ८४ ॥

पृथ्वीराज के प्रधान प्रधान वीर काम आए, उनके नाम ।

कवित्त ॥ दै अरि पच्छौ जैत । पयौ पावार रूपधन ॥

पयौ किल्ल चालुक । सधि चालुक हजूरन ॥

पयौ वीर वगरी । भयौ अगार चहुआन ॥

परि मोरी जैसिध । सिध रप्पी पिजवान ॥

हलमल्यौ सबै प्रथिराज दल । दलमलि दल चालुक गयौ ॥

तिय सीत अग्नि अधार पप । चद तुच्छ उदित भयौ ॥ छ० ॥ ८५ ॥

दोनों तरफ के डेढ हजार सैनिकों का मारा जाना ।

हा ॥ चालुका चहुआन दल । लुथि स देढ हजार ॥

सब धाड़ल 'होडे' परिय । तब मुरि मेर पहार ॥ छ० ॥ ८६ ॥

(१) मो दीडे ।

पृथ्वीराज का खेत को तिरछा देकर चालुक पर आक्रमण करना ।

कवित्त ॥ जंगी सिर चहुआन । लुथ्यि ^१दुंढन उपायि ॥
 खेत तिरछौ भुक्ति । पिक्षिय लग्यौ अरि भारिय ॥
 थों आतुर लग्यौ । जान चालुक न पायौ ॥
^२कंनू वैन ^३संभलियं । फेर वर भीम घसायौ ॥
 उछरिय पानि वर भइ भिरि । संग लोह हकारि दुहुं ॥
 गुजर नरिंद चहुआन दुहुं । परि पारस भारत्य कहुं ॥ छं० ॥ ८९ ॥

प्रभात होते ही युद्ध आरंभ होना ।

वर प्रभात बन होत । होड़ चौहान सु लगिय ॥
 लरत स्हर दिनभान । सिरह चालुक पत पगिय ॥
 ग्रह धरि बजि निसान । रत्ति आई सु भिरतां ॥
 लोह किरन पसरत । स्हर विरक्त ^४वथ गतां ॥
 वर स्हर दिप्यि काइर विडुरि । ठठुकि स्हर सामंत रन ॥
 दिप्यनह स्हर इन काम वर । चढ़ि दिप्यन गौ स्हर तन ॥ छं० ॥ ९० ॥

दोनों सेनाओं का जी छोड़ कर लड़ना ।

सुजंगी ॥ भिरे स्हर चालुक चहुआन गतां । लरते परते उठे स्हर तत ॥
 दिवं दृष्टि न भीम भिरि चिचकोटं । परे मार ओटे चहुआन जोट ॥
 छं० ॥ ९१ ॥

किर स्हर कोटं न हलै हलाय । अमी सेन दून रहे हथ्य पार ॥
 रसं वीर आयौ चलयौ मोह प्रानं । जिनै छव बंसं धरौ आन ॥
 छं० ॥ १०० ॥

भज्यौ चित ^५वाहं लजे स्हर दिप्यं । तहां चंद कप्यौ सु ओपगा ॥
 पियं चास पिप्यं सघी पास लग्यौ । मनो वाल बडू परे ^६पाइ ॥
 छं० ॥ १०१ ॥

(१) ए.-दुंढन ।

(२) मो.-कैन वैन संभलिय फेरि वर नीम घसायौ ।

(३) ए.-संभरिलिय ।

(४) ए. क. को.-वग रता ।

(५) मो.-चाह ।

(६) को.-

असव्वार ऐसे सनाहत कट्ट । मनो 'वीथ सौकी इधो भाग वट्ट ॥
उडै काइर हक हरि जीव चास । उपमा कहर फुटै नैन पास ॥
छ० ॥ १०२ ॥

मनों पुत्तली कट्ट 'गढि चिच लाही । कर जान लग्गी टग टग चाही ॥
फुटै फेफार पेट तारग झुल्लै । मनौ नामि ते कोल सारग झुल्लै ॥
छ० ॥ १०३ ॥

दिए नाग सुप्यी गज हट्ट पग्गी । पित तेज आयौ वर जत लग्गी ॥
उपमा न पाई उपमा न बची । मनौ इड छथ्य कर राम पची ॥
छ० ॥ १०४ ॥

'करी फारि फट्ट कर ऐक कोर । जकै सिंधु भार जुरै जानु जोर ॥
पय जोर ऐसे प्रतग चलायौ । भगदत 'छव्वी तहा खर पायौ ॥
छ० ॥ १०५ ॥

गिरे कथ वध कमध निनारै । उपमा तिन की न ओपम चारै ॥
हकै सीस नीच धर उच धायौ । मनो भगुरी रूप नपती दियायौ ॥
छ० ॥ १०६ ॥

सम पाज घट्टै कित साम काज । तिते 'जपरे खर चढि किति पाज ॥
बडे खर सिद्ध सिध कोन जोगी । धिग पल्ल की भति ज्यौं पाल ओगी ॥
छ० ॥ १०७ ॥

दो पहर दिन चढते चढते ५ हजार सैनिको का मारा जाना ।

कवित्त ॥ चढत दीह विप्यहर । परिग हज्जार पच लुथि ॥
वान वचन भरि नरिंद । भारि उचारि देव धपि ॥
पट छह बर हज्जार । ऐकि मर्मे चहु आन ॥
वर कट्टन चालुक्क । मत्ति कीनी परिमान ॥
सह सेन बीर आहुठि तहा । तौ पट्टनवै कट्टयौ ॥
उच्चयौ बभ भट्टी विहर । धार धार अपु चट्टयौ ॥ छ० ॥ १०८ ॥

- (१) ए रु को त्रिय पिय, । (२) मो गहि । (३) ए रु को - गज ।
(४) ए रु को छत्र । (५) ए रु को उत्तरे । (६) मो परिमान ।

पृथ्वीराज की जीत होना और चालुक का भागना ।

तब रा निंगर राव । गुरुभक्त धर रावर मंडिय ॥
 रुक्मि सेन चहुआन । पग मगह तन पंडिय ॥
 परिगहिय सब सथ्य । गयौ चालुक वजाइय ॥
 घमर पेह पग मिलिय । निरति प्रथिराज न पाइय ॥
 बीरंग बीर वज्जर विहर । मिरत बजि निय विप्यहर ॥
 वज्जरत बीय बंभन परत । गयौ भीम तन वर कुसर ॥ छं० ॥ १०६ ॥

चालुक की सब सेना का मारा जाना ।

दूहा ॥ तीस सहस वर तीस अग । गत चालुक रन मंडि ॥
 तिन में कोइ न ग्रह गयौ । सार धार तन पंडि ॥ छं० ॥ ११० ॥
 बाव हार कोइ न भयौ । धनि चालुकी सेन ॥
 सामि काज तन तुंग सौ । चिन करि जान्यौ जेन ॥ छं० ॥ १११ ॥

पृथ्वीराज का रणक्षेत्र ढुंढवा कर धायलों को उठवाना और मृतकों की दाह क्रिया करवाना ।

कवित्त ॥ घेत ढूँढि चहुआन । समर उप्पारि समर में ॥
 निठ पायौ चामंड । मिले सब मंस रुधिर में ॥
 है गै वर विभूत । रंक लुट्टी चालुकी ॥
 किन हय हस्थिय लुट्टि । गयौ पति प्रथत 'मुक्ती ॥
 दिन अठ्ठ राज चितौर रहि । बहुत भगति राजन करी ॥
 जोगिनी नपति जुगिनि पुरह । जस बेली उर वर धरी ॥ छं० ॥ ११२ ॥

पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना ।

दूहा ॥ दिल्ली न्यप दिल्ली गयौ । बजि निधात सुदंद ॥
 जिम जिम जस ग्रह राज करि । तिम तिम रचित कविंद ॥ छं० ॥ ११३ ॥
 जस धवलौ मन उज्जलौ । निश्ची पहुमि न होइ ॥
 झूत भविच्छति त्रित मन । चिचनहार न कोइ ॥ छं० ॥ ११४ ॥

इसके पीछे पृथ्वीराज का इन्द्रावती को व्याहना ।

पडौं सुनि पठ्यौ सु नय । वज्रि निसानन धाड़ ॥

वर इन्द्रावति सुदरी । विथ वर करि परनाइ ॥ छ० ॥ ११५ ॥

। इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके करहे रो रावर
। समरसी राजा प्रथिराज विजय नाम वत्तीसमो प्रस्तावः ॥३२॥



1

अथ इन्द्रावती व्याह ।

(तैंतीसवां समय ।)

उज्जैन के राजा भीम का चंद कवि से कहना कि पृथ्वीराज का हृदय नीरस है मैं उसको अपनी कन्या न विवाहूंगा ।

वित्त ॥ कहे भीम सुनि भट्ट । स्वर बध्यौ सुरहौ ^१रित ॥
^२दीना सौं प्रति प्रीति । सामि करिहै जु सामि ^३मित ॥
^४अमृत रत्त विप होत । अमृत रस रत्त उपज्यै ॥
नाव प्राव सो प्रीति । सार सो सार सपज्यै ॥
^५कठु सो कठु बर बधियै । नारि नरन सौं वाहियै ॥
इह काज राज कविचंद सुनि । त्यो वरनी वर चाहियै ॥ छ० ॥ १ ॥

कवि चंद का कहना कि समय पाय सगों की सहायता करने गए तो क्या बुरा किया ।

सुनि भीमग पेंवार । चहे ग्रथिराज प्रपत्ते ॥
समर दिसा चालुक्क । ^१सजे चतुरग सपत्ते ॥
धनि भगन तन आनि । कित्ति चहुआन सुनिज्यै ॥
साम दान अरु भेद । दड सुदरि ग्रह लिज्यै ॥
मो मत सुनौ ^२पर जाइ तौ । नव वर महि कलहत भय ॥
गुर गुरह सख सामत ए । लज्ज बधि तुव हथ्य ^३दिय ॥ छ० ॥ २ ॥

भीमदेव का प्रत्युत्तर देना ।

- (१) ए छ को तत । (२) ए रु को तदिना । (३) ए क को मति ।
(४) ए रु को रत अरत्त विप होइ अमृत रत जुस्त उपज्यै । (५) मो - कठ ।
(६) मो सुजो । (७) ए रु को पर । (८) ए रु को - दिप ।

कहै जोइ वरदाइ । मंत कविचंद सु आमन ॥
 मन वासौं मन मिलत । जियत कै कांठ सामन ॥
 जो वासुर मुर पंच । 'पग मंडै चहु आनं ॥
 तौ भाविका जिह लेप । तिही है पै परिमानं ॥
 भावी विगति भंजन गढ़न । दइय दुसंकाह जानि गति ॥
 लिपि बाल सीस दुप सुष्य दुहु । सत्य होइ परमान मति ॥ छं॥३ ॥

यह समाचार सुन कर इन्द्रावती का शोकातुर होना ।

दूहा ॥ सुनि इन्द्रावति सुंदरी । धरनि सरन सिर लाइ ॥
 कै धरनी फट्टै कुहर । कै पावक जरि जाइ ॥ छं० ॥ ४ ॥
 इन भव नय सोमेस सुअ । जुध बंधन सुरतान ॥
 कै जलधि वूड़वि भरै । अवर न 'बंधौं' आन ॥ छं० ॥ ५ ॥

सखियों का इन्द्रावती को रामझाना ।

कवित ॥ सखी कहै सुनि बत । सुतौ दानव कुल कहियै ॥
 अवर जाति अनेक । राइ 'गुर परनह लहियै ॥
 करे कोन परसंग । पाइ अगमद धनसारं ॥
 कोन करै कुष्टीन । संग लहि कामवतारं ॥
 तो पित्त अवर वर जो दियै । तो नन जंपै अलिख वच ॥
 राखियै अप्य राचै तिनह । अनरचै रचै न सुच ॥ छं० ॥ ६ ॥

इन्द्रावती का उत्तर कि मैं राजकुमारी हूं गेश कहा वचन
 कंदापि पलट नहीं सकता ।

दूहा ॥ तुम दासी दासी सु मति । मो मति नय पुचीय ॥
 बोलि विन चुकै न नर । जो वर मुकै जीय ॥ छं० ॥ ७ ॥

भीम का कविचंद से कहना कि तुम यहां फौज लेकर
 क्या पड़े हो, क्या गेरे प्रताप को नहीं जानते ।

(१) ए. क. को -मद्धि आयौ ।

(२) ए. क. को. -भंजी ।

(३) ए. क. को. छंडौ ।

(४) ए. क. को -गुन ।

कहै भीम कविचन्द 'सुन । स्वामि काम तुम अहु ॥

सेन सगप्यन रीत नह । तुम दानव कुल चहु ॥ छ० ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ हौ सु भीम मालव नरिद । मोहि घर बर अस्थिय ॥

सवा लाय मो आम । ठाम सपति बहु लस्थिय ॥

विधि विधान निम्मान । कोन भिट्टै इह बतिय ॥

होनहार होइहै पुरुष । जपै गति भतिय ॥

तुम कहो नाम बरदाइ वर । गुरुराज वदे चरन ॥

ओछी सु वत्त कट्टौ कथन । एह सगप्यन विधि वरन ॥ छ० ॥ ९ ॥

कविचन्द का कहना कि समय देख कर कार्य
करना ही बुद्धिमत्ता है ।

दूहा ॥ अहो भीम 'सत्तह सुमति । तुम मतिमान प्रमान ॥

औसर तकि कौजै 'जुगत । औसर लहिजै दान ॥ छ० ॥ १० ॥

भीमदेव का पञ्जून से कहना कि तुम्हें वादशाह के
पकडने का वडा अभिमान है इसी से तुम और
को शूरवीर ही नहीं जानते ।

कवित्त ॥ कहै भीम पञ्जून । सुनौ पामर मतिहीना ॥

'अमत कियौ तुम मत । वरन वरनौ पग लीना ॥

तुम सहाव बलि बधि । गर्व सिरे उप्पर लीना ॥

गिनौ और तिल मत । कछौ न सुन्यौ तुम कौना ॥

छत्तीन वस छत्तीस कुल । सम समान गिनियै अवर ॥

घरु जाहु राज सुकौ वरन । करन व्याह उछछाह नर ॥ छ० ॥ ११ ॥

जैतराव का कहना कि भीमदेव तुम बात कह कर
क्या पलटते हो ।

(१) ए कू को कहि ।

(२) ए कू को सतिमत्ति ।

(३) को कू ए जु रन ।

(४) मो अमन ।

जैतराव जल जैत । नैन लले करि बोलै ॥
 अहो भीम करि नीम । वत पहली तुम भोलै ॥
 बल बलिष्ठ कोहरिय । स्थार क्यों मुप दर धर्म ॥
 लोक भाप बुझसी न । न्योत वैरी को भिम्बै ॥
 हस केवा लज्ज साईं धरम । क्यों कहुय मुप वतरिय ॥
 सु विहान बरन द्यप्यै मरन । आज तुम्हारी वतरिय ॥ छं० ॥ १२ ॥
 भीम का गुरुराम से कहना कि स्वार्थ के लिये
 विग्रह करना कौन सा धर्म है ।

दूहा ॥ तब कहि भीम नरिंद सुनि । अहो सु गुर दुज राम ॥
 अमत मत मंडौ मरन । इह सु कोन धम काम ॥ छं० ॥ १३ ॥
 गुरुराम का ऐतिहासिक घटनाओं के प्रमाण सहित उतर देना ।
 कवित्त ॥ त्रिया काज सुन भीम । मिल्यौ सुग्रीव राम जब ॥
 'कहिय वत पय लम्बि । नाथ मो बालि हत्यौ अब ॥
 हरी नारि तारिका । मास पट जुद्ध सु मंझौ ॥
 अस्ति वस्थ करि स्थिल । मतका सम वर करि छंझौ ॥
 तुम देव सेव रसनौ ग्रहिय । अब सहाय तुम सारयौ ॥
 बंधियौ सात तारह सु जिय । बलिय बान इक मारियौ ॥ छं० ॥ १४ ॥

भीम का गुरुराम को मूर्ख बना कर कविचन्द से कहना
 कि जैतराव को तुम रामदाओ ।

दूहा ॥ तुम बंभन बंभन सु मति । पढ़ि पुस्तक कहि सुरत ॥
 दो धर मंगल मंडियै । इह धर जानी वरत ॥ छं० ॥ १५ ॥
 अहो चंद दंद न करहु । तुम कुल दंद सुभाव ॥
 जैतराव 'मिलि राम गुरु । ले काने समगाव ॥ छं० ॥ १६ ॥

कविचन्द का रामप्रमाण उतर देना ।

कवित्त ॥ कहै चद सुनि दद । चीय कज रावन पछौ ॥
 'बैरोचन न्यप नद । मारि अप्पन भ्रम भंछौ ॥
 कास कण्ठ सिसुपाल । कज रुकमनि जुध मछौ ॥
 'ता बंधव रुकमान । बध मुडवि सिर छछौ ॥
 सुर असुर नाग नर पपि पसु । जीव जत चिय कज भिरै ॥
 रे भीम सीम चहुआन की । ता बरनी को वर वरै ॥ छ० ॥ १७ ॥

भीम का अपने प्रधान से मत्र पूछना ।

दूहा ॥ भीम पूछ परधान भर । कहौ सु कौजै काम ॥
 जुध जुरै चहुआन सौ । ज्यो इल रथ्यै नाम ॥ छ० ॥ १८ ॥
 ॥ मंत्री का कहना कि इन्द्रावती पृथ्वीराज को व्याह दीजिए
 पर भीम का इस बात को न मान कर क्रोध करना ।

कवित्त ॥ इह सु नाम 'अनाम । जेन नामह घर जाइय ॥
 इहै नहीं घर जोग । अगनि दीपक दिप्पाइय ॥
 पछै हौ भजियै । होइ दुज्जना हसाई ॥
 इद्रावति सुदरी । देहु चहुआन प्रथाई ॥
 सुनि भीम राज ततौ तमकि । गई वत्त बुझ्यौ सु तुम ॥
 हकारि जैत गुरराम कवि । पग व्याह न न करै हम ॥ छ० ॥ १९ ॥

सामंतों का परस्पर विचार बाधना ।

दूहा ॥ उठि चखे सामत सब । कारन दद मति ठाम ॥
 जो बरनी बिन पछि फिरै । न्यपति न मनै माम ॥ छ० ॥ २० ॥

रघुवस रामपवार का वचन ।

कवित्त ॥ फिरि जानी पावार । राम रघुवस विचारी ॥
 जीवन जो उच्चरै । मरन केवल सचरी ॥

(१) ए बैरोचन, बेरीचन ।

(२) मो के बधव रुकमान ।

(३) ए रु को वर ।

(४) ए कृ को-सनाम ।

* महंकाल वर तिथ्य । तिथ्य धारा उद्धारी ॥
 स्वाभि अम्भ तिय तिथ्य । मुक्ति संसो न विचारी ॥
 पांवार सुबल मालव नृपति । वर समुंद जिम भारयौ ॥
 वर नीति किति सुर वर असुर । मुगति मथन संभारयौ ॥ छं० ॥ २१ ॥
 भतौ मंडि सब सथ्य । भत को वित्त विचारिय ॥
 वर पट्टन दक्षिण है । घेन लै है हकारिय ॥
 वर बाहर पालि है । स्वामि पिगि है पांवारय ॥
 वर आतुर धाड़ है । अप्य संगहौं हकारिय ॥
 धर दहै कोस अधकोस वर । फिरि चावदिसि रुंधही ॥
 करतार हथ्य केतिय कला । तिहिं दुज्जन फिरि बंधही ॥ छं० ॥ २२ ॥

बहुआन की फौज के भीमदेव की गौओं के घेर लेने पर,
 पट्टनपुर में खलबल पड़ना ।

दूहा ॥ पंच कोस बेलान करि । लिय नृप पट्टन घेन ॥
 कूक कहर बज्जिय विषम । चढ़िय भीम नृप सेन ॥ छं० ॥ २३ ॥
 उंच क्रान अनमिष नयन । प्रफुलित पुच्छ सिरेन ॥
 रंग गंग गौ निजरि लषि । प्रज्जलि भीम उरेन ॥ छं० ॥ २४ ॥

बहुआन सेना का मालवा राज्य की प्रजा को दुःख देना
 और भीम का उराका राम्हना करना ।

कवित्त ॥ औसरि बसि सामंत । घेन लुट्टिय पट्टनवै ॥
 वर मंडल उज्जैन । धाक बज्जिय बदनवै ॥
 ग्राम ग्राम प्रज्जरेहि । खर मानव वर बज्जै ॥
 सामंतारी धाक । धार मुक्किय विधि भज्जै ॥
 संभरिय बीर बाहर अवन । बाहर हर बाहर चढ़िय ॥
 चतुरंग सज्जि पांवार वर । अगन हंकि अगपति बढ़िय ॥ छं० ॥ २५ ॥

* महकाल=महाकाल “ उज्जैन्याम् महाकाले ” इति लिङ्गपुराणोक्त बारह जोतिर्लिङ्गों में
 एक उज्जैन में महाकालेश्वर नाम से प्रसिद्ध शिवमूर्ति है ।

(१) मो.-सव ।

भीम का चतुरंगिनी सेना सजकर सन्नद्ध होना ।

हय गय रथ चतुरंग । सज्जि साइक पाइक भर ॥

आइ मिले मुपमेल । दुहुन कहुय असि बर बर ॥

'तेग मार सिर झार । धुम धुम्भर हर लुक्किय ॥

प-यौ घोर अधियार । विछुरि निसि सभ चक चक्किय ॥

को गिनै अपर पर को गिनै । लोह छोह छेकै बरन ॥

सामत स्हर जैतह बलिय । कहत चद जुगति सरन ॥ छ० ॥ २६ ॥

रघुवसराय का नाका वाधना और पञ्जून का भीम की
गाएँ धेर कर हांकना ।

बर सिम्रा नदि तट । घाइ सामत जु रहिय ॥

रोकि मुप्य रघुवस । धेन पञ्जून सु रहिय ॥

दुतिय वीर बर टिके । भीस भारथ जिम लगिय ॥

स्हर विना प्रथिराज । धके जुरि पगगन पगिय ॥

मुकि धेन गठि बधिय मिलवि । औसर पग कहुय सरन ॥

झरि सार तिनगा तुटि बर । तिरदू झर लग्यौ झरन ॥ छ० ॥ २७ ॥

जैतराव और भीम का युद्ध वर्णन ।

मोतीदाम ॥ तुरगम आउ लह गुर ठाउ । कला ससि सपि जगन्नय पाउ ॥

पय पिय छद सु मोतिथदाम । कछौ धर नाग सु पिगल नाम ॥

छ० ॥ २८ ॥

मिले जुध जैतह भीम नरिद । मचौ जुध जानि दतासुर इद्र ॥

पगे पग मग परे धर मुड । परे भर बथ्य भरोरत मुड ॥

छ० ॥ २९ ॥

काटकहि हड्डि गूद करक । विछुटकि तुटहि लुब लरक ॥

भभकत वकत धाइल छक । उरभकत अत सु पाइन तक ॥ छ० ॥ ३० ॥

(१) ए क को "मिले लोह सामत धुम्भ धुम्भर हर लुटिय ।

(२) मो सति ।

करकस कोस लनीं नट भंग । नचे सब सारद भारद संग ॥
रनचिय बेस उलथ्य पलथ्य । परै धर लुथ्य उनें उन जथ्य ॥
छं० ॥ ३१ ॥

करें कर आवध दंड छतीस । तकै छल सांडय अम्म मतीस ॥
नचै भर षप्पर चौसठि नार । इसौ जुध रुद्ध अनुद्ध अपार ॥ छं० ॥
गए भगि सेन सँग्राम सिथार । भिदै रवि मंडल खर सुवार ॥
छं० ॥ ३३ ॥

हूहा ॥ आदि खर पांवार वर । भीम सरन तिन जान ॥
हमसि हमसि संहौ भिरै । पग पन मोपन पान ॥ छं० ॥ ३४ ॥

युद्ध विषयक उपमा और अलंकारादि ।

पड्वरी ॥ * अनिवद्ध जुद्ध आवद्ध खर । वरि भिरत भंति दीसै करूर ॥
आलमली संगि फुटि परदि तुच्छ । उप्पमा चंद जंपै सु अच्छ ॥
छं० ॥ ३५ ॥

बहल सु माहि दीसै प्रमान । निकयौ पंचमो भाग मान ॥
नंवर सांग फोरि सिप्पर प्रमान । छरि महत चंद सो भासमान ॥
छं० ॥ ३६ ॥

भानों कि राह ससि ग्रहै धाड़ । पैठयौ सरन बहलन जाड़ ॥
किरवान बंकि बहू बिसाल । मनुं ससिअ डोर कढ़ि चक्र लाल ॥
छं० ॥ ३७ ॥

सिप्पर सुभंत करि तुट भमाड़ । मानहु कि चक्र हरि धरि चलाड़ ॥
दुहुं सेन तीर छुट्टे समूह । भानों द्वपंति पंषिय सजूह ॥ छं० ॥ ३८ ॥
कढ़ि इसी तेग धाड़य पहार । मनुं अमं इंद्र सज्ज्यो संभारि ॥
विरचै जु खर बाहै विहथ्य । दिधि दूर चढ़ि मनमथ्य रथ्य ॥
छं० ॥ ३९ ॥

भरहरै सख पाइल सुभार । रिन रूप देव दिसि खर पार ॥
गुरहरी भेरि वर भार सार । बज्ये सु तबल आकास तार ॥
छं० ॥ ४० ॥

* नद ३५ से ३८ तक का पाठ मो. प्रति में नहीं है ।

नं यह पंक्ति मो. को.-कृ इत्यादि प्रतियों में नहीं है ।

भक्त भक्त उभक्त वक्ष दिपीव । ओपम च द तिन कहत हीव ॥
 कट हित सूर जोधाइ मुक्ति । कहुत वाल ज्यो वाल रुक्ति ॥ छ० ॥ ४१ ॥
 इह सार सुख मिद्विय डरेन । जानिये चीय वयसधि तेन ॥
 परि सहस सत्त दोउ सेन वीर । रवि गयौ सिधु तीरह सुतीर ॥
 छ० ॥ ४२ ॥

सायकाल के समय युद्ध वन्द होना ।

कवित्त ॥ सक्त हेत वहि सार । मार कारि तुष्टि सनह रिझ ॥
 सो ओपम कविचद । अग छुट्टे कि वाल पिझ ॥
 टोप ओप उत्तरै । परै विपरीत विराजै ॥
 मनो सु भाजन भोम । हथ्य जोगिनि रुध काजै ॥
 यों भयौ सेन सम वर सुवर । नन छाथौ जित्यौ न कोइ ॥
 दोउ सेन बीच सरिता नदी । निस कहुँ वर वीर होइ ॥
 छ० ॥ ४३ ॥

दूसरे दिवस प्रात काल होते ही पुन सामंतों का
 पान-व्यह रचकर युद्ध करना ।

होत प्रात सामत । पान व्यूह जुध रचिय ॥
 मोती भर सामत । पान क्लरभ रा सचिय ॥
 वर हरिन्ध उथ्यट्ट । पत्ति भडी गुन राजै ॥
 लाल रूप कविचद । मझि कनइका दुति साजै ॥
 नालीव रूप लीनो वरन । राम सुवर रघुवस भिरि ॥
 कोदनि सुरग पती करिय । वीय सहस पुडौर परि ॥ छ० ॥ ४४ ॥

युद्ध वर्णन ।

माखती ॥ तिय पच गुरु, सत सत्ति चामर, वीय तीय, पयो हरे ॥
 माखती छद, सुचद जपय, नाग पग मिलि, चित हरे ॥

(१) ए रु को नीर ।

(२) मो कहि ।

(३) मो-ओट ।

(४) मो मुघ ।

(५) ए रु को गुर ।

(६) ए रु को-लज ।

(७) मो-नालीच ।

नव खर सलिल ललिल, अरि न अल मिलि, लोह गिल मिल, निकरो
 वर खर तल छुटि, लजन नट्टय, बीर सबदन, वर भरे ॥ छं०
 मिलि सार सार, पहार वजि धट, उधटि नट जिम, तानयौ ।
 झलमलत तेक, सकति बंकि, ओपमा कवि, मानयौ ॥
 मनौ बिट्ट जिम, बेहार ग्रह पति, कुलट तन तिय, लोकियं ॥
 धन खर धार, अवार जन जिन, धार धार, जनेकियं ॥ छं० ॥ ४६ ॥
 चिहुं दिसा चाहं, खर वह वह, जूट चखं, निडयं ॥
 मनुं रास मंडल, गोप कन्हं, दंप दंपति, बंधियं ॥
 वर अरि सेन, विडारि चिहु दिसि, करषि काइर, भज्यं ॥
 वर बीर धार, पंवार सेना, परे सोम, अलुभक्त्यं ॥ छं० ॥ ४७ ॥

युद्ध होते होते उचारार्थ में सामंतों का उज्जैन मंत्री को घे-
 कर पकड़ लेना और इन्द्रावती का चहुआन के साथ
 व्याह करना स्वीकार करने पर कवि चन्द का
 उरो छुड़ा देना ।

कवित्त ॥ दिन पल्लव्यौ पांवार । सरल बाह्यै सखन पर ॥
 चावहिसि सामंत । भीम बीव्यौ सुरंग नर ॥
 तन सट्ट अरि सट्ट । बंधि लीने उज्जैनी ॥
 बल छुव्यौ संग्रह्यौ । दई वर भंभर नैनी ॥
 कविचंद छंडायौ बीच परि । बाल सुवर सुंदर वरी ॥
 धनि खर बीर सामंत हौ । जुजर जुद्ध इतौ करी ॥ छं० ॥ ४८ ॥
 भीम का राव सामंतों का आतिथ्य स्वीकार करके
 उनके धायलों को औषधि करना ।

दूहा ॥ भीम भयानक भयछ्यौ । सरन राम कविराज ॥
 वर इन्द्रावति सुंदरी । मे दीनी प्रथिराज ॥ छं० ॥ ४९ ॥

(१) मो. ए. क. को.-धट ।

(२) मो.-सौनयौ ।

(३) मो.-सु वर ।

जो मति पच्छै उप्पजै । सो मति पछिले होइ ॥

काज न विनसै अण्णनौ । दुज्जन हँसे न कोइ ॥ छ० ॥ ५० ॥

आदर करि आने सुग्रह । भगति जुगति बहु कौन ॥

जे भर धाइल उप्परे । जतन जिवाइ सु दीन ॥ छ० ॥ ५१ ॥

पग विवाह भीमग रुचि । बाजे वज्जन लगि ॥

मगल मिलि अलि गावही । गौष गौष निस जग्गि ॥ छ० ॥ ५२ ॥

इन्द्रावती का विवाह उत्सव वर्णन और सामंतों का
पृथ्वीराज को पत्र लिखना कि भीम देव ने
विवाह स्वीकार कर लिया है ।

भुजगी ॥ रचै वेदिका बस सोव्रत्र सोहै । जरे हेम में कुभ देषत मोहै ॥

लगी वेद विमान सो 'गान भाई । रचे कुड मडण सेध न साई ॥

छ० ॥ ५३ ॥

हसे तर्क विक्क' हास सुरास । धसे कुकाम लाल गुलाल वास ॥

उडै वीर 'गोधूरक वास रेन । करे मेरि भुकार गज्जत गेन ॥

छ० ॥ ५४ ॥

चवै छंद बदी नन पार जान । करे दान हेम सु विद्या विनान ॥

भई प्रीति जेत सुरा-कविरान । तिन लेपिय कग्गद चाहुआन ॥

छ० ॥ ५५ ॥

हूहा ॥ लिपि कग्गद चहुआन दिसि । दिथ पुत्री भीमानि ॥

इद्र धरनि सम सुदरौ । कलह कुसल बर वानि ॥ छ० ॥ ५६ ॥

इन्द्रावती का शृंगार वर्णन ।

नाराच ॥ कच्यौ सुन्धान कामिनी । दिपत मेध दामिनी ॥

सिगार पोडस करे । सु हस्त दर्पन घरे ॥ छ० ॥ ५७ ॥

वसन्न वासि वासन । तिलक भाल भासन ॥

दुनैन ऐन अजए । चल चलत पजए ॥ छ० ॥ ५८ ॥

सुहंत ओने कुंडलं । ससी रवी कि मंडलं ॥
 सु मुक्ति नास सोमई । दसन्न दुति लोभई ॥ छं० ॥ ५८ ॥
 अनेक जाति जालितं । धरेंत पुष्प मालितं ॥
 श्ककार हार नौपुरं । धमंकि घुंघरं धुरं ॥ छं० ॥ ६० ॥
 विलेपि लेप चंदनं । कसी सु कंचुकी धनं ॥
 सु धुद्र धंढि धंढिका । तमोल आप अंटिका ॥ छं० ॥ ६१ ॥
 कनक नग कंकनं । जरे जराइ अंकनं ॥
 विसाल बानि चातुरी । दिषन्न रंम आतुरी ॥ छं० ॥ ६२ ॥
 अनेक दुति अंग की । कहंत जीभ भंग की ॥
 सहस्र रूप सारदं । सरन्न रूप नारदं ॥ छं० ॥ ६३ ॥
 इन्द्रावती का मंडप में राखियां राहित आना और
 पृथ्वीराज के साथ गठबंधन होना ।

दूहा ॥ करि अंगार अलि अलिन संग । रिम रिम गुंडन मंग ।
 बसन रंग नवरंग रंगे । जानु कि फुल्लिय संझ ॥ छं० ॥ ६४ ॥
 चौपाई ॥ कर गहि षग मग चहुआनं । वरन इंद्र सुंदरि वर बानं ॥
 मन गंठे गंठिय प्रिय जानं । जानकि देव विहाह विवानं ॥ छं० ॥ ६५ ॥

भीम का चहुआन को गांवरी दान वर्णन ।

दूहा ॥ सत हस्थी हय सहस विय । साकति साजि अनूप ॥
 हथलेवौ चहुआन कों । द्वियौ भीम वर भूप ॥ छं० ॥ ६६ ॥
 नग चरित चौडोल सौ । मुर सत दासिय सथ ॥
 दै पहुंचाइय सुंदरी । कही वनै वर गथ ॥ छं० ॥ ६७ ॥

रामन समय इन्द्रावती की माता की इन्द्रावती के प्रति शिक्षा

मात पुत्ति परठिय सुमति । विधि विवेक विनयान ॥
 पतिव्रत सेवा मुष धरम । इहै तत्त मति ठान ॥ छं० ॥ ६८ ॥
 पति लुप्यै लुप्यै जनम । पति बंचै बंचाइ ॥
 इहै सौष हम मन धरौ । ज्यो सुहाग सचवाइ ॥ छं० ॥ ६९ ॥

पृथ्वीराज का वदियों को दान देना ।

वदिन दान प्रवाह दिय । लिय सुदरि जुध जीति ॥

दुहु जस नमल हृद गुन । पढन कविन इह रीति ॥ छ० ॥ ७० ॥

सामंतों की प्रशंसा वर्णन ।

धनि सामत समथ्य । जेन न्यप विन जुध जितिय ॥

धनि सामत समथ्य । जेन जस किछि विदितिय ॥

धनि सामत समथ्य । जेन वरनी वर सध्यौ ॥

धनि सामत समथ्य । जेन भीमंग रन वध्यौ ॥

सामत धनि जिन कित्ति वर । दिल्ली दिस पायान कर ॥

बैसाय मास अष्टमि सितह । कित्ति सचरिय देस पर ॥ छ० ॥ ७१ ॥

विवाह के समय उज्जैन की शोभा वर्णन ।

दिल्लिय पति सिनगार । हट्ट पट्टन की सोभा ॥

गौय गौय जारीन । दिधि चिय नर सुर लोभा ॥

भूंगल बैरि नफेरि । नह नीसान अदगा ॥

नानत करत सगीत । ताल सौं ताल उपगा ॥

गाजत नभम गजिय गुहिर । न्यप प्रवेस सुदरि करि ॥

सामत जैत पथलगि प्रथ । प्रथक प्रथक परसस करि ॥ छ० ॥ ७२ ॥

दहेज वर्णन ।

चार अग चालीस । मत अण्ये गजराजिय ॥

सौ तुरग तिय अग । बीस चव अण्यि सु पाजिय ॥

इक अमोल सुदरी । सत तिय दासिय बिटिय ॥

सबै सथ्य सामत । रहे भर करिय अमिटिय ॥

सामत करी प्रथिराज विन । करै न को रवि चक्र तर ॥

सुदरी सहित अरि जीति कै । गए बीर अष्टमि सु घर ॥ छ० ॥ ७३ ॥

शुक्ला अष्टमी को सामंतों का दिल्ली के निकट पड़ाव डालना ।

दूहा ॥ वर अष्टमि उज्जल पपह । तिथि अष्टमि रवि भीर ॥

अष्ट कोस दिल्लीय तें । त्रिय भुक्तिग तिन वीर ॥ छं० ॥ ७४ ॥

उसी समय लोहाना का पृथ्वीराज को शहाबुद्दीन
का पत्र देना ।

गय सुंदरि सग्हौ नपति । गवन करन चहुआन ॥

लोहानौ सग्हौ मिल्यौ । दै कामाद सुरतान ॥ छं० ॥ ७५ ॥

लोहाना का कहना कि सुरतान दंड देने से फिर कर
दिल्ली पर आक्रमण करना चाहता है ।

कावित ॥ मेघगाही सेन । दंड पलव्यौ सु विज्ञानं ॥

अपुठौ भर चतुरंग । सजे दस गुनौ प्रमानं ॥

वर कामान पुरसान । रोहि रंगे रा गप्पर ॥

हवस हेल धंधार । सजि धल्ली फिर पप्पर ॥

पंजाब देस पंचौ नदी । वर मंगै मंगी सु वर ॥

चहुआन राह मैं मंगिली । मते मच्छ कटुन उगर ॥ छं० ॥ ७६ ॥

पृथ्वीराज का इन्द्रावती को धर पहुंचा कर युद्ध की तैयारी करना ॥

दूहा ॥ सुनिय साहि गोरी सु वर । वर भर्यौ चहुआन ॥

लै सुंदरि पच्छौ फियौ । वर वज्जे नीसान ॥ छं० ॥ ७७ ॥

इन्द्रावती की रहाइरा ।

दिस दच्छिन तच्छिन महल । सुंदरि समुद समप्पि ॥

सकल सत दासी अनुप । नृप इन्द्रावति अप्पि ॥ छं० ॥ ७८ ॥

सुहागस्थान की शोभा वर्णन और इन्द्रावती का सखियों
साहित पृथ्वीराज के पास आना ।

कवित्त ॥ अगर कपूरति महल । सार धनसार सु रन्ध्रिय ॥
 धूप दीप सुगंध । दीप दस दिसि दृष्ट जन्ध्रिय ॥
 सेज सुरगति रंग । हेम नग जरे जराज ॥
 दिए भीम भूपाल । भोग साज सु सवान ॥
 नव देयि अचम समानि मन । मुय आतुरे देयन महल ॥
 आनिय सु सेज चिय अलिन मिल । अलि गुजत उप्पर चहिल ॥
 छ० ॥ ७६ ॥

इन्द्रावती की लज्जामय भद्र चाल का वर्णन ।

दूहा ॥ हस गवन हसह सरेन । गनि गति मति सारह ॥
 रूप देयि भूल्यौ नवपति । रचिय विरचि विहद ॥ छ० ॥ ८० ॥

सुहाग रात्रि के सुख समाचार की सूचना ।

कवित्त ॥ रस विलास उप्पजौ । सपी रस हार सुरत्तिय ॥
 ठाम ठाम चढि हरम । सह कहकाह तह मत्तिय ॥
 सुरत प्रथम सभोग । हह हह मुप रट्टिय ॥
 ना ना ना परि नवल । प्रीति सपति रत थट्टिय ॥
 शृंगार हास्य कल्या सु रुद्र । वीर भयान विभाछ रस ॥
 अदभूत सत उपज्यौ सहज । सेज रमत दपति सरस ॥ छ० ॥ ८१ ॥
 सुकौ सरस सुक उच्चरिग । गभ्रव गति सो ग्यान ॥
 इह अप्रुव गति सभरिय । कहि चरित्त चहुआन ॥ छ० ॥ ८२ ॥

इति श्री कविचंद्र विरचिते प्रथिराज रासके इन्द्रावती व्याह
 सामंत विजै नाम तेतीसमों प्रस्ताव संपूरण ॥३३॥

(१) ए क को नन्ध्रिय ।



अथ जैतराव जुद्ध सम्यौ लिख्यते ।

(चौतीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का सप्रताप दिल्ली का राज्य करना ।

कवित्त ॥ किहि मेयत प्रथिराज । किहित मेयत चिहु पास ॥
किहि मेयत दिसि विदिसि । कहौ मनया उल्लास ॥
किहि उभाह उच्छाह । कोन ओपम द्रग राजै ॥
सो उत्तर कविचद । देव गुराज विराजै ॥
सजि मान वीर चतुरगिनी । कमल गहन सुरतान बर ॥
नव रस विलास अस रस सकल । तपै तुग चहुआन बर ॥ छ० ॥ १ ॥
ढाई वर्ष पश्चात पृथ्वीराज का षट्ठू वन में शिकार खेलने को
जाना और नीतिराव कुटवार का शहाबुद्दीन को भेद देना ।

नीतराव पिचीय । भेद लै ग्रह चहुआन ॥
दिल्लि कौ 'शुह भेद । लिप्यौ कगद सुरतान ॥
बरप उमै पट भास । फेरि सु विहान पलान्यौ ॥
षट्ठू वन प्रथिराज । बहुरि आपेटक जान्यौ ॥
सामत स्वर सथ्यहन को । बर बराह बर पिसइय ॥
दैवान जोध चहुआन बर । भिरि दुज्जन भर ढिसइय ॥ छ० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज के साथ में जाने वाले शिकारी जतुओं की गणना
और षट्ठू वन में शहाबुद्दीन के दूत का आना ।

सत चीता दादसति । स्वान अच्छे सु रग दह ॥
बीय अग च्यालीस । सौह बर गोस कहदह ॥
सत सत अग अच्छे । सत दह अगति पाजी ॥
आपेटक प्रथिराज । वीर ओपम अति राजी ॥

(2) 1. 5. 1

अरे ठौठ वस्तीठ । कौन हो-यौ को जित्यौ ॥

किन वित्तग वित्तयौ । कोन वित्तग अव वित्त्यौ ॥

पच तत्त पुत्तरी । पच हथ्यन कर नरचै ॥

अजै बिजै गुन बधि । चित्त तामस रस रचै ॥

बछै जु सुख फल राजगति । वह करतार सु नन करै ॥

उचरै किति छल ना रहै । तब लगै गल बल परै ॥ छ० ॥ ८ ॥

कहा गजनी है और कहा दिल्ली और कै वार मैने
उसे बंदी किया ।

छ० ॥ कै कोसा ढिल्ली धरा । कै कोसा गजान ॥

पडा सौ कर बधिया । चहुआना सुरतान ॥ छ० ॥ ९ ॥

मै रथ्यौ *हुस्सेन वर । वर बध्यौ सुरतान ॥

उठ्ठाए वस्तीठ वर । वर बज्जै नीसान ॥ छ० ॥ १० ॥

दोनो ओर की सेनाओ की सजावट की पावस
ऋतु से उपमा वर्णन ।

मोदक ॥ दसमत पयो लह, पच गुर । पग पन हरे बिप पत्त वर ॥

वर सुद्ध प्रथान हुषास छबी । कहि मोदक छद प्रमान कबी ॥

छ० ॥ ११ ॥

जु सजी चतुरगन दान दिय । कबि दोउअ सेन उपम किय ॥

*सुत पजन ज्यों बुधगति पढ़ी । सति सीतल वात प्रमान बढी ॥

छ० ॥ १२ ॥

वर रत्त रपत सुरत वन । तिन की छबि पावस सज्जि घन ॥

सु बजे वर बीर निसान बज । सु मनो धन पावस सज्जि गज ॥

छ० ॥ १३ ॥

(१) ए क का भिन । (२) ए क को वर । (३) ए क को पुरतान ।

(४) मो हर । (५) मो सत । (६) ए क को बाल ।

* हुमेन शब्द से यहां मोर हुयेन से अभिप्राय नहीं है बरन उसके पुत्र से तात्पर्य है जैसा कि
मय ३१ में भी दिखाया जा चुका है ।

बजावत बीर जंजीरन सूर । कपै सूर वीर पयास-नपूर ॥
उड़ि रेन चिहूँदिसि विष्टुरियं । मुदरी द्रग अकृत धुंधरियं ॥

छं० ॥ १४ ॥

तिह ठौर रसं अप वंधव से । तिनके सुष बाल भुअंग ग्रसे ॥
बर जगगत नेन सु मेन सुचें । तहां कूर नसें नर आइ नचें ॥

छं० ॥ १५ ॥

अम सूर तिनं अभिलाष रिनं । बर यक्ष बलं बर वंसु तनं ॥
काल किंचित संकर भूर दियं । बर वीर भजादन लाज लियें ॥

छं० ॥ १६ ॥

सहनाइय सिंधुअ अहरियं । तिन ठौर भयानक संचरियं ॥
बर पंच सु दीह ससी चढ़ियं । बर वीर अवाज दिसं बढियं ॥

छं० ॥ १७ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज और पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन
की तरफ बढ़ना ।

गाथा ॥ तं वीरं जल गंभीरं । आव यों उप्पटी सेनं ॥
गोरी दिसि चहुआनं । चहुआनं गोरीयं साहि ॥ छं० ॥ १८ ॥
इधर रो पहुआन और उधर रो शहाबुद्दीन का
युध के लिये उत्सुक होना ।

कुंडलिया ॥ इह सु राज आतुर धरिय । सुरतानह प्रथिराज ॥
भूमि भार कछु बढ्यौ । सो उतारन काज ॥
सो उतारन काज । परे आतुर दोउ दीनह ॥
तिन अर बस चर परे । को इन छट्टै मति हीनह ॥
अप्यन सुसिंह बहुरे सुरह । चकई चक मुकै नही ॥
अप्यन सुहृथ भरही परै । दया न किया मन इही ॥ छं० ॥ १९ ॥

(१) ए. क. को.-धरिय ।

(२) ए. क. को.-छट्यौ ।

(३) मो.-पार ।

(४) मो.-छडै ।

(५) ए. क. को.-सुहर ।

शहाबुद्दीन का सिध नदी तक आना और चहुआन
को दूतों द्वारा समाचार मिलना ।

दूह । ॥ चढ़त सिध सुरतान दल । दूत सपत्ते आइ ॥
चर चरित चहुआन दल । कहै साह सों जाइ ॥ छ० ॥ २० ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ वढना ।

कवित्त ॥ नछिन इद्र प्रथिराज । सोम नदन सिवर दिसि ॥
वर इद्रह दीसै न । मछल मध्यौ सु दुहु निसि ॥
जबही हम सचरे । काल तबही दिसि पास ॥
परत वाह लप्यत । दिष्ट देवन सुय बास ॥
लच्छीन भ्रौव बस बीर रस । दह दिसि भिरि दानव मिलिय ॥
मेलान कोस परपच को । गौरी वै सन्धौ चलिय ॥ छ० ॥ २१ ॥

चहुआन सेना में सूरवीरो का उत्साह करना और
कायरों का भय भीत होना ।

दूह । ॥ इह अवाज चहुआन दल । बँटि सेन सु विधान ॥
काइर भर सह उचरै । कहि बधन सुरतान ॥ छ० ॥ २२ ॥
कवित्त ॥ हाइ हाइ कहि साहि । चरनि वरज्यौ सु विहान ॥
भुभभ रहै कै जाइ । जु कछु पतौ चहुआन ॥
वरन मेष्ट बर हिदु । सुनत रन पन कर हेरी ॥
जय जानी अन चप । पच चतुरग सु भेरी ॥
भुअ वीर रूप गोरी सु बर । भुकि भयानक भट्ट जिम ॥
पलट्यौ मेप देयत सयन । बर बज्यौ नीसान तिम ॥ छ० ॥ २३ ॥

चलते समय सेना का आतंक वर्णन ।

पद्रायना ॥ बर बज्जिग नीसान, दिसान पयान हुअ ।
उछि उछगिय रेन, सु मेरनि भान भय ॥

(१) ए ठ को पुल ।

(२) ए ठ को-त्राय ।

(३) मो नीय ।

(४) मो तट ।

गोरी वै भौ राह रयन हर मिगई ।

गज असवारन खर निव्रत सु लगई ॥ छं० ॥ २४ ॥

शाही सेन की सजावट की वर्णन ।

गीतामालवी ॥ गुर पंच सतति चामरे कवि, जोग नव गति संधयौ ॥

सब पाइ पिंगल सावरे लहु, बरन अखिर बंधयौ ॥

लगि गीत मालति छंद चंदय, दवरि साहित गोरियं ॥

गज सह नहय छिरह भहय, अननि दिन दिन जोरयं ॥ छं० ॥ २५ ॥

धन चढ्यौ गिरि जनु चले दिस दिस, वीथ बग उरधरे ॥

तिन देवि मन गति होत पंगुर, दान छुटि पटे भरे ॥

गजदंत कांतिय झलकि उज्जल, पिप्पि पंतन रा इयं ॥

रवि किरनि बहल पसरि धावै, वाय पंकाति सज्जयं ॥ छं० ॥ २६ ॥

गज कारत दंत सुमंत जरध चंद, उप्पम मंडिकै ॥

मनो बग पंतिय वार, 'उड़गन मोह दिसि सो छंडिकै ॥

धर मत्त दंतिय सेन बंधिय, इम्भ छवि 'कवि तामयं ॥

मनो भेघ वरपत विज्ज कोधित, अम्भ बुढ़ि गिरि स्यामयं ॥ छं० ॥ २७ ॥

गति नाग गिरवर गात दीसै, कूट कज्जल उज्जले ॥

धर चलत गिरवर वरन वारन, स्याम बहल छलिचले ॥

'भूटकंत सुंड दिपंत पाइका, बनि समथ पसु पुज्जवै ॥

अति सेन सापरि कोन पुज्जै, जोग जुगति सु 'लज्जवै ॥ छं० ॥ २८ ॥

चय लप्प मीरति साह गोरिय, भार शुकुश अलुभुशवै ॥

पुरसान पान अरक आरव, सज्जि सेन 'सक्तंभवै ॥ छं० ॥ २९ ॥

शहाबुद्दीन का स्वयं राहल कर रोना को उत्कर्ष देना कि

अव की पृथ्वीराज अवश्य पकड़ लिया जाय ।

भूमरावली ॥ सजे वर साह तुरंगम तुंग । लजै कविचंद उपम कुरंग ॥

सितं सित चोर गुरै गज गाह । तिनं उपमा बरनी नम जाइ ॥

छं० ॥ ३० ॥

(१) ए. क. को.-उडन ।

(२) ए. क. को.-इम्भ छविद्धता, छविद्ध ।

(३) मो.-झलकंत ।

(४) ए. पुज्जवै ।

(५) ए. क. को.-अवक्षवै ।

जु सजे हय गोरियसाहि परे । तिन देखि रबी रथ के विसरे ॥
दिपि सेन तिन उपमा सु करी । सु मनो नदि पूर छिली दुसरी ॥
छ० ॥ ३१ ॥

'कहि चद कविद इद कवित । गुरु वक पिप मन कै चढत ॥
वजि बाज कुह धर सद पुर । सु मनो कठतार वजत तुग ॥
छ० ॥ ३२ ॥

गज गाह गुर सित सोभ पगे । मनो सेत वेजरन भान रगे ॥
नभ कै तिमर जित के समर । मनु उठि किरन सु पाल पर ॥
छ० ॥ ३३ ॥

विय ओपम चद वनी बनिकै । सु धसे मनु गग तरगनि कै ॥
अग हथ्य बने हय के सिरय । गलि प्रद्यत हेम द्रुम वरय ॥
छ० ॥ ३४ ॥

वर पप्पर सोभ करै तनय । मनु अक्क अरक्क विचे घनय ॥
तिनकी हर वाय फुलिग सजै । सु कहै कविचद दुरग लजै ॥
छ० ॥ ३५ ॥

बुहु रैनन आसन जी डरय । मग मत्त मनो बहरें बनय ॥
मन मत्ति तिहा इत अत्ति पढी । हय नध्यत रागन सास कढी ॥
छ० ॥ ३६ ॥

विय वाय अरक्कन बध चढै । कविचद पवनन वाद बढै ॥
सु उडै नन धावत धूरि पुर । गतिमान सुसील विसाल उर ॥
छ० ॥ ३७ ॥

पय संस्कृत अश्वत आतुरय । विरचे नच पातुर चातुरय ॥
दुहु पार अपार अवध परी । मनु गावहि इदुन बध धरी ॥
छ० ॥ ३८ ॥

हय अपिय अतन साहि वर । जु गहो चहुआन पयाल पुर ॥
छ० ॥ ३९ ॥

प्रातः काल होते ही जमरोजखां और नवरोजखां का
युद्ध के लिये सेना तैयार करना ।

दूहा ॥ सबै सेन गोरी सु बर । चढ़िग पान जमसोज ॥

प्रात सेन चतुरंग सजि । उठि पान नवरोज ॥ छं० ॥ ४० ॥

यहुआन का सेना तैयार करना ।

चौपाई ॥ ठल^१ मिली ठाल चिहुं दिसि वनाइ ।^२ डम्भरी उठि आकास छाइ ॥

अचरनचरन गोरीस^३ सार्इ । सेन चहुआन हथ्य^४ बनाई ॥

छं० ॥ ४१ ॥

दोनों सेनाओं का गुंहजोड़ होना ।

दूहा ॥ समर सउप्पर समर किय । चावहिसि अरुनग ॥

मुप गोरो चहुआन भिरि । ज्यों रावन लागि अग ॥ छं० ॥ ४२ ॥

चौपाई ॥ समह्यौ रन चहुआन सपट्टिय । वजिग वाय सुभिगन^१ नदि उठिय ॥

धुंधर अन बहर निसि भदौ । सुभिगन न अंघ कन सुनि नदौ ॥

छं० ॥ ४३ ॥

युद्ध समय के नक्षत्र योगादि का वर्णन ।

जावित ॥ अरु अरु जोगिनिय । सुक सन्धौ सुरतानं ॥

दिसा खल दिसि बाम । बैर क-ए^१ चहुआनं ॥

सिंध बाम भैरवी । गहक बोली गोरी दिसि ॥

गुर पंचम रवि नवों । रोह ग्यारमो सुरंग ससि ॥

ईसान मध्य देवी पहकि । गहक मस्तक धूघू वहक ॥

आकास मझि गज्यौ गयन । परो बूंद बेबंग हक ॥ छं० ॥ ४४ ॥

दूहा ॥ ज्यों जगदीसह कान दे । तकसी रन किहुं कीन ।

मिलि उत्तर पच्छिमहुं तें । मिरन भरन दोउ दीन ॥ छं० ॥ ४५ ॥

(१) मो.-मली ।

(२) मो.-मम्भरी ।

(३) ए. समाई ।

(४) ए. कू. को.-न दिष्टिय ।

दोनों सेनाओं में रन वाद्य वजना और उससे सूर वीर
 लोगो तथा घोड़े हाथी इत्यादि का भी प्रसन्न
 होकर सिंह नाद करना और क्रुद्ध
 हो युद्ध करना ।

भुजगी ॥ परे धाड़ धोड़ दीन हीन न जुद्धे । मुप भार भार तिन मान सद्धे ॥
 परी आवध होड बज्जै निसान । बजे हक सूर दमामें न जान ॥
 छ० ॥ ४६ ॥

बढ़ै आवध हथ्य सामत सूर । घुरै वै निसान बजै जैत 'पूर ॥
 कढ़े वै सनाह अनक उनगी । मनो आवध हथ्य बज्जै चिनगी ॥
 छ० ॥ ४७ ॥

परै पीलवान मद 'मरक दती । ठली ठाल ठाल ठलक तुरती ॥
 पुरै हथ्य जन मुरकी उरकी । मुरै धार धार सुधार मुरकी ॥
 छ० ॥ ४८ ॥

तुटै सिप्पर कोर फूलै समती । ग्रस्यौ राह सूर छटै नभभ हुती ॥
 परै सार तीर जनकत बज्जै । सद तीतर जेम सों पच्छि गज्जै ॥
 छ० ॥ ४९ ॥

वहै सोर गोरी पछै दै समान । भगै पच्छिनी पति पावै न जान ॥
 तुटै सोस जुझाई कमधत नचै । चलै रुद्धि धार चिह्न पास गज्जै ॥
 छ० ॥ ५० ॥

धरा भारती गग पारथ्य आई । मनो उपठिसो सिध को मिलन धाई ॥
 फुटी वारि धार चली ईस सोस । लगे धार धार रज रज्जकीस ॥
 छ० ॥ ५१ ॥

मनो तप्त लोही परे बूद पानी । दुढी लुथि पावै न नही वहानी ॥
 मन मोद लै सोस मुद्राह कौनी । ॥ छ० ॥ ५२ ॥

उठं उड्डं सीसं उपमा समूलं । मनो पावकं प्रलय धौं श्रोन लसं ॥
दोज दीन धार मनं कोपरीसं । तिनं क्रोध करि धार आकास सीसं ॥
छं० ॥ ५३ ॥

परं लुथ्य लुथ्यी अलुथ्यी जवै वै । इसौ जुद्ध देपौ न दानव देवै ॥
छं० ॥ ५४ ॥

लड़ाई होते होते तीसरे पहर शहाबुद्दीन का
साम्हने से पृथ्वीराज पर आक्रमण करना ।

कवित्त ॥ चतिय पहर पर पहर । बीर धरियार ठनकिय ।
गोरी वै सो हथ्य । चंपि चहु आन सु ^१तकिय ॥
घरिय इक बनि सेन । खर सामंत परषिय ॥
धरि ओड़न करि बग । बैर सु विहान घरकिय ॥
कर बार धारि सिप्पिर करह । एक होइ ^२उप्पर तरै ॥
दिसि वाम चंपि दुज्जन दलह । उसरि सेन सन्हौ भिरै ॥ छं० ॥ ५५ ॥
पृथ्वीराज का अपनी बीरता से शत्रु सेना को विड़ार देना ।

पिम्कि नंश्रौ है नरिंद । भूमि धुज्जिय पुरतारं ॥
मनौ बहर ^३गज्जयत । सह पर सह पहारं ॥
उड्डिय नाल चमंकि । मरुमरु धुंधर छबि लगिय ॥
रवि ओपम कविचंद । चंद भावस धन उगिय ॥
अरि सेन भगि दिसि विड्डरिय । परे मध्य सेना धनिय ॥
धनि धनि नरिंद सोमेस सुअ । इहु अरि तें तिन वर गनिय ॥
छं० ॥ ५६ ॥

इस युद्ध में दोनों ओर के गूत सारदारों के नाम ।

इत पान मारुफ । फिरत उसमान पान ढहि ॥
इन दुज्जन हय नंषि । बाग आजान बाह गहि ॥

(१) मो.-वकिकय ।

(२) ए. कृ. को.-सिप्पर ।

(३) ए. कृ. को.-गज्जंत, गरजंत ।

इतै दीह अर्थम्यौ । खर बर सिधु सपनौ ।
मुकत तटु मिलि खर । स्थाम रन अप्य अपनौ ॥
सापला खर सारग ढहि । जुरि जुवोन प चाइनौ ॥
केहरौ गौर अजमेरपति । प-यौ कुम्भिक रन भाइनौ ॥ छ० ॥ ५७ ॥

सूर्योदय के समय की शोभा वर्णन ।

॥ निस्ति घट्टिय फट्टिय तिमिर । दिसि रत्तौ धवलाइ ॥
सैसब में जुवन कछू । तुच्छ तुच्छ दरसाइ ॥ छ० ॥ ५८ ॥
दूसरे दिन प्रहर रात्रि रहने से दोनों सेनाओं की
तैयारी होना ।

कवित्त ॥ जाम निसा पाछली । सेन सज्जिय दोउ वीर ॥
सोभता चहुआन । आनि गोरी कछमौर ॥
भान पथानन भयौ । करे द्रिगरत्तह चट्टिय ॥
ता पहिले पाथोन । जोध रन असुरन कट्टिय ॥
अदिहार वीर गोरी सुवर । चाहुआन दिन सुदिन धन ॥
कारतार हथ्य कितौ कला । लरन मरन तकसीर नन ॥ छ० ॥ ५९ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर घोर युद्ध वर्णन ।

मुजगप्रयात ॥ प-यौ साहि गोरी सुरतान गाजी । चपौ गज सेनाक्रम पचभाजी ॥
तहा बाहु-यो वीर वीर नरिद । लग्यौ धार धार सची किति चद ॥
छ० ॥ ६० ॥

अनौ एक मेक धरी अइ पच्छी । फटी सेन गोरी सुरी सो तिरच्छी ॥
दोज दौन बाहै दोज हथ्य लोह । प-यौ जानि वाराह पारझिरोह ॥
छ० ॥ ६१ ॥

कटे कध बध कमध निनारे । मनौ पत्त रत्त वसत सुडारे ॥
नन अश्व चलै चलै हथ्य रोज । नन चित्त चलै रबी रथ्य दोज ॥
छ० ॥ ६२ ॥

घनं अश्व फेरें चलै अश्ववाहं । तिनं की उपमा कवीचंद गाहं ।
ग्रहं प्रति अगै रहै ज्यों कुलट्टं । चितं दृति चलै अगै रक्षमिष्टं ।
छं० ॥ ६३ ॥

वरं काज माला ग्रहीं रंभ सथ्यं । चढ़ै धार धारं भिदै रवि रथ्यो
रही रंभ रंभी टगंटग आई । मनो पुतली कट्ट करसी लगाई ।
छं० ॥ ६४ ॥

हहंकार बीरं हहंकार पाई । मनो पातुरं जातुरं सो दिपाई ।
दोज बाह सेना दोज बीर टेलं । मनो डिंभूरु जानि हड्डूड पेन
छं० ॥ ६५ ॥

तजे आवधं सब इका तेग साहं । करे भाग बिबं अरी कोप वाहं ।
जबै विड्डुरी सेन गोरी नरिंदं । दिखे थान थानं मनो प्रातचंदं ।
छं० ॥ ६६ ॥

परे धान चौसठि दुहुं बाहु राई । दुहुं मुकती रास कविकिति ।
छं० ॥ ६७ ॥

शहाबुद्दीन का हाथी पर रो गिर पड़ना और चहुआन
रोना का जोर पकड़ना ।

दूहा ॥ परत साहि गोरी सुधर । है गै भूमि भयान ॥

रन हंथ्यौ सुरतान को । परी वींठि चहुआन ॥ छं० ॥ ६८ ॥

शहाबुद्दीन के गिरने पर सलषराज का आक्रमण करना

और यवन वीरों का शाह की रक्षा करना ।

भुजंगी ॥ परी वींठ गोरी मुरे भीर धानं । तबै साहि गोरी गछ्यौ कोपिवा

न को कांध कट्टै चाहुआन तिनं । पयौ धाड़ पावार भर सलष

छं० ॥ ६९ ॥

लग्यौ सत बेनं सुलतान साह्यौ । तहां भीर मारुफ अगै गुगयौ

धरी अड गुरगयौ करी छत्र धारं । वहै सब सामंत विचि तौन धा

छं० ॥ ७० ॥

तुटै आवध सब अरि हथ्य लाजी । तबै आइ सीस 'गुरज्ज' त वाजी ॥
 गज गहन प्राहार निठ्ठे ढहायौ । तबै गज्जनी साध पावार साध्यौ ॥
 छ० ॥ ७१ ॥

जैतराव (भमार) का शहाबुद्दीन को पकड़ कर पृथ्वीराज
 के सम्मुख प्रस्तुत करना ।

कवित्त ॥ गहि गोरी सु विधान । हथ्य आप्यौ चहुआन ॥
 चामर छत्त रपत । तपत लुट्टे सुरतान ॥
 गोरी वै हुस्नेन । वीर 'तुट्टे' आहुट्टिय ॥
 मान तुग चहुआन । साहि मुप के बल पुट्टिय ॥
 मथ्यान मान प्रथिराज तप । बर समूह दिन दिन 'चढे' ॥
 जस जोति मत सभर धनिय । चद वीज जिम बर बढै ॥ छ० ॥ ७२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके राजा आषट्क
 मध्यं गोरी पातसाह आगमन जैतराइ पातिसाह बधन
 नाम चौतीसमो प्रस्ताव सपूर्ण ॥ ३४ ॥



अथ कांगुरा जुद्ध प्रस्ताव लिष्यते ।

(पैतीसवां समय ।)

पृथ्वीराज से जालंधर रानी की माता का कहना कि मैं
कागडा दुर्ग को जाना चाहती हूं और आप
इस का वचन भी दे चुके हैं ।

शिवित ॥ कितक दिवस 'निस मात । आइ जालंधर रानी ॥
कहै राज सौ वचन । हूँ सु कगुर द्रुग जानी ॥
तो तुट्टी कर पान । लेह मे वाचा दषिय ॥
भोट भान धुर जीति । पल्ल पख्यै फिरि अषिय ॥
हभीर भीर अगों करै । दल 'भज्जै' भति सति करि ॥
वरनी सु लच्छ लच्छी सहज । परनि राज आवहु सु घर ॥ छ० ॥ १ ॥

पृथ्वीराज का कागडे के राजा के पास दूत भेजना ।

रुद्रा ॥ चलिय राज कगुर दिसा । 'दयौ' 'भाट' फुरमान ॥
कै आवै हम सेव यय । कै जीती नृप भान ॥ छ० ॥ २ ॥
दूत के वचन सुनकर कागडे के राजा भान का
क्रुद्ध होकर दूत को डपटना ।

शिवित ॥ तव सुनि भान नरिद । सबद उभार अतुर वर ॥
रे जगली जुवान । मोहि पुज्यै अप्पन वर ॥
'जो' पजूआ अति तेज । तोइ का दिनयर लोपै ॥
'जो' इचना अति खूर । तोइ का 'भाठी' कोपै ।

(१) मो मिस ।

(२) मो भगौ ।

(३) मो दिसौ ।

(४) ए कृ को -मोट ।

(५) ए कृ को जो पजूआ ।

(६) ए, कृ को जौ इचदा ।

(७) मो -भागी ।

हं नीति जानि अन्नित न करि । तूं लोभी आतुर अतुर ॥
 इनि बात मोहि आगे अवन । आई फुनि जैहै सु तुर ॥ छं० ॥ ३॥
 दूत का पीछे आकर पृथ्वीराज को वहां की बात
 निवेदन करना ।

दूहा ॥ सुनि रु दूत पच्छौ फिच्यौ । कही राज सों बत ॥
 तमकि तीन लीनौ नपति । मनो सुजोधन पश्य ॥ छं० ॥ ४ ॥

इधर रो पृथ्वीराज का चढ़ाई करना उधर रो भानराज का
 बढ़ना और दोनों में युद्ध छिड़ना ।

कवित्त ॥ चढ़िग राज प्रथिराज । सथ्य सामंत सूर भर ॥
 है गै रथ चतुरंग । गोरि जंबूर नारि सर ॥
 कूंच कूंच अरि भान । आइ अड्डो पग बज्यौ ॥
 जनु कि मेध में बीज । तमकि तातौ होइ रज्यौ ॥
 आवत गहरत गहरत परत । ओन धार 'धर पैर चलि ॥
 इत उत सूर देखै लरत । धरी पंच रवि रथ न हालि ॥ छं० ॥ ५ ॥

युद्ध वर्णन और उरा समय योगिनियों का प्ररात्र
 होकर नृत्य करना ।

दूहा ॥ भिरत भान अति छोह करि । जन जन मुष मुष जानि ॥
 घोर विजुट्टी दामिनी । सब चकचौंधिय आनि ॥ छं० ॥ ६ ॥
 कवित्त ॥ पग वाहिय भिरि भान । अरिन अक्षर धुर किनौ ॥
 जय जय मुष उचार । सीस उगापति लिनौ ॥
 रिझरु लिंग उत मंग । अमिय विष जंग सु ढर्यौ ॥
 ठंडौ मंडि अभंघ । नहि भौ अंग जु पर्यौ ॥
 बीमच्छ भयानक भय उमा । एरु एरु मुष हास हुआ ॥
 सिंगार वीर अछर बरन । नव रस सुनहिं नरिंद हुआ ॥ छं० ॥ ७ ॥

युद्ध से प्रसन्न हो गंधर्वों का गान करना ।

दूहा ॥ सम भिलाष गधर्व 'हुअ । नारद तुम्हरे गान ॥

सकार कल किंचित भयौ । चाहुआन प्रभान ॥ छ० ८ ॥

पृथ्वीराज का जय पाना ।

कवित्त ॥ जौति समर भिरिमान । परी अरि मग अरिह ॥

रन मुकि न ग्रह 'गइय । वरत अच्छरि नन दिठ्ठ ॥

काहु त भंस काहु अस । हस काहु सख बख कह ॥

ब्रह्मथान शिवथान । थान देषिय न जम्भ जह ॥

दीयौ न अगनि रवि भेद ननि । तत्व जौति जौतिह मिल्यौ ॥

इह दीप चरित प्रथिराज ने । कवित 'एह जुग जुग चलयौ ॥

छ० ९ ॥

सायंकाल के समय राजा भान की सेना का भागना ।

इह परत चहुआन । मोय लभ्यौ सु रथ रवि ॥

दिन पूरन पुनि भयौ । मिटे भकुन भान छवि ॥

दिन पूरन पुनि भयौ । घरह भगी 'उतकाठ ॥

भगि मनोरथ रभ । 'ब्रह्म भगी चित गठ ॥

भल हलत नीर काइर मुपन । प्रलय सुभर रनरत्तरह

दिन पति पतन सह तप्य तन । भान भान भेदत 'नह ॥ छ० ॥ १० ॥

राजा भान का शोच वश होकर कंगुर देवी का ध्यान

करना और देवी का कर कहना कि मे

होनहार नहीं भेट सकती ।

तत्र कगुर पालहन । चित्त चिता उप्पन्नी ॥

सुनि मोठी भर मरन । सरन कोइ सुद्धि न मन्नी ॥

(१) मो भय ।

(२) मो नइय

(३) मो एव ।

(४) मो -रथ वठ ।

(५) ए रु को प्रतिपों में "चतुरानन

मगिंचत टारि र२ मग मुर्गली" (सुगती) अधिक पाठ है ।

(६) मो सह ।

निसि अंतर करि ध्यान । मात कंगुर आराधी ॥

सो आई नय सुपन । कहै सुनि बात अगाधी ॥

सोभति अनेक जानै न को । मो सेवा को परि लहै ।

भावौ विगति हों प्रकति हों । तो प्रधान गहूठ कहै ॥ छं० ॥ ११ ॥

रावेरा होतेही भोटी राजा का मंत्री को बुला कर स्वप्न
का हाल सुनाना ।

चौपाई ॥ वचनन मात कही समझाइय । निसि पल भूमित गमत बर आइय ।

भोटी नय कन्हा पै आइय । काली कन्हा कि हंकि जगाइय ॥

छं० ॥ १२ ॥

तब कन्हा परधान बुलाइय । मात वचन की जुगति सुनाइय ॥

दिखीपति दल लै चढ़ि आइय । करौ सुमति जिहि होइ भलाइय ॥

छं० ॥ १३ ॥

प्रधान कन्ह का कहना कि गेरे रहते आप कुछ पिता न
करें मै शत्रु का मान गर्दन करुंगा ।

अरिस्त ॥ का चिंता सु विहानं । * कन्हा होइ जाकै परधानं ॥

खामि वचन किन्नौ परमानं । लरि भंजौ दुजान चहुआनं ॥

छं० ॥ १४ ॥

भोटी राजा भान का अपने स्वप्न का हाल कहना ।

कवित्त ॥ सो सुपनंतर राज । रैन दिठौ सु काछौ रचि ॥

बर बंसौ ससिपाल । पलह आयौ सु सेन सचि ॥

लष्य एक असवार । लष्य दह पाइल भारी ॥

अप्य सेन उप्परें । जुगं जुग गहि उचारी ॥

घरि अइ अइ अप सेन मुरि । पच्छि उररि दुजान परिय ॥

चढ़ि गयौ बीर परबत गुहा । सामंता कुंडल फिरिय ॥ छं० ॥ १५ ॥

(१) ए. क. को. मो भति ।

(२) ए. क. को.-पै ।

* राजा भानराय भोटी के प्रधान कर्मचारी का नाम “कन्ह” था ।

(३) मो.-सिसुपाल ।

पृथ्वीराज का रघुवंसराय और हाहुलीराय हम्भीर को
कंगुर गढ़ पर आक्रमण करने की आज्ञा देना ।

बर रघुवंस प्रधान । राज मध्यौ विचारिय ॥
बोलि बौर हम्भीर । मेद जानै घर सारिय ॥
वाट धाट बन जूह । घरा पहर नद धाट ॥
अव्व जान निमान । कोन पहर ^१बन वाट ॥
अगवान देहु नारेन बर । कछुक मत जपौ सु तुम ॥
जालधराज जबू धनी । स्वामि भ्रम ^२मडहित हम ॥ छ० ॥ १६ ॥

हाहुली राय का कहना कि इस दुर्गम बन प्रान्त को
सहज ही जीतूंगा ।

सुनि हाहुलि हम्भीर । हथ्य जोरे न्यप अग्यौ ॥
सकल भूमि कौ मेद । राज जानै ए भग्यौ ॥
अति सु विकट बन जूह । चढ़ै सग्राम न छोड़ ॥
अव्व पाय गज पाइ । चढन किहि ठौर न कोइ ॥
बन विकट जूह परबत गुहा । बर वेहर वकम विषम ॥
दासन्न भयानक अति सरल । बर मस्तर नहि जल सुषम ॥
छ० ॥ १७ ॥

कंगुर गढ़ के पहाड जंगल इत्यादि की सधनता और
उसके विकटपन का वर्णन ।

भुजगी ॥ बन जा विषम विष बाज कट ॥ घन व्याघ्र आधीततो नह घटं ॥
षह जा पजूरौ घन जूथ भोर । जिनै वास आस लगे पक भोर ॥
छ० ॥ १८ ॥
घन पामर जाति बघै धनकौ । गिर देखते गति भाजै मनकौ ॥
भरै भोरनि भोर सु आधात सोर । जिते सदया सह ता अग मोर ॥
छ० ॥ १९ ॥

(१) मो बर ।

(२) मो -मडहित न हम ।

(३) मो जिनै ।

हयं तज्जि राजं चलै हथ्य डोरं । इकां इक्क पच्छै विपं जन जोरं ।
 वजै सह सह परछंद उठै । सुनै कान्न सोरं सु धीरज्ज छुटै ॥
 छं० ॥ २० ॥

इकां होइ राजं पथं सत रुद्धै । दियै हथ्य तारी तिनं कोन बद्धै ।
 तव मुकल्ले राज नारेन वीरं । ननं घग्ग मग्गं सधै इके तीरं ॥
 छं० ॥ २१ ॥

अपं काम नाही प्रधानं प्रवानं । दोज सेन रथुवंस अरिसेन भानं ॥
 छं० ॥ २२ ॥

उक्त दोनों वीरों का धुड़ पढ़ा सेना को हरौन खां के सुपुर्द
 करके आप पैदल सेना सहित किले पर चढ़ाई करना ।

दूहा ॥ मानि मंत चहु ग्रान कौ । मुकलि दीय दोइ वीर ॥
 ताजी तुंग समाय्यै । पां हुसेन दिय भीर ॥ छं० ॥ २३ ॥
 नारेन और नीति राव का धोड़ों पर रावार होकर
 चढ़ाई करना ।

कवित्त ॥ तव लगि पान सु पान । हथ्य नारेन मंडलिय ॥
 नमि चरननि कर बाहि । रोस आरोहि अंघि विय ॥
 ताजी तुंग सु अथ्यि । जेन रुक्के वर विय करि ॥
 नीतिराव कुटवार । संग दीनौ नरिंद वरि ॥
 बारंगे वीर बजार बहिर । निधि निसान बज्जे सुभर ॥
 नेपुरह अप्प वरनी वरा । जस मुकट्ट प्रथिराज वर ॥ छं० ॥ २४ ॥

फंगुर दुग पर आक्रमण करने वाले वीरों की प्रशंसा वर्णन
 वर भरियं वर अप्प । लियौ फुरमान नरिंद ॥
 लाज राज विंटयौ । जानि पारस विच चंदं ॥
 श्रीय काज श्रीराम । सु छल हनमंतह तैसे ॥

(१) ए. कृ. को.-रुद्धै ।

(२) ए. कृ. को.-वधै ।

(३) ए. कृ. को.-प्रथानं ।

(४) ए.-खान ।

स्वामि काज सामत । बियौ घर ममभवे जैसे ॥
 जस तिलक हथ्य चहुआन कौ । दुज्जन दल जितन चल्थौ ॥
 रवि वार सुरग सु सत में । गुन प्रमान जवुअ पुल्थौ ॥ छ० ॥ २५ ॥
 नारे (पीठ की सेना के नायक) के चढ़ाई करते ही
 शुभ शकुन होना ।

पद्मरी ॥ नारेन जवु गढ चढ्यौ काज । बोलहित वाम कौदहति ताज ॥
 दाहिने सग सगुह फुनिद । नौरूप बोल बोलहित हह ॥
 छ० ॥ २६ ॥

ह करै सिंह कोदहति वाम । उत्तरै 'देवि दाहिन सु ताम ॥
 दिसि वाम कोद घू घू टहक । फुनि करै हक केकी पदक ॥
 छ० ॥ २७ ॥

उत्तरै 'दार वाराह सथ्य । डहकरै साड दिसि वाम तथ्य ॥
 'वन्नर विरूरे दाहिनै सद । सुनियै न क्रन नदनी नह ॥ छ० ॥ २८ ॥
 'कुरलेत वाम सारस समूह । मुकद न गिछि पच्छै अजूह ॥
 कुरलेत कग चितहत हीन । ह सौय वाम आनद कीन ॥ छ० ॥ २९ ॥
 हा कहत हल कारि गट्ट मथ्य । चहुआन पिथ्य रिभभेव तथ्य ॥
 हाहलरोव दीनौ विरह । आनद बजि नीसान नह ॥ छ० ॥ ३० ॥

सेना का हल्ला कर के क्रोध से धावा करना ।

हा ॥ हा कहते ढीलन करिय । हलकारिय अरि मथ्य ॥
 * तायें विरद हमीर को । हाहुलि राव सु कथ्य ॥ छ० ॥ ३१ ॥
 चढि चले वदन 'सुकन । भागह जे प्रथिराज ॥
 वर प्रवत बैदेस सधि । बीर वजी रन बाज ॥ छ० ॥ ३२ ॥

युद्ध और वीरो की वीरता वर्णन ।

- | | |
|----------------------------|---------------------|
| (१) मो देन । | (२) ए रु को डार । |
| (३) ए रु को रथ्य, हथ्य । | (४) ए रु का बदर । |
| (५) रु-कुरलेत । | (६) मो सगुन । |

* छंद न ३० का आधा और ३१ सपूर्ण मो प्रति में नहीं है ।

पद्मरी ॥ आएस लीन जुगिन नरेस । सजि सिलह सुभर मंडी सु मेस ॥
 सिंगिनी सुथ्र गौ गंठि थाल । अरि अंग घतंग भै पाति ^१काल ॥
 छं० ॥ ३३ ॥

नेजा सुरंग बंवरि विपान । अठ्ठार टंक पंचै कमान ॥
 धज सुरंग रत गजराज छालि । जानं कि भमि बदलति चालि ॥
 छं० ॥ ३४ ॥

अति इत दहकि धर धरकि हसि । चतुरंग सेन चिहुं पास चलि ॥
 चासंत तीर सब तुंग मानि । गढ़ मुकि गढ़ ओछंडि थान ॥ छं० ॥ ३५ ॥
 आवाज बजि दस दिसा मान । भूमियां संकि गय मुकि थान ॥
 वल्लभ सु बाल गय बाल मुकि । रो रथ्य नारि चकि नय सु चकि ॥
 छं० ॥ ३६ ॥

फट्टे दुकूल नग नगन चट्टि । मंगलिक जानि वनौर कट्टि ॥
^२फुटि अंसु वास रस गत दिषाहि । नौग्रह सु हेम गिरि मल्ल गाहि ॥
 छं० ॥ ३७ ॥

नंधैति हार कहुं बाल नारि । तिन की उपम बरनी सुभार ॥
 पुष्टंत मुत्ति पग पगन मान । नंधंत तीय पिय को निसान ॥
 छं० ॥ ३८ ॥

के दुरत धाड़ चित चित्रसाल । जानहिं सुचित पुत्तलिय बाल ॥
 ता मध्य जाइ रहै पंचि सास । मानहु कि रचि चिचह बिलास ॥
 छं० ॥ ३९ ॥

सुर सुकी दीन भइ बाल वाम । अग्नै सुबाल दीसहि सु ताम ॥
 कविचंद सु ओपम एक वार । उत-थो राह रूपह सवार ॥
 छं० ॥ ४० ॥

चित्रहति साल रथीति बाल । नह परहि बंदि ते तिहति काल ॥
 दग्धवै ^३वाहि मदिरति रिमिगत । चलै न पाइ मानं उलभिक्त ॥
 छं० ॥ ४१ ॥

(१) ए. कु. को.-षाल ।

(२) ए. कु. को.-फेदे, फेटे ।

(३) मो.-नाहि ।

देपत सुमन गति भई पग । रुठई काम रति कोटि रग ॥

नठई उगति तिन देषि बाल । मानो कि रास मरुक्ते गुपाल ॥

अकेले रघुवस राम का किले पर अधिकार कर लेना ।

दूहा ॥ बस दुजन घर गाहि फिरि । तब लागि दुजति सपन ॥

एकस रघुवस ने । लै गढ सबर प्रपन्न ॥ छ० ॥ ४३ ॥

सब सामतों का सलाह करके (रामरेन) रामनरिद को

गढ रक्षा पर छोडना और सब का गढ के नीचे पृथ्वी-

राज के पास जाकर विजय का हाल कहना ।

कवित्त ॥ सबै छर सामत । पएह बध्यौ गढ लिनौ ॥

थयौ राम नरिद । हथ्य फुरमान सु 'दिनौ ॥

तुम रहियौ इन थान । जाइ कगुर सँपतौ ॥

मिलौ जाइ प्रथिराज । राज सन्हौ प्रापतौ ॥

आनद फाते तप तुम्ह बल । धन समूह आइय सु धर ॥

सुम्भर सुधाइ तेरह परे । बिय दाहिम्न नरिद वर ॥ छ० ॥ ४४ ॥

सब भोटी भूमि पर चहुआन की आन फिर जाना और

भान रघुवस का हार मान कर पृथ्वीराज को

अपनी पुत्री व्याहना ।

सबै भूमि अरि गाहि । आन फेरी चहुआन ॥

थयौ भान रघुवस । बीर बचे फुरमान ॥

माखन वास नरिद । राज रथ्यौ तिन थान ॥

वर बध्या अरि साहि । घून कव्यौ परवान ॥

वर वरनि बीर प्रथिराज वर । वर रघुवस जुलाइयौ ॥

दिन देव दसमि वर भूमि वर । तदिन सु रगन पाइयौ ॥ छ० ॥ ४५ ॥

नियत तिथि पर व्याह होना ।

दूहा ॥ परिनि बीर प्रथिराज वर । वर सुंदरी सु लच्छ ॥
देव व्याह दुज्जन दवन । दिन पद्धरी सु अच्छ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

भोटी राज की कन्या के रूप गुण का वर्णन ।

कवित्त ॥ 'दच्छिन वृत्त सुनाभि । तुंग नासा गज गमनी ।
सासनि गंध रूपंजु । कुटिल केसं रति तरनी ॥

(१) मो.-द्रिप्त ।

वर जंधन मृदु पंथ । कुरंग लज्जे छवि हीनं ॥
इह ओपम कविचंद । हृथ्य करतार सु कौनं ॥
वर वरनि बीर प्रथिराज वर । घन निसान बज्जे सुवर ।
जंबूअ राव हम्मीर ने । अगा काज दीनौ 'सुधर ॥ छं० ॥ ४७ ॥

भोटी राज की तरफ से जो दहेज दिया गया उसका वर्णन
और पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर नव दुलहिन
के साथ भोग विलास करना ।

वर वरनी दे हृथ्य । गुंट अप्पे जु एक सौ ॥
चौर मृगमद मधुर । चूम दीनि सु सत सौ ॥
अठ्ठ सुरंग गजराज । बाज ताजी सौ दासी ॥
वर लच्छी चतुरंग । चंद 'पिप्पिय सोमासी ॥
ढिछीव नाथ ढिछी दिसा । अरिन जीति वर परनि कै ॥
संजीव काम बोलिय सु ढिंग । वर निसान वर वरनि कै ॥ छं० ॥ ४८ ॥
दूहा ॥ आयौ नप ढिछी पुरह । वर बज्जे निधोस ॥
डोला पंच नरिंद संग । मधि सुंदरी अदोष ॥ छं० ॥ ४९ ॥

इति श्री कवि चंद विरचिते प्रथिराज रासके कांगुरा विजे
नाम पैतोरामों प्रस्ताव संपूर्णः ॥ ३५ ॥

अथ हंसावती विवाह नाम प्रस्ताव लिख्यते

(छतीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का डिंकार के लिये षट्पूर जाना ।

दूहा ॥ इक तप पग नरिद कौ । सुनि अवाज सुरतान ॥

आपेटक ग्रथिराज गय । षट्पूर चहुआन ॥ छ० ॥ १ ॥

रणथभ में राजा भानू राज्य करता था उसकी हंसावती नामक एक सुंदर कन्या थी, और चंदेरी में शिशुपाल वसी पचाइन नाम राजा राज करता था ।

कवित्त ॥ रा जइव रिनयभ । भान पचाइन भारी ॥

हंसावति तिन नाम । हंसवति गत्ती सारी ॥

अवनि रूप सुंदरी । काम करतार सु कौनौ ॥

मन मन्त्रवै विचार । रूप सिंगार स लौनी ॥

लखन वतीस लखी । सहस । अति सुंदरि सोभा सु कवि ॥

अस्तम उदै वर चक्रा विच । दिधि न कहु चक्रत रवि ॥ छ० ॥ २ ॥

हंसावती की शोभा वर्णन ।

नाग बेनि सुनि पौन । कति दसनह सोभत सम ॥

अधि पदम पंच मनु । भाल अष्टम रति प्रतिक्रम ॥

सिपा नामि गज गति । नामि दखना वृत्त सोभै ॥

सिध सार कटि चारु । जघ रभा जुधि लोभै ॥

सुंदरी सीत सम वरि । चरित । चतुर चित्त हरनी विदुष ॥

सत पंच गध मुष सरि । अथ सम । नैन रभ आरभ रुष ॥ छ० ॥ ३ ॥

(१) मो-अवरि ।

(२) को चक्र ।

(३) मो-सोभत ।

चँदेरी के राजा का हंसावती पर मोहित होकर रणथंभ को दूत भेजना ।

गाथा ॥ वर बंसी ^१ससिपालं । चिंतं जस संभलं बोलं ॥

मन वयनं तन ^२बहुँ । रिनथंभं ^३मुक्कवै दूतं ॥ छं० ॥ ४ ॥

चँदेरी के दूत का रणथंभ में जाकर पत्र देना ।

अरिस्त ॥ दूत आइ वर बीर सपत्ते । जग्गद हथ्य दिय वर तत्ते ॥

हंसावति अप्यै वर ^४रंभं । तजौ वेग उभमौ रिन थंभं ॥ छं० ॥ ५ ॥

रणथंभ के राजा भानुराय का क्रुद्ध होकर उतार देना कि
मैं चँदेरी पति रे युद्ध करूंगा उराके धुड़कने से नहीं डरता ।

कवित्त ॥ रा जइव रिन भान । तमकि कर चंपि लुहट्टी ॥

वर रनथंभ उत्तरी । वीर बसौ ^५अहुट्टी ॥

वर कग्गद ^६कर फेरि । सुभि करियै वर राजन ॥

मतै बैठि कुंडली ^७अग्ग छची जिन भाजन ॥

बुल्लइ न ऐन दुज्जन मिरन । तरन तार साधन भरन ॥

वर वीर जुद्ध चालुक रन । हकायौ दुज्जन मिरन ॥ छं० ॥ ६ ॥

कुंडलिया ॥ रिन थंभह वर उप्परै । चढि गठौ करि साहि ॥

हंस भरत रा भान कौ । धसि उप्पर धर धाइ ॥

धसि उप्पर धर जाइ । सुजस जंपै सब कोई ॥

जोग मग्ग लभभनह । षग्ग मग्गह मत होई ॥

अलप आव संसार । सिद्ध साधकह अथंभह ॥

सब्व जोग सहक्रया । सब्व तीरथ रनथंभह ॥ छं० ॥ ७ ॥

(१) मो.-शिशुपाल ।

(२) मो.-बहुँ ।

(३) ए. क. को.-मुक्कले, मुकले ।

(४) ए. क. को.-उभं ।

(५) ए.-उहठी ।

(६) ए. क. को.-वर ।

चंदेरीपति का कुपित होकर रणथंभ पर चढ़ाई करना ।

कवित्त ॥ सुनि बंसी ससिपाल । वीर पचाइन कोण्यौ ।

सह सह गज जेभि । तमसि घोरज सम लोण्यौ ॥

रिनथमह दिसि थभ । दियौ बर वीर मिलान ॥

गय हय दल चतुरंग । सजे तिन वर प्रमान ॥

बर वीर अग वस्तीठ चलि । राजहौ समुह दिसा ॥

परनाइ कुअरि हसावती । सु बर कोपि आयौ निसा ॥ छ० ॥ ८

चंदेरीपति का एक दूत राजा भान को समझाने को
भेजना और एक गहाबुद्दीन के पास
मदत के लिये ।

दूहा ॥ जस बेली रिनथम न्त्रप । फल पच्छै न्त्रप आइ ॥

रा जइव सुरतान सौ । कहि बर जाइ सुपाइ ॥ छ० ॥ ९ ॥

स्त्री के पीछे रावण दुर्योधन इत्यादि का मान प्राण
और राज्य गया ।

कवित्त ॥ सीय रथि रावनह । लक तोरन कुल पोथौ ॥

कपट रथि दुरजोध । पग पोहनि दल गोथौ ॥

मतहीन बर चद । कियौ गुरवार सुहिसौ ॥

क्रम रथि रधुराइ । अजै जान्यौ न पहिसौ ॥

रनथम मडि छडी सरन । भिरन कहौ बर वीर सब ॥

ससिपाल वीर वसी विलस । हम देपै आयौ सु अब ॥ छ० ॥ १०

जीव रक्षा के लिये देव दानवादि सब उपाय करते हैं ।

जीवन बलह विनोद । अलह नब्बी घन नंगहि ॥

जीवन बलह विनोद । आसि आसन असुर गहि ॥

(१) ए रफी ।

(२) मो पोथौ ।

(३) ए ठ को रसन ।

(४) मो विमल ।

जा जीवन सुंदर । सुगंध वर बंधव लोकै ॥
 जा जीवन काजें । कपूर पूरन प्रभु कोकै ॥
 जा जियन ह्वै दानव मिलन । किलसन कलि आवन गधन ॥
 तिन भवन छंद छंडित गहर । तजित तुंग तन सो भवन ॥ छं० ॥ ११ ॥
 भानुराय यक्षव की बसीठ की बात न मानना ।

दूहा ॥ ११ जदव वर भान नैं । बहुत संग्यौ वर हट्ट ॥
 बाजी बार पयानरै । तुंगी तेरह ठट्ट ॥ छं० ॥ १२ ॥

बसीठ का लोट कर चंदेरीपति की फौज में जा पहुंचना ।

इह सुनि बीर बसीठ उठि । भानह हल्यौ न हस ॥
 तीस कोस सग्यौ मिल्यौ । वर पंचाइन दस ॥ छं० ॥ १३ ॥

पंचाइन की सहायता के लिये गजनी से नूरीखां हुआवखां
 आदि सरदारों का आना ।

कवित्त ॥ अग्निवान उजबक । धाड़ भाई परवानिय ॥
 ता पच्छै साहाब । धान बंधे तुरकानिय ॥
 ता पच्छै नूरी हुआब । सेई संचारिय ॥
 केलीधान कुलाह । सख सेनौ कुटवारिय ॥
 बानिक बीर दुलह सुजर । भाइ धान रन अंभ वर ॥
 ससिपाल बीर बंसी विलस । वर आयो रनथंभ पर ॥ छं० ॥ १४ ॥

दोनों घनघोर सेनाओं सहित चंदेरी के राजा का आगे बढ़ना ।

दूहा ॥ पंचाइन बल पधरै । यह रनथंभह काज ॥
 कंक बंक वर कटुनह । चढ़ि चल्यौ रन राज ॥ छं० ॥ १५ ॥

चंदेरी राज की चढ़ाई का वर्णन ।

भुजंगी ॥ ससीपाल बंसी चढ्यौ कोपिरथ्य । मनो बंक चक्र धस्यौ आनि पथ्य
 जलं जुधनं जूथ धावै दुरंगा । करै कूंच उंच ॥ उरजै तुरंगा ॥ छं० ॥ १६ ॥

काहै वत रत्ती मुप रत्त आहौ । काहै अथ आठू रनथभ ढाहौ ॥
ससीपाल बसी चदेरीय राय । उथौ छन सीस कबी देपि गाय ॥
छ० ॥ १७ ॥

नग पति मुत्ती सिर हेम दडी । ग्रह अङ्क मानों ससी मेच्छ मडी
फिरी पति राई रिनथभ घेन्यौ । मनो भावरौ भान सुम्मेर फेच्यौ ॥
छ० ॥ १८ ॥

रनथभपति भान का पृथ्वीराज से सहायता मागना ।

दूहा ॥ धन धेन्यौ रिनथभ पर । लिपि ढिल्ली परवान ॥
तब जदव रा भान ने । दिय कगद चहुआन ॥ छ० ॥ १९ ॥

भानराय का पृथ्वीराज को पत्र लिखना ।

कवित्त ॥ रा जदव बीराधि । बीर गुज्जह अनुसरयौ ॥
हयदल पयदल गज । अरोहि रिनथभ यौ अरयौ ॥
धधेरा धधेल । चद ससिपालह वसिय ॥
अध लष दलहि हिलोर । जोर गखत गसिय ॥
हभीर राव हाडा हठी । घौची राव प्रसग दुह ॥
प्रारभ करै सभरि धनी । जौरै बध युमान सह ॥ छ० ॥ २० ॥
उक्त पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का समर सिंहजी के
पास कह को भेजना ।

दूहा ॥ सुनि कगद चर चित कै । तिथि साते चहुआन ॥
समर सिध रावर दिसा । गुर जन सुखौ कान्ह ॥ छ० ॥ २१ ॥

कन्ह का समरसिंह के पास पहुच कर समाचार कहना ।

कवित्त ॥ वर पचाइन सवर । सवर वसी ससिपाल ॥
धेन्यौ तिन रनथभ । सुवर जपे वर कारा ॥
मान बीर पुकार । घाड़ आई ढिल्लीवै ॥
अछ अछ पहु पग । सथ्य अछौ वर है वै ॥

जोगिंदराव जग हथ्य वर । महन रंभ उप्पर सवर ॥

कालंक राइ कप्यन विरद । तुम आओ रचि सेन वर ॥ छं० ॥ २२ ॥

समर सिंह जी का सेना तैयार करके कह्यो रो कहना कि
हम अमुक स्थान पर आ मिलेंगे ।

दूहा ॥ चित्रंगी चतुरंग सजि । वर रनथंभ सु काज ॥

वर सहेट रावर समर । आवन बदि प्रथिराज ॥ छं० ॥ २३ ॥

चलत कए चहुआन वर । कहि चतुरंगी राज ॥

तुम अगौ हम आइहैं । आवन सुधि प्रथिराज ॥ छं० ॥ २४ ॥

तथा यहां से रनथंभ केवल ६५ कोरा है इसलिये तुम
से आगे जा पहुंचेंगे ।

पंच कोस वर सठि अग । चीतौरह रनथंभ ॥

तुम अगौ हम आइहैं । महन रंभ आरंभ ॥ छं० ॥ २५ ॥

कह्यो रो कहना कि पृथ्वीराज का दिल्ली से तेरस को चले
हैं और राजा भान पर बड़ी बिपति है ।

कवित्त ॥ महन रंभ आरंभ । कए चलत मन मंडिय ॥

अठ्ठ दोह हम अग । राज तेरसि ग्रह छंडिय ॥

वर बंसी ससिपाल । गंज लगिय नप भानं ॥

धरति धवर तह नाम । सेत भिसि देही दानं ॥

अग्रहन ग्रहन रिनथंभ भति । इह सुमित्र आयौ पढ़न ॥

कालंक राइ कप्यन विरद । महन रंभ बज्यौ बढ़न ॥ छं० ॥ २६ ॥

रामरसिंह का कहना कि हमारे कुल की यह रीति नहीं है
कि शरणागत को त्यागें और बात कह के पलटें ।

(१) मो.- तुम आओ सेना वरन ।

(२) ए. क. को.-मान ।

(३) ए. क. को. नाहि ।

सुनि कन्हा चहुआन । रीति आहुठु ग्रह कुल ॥

सरन रथि कहुइन । मिलै जो कोटि देव बल ॥

सग्राम हरपै न । सुवर पचौ वर धायौ ॥

रन रथ्यै रजपूत । छत्र छल छाह नवायौ ॥

द्रिग रत बल बसै सुवर । वेद अस्म बध्यौ चवै ॥

कालक राइ कप्पन विरद । कित्ति काज नव निधि द्रवै ॥ छ० ॥ २७ ॥

समरसिंह का कन्ह की दी हुई नजर को रखना ।

दूहा ॥ तिय हजार तेरह तुरंग । हस्त मत बर तीन ॥

मनि गन मुत्तिय माल दस । रथ्ये कन्ह सु वीन ॥ छ० ॥ २८ ॥

पूज कुलह चहुआन दय । वे सब मनि 'गनि साह ॥

लक्ष्मिय सब हथिय ग्रहन । दीना सध समाहि ॥ छ० ॥ २९ ॥

कन्ह का यह कह कर कूच करना कि तेरस को युद्ध होगा ।

चले कन्ह वर सग न्य । समर सजगौ आउ ॥

तेरसि च्यवक वज्जिहै । धरकि वीर उमराउ ॥ छ० ॥ ३० ॥

दसमी सोमवार को समर सिंह जी की यात्रा की मुहूर्त वर्णन ।

कवित ॥ धरौ पच वर सोम । दैव दसमी ग्रह सारिय ॥

दुष्ट दान करि नत्र । सुगुर पचमि बुध 'चारिय ॥

अद्ध चार भय हर । फेरि नव मीन न भग्ना ॥

असुर सुगुर वक्रयौ । छड बिय थानति अग्ना ॥

चित्रग राइ रावर समर । महा जुद्ध सग्राम रजि ॥

दस कोस वीर भेलाग दै । सुवर वीर चतुरंग 'सजि ॥ छ० ॥ ३१ ॥

**यात्रा के समय समर सिंह जी की चतुरंगिनी
सेना की शोभा वर्णन ।**

पहरौ ॥ सजि चल्यौ समर रावर सु तथ्य । जानै कि सरित सागर समथ्य ॥

(१) ए रु को -वर साहि, वर साई ।

(२) ए रु को चारिय ।

(३) ए रु को राजि ।

बज्जो निसान दिसि दिसि प्रमान । मानों समुह गिरि गजिय थाना
छं० ॥ ३२ ॥

सुभक्कौ न मान रज मक्कि सलीव । चक्कीय चक्के चलि सु कीव ।
चतुरंग सेन चलिय सुरंग । बहु रक्कि अंभ घन नभम संग ॥
छं० ॥ ३३ ॥

सहनाइ मेरि कल कलनि बज्जि । जल होइ थलनि थल जलन रुमेर
उन्नयौ मेह हथ गय प्रमान । मद चलहि गंध गज शिर समान ॥
छं० ॥ ३४ ॥

वर रंग नेज कल मिली ताहि । वर वरन बीच सोहत जाहि ॥
पाइन पथाल द्रगपाल हलि । चतुरंग सेन चित्रंग चलि ॥
छं० ॥ ३५ ॥

धन जिम निसान बज्जो विसाल । जोगिंद मत्त जग हथ्य भाल ॥
पावस समूह रावर नरिंद । भिषजार भट्ट मोरन गिरिंद ॥
छं० ॥ ३६ ॥

कोकिल नफेरि पपीह चीह । बोलंत सह कवि मधुर जीह ।
वरपहति दान गज मह मान । फरहरहि थज्जा बगपंति मान ॥
छं० ॥ ३७ ॥

अंदून सह गिहंगुर आँकार । सुगमहि भसह बदि श्रवन थार ॥
पावस समूह करि समर चलि । रिनथंभ दिसा भेलान मलि ॥
छं० ॥ ३८ ॥

पुराजित सेनाओं सहितरणथंभ गढ़ के वाएं ओर पृथ्वीराज
और दहिने ओर से समर सिंह जी का आना ।

कवित्त ॥ बाम कोद प्रथिराज । छंडि रनथंभ संपत्तौ ॥
वर दच्छिन समरंग । बीर जोगिंद प्रपत्तौ ॥
दुहुन बीर गढ़ चंपि । सुकवि ओपम तिन पाई ॥

कुभ अँव डोलत । हथ्य वरनै रस मारै ॥

चहुआन सेन चिच गपति । चावहिसि वर विड्डुरिय ॥

वर ढोह छडि चदेर न्यप । जुगिनि हँ सन्हौ भिरिय ॥ छ० ॥ ३६ ॥

दूहा ॥ उत चपे चहुआन ने । इत चपे चिच ग ॥

भूँदि सास अरि सम दरी । जनु 'चप्यौ सु मद्ग ॥ छ० ॥ ४० ॥

पूर्व में पृथ्वीराज और पश्चिम में समरसिंह जी का पड़ाव था
और बीच में रणथंभ का किला और शत्रु की फौज थी ।

कवित्त ॥ प्राची दिसि चहुआन । चढ्यौ पच्छिम चतुरंगी ॥

दुह वीच 'रिनथंभ । वीच अरि फौज सु रंगी ॥

दुह सेन 'समकत । 'नग मत्ता गज अंगी ॥

मनु राका रवि उदै । अस्त होते रथभंगी ॥

ससियाल वीर बसौ 'विमल । दुहुन वीच भन मेर हुअ ॥

पह मिलै षेह पंगह ह-थौ । चवै चद रवि दद दुअ ॥ छ० ॥ ४१ ॥

किले और आस पास की रणभूमि की पक्षी से

उपमा वर्णन ।

अनल पप अकुच्यौ । जुह पचाइन मझ्यौ ॥

इक सपंय पग वीथ । पेट रनथंभ सु छथ्यौ ॥

पौठि पड पावार । सु वर ह्छौ नप पप ॥

एक मुप्य वन वीर । धीर उभौ विथ मुप्य ॥

निम्मान बभ वर पुछ कवि । पुछ पाइ साधन समर ॥

दुह लोह कट्टि परियार ते । समर मोह भूत्यौ अमर ॥ छ० ॥ ४२ ॥

उस युद्ध भूमि की यज्ञ स्थल और पावस से उपमा वर्णन

भुजगी ॥ मिले आइ 'धाय सु आहुठ राई । लगे वीर बथ्यै लगे लोह धाई ॥

कढी बक अस्सी ससी वीथ गत्ती । वरै ज्वाल खर मनो हथि तत्ती ॥

छ० ॥ ४३ ॥

(१) ए रु को -चपी ।

(२) ए -चतुरंग ।

(३) ए कृ को -चमकत ।

(४) ए को -नग, नगा ।

(५) ए रु को बिसल ।

(६) ए कृ को घाई ।

करै हक सीसं महा भार भारं । धरं कित्त सीसं तुरं पार पारं ।
बजै सख बीसं 'तुरित' बधानं । तिन सह अगै दुरै वै निसानं ।
छं० ॥ ४४ ॥

धकै आइ खरं बिधं क-ए हथ्यं । थकी रंभ उतकंठ मनो पंग तथ्यं ।
लगै धार धारं धरकै विवानं । गहै हथ्य छुटै चलै देवथानं ।
छं० ॥ ४५ ॥

कटै सुंड डंड कथै दंत तथ्यं । मनो ज्यो पुलंदी कटै कंद हथ्यं ।
धनं धक हथ्यं रसं रंक मतं । मनो दंपती संजुधं कौ सुरतं ।
छं० ॥ ४६ ॥

परै ढाल ढीचाल गज ढाहि खरं । महा दिधियै वीर रूपं करं ।
कटै कंध खरं उडै छिंछ भारी । अरै फूल तथ्यं सिरं डुंड भारी ।
छं० ॥ ४७ ॥

जगी जोगिनी जुड देखै 'जरुरं' । उडै रैन रावत कच्छे करुरं ।
धराधाव ओनी पलं भइ जानं । गजे खर जुडं दिसानं दिसानं ।
छं० ॥ ४८ ॥

तपै तेज तेजं सु नेजं सुरंगं । मनो विज्जमाला चमकंत चंगं ।
धनुष्यं कमानं धरे मेध महं । रवै दंड दंडं नफेरी सबहं ॥ छं० ॥ ४९ ॥
बहै षग वानं मनो बग पानं । रचै चित्त चहुआन पेतं किसानं ।
भिरै भंति भारी परै जूह राजं । ठरै धाड़ धंधेर बंधी सु पाजं ।
छं० ॥ ५० ॥

'इलावार' पुरं सरित्तान ओनं । तिरै रुंड मुंडं मछं जानि तीनं ॥ र
मुषं नेद पाटं सु घाटं पुमानं । भिरै भौर भारी सु अखे उमानं ।
छं० ॥ ५१ ॥

गहै नाग मुष्पी अरी जा उठायौ । मनो चंद संदेस पच्छै पठायौ ।
अहै रंभ मालं भरं ग्रीव बालं । रचै ईस सीसं गरै रुंडमालं ॥ छं० ॥ ५२ ॥
पथौ षग घीची भरं चिचकोटं । जलं पष्य मच्छी धरं जानि ॥
तहां गति मतं न सुष्यं न दुष्यं । थकी जंमसालं लरे खर पिष्यं ।
छं० ॥ ५३ ॥

महादेव जुद्ध दिव्यौ भेस यान । धनी चिचकोट 'धसी सेन जान ॥

छ० ॥ ५४ ॥

चेंदेरी की सेना और रुस्तमा खा के बीच में रावल
समर सिंह जी का धिर जाना ।

कवित्त ॥ उत वसी ससिपाल । इतै रुस्तम दुद बल ॥

विचै समर रावर । नरिद वीरन गाहरमल ॥

उतै तेग उम्भारि । इतै सिगनि धरि वान ॥

छडि निधक अरियान । उररि पारी परि तान ॥

रन तुग अवर चिते रिपुन । हवि मुय रुप मुकै नही ॥

भर सुभर दार रप्यन सु वर । समर समर उम्भौ पछी ॥ छ० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज का रावल की मदद करना ।

सम लरत वर समल । दिव्यि चहुआन कियौ बल ॥

वाम मुय अरोहि । नीर असि अल भुपह भल ॥

सौ सामत छै खर । सथ्य प्रथुराज सु धायौ ॥

सार कोट अरि जोट । पग पल पभ हलायौ ॥

जै जैत देत जै करहि । देव वीर आनंद बख्यौ ॥

ताएन तुग तन तेज वर । असि पहार धर भर चख्यौ ॥ छ० ॥ ५६ ॥

रनथभ के राजा भान का समर सिंह जी से मिलना और
पृथ्वीराज का भी चरन छूकर भेट करना ।

दूहा ॥ रा जद्व रिनथम तजि । मिलिय राव प्रति मान ॥

समरसिंह रावर सु प्रति । चरन चपि चहुआन ॥ छ० ॥ ५७ ॥

समर सिंह, पृथ्वीराज और राजा भान तीनों का
मिल कर युद्ध के लिये प्रस्तुत होना ।

* दिन धवलो धवली दिसा । धवल कंध भारथ्य ॥

समरसिंध रावर मिलौ । चाहुआन समरथ्य ॥ छं० ॥ ५८ ॥

मडि फौज प्रथिराज वल । रा जहव दिसि वाम ॥

समरसिंध दृष्टिधन दिसा । चढ़ि संग्राम सु काम ॥ छं० ॥ ५९ ॥

चँदेरी के राजा की फौज से युद्ध के समय दोनों सेना के
बीरों का उत्साह और ओजस्विता एवं युद्ध का

दृश्य वर्णन ।

छंद विभंगी ॥ ससिपालय वंसी, मिलि रन गंसी, वीर प्रसंसी, वर वीरं ।

सेंभुष चहुआनं, दुति दरसानं, तमकि रिसानं, चित धीरं ॥

तुरसी रस मंजरि, पति समनंजरी, ग्रह दिय अंजरि, शृंग रारी ॥

वर टोप सु कंतिय, खर सुभंतिय, बहर पंतिय, जम रारी ॥ छं० ॥ ६० ॥

गोरष्यन पाइय, कंठन लाइय, कढ़ि असि धाइय, विस्माई ॥

परि जोगह सोकं, दिय दिषि धोकं, वसि सुरलोकां, सरसाई ॥

क वीरंग विचारै, उक हकारै, मंच मारै, उभमारै ।

छं० ॥ ६१ ॥

अफफार कि फारं, असि वर तारं, वंसेति मारं, सिर खरं ॥

वर टोप समेतं, सिप्पर तेतं, असि आलेतं, हंसि हरं ।

हारौ १३ चिन्हं, हथ्य न लिन्हं, भयउ समनं, ब्रह्मचारं ॥

छं० ॥ ६२ ॥

वर दरसि कपालं, बिय लिय मालं, हसि वर बालं, किल कालं ।

कुनचि नारद पूरं, वजि रन तूरं, वरि वरि खरं, धरि मालं ॥

* " मो " प्रति में छन्द ५८ प्रथम और ५९ उस के बाद आया है परंतु प्रसंग में यही सिल
सिला ठीक जैचता है ।

(१) ए.-समनेजरि ।

* यह पंक्ति मो. प्रति में नहीं है ।

(२) ए. क को.-हारी चिर चिन्ह ।

कु यह पंक्ति ए. को कृ तीनों पंक्तियों में है, केवल मो. प्रति में नहीं है, परंतु इस का ठीक
गौण मालूम होता है ।

कर व्रज सु तुट, धर धर लुट, ओपम घट, कविराज ।
ओपम विराज, ज्याजल काज, मध्वराज, सक साज ॥

छ० ॥ ६३ ॥

चप छिछत ओन, लंगि धटि कोन, उप्पम होन, धन धाई ।
कवि ओपम तास, स्वर विलास, माधव भास, फिरि आई ॥ छ० ॥ ६४ ॥

युद्ध मे मारे गए सैनिक वीरो की गणना ।

कवित ॥ दस क्रमन अरि ठेल । सुरिय पचाइन सेन ॥

बीर छक उत्तरी । मुत्ति भिरि रन रत नैन ॥

सुरस पियौ प्रथिराज । प्रगटि अपिन जल भलकिय ॥

पौ अधरा रस पीन । प्रातसौ कौ मुप जकिय ॥

चहुआन सु वर सोरह परिग । समर सिध तेरह दिह ॥

ससिपाल बीर वसी सुवर । सहस पच लुथ्य सुन्टा ॥ ६५ ॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना की पांच जने कहे

आक्रमण करना ।

दूहा ॥ निग्रह नर वल्लत नपनि । अहि गवल हृद ॥ ६६ ॥

पच अनौ करि घेत चढि । घेत अरक हृद ॥ ६७ ॥

युद्ध के लिये सन्नद्ध हुए वीरों के निम्न उन्का

परस्पर वार्ता -

जिन गुन प्रगटत पिड । सोई ॥ ६८ ॥

अत कुलस तन जान । ॥ ६९ ॥

जिहि भरन मन स्वर । ॥ ७० ॥

पच पच पथ गोअ । ॥ ७१ ॥

(१) ए रु को निग्रह न्नः

(२) ए रु को प्रतिगो के ॥ ७२ ॥

(३) ए रु को ॥ ७३ ॥

- ॥

॥ ७४ ॥

॥

आई ॥

॥

घरियार रूपि सु कुठार धट । तंत मुकि लग्गी नदिय ॥
 सिंचीय किति तर अमिय में । धुअ व्यापं लग्गंन दिय ॥ छं० ॥ ६७ ॥
 हंरावती की घरियार रो और दोनों रोनाओं की छाया
 से उपमा वर्णन ।

दूहा ॥ बाल कुंअर घरियार घरि । विय तरवर ^१वर छीह ॥
 जिम जिम लग्गे तिम अरिय । ढाहन ढाहे दीह ॥ छं० ॥ ६८ ॥
 रोना के बीच में समर सिंह की शोभा वर्णन ।

कुंडलिया ॥ पंच चिराकन मग्गळ नप । सो सोमित जुगिंद ॥
 भुनि ग्रह सतह बीस ^२थह । लिय पारस मंडि चंद ॥
 लिय पारस मंडि चंद । सुद्धित ससिपाल सु बंसिय ॥
 अप्प सामि वर जानि । किति जंपै रन धंसिय ॥
 सुनिय वेन बुल्लियै । घोरि ढंकी अरि रंचै ॥
 कपट द्रोह करि इक । पथ्य टारै ^३पच पंचै ॥ छं० ॥ ६९ ॥

प्रातःकाल होते ही रामर सिंह जी का अपनी सेना को
 पक्रव्यूहाकार रचना ।

दूहा ॥ इम निसि बीर कढ़िय समर । काल फंद अरि कट्टि ॥
 होत प्रात चिचंग ^४पहु । चकाव्यूह रचि ठट्टि ॥ छं० ॥ ७० ॥
 रामरसिंह जी के रचित पक्रव्यूह का आकार
 और क्रम वर्णन ।

कवित्त ॥ समरसिंघ रावर । नरिंद कुंडल अरि घेरिय ॥
 एका एका असवार । बीच बिच पाइक फेरिय ॥
 मद सरक्क ^५तिन अग्ग । बीच सिखार सु भीरह ॥

(१) मो.-वर बीह ।

(२) ए. क. को.-हथ ।

(३) ए. क. को.-पंच पंच ।

(४) ए. क. को.-पग ।

(५) ए.-विन ।

गोरधार विहार । सोर छुट्टै कर तीरह ॥

रन उदै उदै वर अरुन हुअ । दुह लोह कहुँ विभर ॥

जल उकाति लोह हिसोरही । कमल हस नचै 'सु सर ॥ छ० ॥ ७१ ॥

युद्ध वर्णन ।

सावला ॥ कर लोह कहुँ, रस रोस बहुँ । अग अग गहुँ, कथ सूर कहुँ ॥

छ० ॥ ७२ ॥

असी अच उहुँ, थट थट गहुँ । हक सीस रहुँ, पग सूर कहुँ ॥

छ० ॥ ७३ ॥

गिध लोल रहुँ, द्रुन नच ठहुँ । युती रभ पट्टै, अंत तुट्ट जुट्टै ॥

छ० ॥ ७४ ॥

सिर अग बहुँ, लोह पच्छ कहुँ । कर किति महुँ, वक बीन नहुँ ॥

छ० ॥ ७५ ॥

मुप चढ पट्टै,

। सिंघ सम रनी, लुथ्य लुथ्य घन्नी ॥

छ० ॥ ७६ ॥

सधि तुट्ट रेसे, कथ बध्य जैसे ।

॥ छ० ॥ ७७ ॥

समरसिंह की युद्ध चातुरी से राजा भान का उत्साह
बढना और तिरछे रुख पर पृथ्वीराज का
आक्रमण करना ।

दूहा ॥ ससरसिध दिप्यत सुवर । उप्पारे रन भान ॥

दइ समान दुज्जन दवन । तिरछौ परि चहुआन ॥ छ० ॥ ७८ ॥

चंदेरी की सेना का तुमुल युद्ध करना ।

सावला ॥ इसी सेन राई, चंदेरी सुभाई । पग योलि धाई, अरी सीस धाई ॥

छ० ॥ ७९ ॥

भिरत बजाई, रज तम छाई । विरभभाई धाई, असी वक झाई ॥

छ० ॥ ८० ॥

किरचं उड़ाई, ससी व्यंव पाई । सुतं राति छाई, कवी किति गाई
छं० ॥ ८१ ॥

उमा ज्यों बताई, वरं पंच पाई । चवंसठि ताई, ॥छं०॥८२॥
लही भुगति रासी, अवी अब्बि नासी । उपं राज जीतं, सु भारथ्य बीता
छं० ॥ ८३ ॥

रावल रामरसिंह जी और चंदेरी के राजा का छन्द युद्ध
और चन्देरी के राजा (वीर पंचाइन) का
गारा जाना ।

कवित्त ॥ वर बंसी ससिपाल । समर रावर रन जुद्धे ॥
अमर बंध चित्रंग । वीर पंचाइन वद्धे ॥
सबै सस्थ सामंत । पेत ठोछ्यौ विरगाइय ॥
गुरिन गयौ अरि ग्रहन । लख नन लुस्थि न पाइय ॥
प्रथिराज वीर जोगिंद नप । दिष्ट देव अंकुरि रहिय ॥
बंधनह वत बंधन दिवन । दिष्टकूट हसि हसि कहिय ॥छं०८४॥

युद्ध के अन्त में रणथंभ गढ़ का युक्त होना । हुसैन खां
और कन्हैया का धायल होना ।

लुटि लखि चित्रंग । राज रिनथंभ उबारे ॥
पेत ठुंढि चहुआन । कन्ह चहुआन उबारे ॥
उमै धाइ वर आए, । धाइ आहुटु अठोभिय ॥
पंच धाइ हुसैन । घान चौडोल धालि लिय ॥
प्रथिराज वीर वीरंग बलि । निसि सपनंतर अछ पहि ॥
यागति जागि देष नपति । तबह कन्ह जलथोन लहि ॥छं०८५॥

(१) ए. कृ. को.-गारि ।

(२) मो.-सद्धे ।

(३) ए. कृ. को.-वांधे ।

(४) मो.-उबारे ।

(५) ए. कृ. को.-मत्ति ।

पृथ्वीराज का स्वप्न में एक चन्दवदनी स्त्री के साथ
प्रेमालिङ्गन करना और नींद खुलने पर उसे न पाना ।

हस 'सुगति माननी । चद जाभिनि प्रति घट्टी ॥

इक तरंग सुदरि सुचरग 'हथ नयन प्रगट्टी ॥

हस कला अवतरी । कुमुद वर फुल्लि समर्थै ॥

एक चित्त सोइ बाल । भीत सकार अस रथै ॥

तेहि बाल सग में पूछुथ लिय । वरन वीर सगति जुवह ॥

जाग्रत देवि बोलि न कहू । नवह देव नन मान वह ॥छ०॥८६॥

पृथ्वीराज से कविचन्द का कहना कि वह स्त्री आपकी
भविष्य स्त्री हसावती है कहिए तो मैं उसका
स्वरूप रंग कह डालू ।

दूहा ॥ * सो सुपनतर देयि वह । सो तुअ वर वर नारि ॥

वे वर गज्जि नरिद तू । हंसि हंसि पुच्छि कुआरि ॥ छं० ॥ ८७ ॥

एन वधन रूपह रवन । इन गुन इन उनमान ॥

धीरतन पूजत वर । सुनहु तौ कहू प्रमान ॥ छं० ॥ ८८ ॥

हंसावती के स्वरूप गुण और उस की वयसन्धि

अवस्था की सुखमा और उसके लालित्य का वर्णन ।

हनुफाल ॥ सुनि सुवर वरनी रूप । तिहि चढन वै नय भूप ॥

दिन धरत सैसव रह । बालत तज्जन देह ॥ छं० ॥ ८९ ॥

वय काम दिन पछितान । आवन दिन सुभ जानि ॥

इन काज असुभ प्रमान । ज्यो सहिव तजि अनि ध्यान ॥छ०॥९०॥

(१) मो गति ।

(२) मो -हप

* इस छंद में यद्यपि पृथ्वीराज और चन्द कवि किमी का नाम स्पष्ट नहीं है परंतु छन्द के भाव से यह ज्ञात होता है ।

धन धनक वेदी काम । ^१द्रिग काल गौरभ वाम ॥
 जंजीर भौंह चढ़ाई । देपंत काम बजाई ॥ छं० ॥ ८१ ॥
 बरछिन्न उन्नित बाल । बर काम चित चढि साल ॥
 चित हसुअ गरुअ सुहंत । गुर गरु होत पढ़ंत ॥ छं० ॥ ८२ ॥
 जिम जिम सु विधा आइ । तुछ भरत तुछ सरसाइ ॥
 मति लघू अलघु प्रमान । ^२अंव निवंद समान ॥ छं० ॥ ८३ ॥
 बर मत पिछली जीअ । तहां रसन ^३हीनति पीय ॥
 गति हंस चढ़त सुभाइ । सुत बंदि ^४जसु अभिसाइ ॥ छं० ॥ ८४ ॥
 सैसब सु सुतन सुपाइ । जोवनन रस सरसाइ ॥
 तिसहुंत गजगति जानि । ॥ छं० ॥ ८५ ॥
 जसु पन्न चित क्रम मान । जिम संधि प्रथम गियान ॥
 प्राचीय मुष रंग स्वर । प्रगथौ सु काम कर ॥ छं० ॥ ८६ ॥
 बरे बाल भाहि सरूप । धट धरक कपट अनूप ॥
 वय बाल ^५जोवत काज । कप कपट उत्तर लाज ॥ छं० ॥ ८७ ॥
 मधु मधुर ^६अमृत जानि । बेजियन सौधत बानि ॥
 मति मति बरनी पाइ । तहां बाल बेस ^७छिकाइ ॥ छं० ॥ ८८ ॥

पृथ्वीराज उक्त बातों को सुनही रहा था कि उसी समय
 भान के भेजे हुए प्रोहित का लग्न लेकर आना ।

आवित्त ॥ कहि सुपनंतर ^८उपति । सु वह ओतान बढ़ाइय ॥
 तव लागि ^९भान नरिंद । बीर दुजराज पठाइय ॥
^{१०}बरे दुजराज पठाथ । रतन उर कीनौ अथी ॥

- | | |
|--|---------------------------|
| (१) ए. क. को.-दृग का लगौ सुभ वाम । | (२) मो.-अव विन्द समान । |
| (३) मो.-हीनित । | (४) मो.-अभि जनु माइ । |
| (५) ए. क. को.-जोवन । | (६) ए. क. को.-उतम । |
| (७) मो.-लुकाय । | (८) मो.-उपति । |
| (९) ए. क. को.-मान । | |
| (१०) ए. क. को.-“ हय हथिय मनि मृत्त रतन उर किन्हे रप्पी ” । | |

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-10.

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OR
CHAND BARDAI,

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia,

AND

Syam Sundar Das B A

CANTOS XXXVI to XLIII



महाकावि चंद वरदाइ

रत

पृथ्वीराजरासो

जिमको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या

आर

श्यामसुन्दरदास बी ए

ने

सम्पादित किया ।

पृष्ठ ३६ से ४३ तक ।

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS AND PUBLISHED BY THE
NAGARI PRACHARINI SABHA BEVARIES

1907

गूवीपत्र ।

०

(३६) हंसावती व्याह	पृष्ठ १०७३ से १०९७ तक
(३७) पहाड़राय समय	" १०९९ " १११८ "
(३८) वरुण कथा	" १११९ " ११२८ "
(३९) सोमवध समय	" ११२९ " ११५२ "
(४०) पञ्जून छोंगा नाम प्रस्ताव	" ११५३ " ११५६ "
(४१) पञ्जून चालु रु नाम प्रस्ताव	" ११५७ " ११६३ "
(४२) चंद द्वारका समय	" ११६५ " ११७७ "
(४३) कैमास जुद्ध (अपूर्ण)	" ११७८ " १२०० "
रासोसार	" ९३ " १०४ "

०

तिथ प चम रवि भीम । लगन प्रथिराज सु थप्पी ॥

कमलहु सुरीज किनौ कानक । किति लम्भी दुष्मन वहिय ॥

तप तेज भान मध्यान ज्यौ । तिन चौछान चदह कहिय ॥छ०॥८६॥

और उक्त रनथभ के युद्ध की रत्नाकर से उपमा वर्णन ।

वर प चाइन समर । दड मुक्किय वर मुक्किय ॥

मथी सेन सम्भूह । रतन किती फल रुक्किय ॥

लच्छि भाग चहुआन । हथ्य हसावति लच्छिय ॥

अमृत भाग चित्र ग । सेन हालाँ हल सक्षिय ॥

वारनी वीर अस्सिय सु भर । अरिन पाइ जस रतन लिय ॥

मह महन रभ हथ्यह कपट । सिम सीस वर अप्प लिय ॥छ०॥१००॥

लगन के समय के अन्तरगत पृथ्वीराज का वारू वन को
शिकार खेलने के लिये जाना ।

दूह ॥ तब लगि मतन लगन दिन । न्विप आघेटक जाइ ॥

वारू वन उम्भौ न्वपति । मात दरस निस पाइ ॥ छ० ॥ १०१ ॥

पृथ्वीराज के वारू वन में शिकार करते समय सारंग
राय सौलंकी का पितृवैर लेने का विचारकरना ।

कवित्त ॥ वारु विरल वन न्वपति । राइ आघेटक सारिय ॥

सारंग चाणुका चूक । रुका तिहि वर विचारिय ॥

समरसिध चढि हथ्य । हथ्य आवै चहुआन ॥

पिता वैर बहु बध । हुऔ कर नार समान ॥

वर वैर सपुत्तन निकसै । ज्यौ आगम अरि अगयौ ॥

वर वीर वैर ससि सनिह लगि । गुन प्रधान वर भगयौ ॥छ०॥१०२॥

सारंगदेव का कहना कि पितृवैर का लेना वीरों का मुख्य
कर्तव्य है ।

हहा ॥ वैर काज वर नद सुत । वर वैरोचन हत ॥

करि वसीठ माली सुतन । वैर पुण्य मन जित ॥ छ० ॥ १०३ ॥

कवित्त ॥ सुनि मंचीवर बैर । राम रावन *सिर सजिय ॥
 बैर काज ग्रहभेद । करन उरजन सिर भजिय ॥
 बैर काज सुग्रीव । बाल जान्यो न बंधगति ॥
 बैर बीति सुर इंद्र । बैर चिंतिजै इसी भंति ॥
 चहुआन समर लभै जु तत । चंद सूर जिम ग्रह लिय ॥
 बर चूक दान अग लगिहै । कित्ति एक जुग जुग चलिय ॥ छं० ॥ १०४ ॥
 १ कित्ति काज परधान । राज राजन सुख चुकिय ॥
 कित्ति काज विक्रमा । देश देसह धर लुकिय ॥
 कित्ति काज पंवार । सीस जगदेव समप्यौ ॥
 कित्ति काज बर सिवरि । २ मध्य कर कटि सु अप्यौ ॥
 ३ रक्षंत ३ अचल गल्हां जियन । कीरति सब जग भल कहै ॥
 सकंग एक जुगन विरह । रहे तो गुर भल्हा रहे ॥ छं० ॥ १०५ ॥
 दूहा ॥ केहरि काल केहरौ हिरन । करन जोग में ईस ॥

कोइक उत्तर देषिये । गल्ह बोहथी सीस ॥ छं० ॥ १०६ ॥

सारंग राय* का नागौद के पास गंगलगढ़ के राजाहाड़ा
 हम्मीर से मिल कर उरो अपने कपट गत में बांधना ।

कवित्त ॥ मंगल गढ़ मंगलिय । नयर नागदह मिलंतह ॥
 है हाड़ा हमीर । नैन बाहू सु जुरंतह ॥
 पारधिरा प्रथीराज । चूक मंझौ चालुकां ॥
 हाड़ा सों हथलेव । भूल कटुन ४ सोलुकां ॥
 भंभरी भीर भौनिग तनय । परि पगार उद्दिग्ग तेन ॥
 पंचारि राइ पट्टनपती । तिवर तेग बत्ते कहन ॥ छं० ॥ १०७ ॥

* “सारंग राय” भीम देव का पुत्र था । यद्यपि यह बात इस छन्द में स्पष्ट नहीं लिखी है परंतु इस “पिता बैर बहुवन्ध, हुआ कर नार समान” पक्ति से उक्त आशय निकलता है ।

(१) ए. क. को.- किसी को परधान राज हरिचन्द न मंकिय

(२) ए. क. को.- मस । (३) ए. क. को.- अचर ।

३ ए. क. को.- प्रतियों में “कित्ती काज श्रिय राम राज भाभीछन दोनो” पाठ है और दूसरी “कित्ती काज विक्रम जैसे देसह धर लुकिय” नहीं है । (४) ए. क. को.- चालुका ।

* सारंग राय का पृथ्वीराज और समरसिंह जी के पास न्योता भेजना ।

दूहा ॥ भोजन भिस चालुक ने । पाइक पाइक कौन ॥
 ग्रह कपट सु मडि कै । करि जु निवतन कौन ॥ छ० ॥ १०८ ॥
 बरन राव रोवन ढिग । बर चालुक सु थान ॥
 समर सिध चहुआन को । न्योतन को बलवान ॥ छ० ॥ १०९ ॥
 यहा एक एक मरान में पाच पांच अस्त्रधारी नियत करके
 कपट-चक्र रचना ।

कवित ॥ एक ग्रह बिच बीच । सुभर सनाइति पचै ॥
 पच घट्टि पचास । बीर अवी रज सचै ॥
 तक्र लोह सह दीन । करै चालुक सु चसै ॥
 आपेटक चहुआन । समर रावर बर भिसै ॥
 भोजन भति रस बीर बर । बर प्रबोध ग्रह दिसि चलिय ॥
 मन तन्न सुख मिट्टै सधन । सुवर बीर सगह हलिय ॥ छ० ॥ ११० ॥

हाड़ा राव का पृथ्वीराज और समर सिंह से मिल कर
 शिष्टाचार करना ।

दूहा ॥ आज हनदे पाप बर । ग्रह बड्डे बडराइ ॥
 समरसिध चहुआन मिलि । दुख हनदे आइ ॥ छ० ॥ १११ ॥

कवि का हाड़ाराव पर कटाक्ष ।

बर प्रमान ग्रह ग्रह कै । भेद चुक तिन जानि ॥
 धालि पिटारी उरग कौ । भेल्है को ग्रह आनि ॥ छ० ॥ ११२ ॥
 पृथ्वीराज को नगर में पैठतेही अशकुन होना ।
 गाम वाम पैसत न्यपति । बन न्यप बोलात सह ॥

* इस प्रसंग में चालुक शब्द से सारंग राय से ही अभिप्राय है ।

(१) को मो -वाइक ।

(२) मो सन्नाहित ।

फेरि बीर दधिन भयौ । वैरी करन निकंद ॥ छं० ॥ ११३ ॥

ज्योनार होते हुए वार्तालाप होना ।

करिय सबर मनुहार निप । चित धरं धरकत ॥

भोजन पिधि विधि सकल भय । अकल अपूर्व वत ॥ छं० ॥ ११४ ॥

उसी समय किले के किवार फिर गए और पृथ्वीराज पर
चारों ओर से आक्रमण हुआ ।

कवित्त ॥ दै किपाट चिहुं कोद । राज मुक्यौ सु मंगत ग्रह ॥

ठाम ठाम सब सथ्य । खर सामंत सथ्य रहि ॥

घोरंधार विहार । । विपन वर वर वन मुकिय ॥

संभ्र सपते राज । चूका चालुक सलुकिय ॥

प्रथिराज सथ्य सामंत सह । वर पवास लोहान भर ॥

वर बंध उभै सेवक त्रिगट । समर काज उभौ समर ॥ छं० ॥ ११५ ॥

दूहा ॥ तकि बकि उठे सुमर । चंपे चालुक राइ ॥

हाइ हाइ मची समुप । बकत बीर प्रथिराइ ॥ छं० ॥ ११६ ॥

रारंगदेव के सिपाहियों का सबको धेरना और पृथ्वीराज के
रागन्तों का उनका राम्हना करना ।

कवित्त ॥ चिहुं कोद वर खर । तेग कट्टी सु हकि कर ॥

बज कट्टि कुंडली । करिय मंडली रजं फिरि ॥

लहि न और अवसान । कट्टी वर अभिभ सु सली ॥

झरि चालुक सब देह । सिरह बट्टी मन हली ॥

कैधूं दुबडि बंदर सिरह । हलधर हल सिर गारयौ ॥

सामंत सट्टि ग्रह कूदि कै । फिरि पारस अरि पारयौ ॥ छं० ॥ ११७ ॥

रावल जी और भीम भट्टी का छन्द युद्ध ।

रावगीन वर समर । भीम भट्टी जु कंध परि ॥

तेग हथ्य भक्तक्षोर । वीर लिनो सु बध्य 'भरि ॥

दुतिय घात आधात । धाड़ 'अग्गा बर बाहे ॥

कमल पति दती । समूह दारुन जल गाहे ॥

घट धाव भग भेदै नही । चौकाट जल घट बूद जिम ॥

आहुट उग्र साहस करिय । पच तरोवत अरिन तिम ॥छ०॥११८॥

पृथ्वीराज का * नागफनी से शत्रुओ को मारना ।

दूहा ॥ नागमुषी चहुआन लिय । अरिन करन सु दाह ॥

'हृद नपि उचाड़ अरि । ज्यो कल बधि बराह ॥ छ० ॥ ११९ ॥

घोर घमसान युध होना और समस्त राज्य महल

में खरभर मच जाना ।

मोतीदाम ॥ रन वीर रवद कहै कवि चद । सु मोतिय दाम पय पय छद ॥

कढै बर आवध वज्रत तूर । उठे परसद महसान मूर ॥

छ० ॥ १२० ॥

नचै बर उठि घर घर मूर । करै हका देपि उसस्ति कूर ॥

जु तक्त अछर जालिन मडि । रही तिन मभक्त सुकौव समुभक्त ॥

छ० ॥ १२१ ॥

दिपी दिपि 'सुक्किव अछरि जुथ्य । उपावहि 'मत्त जु सु दर तथ्य ॥

उपावत मत्त सु छोडन घट्ट । चलत है विद्धि अगमनि बट्ट ॥

छ० ॥ १२२ ॥

'अपजस कित्ति तज्यौ अस राइ । चल्थौ अप अग छुडावत जाइ ॥

बर गुलटा छडि छडि सु केउ । भुभै उल कित्ति तज्यौ करि पेउ ॥

छ० ॥ १२३ ॥

जु पीय वियोग सख्यौ नह जाइ । चली बर नारि अमगन धाइ ॥

लरतह भूपति भान कु आर । करै मनु 'वज्रय वज्र प्रहार ॥

छ० ॥ १२४ ॥

(१) ए ठ को परि ।

(२) मो लग्गा ।

(३) मो हट्ट नपिड । * ' नागफनी ' एक शस्त्रविशेष । (४) मो सुकनि, कुक्कवि ।

(५) ए को मत । (६) ए अपजस ।

(७) मो वज्रह ।

लरै भर चालुका चंपत धट्ट । सचीरह नारि अगंम सुभट्ट ॥
भ्रिगं भ्रिग लज्जन दर्जन जाइ । भजै क्रम स्वर 'त्रियं गय पाइ ॥
छं० ॥ १२५ ॥

कड़ी बर तेग लग्यौ ग्रह धन । उड़ै बर मग्न अलग्न 'क्रसन ॥
सु उज्जल छोह चल्थौ रुधि छेदि । मनो जल गंग सु भारति मेदि ॥
छं० ॥ १२६ ॥

तजै जर जगा भिदै रवि जाइ । परै धर मुक्ति जु स्वरन आइ ॥
॥ छं० ॥ १२७ ॥

रामराय बड़ गुजर का हाथी पर से किले के भीतर पैठ
कर पारस करना ।

कवित्त ॥ बर बड़ गुजर राम । कूह वज्जिग बर धायौ ॥
पीलवान अरियान । 'पील अरि पूर लगायौ ॥
नारिगोरि सा बात । तीर जल जोर सु बह्यौ ॥
मीन रूप रधुवंस । पूर सग्यौ अरि चह्यौ ॥
कल मलिनि कलिनि कलिकलन कल । लोह लहर सग्यौ हली ॥
अरि घरा फुट्टि बर 'धार सों । सुमन लोह उड़्यौ मिली ॥ छं० ॥ १२८ ॥

कविचन्द द्वारा "युद्ध" एवं रारंग देव के कुवृत्त्य का
परिणाम कथन ।

पंच क्रमन दस हस्थ । 'लुश्चि पर लुश्चिय हुट्टिय ॥
न को जियत संचयौ । न को जुगुग्यौ विन पुट्टिय ॥
कोन जम सु जुझुझवै । वैर मंगै सु पुज्य अब ॥
व्याज तत्त अप्पिय । मूल अप्पयौ कुट्टब सब ॥
अदिहार बीर चालुक कौ । नको पेट विन मुक्यौ ॥
संभाग बीर चहुआन कौ । सबै सस्थ गोरौ कियौ ॥ छं० ॥ १२९ ॥

(१) ए. क. को.-त्रियअग

(२) ए. क. को.-सक्रन ।

(३) ए.-पीर ।

(४) ए.-घरा ।

(५) मो.-" लोथि पर लोथ " ।

पञ्जून राय के पुत्र कूरभराय का बड़ी वीरता के साथ मारा जाना ।

कवित्त ॥ 'सुत पञ्जून नरिद । वीर कूरभ नाम हर ॥
अस्त वस्त अरे सेस्त । ठूक लभमै न दुद धर ॥
विहत्त बीच अरु पड । एक उगारि पँडेक भय ॥
कवि आयौ गुर तीय । नभभ कहि सहिस्त अति हय ॥
दुदत अस्ति न सुक्ति परै । लोह किरचि रच्यौ रक्ष्यौ ॥
भेदयौ राह रूपह सु रवि । वरन वीर वैकुंठ गयौ ॥ छ० ॥ १३० ॥

इस युद्ध में एक राजा, तीन राव, सोलह रावत और
पंद्रह भारी योद्धा काम आए ।

कवित्त ॥ तीन राइ रजवार । सु इक रायतन सोरह ॥
रावतन दस पच । सेन सभरिपति जोरह ॥
नागर चाल नरिद । रैन रावत पट्टनवै ॥
इते राइ अगए । चूक एकन ठट्टनवै ॥
उद्दिग दार पावार पर । पहुरे तीन तुथ्यौ करन ॥
आचिज्ज हूर मडल सुथ्यौ । सधु सथ्यै बध्यौ सुतन ॥ छ० ॥ १३१ ॥

रैन पवार (सामत) की प्रशंसा ।

कुडलिला ॥ मरन न लड्यौ तुग तिहि । सब सथ्यई पवार ॥
सोमेसर नदन छला । गहि गज्जे गमार ॥
गहि गज्जे गमार । तेग तोरिन वर जारन ॥
चूक भूकि चालुक्क । स्वामि कड्यौ वर बारन ॥
वै छलान हथियन । रयन रायतन सिद्धे ॥
सह सथ्या तन ताइ । तुग तिन मरन न लड्ये ॥ छ० ॥ १३२ ॥

रैन पवार के भाई का सारंग को पकड़ना और पृथ्वीराज का

(१) मो-मत ।

(२) ए ठगरि ।

(३) मो-राजन ।

(४) ए रु को मडगौ ।

(५) ए रु को कला ।

(६) मो हेसतस्थान बंधेन ।

उसे छुड़ा कर हम्मीर को तलाश करके उरासे
पुनः मित्र भाव से पेश आना ।

कवित्त ॥ बंध रेन लिय रज्ज । चाइ चाल, का छंडायौ ॥
ढक्कि सेन संभरी । हेल हगगीर बढ़ायौ ॥
षेल घग्ग पुंमान । पान जोरै जल पीनौ ॥
सो घीची परसंग । राइ तुल्ल दल लीनौ ॥
अंकुच्यौ अरिन रिनथंभ सौं । सजि जह्व वीरन बलिय ॥
रविराह सस्ति संमुह गहन । जानि छछुंदरि अप्पलिय ॥ छं० ॥ १३३ ॥
तेरह तोमर सरदार और अन्य बारह सरदार सारंग
की तरफ के काम आए ।

भयौ भूमि भूचाल । संध समरी आहुट्टै ॥
सजि सडै सिंदूर । सिंह पिंडी रवि तुट्टै ॥
तट्टै तेरह 'तुरब । सथ्य बंबर वर धारी ॥
बार बार रावत । हरा वर बाहर रारी ॥
अदभूत जुड चहुआन किय । मिलि पुमान चल्यौ पलह ॥
अजंहुं सु अजब जुग्गिनि जगहि । पल संभरि पंघिन पलह ॥
छं० ॥ १३४ ॥

हुसेनखां का अमरसिंह की बहिन को पकड़ लेना और
रावल जी को उसे छुड़ा देना ।

कुंडलिया ॥ बंधे वर हुस्नेन । पान बल सुवर कुआरिय ॥
रन जिते दुज्जनह । कोइ न मंडै रारिय ॥
कोइ न मंडै रारि । भेछ सुंदरी बधरी ॥
समरसिंह सुनि कूह । चिय बंधत फिरि हेरी ॥
धीठ पान दै आन । हह अहरतन संधे ॥
धीठ जमन हंकार । समर हेतु वर बंधे ॥ छं० ॥ १३५ ॥

रावल अमरसिंहजी की प्रशंसा और अमरसिंह का
उनका अपनी वहिन व्याह देना ।

दूहा ॥ अमर बध रण्यौ अमर । अगि दीनौ वर माल ॥
जस वेली चतुरंग कौ । वरन धस्ति उर माल ॥ छ० ॥ १३६ ॥
चौपाई ॥ जसवेली वरिगौ चतुरंगी । चढि चौडोल ग्रह अनभगी ॥
वरन राव रावल सजोगी । सु धर फेरि चाल, क न भोगी ॥
छ० ॥ १३७ ॥

आधी रात को समाचार मिलना कि रणथंभ के
राजा को चन्देल ने घेर लिया है ।

कविता ॥ अह रयनि सदेह । सह सावद कवीयस ॥
प-यौ वीर जहव । नरिद चदेस खवीयस ॥
गूडराइ सचसलह । जुड लोह लरि बिते ॥
मु-यौ सेन पुत्रहि । पसार पच्छिम भरि जिते ॥
अप्याह अप्य वीतक वित्यौ । बधि चंदेल सजै सुहर ॥
आवड वीर मतौ कहर । गहौ गल्ल बधी सु धर ॥ छ० ॥ १३८ ॥

धुमान और “प्रसगराय” खीची का रणथंभ की
रक्षा के लिये जाना ।

गाथा ॥ जिताराय धुमान । निसाने सदय धाय ॥
छुटा रन रनथंभ । पा पगो पीचिय राय ॥ छ० ॥ १३९ ॥
चौपाई ॥ पीचीराइ हमीर अवनिय । दोइ चहुआन धरम भवनिय ॥
चालुका सौं चूक सवनिय । दुत्तिय दौपता निरवनिय ॥ छ० ॥ १४० ॥
कविता ॥ दूसासन अग मे । राज विहंग गति कौनौ ॥
मध्यदेश मालव नरिद । हंसध्वज भीनी ॥
नीलध्वज कर धरिग । विप्र बदन सपनौ ॥

नालिकेल तेरू फूल । अनंद सौंनह सुभ किन्नौ ॥
 सत पच लगन लभमह भरिय । धरिय अठु तेरह तिनह ॥
 रनथंभ सेन संचरि न्यपति । करिय अवधि ताकरि रनह ॥
 छं० ॥ १४१ ॥

पृथ्वीराज का रणथंभ ब्याहने जाना ।

दूहा ॥ आगम बीर वसंत कौ । रन जिते जुधवान ॥
 वर हंसावति सुन्दरी । चलि ब्याहे चहु आन ॥ छं० ॥ १४२ ॥

पृथ्वीराज की स्तुति वर्णन ।

गाथा ॥ रंग सुरंग सुदीहं । ज्यों कुंजिन मेलयं सख ॥
 वय रुष मुष अंकुरियं । सो मिलयं बंकुरी मुख ॥ छं० ॥ १४३ ॥

दूहा ॥ मुख रवन्निय राजमुष । वर बंधिग सुरतान ॥
 तीन दिनन आवन लगन । आय संगंध पुरान ॥ छं० ॥ १४४ ॥

दोधक ॥ ग्रंथहु ग्रंथ पुरान कुरानय । राज रसं वरनीं वर जानय ॥
 नीति अनीति सुमं सरसानय । लभमर किति लही चहु आनय ॥
 छं० ॥ १४५ ॥

संपय राज स कोकिल संधिय । जानि जुवान न जानि सु पुष्टिय ।
 गायन गाई सुअस्थ सु अस्थिय । संगतय गानकला कल सस्थिय ॥
 छं० ॥ १४६ ॥

छंदह छंद रसे रस जानन । कंठ कला मधुरे मधु आनन ॥
 उद्दिप्त भेज उदार सुधारिय । न्यज्यय रूप सरूप सुरारिय ॥
 छं० ॥ १४७ ॥

दूहा ॥ अवन रवन अरु सिष भवन । पवन त्रिविध तन लग्न ॥
 वापी वृष तड़ाक वृष । विधि व्रंनन कवि लग्न ॥ छं० ॥ १४८ ॥

पृथ्वीराज का आगवन राुनकर उन्हें देखने की इच्छा से
 हंसावती का शरोपे रो झांकना ।

सा सुंदरि' हसावती । सुनि ओतान सुख्य ॥
 बर दिष्टा नन मानियै । बेला लगि गवय्य ॥ छ० ॥ १४६ ॥
 सुनि आयौ चहुआन अय । गुरुजन बध्यौ जानि ॥
 तब मति सुंदरि चितवै । मेदक गौय वयान ॥ छ० ॥ १५० ॥

गौख मे से देखती हुई हसावती की दशा का वर्णन ।

कवित्त ॥ पथ बाल पिय भक्ति । सुभ्रित विटिय सु राजै ॥
 मनो चद उडगन विचाल । मेरह चढि भाजै ॥
 सुनिय अवन दै सैन । अलिन अलिमैन सरोज ॥
 रति मच्छर मति काम । जानि अच्छरि सुर भोज ॥
 धावत वेस अकुरित वपु । बसि सैसव तिन वेस धुरि ॥
 ओतानि सुख दिष्टान धनि । यह कहि पलि सैसव बहुरि ॥
 छ० ॥ १५१ ॥

दूहा ॥ प्रथम वत्त ओतान सुनि । सुष पै दिपहि सलोइ ॥
 सच बात झूठी चवौ । तब जिय सुख न होइ ॥ छ० ॥ १५२ ॥
 सुनि ओतान सु मन्त्रिय । दिपि दिष्टात सचीय ॥
 बीज चद पुरन जिम । बधै कला मनि जीय ॥ छ० ॥ १५३ ॥

हसावती के शृंगार की तय्यारी ।

बर बेहरि देखी नृपति । गौ निप निपवर थान ॥
 बालु सुअवर काज कौ । बर बज्जे नीसान ॥ छ० ॥ १५४ ॥

हसावती की अवस्था की सूक्ष्मता वर्णन ।

आभूपन भूपन नृपति । वैसँधि कहि न कविद ॥
 कवि अनन इह लगि जिय । ज्यो बूढत लघु चद ॥ छ० ॥ १५५ ॥

हंसावती का स्वाभाविक सौन्दर्य वर्णन ।

कवित्त ॥ बर भूपन तजि बाल । सुवर मज्जन आरभिय ॥
 सोइ छवि बर दिखनह । कोटि ओपम पारभिय ॥

वर सैसव वर चंपि । कंपि चिहु कीद गपायौ ॥
 सो ओपम कविचंद । जौ-ए बूड़त नल धायौ ॥
 बालपन वीर वर भिच पन । रवि ससि करि अंजुरि भरिय ॥
 वय बाल उबीचन प्रीति जल । सैसव ते हरई करिय ॥ छं० ॥ १५६ ॥

नेत्रों की शोभा वर्णन ।

दूहा ॥ वर सैसव अश्वर नहीं । जीवन जल वर नैन ॥
 बाल घरी घरियार ज्यों । नेह नीर बुड़ि नैन ॥ छं० ॥ १५७ ॥

हंसावती के स्नान समय की शोभा ।

मोतीदाम ॥ कि बाल प्रमोद सु मज्जन चंद । सुमुत्तिय दाम पयं पय छंद ।
 लटि भिंजि बार रही लपटाइ । मनौ दिढ़ सुक लख्यौ ससि आइ ॥
 छं० ॥ १५८ ॥

वि ओपम दै वरनै कविराज । द्रवै ससि रीस दसं मदु आज ॥
 बहै जल भेदि सु कुंकम बार । तिनं उपमान लहै कवि चार ॥
 छं० ॥ १५९ ॥

जु राह्य चास पियै विष सोम । द्रवै मुष चंदह मतह भोम ॥
 करै वर मज्जन सज्जन नारि । धरै धन धारत संत सवारि ॥
 छं० ॥ १६० ॥

हंसावती के शरीर में सुगंधादि लेपन होकर सोलहो शृंगार
 और बारहो आभूषण सहित शृंगार की उपमा
 उपमेय सहित शोभा वर्णन ।

नराच ॥ कियं सुरंग मज्जनं । नराच छंद रज्जनं ॥
 सुगंध केस पासयौ । बिहस्य हस्य भासयौ ॥ छं० ॥ १६१ ॥
 उपमा जीस साधयौ । बिरंचि लेष बाधयौ ॥
 जु बुद्धि रासि भासयौ । सजीवता प्रगासयौ ॥ छं० ॥ १६२ ॥

'जु केस मुत्ति सजुरे । ससी सराह दो लरे ॥
 मनीस वाल साच ज्यौ । कि कण्ठ कालि नाच ज्यौ ॥ छ० ॥ १६३ ॥
 परी नवैन कथ्ययौ । जु कण्ठ कालि मथ्ययौ ॥
 तिलक भाल भासयौ । भलक काल साचयौ ॥ छ० ॥ १६४ ॥
 विधार गग पावयौ । जु तिथ्यराज आसयौ ॥
 दसत सोमता वर । कलीन भद्र सावर ॥ छ० ॥ १६५ ॥
 सुभाव वान 'वाढयौ । सुराह कपि ठाठयौ ॥
 सु पट्टि वाल ठानयौ । सु राह रूप जानयौ ॥ छ० ॥ १६६ ॥
 उपम नेन ऐनसी । मनौ कि मीन मैनसी ॥
 कवी 'निसक जानयौ । उपम चित्त मानयौ ॥ छ० ॥ १६७ ॥
 भवन्न जीव छडयौ । ससीम रूप मडयौ ॥
 उपम बिंव उगगन । कमल जासु सुमन ॥ छ० ॥ १६८ ॥
 रलत मुत्ति सोभई । उपम अति लोभई ॥
 अमरत तार विच्छुरी । दु चद अग निक्करी ॥ छ० ॥ १६९ ॥
 सु तारि हस सामर । अनेक भेस तामर ॥
 विभास रूप जामर । सु चद चित्त साहर ॥ छ० ॥ १७० ॥
 रतन्न विव जानय । सु चदबी प्रमानय ॥
 चिवलि ग्रीव सोभई । जु पोति पुज 'लोभई ॥ छ० ॥ १७१ ॥
 ससीर राह छडि कै । असन बैठि मडि कै ॥
 डर हर । विसाल यौ । कि ईस दीप मालयौ ॥ छ० ॥ १७२ ॥
 उर चित्रग जितयौ । जु सुक बग पतयौ ॥
 कि काम वीर भजयौ । दहति ग्रेह रजयौ ॥ छ० ॥ १७३ ॥
 उपम ईस 'कुचयौ । अनग नीति रच्यौ ॥
 रोमग पुच्छ राजय । उपम ता विराजय ॥ छ० ॥ १७४ ॥

(१) मो सु ।

(२) मो बाटकौ ।

(३) मो ठाठकौ ।

(४) ए कृ को सक ।

(५) मो लुम्भई ।

(६) ए चक्कयौ ।

उरज्ज पत्र काम कौ । लिपै जोवंत वाम कौ ॥
 कटौ अलप्यता ग्रही । मनो कि रिद्धि रंकई ॥ छं० ॥ १७५ ॥
 कि सोम द्वै नपं रही । तुला कि दंडिका कही ॥
 रुलंत छुद्र घंटिका । सदंत सह दंडिका ॥ छं० ॥ १७६ ॥
 जु जेहरी जराइ कौ । धुरंत नह पाइ कौ ॥
 नितंब अद्भ तंबियं । प्रवाल रंग पुष्पियं ॥ छं० ॥ १७७ ॥
 कि काम रथ्य चक्रए । चलंत एडि वेक्रए ॥
 उलट्टि रंभ जंघनं । करौ सु नास पिंडनं ॥ छं० ॥ १७८ ॥
 उपम रंग राजही । जलज्ज भांति साजही ॥
 बसन सेत वन्यं । उपमा कव्वि भन्यं ॥ छं० ॥ १७९ ॥
 मनो कि दीय अंभयं । सुभंत मध्य रंभयं ॥
 दसन जोति दाभिनी । मनो अंतंग भाभिनी ॥ छं० ॥ १८० ॥
 सुगति हंस लीनयं । सिंगार सोम कीनयं ॥
 गंकार गंजनं गहनं । मनो कि सोर भदनं ॥ छं० ॥ १८१ ॥
 सु कासमीर रंगयं । जु एडि जावकं लयं ॥
 मनो कि हंस सावकं । चलै बिद्रुग्ग भावकं ॥ छं० ॥ १८२ ॥
 जरित मुदका नगं । सु जोति अंगुली लगं ॥
 जुवास रास चासयं । मनो हुतास पासयं ॥ छं० ॥ १८३ ॥
 दिपंति नष्व बीसयं । रबी ससी सुरीसयं ॥
 नव ग्रहीय पुच्छिया । उपमा कव्वि बंछिया ॥ छं० ॥ १८४ ॥
 जु चंद राह पेदि कै । कि हस्ता चंद मेदि कै ॥
 उमै तिषट्ट भूषनं । सजंत मेदि दूषनं ॥ छं० ॥ १८५ ॥
 चलंत वाम कोड़यं । तजंत हंस होड़यं ॥
 उमगि प्रिथ्वि देषनं । अलीन मगग येषनं ॥ छं० ॥ १८६ ॥
 सु सैसवं लगंत रष्वि । मुक्कियं दरसा दिष्वि ॥
 ॥ छं० ॥ १८७ ॥

हंसावती के वस्त्र आभूषणों की शोभा वर्णन ।

हनूफाल ॥ सुर मनौ कौकिल जोड़ । अबजय रचन होइ ॥
 अवर कमल पुटन । रितु देधि सीत बसन ॥ छ० ॥ १८८ ॥
 इह सधि रम दसन । बनि रवनि प्रीत बसन ॥
 कसि कासमीर सुरग । भेकार पिंड अभग ॥ छ० ॥ १८९ ॥
 नग जरित मुद्रिक पानि । रवि परी होइ सुजानि ॥
 नौ ग्रहिअ पुचिअ हथ्य । उपम चद सु कथ्य ॥ छ० ॥ १९० ॥
 सोई चद उपम बेदि । कै हँसत हिमकर मेदि ॥
 वर एडि मडि सुरग । अनु प्रभा रवि ससि सग ॥ छ० ॥ १९१ ॥
 घट दून भूपन सज्जि । सजि सजत सैसव लज्जि ॥
 नग मुत्ति जेहर जोड । गति इस तजहित होड ॥ छ० ॥ १९२ ॥
 वर चरन लागि चिपयान । पेय परस चलि चहुआन ॥
 कर वाम ^१पान सलाइ । बे काज कम अगदाइ ॥ छ० ॥ १९३ ॥
 तव लग्गी सैसव रज्जि । मो ^२कत दरसन दब्धि ॥ छ० ॥ १९४ ॥

हंसावती के केशरकलित हाथ पावों की शोभा वर्णन ।

कुडलिया ॥ वर कुकुम सब सथ्य रगि । बहु सथ ^३नृप वर सथ्य ॥
 सो ओपम वर राज लहि । कवि वरनन लहि कथ्य ॥
 कवि वरनन लहि कथ्य । फिरिय गुर राजहि कथ्य ॥
 मन ससितर काम कौ । प्रात उगगत रवि सथ्य ^४ ॥
^५सुसत रवि ससि रूप । एक असु जीव काम तर ॥
 प चानन तिन होइ । पच प्रथिराज देव वर ॥ छ० ॥ १९५ ॥

पृथ्वीराज का विवाह मंडप में प्रवेश ।

दिहेहा ॥ वदन वर आयी नृपति । तोरन समरिवार ॥
 प्रीति पुरातन जानि कै । कामिन पूजत मार ॥ छ० ॥ १९६ ॥

(१) ए कृ को यात ।

(२) मो-कहत ।

(३) मो उप ।

(४) मो कै सुभूत ससि रूप ।

पृथ्वीराज के रत्नजटित गौर (व्याह मुकुट) की शोभा और दीप्ति वर्णन ।

कुंडलिया ॥ नंग मग जटित सुमेर सिर । तन तर वर मन सोभ ॥
पंच उमै ग्रह चंद सिर । संग सपत्नी लोभ ॥
संग सपत्नी लोभ । जुझ तट वर अन रक्की ॥
रहै नृपति है आन । नैन चितवत फिर मुकी ॥
षंवन पष चिमनिय । ति नर तहनी मन लगा ॥
रन रावत जिम रेह । खर भंगन ग्रह नगा ॥ छं० ॥ १६७ ॥

हंसावती का सखियों सहित गंडप में आना ।

चौपाई ॥ सत संग किन्न अवंत अली । नंपत वर अचित पाय चलि ॥
पिय तन देषि रूप रस सानि । पंषि मनौ नव पंजर आनि ॥
छं० ॥ १६८ ॥

पृथ्वीराज का हंसावती का सौन्दर्य देख कर प्रकुलित होना ।

कवित्त ॥ बंदि सु वर बहुआन । मंझ ग्रह काज सु लिनौ ॥

बाल रूप अवलोकि । महुर महुर रस पिनौ ॥

द्रिग सौं द्रिग संभुहे । पौय उमगे द्रिग ओरन ॥

सो ओपम प्रथिराज । चंद ज्यौं चंद चकोरन ॥

नव भमर पिठु वर कमल में । कै मकरंद गुलावहीं ॥

आनंद उगति मंगल अभिष । सो कवि वरनन गावहीं ॥ छं० ॥ १६९ ॥

पृथ्वीराज का हंसावती के साथ गठबन्धन होना ।

दूहा ॥ वर अंचल सोभेस चित । बंधि बीर वर नारि ॥

देवकाम दुज क्रम कहौ । सो वर बीर कुआरि ॥ छं० ॥ २०० ॥

रांहावती के अंग प्रत्यंग में काम की अलौकिक लालिम
का वर्णन ।

कवित्त ॥ बैनि नाग लुट्टयौ । बदन ससि राका लुथ्यौ ॥
 नैन पदम पधुरिय । कुम कुच नारिंग लुथ्यौ ॥
 महि भाग प्रथिराज । हस गति 'सारंग' मत्ती ॥
 जय रम विपरीत । कठ कोकिल रस मत्ती ॥
 ग्रहि लियौ साज चपक बरन । दसन बीज दुज नास वर ॥
 सेना समन एकत करिय । काम राज 'जीतन सुधर' ॥ छ० ॥ २०१ ॥
 दूहा ॥ कवि लघु लघु बत्ती कही । उकति चद नन छेव ॥
 मनो जनक बदन कवन । जानु कि बदै देव ॥ छ० ॥ २०२ ॥

इसी समय दिल्ली पर मुसलमान सेना का आक्रमण करना
 और ५० सामंतों का उस आक्रमण को रोकना ।

कवित्त ॥ चड्ढिग सब सामत । चूक सब सेन सु दिप्यिय ॥
 घट दस वर सामत । मरन केवल मन लिप्यिय ॥
 पत निसुरति समूह । जूह दैवान सु धाइय ॥
 मार मार उचरत । मार कहि समर सु साइय ॥
 इत उतह सख सामंत रजि । तिन अरि तन तिन वर करिय ॥
 मानव न नाग दिन आइ जुध । सुवर जुध रत्ती करिय ॥
 छ० ॥ २०३ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों और मुसलमान सेना का युद्ध वर्णन ।

रसावला ॥ छर सन्धे परे, सेन भग्गे लरे । काफर बिहुरे, लोह मच्ची भरे ॥
 छ० ॥ २०४ ॥

पारस त फिर, छर हके कर । कडिय पजर, नंथि लोह कर ॥
 छ० ॥ २०५ ॥

छर बथ्य पर, मोह मोह पर । कूक वज्जी पर, लोह वडप्पर ॥
 छ० ॥ २०६ ॥

(१) ए रु को सारद ।

(२) मो जापन ।

* यद्यपि यहां पर दिल्ली का कोई जिक्र नहीं है परंतु यह बात आगे छ० २२० में सुनती है ।

(३) ए रु को उच्चत, उच्चत ।

अग्ग उड्डी गरं, बीर बाजं ठरं । ओन रतं धरं, अंत आलुभंशं ।
छं० ॥ २०७ ॥

स्तर जा उचरं, रारि उग्गं जरं । लज्जा पच्च परं, लोह लोहं करं ।
छं० ॥ २०८ ॥

बास साजं भरं, रैन अड्डी वरं । बाज कुट्टी गरं, घान भारा भरं ।
छं० ॥ २०९ ॥

ढाह मीरं धरं, मझ्ज रोसं ररं । सानि सामं नरं, धाइ घुम्मे परं ।
छं० ॥ २१० ॥

दूहा ॥ कार बंध मझ्जौ रह्यौ । रहे सु जैत कु आर ॥
हे मुक्किव सामंत गौ । उप्पर मेर पहार ॥ छं० ॥ २११ ॥

दूसरे दिवरा प्रातः काल सुरतान खां का आक्रमण करना ।

कवित्त ॥ प्रात पान सुरतान । सेन बंधी अहसारी ॥

वर सोमै कविचंद्र । चंद्र अष्टमि आकारी ॥

अर्द्ध चंद्र महमूदि । अर्द्ध पुरसान पान करि ॥

मध्य भाग रस्ताग । सेन पुरसान जित्ति वरि ॥

दूल धरकि भरकि सिप्पर लई । अरुन दीय उद्दिम सुभर ॥

चिचंग राइ रावर समर । चढि मंग्यौ बंधव अमर ॥ छं० ॥ २१२ ॥

हिन्दू मुसलमान दोनों सेनाओं की जड़ाई

के समय की शोभा वर्णन ।

चोटक ॥ सारंग चण्यौ कविचंद्र मनं । रन नंकिय बीर नफेरि धनं ॥
छननंकहि धंटन धंटन कौ । तन नंकहि मेरि भयंटन कौ ॥
छं० ॥ २१३ ॥

धनेनंकहि धुधुर पप्प रनं । ठननंकहि आइ प्रसह धनं ॥
वर चिकिय चकि मिले पलटे । दिधि घुधुर रेनिय आसा घटै ॥
छं० ॥ २१४ ॥

(१) मो.-भरं ।

(२) मो.-बन्धे ।

(३) ए. कृ. को. वर ।

(४) ए. कृ. को.-बंध्यौ ।

(५) ए. कृ. को.-“वर चनि

तमके तम तेज पहार उठे । बहुरे किधु पावस अभ्भ बुठे ॥
कविचद सु असुय 'साव धरे । चय 'नेत जु गग समीर परे ॥
छ० ॥ २१५ ॥

दोउ दीन अनदिय तेग छुटी । सु वनै चहुआनय सार टटी ॥
छ० ॥ २१६ ॥

तब तक पृथ्वीराज का भी युद्ध के लिये तैयार होना ।

दूहा ॥ उठि ढाल चहुआन वर । बढि अवाज परवान ॥
सुनि वरनी सौं रत्त तिन । सत छुट्टे वर थान ॥ छ० ॥ २१७ ॥
थोड़ी ही देर युद्ध होने पीछे मुसलमान सेना के पैर उखड गए ।

कवित्त ॥ धुअ सुय रावर समर । पान निसुरत्ति घेत तजि ॥
धरी अद्ध बजि लोह । सबै चतुरग सेन भजि ॥
जुद्ध कथ कुल नास । पान निसुरत्ति अहुट्टे ॥
चामर छन रपत । तपत है वै वर लुट्टे ॥
प्रथिराज वीर रावर समर । मिलि नपिच पति अहल गिरि ॥
धर लज्जि लज्जि आहुट्ट पति । तीन वार अहु ग गिरि ॥ छ० ॥ २१८ ॥

युद्ध के अन्त में लूट में एक लाख का असवान हाथ लगना
और पीरोज खा का मारा जाना ।

जीत लियौ चतुरग । चारु चतुरग समोरी ॥
'एक लख्य प्रमान । ढाल गोरी ढढोरी ॥
षा पिरोज परि घेत । घेत को का उप्पारी ॥
समर सिघ रावर । नरिद भोरी करि डारी ॥
वज्जे निसान जयपत्त के । विन सुरतानै छुट्टि दल ॥
नीसान नह उनमह के । चामर छन रपत तल ॥ छ० ॥ २१९ ॥

(१) मो साव । (२) मो नेत्र । (३) ण क को नछिन ।

(४) मो - " एक लख्य पम्पर प्रमान " ए रु को एए लख्य पम्पर प्रमान ।

(५) मो - " विन सुरतान सु लुडि छल " ।

पृथ्वीराज का सब सामन्तों को हृदय से लगा कर कहना
कि मैं आपको बहुत ही अनुग्रहीत हूँ ।

मिले आइ चहुआन । सख्य सामन्तन मनै ॥
उच्च भाव आदर सु । दीन उर चंपि सु लिनै ॥
नैन चैन जन बैन । हीन सुषन्न कढ़ि दोऊ ॥
बर समान तुम राज । तेग राजन विधि कोऊ ॥
रक्ष्यौ गाम रतिवाह दै । तुम कंधें ढिखौ नयर ॥
चिचंग राव रावर समर । 'पाध सीस बंधी अमर ॥छं॥२२०॥

पृथ्वीराज का रावल समर सिंह के पौत्र कुंभा जी को संभर
की जागीर का पट्टा लिखना ।

दूह ॥ 'तेजसिंह सुत समरसी । तिह सुत कुंभ नरेस ॥
संभरि संभरि वार दै । दौहितौ सोमेस ॥ छं॥ २२१ ॥
समर सिंह का उस पट्टे को अस्वीकार कर लौटा देना ।

कवित्त ॥ तब चिचंग नरेस । पिश्रवि नंथौ बर पट्टौ ॥
तुम हूँडा कुल हूँड । सु मनि ऐसी मति ठट्टौ ॥
हथ्य नीच करतार । हथ्य उप्पर गजत गुर ॥
हम आहुट्ट मकामि । खामि कहिजै सु 'उंच बर ॥
कालंक राइ कप्यन विरुद । कुलह कालंक न लग्यौ ॥
दग्यौ न हाथ चित्तौर पति । हम जगत सब दग्यौ ॥छं॥२२२॥

(१) कृ. पाय ।

(२) छंद २२१ की प्रथम पक्ति का पाठ ए. कृ. को -तीनों प्रतियों में समान है ।
अर्थ होता है कि " समरसी का पुत्र तेजसी तिसका पुत्र कुम्भकरन जो कि पृथ्वीराज का
भाजा था किन्तु मो.-प्रति में तेज सिंह चित्रंग सुत नाम धरिग भर वेष" पाठ है, इससे उक्त अर्थ
भेद पड़ता है ।

(३) मो.-नरिंद ।

(४) मो.-चद ।

(५) ए. कृ. को.- विरद ।

(६) कृ.-चीनौर ।

समर सिंह का चित्तौर जाना ।

दूह ॥ ग्रहे गयौ चिच ग पति । गौ ढिलिय न्यप छेह ॥

मास वीय विते न्यपति । मतौ मडि न्यप रह ॥ छ० ॥ २२३ ॥

पृथ्वीराज का हसावती के प्रेम में मस्त हो जाना ।

विमल विलोकन कोक रस । सोक हरन सुप सत ॥

समुप हस प्रभु नीलनभ । विभ्रम वर द्विग मत ॥ छ० ॥ २२४ ॥

हंसावती के प्रथम समागम का वर्णन ।

भुजगी ॥ द्विग मच मच सुमच प्रमाना वियकेलि करनी विधान सुजाना ॥

निज नेह नील सु कौल कलान । मुप मूल विष्णु सु देव सधान ॥

छ० ॥ २२५ ॥

मय मोह मडं सु वदीन दान । हय हेम हड्ड पताका सु थान ॥

'सु अप च सोभा स सोभा स मच । 'छय छद जोतीय ससाइ तच ॥

छ० ॥ २२६ ॥

पिय पेम तच सु कंत सु थान । सुराया विदग सु पुची प्रमान ॥

लिय ग्रहे सज्ज्या प्रथम अलीन । मनों मत मातग 'व ध्यौ कलीन ॥

छ० ॥ २२७ ॥

वच अकुस हेट हेट चलावै । दुरै देपि जालतरे फेरि नावै ॥

छुथ्यौ सैसव लज्ज ते प्रेम आस । फिरे जानि वालो तन प्रेम आस ॥

छ० ॥ २२८ ॥

सया हस हसावती नील थाह । कवी केलि कठे थकी सच स्याह ॥

उर अत घोर विवाह विरोर । कला केलि बड्डी विहान सजोर ॥

छ० ॥ २२९ ॥

दनी देव ज्यौ आनि सदान सेज । सदा खेद पेद हुअौ प्रात हेज ॥

।

॥ छ० ॥ २३० ॥

(१) छ को सुप ।

(२) मो - " छय दुत्तिप छन्द छम्माय तत्र ।

(३) मो बन्धे ।

मुग्धा हंसावती की कोक कला में पृथ्वीराज का मुग्ध हो कर
कामान्ध वृषभ की नाईं गरुत होना ।

* कवित्त ॥ अगह गहन रमि रमन । रवन रमि रवन सु छुटिय ॥
दहिय ^१वदन सहि रहिय । सरस रस सौर सु लुटिय ॥
महिय लहिय नहिं नहिय । ^२छदय छय छयइ यथा ^३छह ॥
सहिय सेज कह कहिय । चंषि चिंचनिय मन्न यह ॥
कामंध अंध मुद्ध वृषभ । भ्रमन अमावह तिलक सन ॥
इह अर्थ सर्थ जानन सु गह । अगह मुगहन मन हसन ॥ छं० ॥ २३१ ॥
हंसावती के मन का पृथ्वीराज के प्रेम में निर्मल चन्द्रमा की
भांति प्रफुलित हो जाना ।

दूहा ॥ मन हिय वृत्तन मुगधनिय । रमि राजन निय नेह ॥
नभिय निसा कर ^४अग रहिय । निसि निमल दिय छेह ॥ छं० ॥ २३२ ॥
शनै शनैः हंसावती के डर और लज्जा का ह्रास होना
और उराकी कामेच्छा का बढ़ना ।

छंद कमंध ॥ निगली नेह नासा । दिष्ट एन लग्गी सु चासा ॥
छेहंग कामी रसा । संचान भग्गी चसा ॥ छं० ॥ २३३ ॥
हंसावती संकुची । दासी प्रीति संवची ॥
न पुरतका पढ़ि विस्तारी । कथा गाथा प्रेम विस्तारी ॥ छं० ॥ २३४ ॥
दंत कांडक निस्तारी । हास विलास सुस्तारी ॥ छं० ॥ २३५ ॥
हंसावती के बढ़ते हुए प्रेम रूपी चन्द्रमा को देख कर पृथ्वीराज
के हृदय रामुद्र का उमड़ना ।

काव्य ॥ गगन सरस हंसं स्थाम लोकां प्रदीपं ।
सस सज बंधू चक्रवाकोपि कीरा ॥

* यह छन्द मो.-प्रति में नहीं है ।

(१) को.-सवद ।

(२) ए.-हरय ।

(३) को.हय ।

(४) मो.-मगधिय ।

(५) मो.-समंस ।

† इस छन्द का पाठ चारों प्रतियों में उलट पलट है ।

तिमिरगजस्रगेद्र चन्द्रकातप्रमाथी ।

विकासि अरुन प्राची भास्करे त नमामी ॥ छ० ॥ २३६ ॥

अमृतमय शरीर सागरा नद हेतु ।

कुमुद वन विकासी रोहीणी जीव तेस ॥

मनसिज नस वधु मनिनीमानमर्दी ।

रमति रज निरमन चद्रमा त नमामी ॥ छ० ॥ २३७ ॥

दिवस के समय रात्रि को पृथ्वीराज से मिलने के लिये हसावती
ऐसी व्याकुल रहती जैसी चकोर चन्द्र के लिये ।

मुरिल ॥ बछ्य चद् चकोरत राजन । 'हसनि हस उदै भयौ साजन ॥

बिहु निसि नेह निसाकर बडिय । कनका जेम कसि कर 'आहुटिय ॥

छ० ॥ २३८ ॥

गाथा ॥ उवनि फलनी फदा । विसनी पत्त बलाकरे हथ्य ॥

मरकति मनि भाजने । परठिय पहुष सु तीय ॥ छ० ॥ २३९ ॥

पावस का अन्त होने पर शरद का आगम और

शीत का बढ़ना ।

मिल्ली म्निगुर खरी । गायन पुनीय ललित लुम्भरिय ॥

पहुकिय पप सु हास । अलकिय सीताइ मद मदाइ ॥ छ० ॥ २४० ॥

किय मडि स पुकरिय । मैन राइ सिरीय बंधाय ॥

पर दार चौर साही । पुकारे जाहु रे जाह ॥ छ० ॥ २४१ ॥

शीत काल की बढ़ती हुई रात्रि के साथ दपति में प्रेम बढ़ना ।

पपट करि कारतार । हसा सयनेव हस सह पायं ॥

निसि बडिय अकुरिय । कुकडय 'कठ कलाय ॥ छ० ॥ २४२ ॥

अचलीय नेह ससी हर । 'रसनह रगी सुरगय देह ॥

उवकठय सदेस । गावै एकत चित सलाइ ॥ छ० ॥ २४३ ॥

(१) ए क को हसति, हसति । (२) ए आहुटिय । (३) ए क को सहास ।

(४) मो कठक ।

(५) ए क को "अबलिय नेह से सहिए" ।

(६) ए क को रसरह ।

हे मौनं करि कोकिलयें । जलधर सम एहं कांठ उंचत ॥
विकसित कर जल बंदे । विकसित रमे कोक सावासी ॥ छं० ॥ २४४ ॥
संग्राम गए खरौ संपगे । होइ चंद्रोदर ॥
विविधा काम तीर्थ । अवसर रत काम लभमाइ ॥ छं० ॥ २४५ ॥
गाहा नक्षिय तत्ती । सदानं नूपुरं उरवा ॥
जिह्वा अंकुर पवितं । भूतं जुग्याइ मंग भंगुरयं ॥ छं० ॥ २४६ ॥
जोई छविना वेनं । रचया सि महिला न रूप महं कमले ॥
तां नंचिय सु वियोगे । निमहं भुतंच जुग जुगाए ॥ छं० ॥ २४७ ॥

हंसावती पृथ्वीराज की और पृथ्वीराज हंसावती की चाह में
अहिर्निसि मस्त रहते थे ।

पौथ आरंभत चिययं । चिय आरंभ कांत चित्तायं ॥
सो तिय पिय पिय पतौ । मा पिसं विदमं धामं ॥ छं० ॥ २४८ ॥
अजा सन्न जो होजा । कंठायं पयो हरं फलयं ॥
दोहंते सय लब्धं । हसनं रस नाय स वकियं होइ ॥ छं० ॥ २४९ ॥
* जोती अहर सहाओ । उचसिया कील कांतायं ॥
सो तिय अग सुहाई । दिस असनी रसं नायं ॥ छं० ॥ २५० ॥
कवित ॥ रयनि पंच संकुलित । पंच ललित दुरि लोइन ॥
भिरत उभय भिरि षष्ठा । मग लगिय जुर जोइन ॥
मिलत चतुर इक रौय । अतुर ग्रह ग्रहं ददुर बल ॥
कमल कमल मंडिय सु चित । नष अष वष बल ॥
आरति सोइ दइता विधुरि । पार समुद्र न नेह लहि ॥
इय प्रात पतिहत प्रथम पहु । नवति चित आचंभ लहि ॥ छं० ॥ २५१ ॥
इस रामय की कथा का अंतिम परिणाम वर्णन ।

(१) ए कृ को -उचंती । (२) ए.-सष ।

(४) ए. कृ. को. -“निद अकुर ए वित्त” ।

(६) मो.-बंदय ।

* यह छंद ए. कृ. को.-तीनों प्रतियों में नहीं है ।

(८) मो.-मचित ।

(१०) मो.-चष ।

(३) ए. कृ. को.-कान ।

(५) ए. कृ. को.-वितायं ।

(७) ए. कृ. को.-सानंज ।

(९) ए. कृ. को.-दुदुर ।

(११) मो.-समुद्रिन ।

कवित्त ॥ हमराइ ^१हसनिय । पानि ग्रहनी ग्रह हलिय ॥
 मालव द्रुग देवास । ^२वास मुद्धत नव वलिय ॥
 हय गय धुर धर भ्रम । क्रम कित्ती अति दानछ ॥
 ता पाछे रनथभ । प्रीति पीची चौछानछ ॥
 चित्र ग राइ रावर रमिय । ^३देव राज जदप वहिय ॥
 वित्तिय वसत रिति अभ्रिय । अचल एक कित्ती रहिय छ॥२५२॥
 समर भिह जी ओर पृथ्वीराज की अवस्था वर्णन ।

दूहा ॥ वत्त कवित्त उगाह करि । चद छद ^४कविचद ॥
 समर अठोरछ वरप दस । दिवस त्रिपच रविद ॥ छ० ॥ २५३ ॥

इति श्री कविचद विरचिते प्रथिराज रासके हसावती विवाह
 नाम छत्तीसमो प्रस्ताव सपूर्णम् ॥ ३६ ॥



(१) ए ससनिय ।

(२) मो यस मुद्धत नवलिय ।

(३) ए छ को न्नेदास ।

(४) गा कवि छद ।

अथ पहाड़राय सभ्यो लिप्यते ।

(सैतीसवां समय ।)

कविचंद की स्त्री का पूछना कि पहाड़राय तोअर ने
शहाबुद्दीन को किस प्रकार पकड़ा ।

दूहा । दुज सम दुजी सु उच्चरिय । ससि निसि उज्जल देस ॥
किम तूअर पाहार पहु । गहिय सु असुर नरेस ॥ छ० ॥ १ ॥

शहाबुद्दीन का ततार खां से पूछना कि पृथ्वीराज का
क्या हाल है ।

कवित्त ॥ सवत सर च्यालीस । मास मधु पय्य भ्रमधुर ॥
चतिय दीह अहश्त्र । उदित रवि व्यव वरन तर ॥
अलिय आल आलोल । गश्त्र गज्जे विसम्भ गन ॥
रस रसाल मजरि । तमाल पल्लव कमल मन ॥
साहाब दीन सुरतान भर । आनि द्वार ठठ्ठी सु बर ॥
अप्यै ततार पुरसान पा । कहा पबरि बहुआन घर ॥ छ० ॥ २ ॥

ततार खा का उत्तर देना ।

गाथा ॥ उच्चरि पान ततार । अरि वरजोर अतर अतार ॥
सामत हूर समार । मत अमित समित जमकार ॥ छ० ॥ ३ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज पर चढाई
करने की सलाह करना ।

भुजगौ ॥ कहै साह साहाब ततारपान । रचौ मडली मडि दीवान थान ॥

अरी ^१पान दिष्यौ वरं आसमानं । ^२करौ कूच सेना प्रकासंत भानं ।
छं० ॥ ४ ॥

दलं लब्ध तीनं गजं बाज पूरं । तिनं तेज तोनं करं किति स्वरं ॥
अनंहह नीसान नहे कि नूरं । नचे भूत बैताल मते महरं ॥
छं० ॥ ५ ॥

हलाह्या झंकार हुंकार झारौ । तुटै तेक तानं झरं दुमि धारौ ॥
करै सेन मगां नचै जोगमाया । धनं निंदरे चोर नचै न छाया ॥
छं० ॥ ६ ॥

सुरं सिद्धनं सोभ सा भानं लोलं । सजे सेन राजौ रसालं सखलं ॥
रचै रंभ रंभा विमानं विमानं । जयं सह देवी ^३दिमानं दिमानं ॥
छं० ॥ ७ ॥

मनों साल भंजीक तेजं प्रकारं । रची खामि संची रची मंडिरारं ॥
धजं धूमरं सेत पीतं सुरंगे । रितं राज अग्नौ मनूं फूलि ^४दंगे ॥
छं० ॥ ८ ॥

असं बेस कंपी दुरी चौर मजी । चढ़े काम फंजरं पती पीत सजी ॥
निहारं विहारं उपं हार हारं । बरें अग्रसेना मध ^५व्रत्त पारं ॥
छं० ॥ ९ ॥

रचे तुंड तुंगं तियं एक नैनं । सजे ताल बैताल सिंदूर सबैनं ॥
वनै अछरी कच्छि विमान नैनं । पतं जुगिनी पानि इच्छंतरैनं ॥
छं० ॥ १० ॥

नचै रंग नारद भंडै अनूपं । चमू चारि भारं भरं सहि रूपं ॥
अनी कोर आकार आकृति नूपं । बड़ी भाग पथ्यी पथो उंच ओप ॥
छं० ॥ ११ ॥

(१) ए. क. को.-पान । (२) मो.-करौ कूच सेनाइ सासंत भान ।

(३) ए. क. को.-विमानं विमानं । (४) मो.-हगे ।

(५) मो.-आत ।

मही मडि माया रहै लोपि माल । पिछे 'पगग अगग वल बोलि तान् ॥
नव नह नीसान 'भेरी भयान । मनो मेध गज्जे कयान पयान ॥

छ० ॥ १२ ॥

दूसरे दिन गजनी राजमहल के दरवाजे पर सहस्रों
मुसलमान सेना का सज कर इकट्ठा होना ।

दूहा ॥ 'तव ततार पुरसान पा । सुनौ साह साहाव ॥
अरि अभग दल सक रस । अमित तेज वल आव ॥ छ० ॥ १३ ॥
अरुन वरुन उदित अरुन । बढि प्राची रुचि 'रुप ॥
मेच्छ सामि चढि सेत अस । रन दिल्ली सम भूप ॥ छ० ॥ १४ ॥

समस्त सेना का दस कोस पूर्व को बढ़ कर पड़ाव डालना ।

कावित्त ॥ अरुन कोर वर अरुन । बढि साहाव साहि चढि ॥
दिसि प्राची दप्पिन 'विपथ्य । पच्छिम उत्तर बढि ॥
'सेस भाग भै भाग । भोमि सकुचि कुकपि निल ॥
गमन सेन उडि रेन । गेन 'रवि पत्त धुध इल ॥
दस कोस यान दल उत्तरिग । धन अवाज घर रिपु 'परिग ॥
गत मेच्छ मडि मडल 'सुमति । गति सु जग अगगर धरिग ॥ छ० ॥ १५ ॥

दूहा ॥ रत निसान डग मग अरुन । जिस दीपक बसि वात ॥
सुनिव चप अति साह मन । तन विकप अकुलात ॥ छ० ॥ १६ ॥
अरिस्त ॥ मिले मेच्छ मडल भर भीर । अतुलित पान पान सधीर ॥
उठत वयन अप अप्य समीर । साहि 'बढौ धिर कर कठीर ॥ छ० ॥ १७ ॥

गहावुर्दान की आज्ञानुसार दीवान खास मे गोष्ठी के लिये
उपस्थित हुए सदस्य योद्धाओं के नाम ।

- (१) मो पगग । (२) ए रु को भेरी । (३) मो पयान कयान ।
(४) ए रु को तपि । (५) ए रु को रूपि । (६) मो विथ ।
(७) मो रूचि । (८) मो पयि । (९) ए रु को रतो वट्टौ ।

हनूफाल ॥ घम घम बजि निसान । चढ़ि सैन कंषि दिसान ॥
 पहु ओर कोरति भान । भर मंडि साहि दिवान ॥ छं० ॥ १८ ॥
 वर मंच पान ततार । जुरि जुद्ध सेन करार ॥
 पुरसान रस्तम पान । ^१बाजिंद मीर प्रमान ॥ छं० ॥ १९ ॥
 मनखुर सेर हुआब । जिन दान पग जम आव ॥
^२महमूंद कगान काल । तिन तेज अरि भै चाल ॥ छं० ॥ २० ॥
 मन ज्यंद जगान धीर । तेजर्ग पान गंभीर ॥
 बेहद पान जिहान । निसुरति आजम मान ॥ छं० ॥ २१ ॥
 ममरेज से रनसिंध । भजि जात तिन अरिभंग ॥
 मुलतान पान मसद । भारथ्य पान सुहद ॥ छं० ॥ २२ ॥
 आमोद जाजन पीन । तिन हकि अरि तन छीन ॥
 आषेट आतस मीर । सारफ सेर गंभीर ॥ छं० ॥ २३ ॥
 सुरतान ^३मंडि दिवान । वर मंच करि परमान ॥
 ॥ छं० ॥ २४ ॥

राभा में ततार खां का नियमित कार्य के
 लिये प्रस्ताव करना ।

दूहा ॥ मिले मीर भर पान सब । रचि दिवान दरवार ॥
 मंड मखुरति मत्त वर । तब पुरसान ततार ॥ छं० ॥ २५ ॥

वितंड खां का रागर्व अपना पराक्रम कहना ।

कवित्त ॥ मीरपान से रनवितंड । हकिय हकारिय ॥
 सनमुष साहि सहाब । बोलि वह वह बकारिय ॥
 हनों सेन हिंदवान । ऐन चहुआनह संघौं ॥
 अरि अरिन अरि भीर । हकि हकों पग ^४बंधौं ॥

(१) मो.-बाजीद ।

(२) ए.-महमूंद ।

(३) ए. संझि, कु.-माझि ।

(४) ए. क को.-बन्धौ ।

गज बाज साजि जयल पथल । पल अदुन भजौ 'भरन ॥
भुअ भाप भिस्त मकोद रन । कै 'धोरह जीवन धरन ॥छ०॥२६॥

खुरसान खां का राजनीति कथन ।

पड़री ॥ धुरसान पान कहि सुनि ततार । सची सु वत्त जपौ सु ढार ॥
दल जोर तेज छिद्र अकार । वर मच सेन रख्यौ 'विपार ॥
छ० ॥ २७ ॥

बुल्ल्यौ वितड काली तमकि । तम छते जुइ 'किम साह सकि ॥
सग्रहौ सेनपति हिदुराज । बधौ अपारि पल पग बाज ॥छ०॥२८॥
निसुरति मीर जपै सु तव । तम हसे साह किज्यौ न ग्रव ॥
॥ छ० ॥ २९ ॥

दूहा ॥ रावन ग्रव विनाश रज । एन सीस हयवीर ॥
अप्पा कोनन उच्छयौ । कालू से रनमीर ॥ छ० ॥ ३० ॥
पड़री ॥ पुनि अप्पि साहि निसुरति बैन । सुरतान आन भरकान 'नैन ॥
कुहि बाज तेन चालत पव । भीपग कपि है ग्रव सव ॥छ०॥३१॥
राई सुमेर करते न बार । 'अलह सुआल ऐसी विचारि ॥
बिन साह तेज बडु सु ग्रव । इप्प्यै न ताहि अलह अदव ॥छ०॥३२॥
मनो न सक चहुआन खर । बधव सुमन भर मच पूर ॥
बेलू विलाइ नदि बधि वारि । बिन सेन कक चहुआन चारि ॥
छ० ॥ ३३ ॥

* हिद्रू सहस्र दस सामसद । दल गैन लेस तन तेक कद ॥
बुलाइ बैनपति समर मड । बचै विचार सु विहान चड ॥
छ० ३४ ॥

वाइशाह का (लोरक राय) खत्री को पत्र देकर धम्मार्थिन
के पास दिल्ली भेजना ।

- (१) ए क को ससन । (२) ए रु को घोरहि । (३) ए रु का विचार ।
(४) मो क्यों । (५) मो देन । (६) ए क अलहसुआल ।
* ए रु को "हिन्दु सु हद सेमेम नद । लगे न लेस तन तेक कद" ।

गाथा ॥ 'बुल्लि सु दूत हजूरं । मंडे पचीय वीर पचायं ॥
 अघित पान प्रमानं । कथ्यौ गाथाय स्वर चहुवानं ॥ छं० ॥ ३५ ॥
 दूहा ॥ बोलि दूत चव निकट लिय । दिय सु पच तिन हथ्य ॥
 कहौ जाइ अगान सों । सजि चहुआन समथ्य ॥ छं० ॥ ३६ ॥
 दूत का दिल्ली को जाना और इधर चढ़ाई के
 लिये तैयारी होना ।

गाथा ॥ निज के बीसा रुढं । वर साहाव ढिखीयं आसं ॥
 वरति मंच मष किनं । गजीय मद भद नीसानं ॥ छं० ॥ ३७ ॥
 दूहा ॥ गए दूत चलि निकट चव । करि सलाम वर साहि ॥
 पुर डंकिन कंकन सजन । बलि आतुर वर ताह ॥ छं० ॥ ३८ ॥

दूत का दिल्ली पहुंचना ।

स्याम पथ्य पूरन क्रमिग । पहु जुगिनपुर नैर ॥
 दिय कागर अगान कर । वर अगौ रिन बैर ॥ छं० ॥ ३९ ॥

दूत का धर्मायन से मिलना ।

गाथा ॥ दिय पची अगानं । पानं गहि पाइ नाइ वर मथ्यं ॥
 भर चौहान समथ्यं । सजौ सम साह काजयं वैरं ॥ छं० ॥ ४० ॥

धर्मायन का पत्र पढ़ कर बादशाह के गत पर शोक करना

दूहा ॥ कायथ कागर वंचि वर । हायथ हाय सु कीय ॥
 साहि काल सुभर सभर । आय पहुंच्यौ दीय ॥ छं० ॥ ४१ ॥

धर्मायन का दरबार में जा कर यह पत्री कैमारा को देना

वचनिका ॥ पची अगान वाचि कै देहु । बहुरि दरबार गएहु ॥
 कै मास को तसलीम कीनी । पची सु हाथ दीनी ॥ छं० ॥ ४२ ॥

(१) ए. क. बुल्लवि ।

(२) मो.-साह ।

(३) मो.-पथ्य ।

(४) ए. क. को.-मगै ।

(५) ए. को. हीय ।

शहाबुद्दीन की पत्री का लेख ।

चौपाई ॥ हम तुम धरते सौगंध कीनी । नाते भ्रम दुह हैं चीन्ही ॥
 दानव देव आदि भी लग्यो । ताते वैर पुरातन जग्यो ॥ छ० ॥ ४३ ॥
 ज्यो ज्यो हम तुम बजिहै धार । त्यों त्यों सुकवि गाइहै सार ॥
 अमर नाम साहिब का माचा । पानी पिड षेह का काचा ॥ छ० ॥ ४४ ॥
 हम तुम में बध्या अहकार । मरदा भ्रम पुरातन धार ॥
 मरदा अलि भारथ्या बेती । मरद मरै तब निपजै घेतौ ॥ छ० ॥ ४५ ॥

दूहा ॥ मरदा बेती पग मरन । अथि समप्यन हथ्य ॥
 सो सचा कचा अवर । कोइ दिन रहै सु कथ्य ॥ छ० ॥ ४६ ॥
 कथा रही पैगवर । अरु भारथ्य पुरान ॥
 ताते हठ हजरति है । सुनौ राज चहुआन ॥ छ० ॥ ४७ ॥

धर्मार्थन का कैमास के हाथ में पत्र देना ।

दिय पची इह कहि सु कर । करि सलाम तिय वार ॥
 साहिब तुम सन लरन कौ । आयो सिधु उतार ॥ छ० ॥ ४८ ॥

कैमास का पत्र पढ कर सुनाना ।

सुनि मंचौ नृप अथि सम । बचि पच तिन वार ॥
 कच कूच पधार यति । आयो सिधु उतार ॥ छ० ॥ ४९ ॥

पत्री सुनकर पृथ्वीराज का सामतों की सभा करना ।

सुनि पची चहुआन ने । सम सामतन राज ॥
 बात परद्विय सब भरन । अथ्य अथ्य भरसाज ॥ छ० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज का उक्त पत्री का मर्म सब सामतो को समझाना ।

सुकवि ॥ कहै राज अथिराज । सुनौ सामत खर भर ॥
 गजनेस चतुरथ्य । विरेय आयौ सु अथ्य पर ॥
 साज बाज मय मत्त । पग बर भर उभारिय ॥

(१) ए रु को - लगी । (२) ए को वारें । (३) ए हथ्य ।

(४) मो बल । (५) ए रु को मुर ।

उतरि वेग नहि सिंधु । सुनिध धुनि अर उसारिय ॥
 सज्जौ समर्थ्य सामंत सब । संमर चावर डंव रन ॥
 सुरतान खान खुरसानपति । दल बदल पावस परन ॥छं॥५१॥

रामंतों का उत्तर देना ।

तमकि राज प्रथिराज । कहे समंत स्वर भर ॥
 चाहुआन समर्थ्य । पथ्य भारथ्य चारु चर ॥
 सिंधु साह गज गाह । घग्ग घंडौ पल धित्तह ॥
 कार अंजुलि रिषि अरि । चंद अचवन दल कितह ॥
 हर हार सार संमुख समर । अमर मोह जंग्यौ अमर ॥
 ज्यौ मान व्योम आरुध धरि । बनी चमू चौसर चमर ॥छं॥५२॥

पृथ्वीराज का पच्चीस हजार सेना के साथ आगे बढ़ना ।

अरिस्त ॥ चंद्यौ राज प्रथिराज सु राजन । पाव लब्ध दल बल गज बाजन
 चामर छत्र रघत निसानं । मनुं धनधोर दिसान दिसानं ॥
 छं० ॥ ५३ ॥

कूप के समय सेना की शोभा और उसका आतंक वर्णन ।
 चोटका ॥ चढ़ि राज भहा भर सैन भर । उडि बेह पुरं रुकि स्वर करं ॥
 बनि अरुचरि चरुचरि चारु वरं । किल कौतिग भूत बेताल वरं ॥
 छं० ॥ ५४ ॥

मुष छंद सु चंद वरं पठियं । मुष जुगिनि अंग विधौ गहियं ॥
 सुर सह जयं जयरं कथयं । चल चंचल स्वर चढ़े कसियं ॥
 छं० ॥ ५५ ॥

तल ताल करालति कूक करं । ...
 दोइ आइस दूत ससाहि दल । तिन अभिय सेन निकट कल ॥छं॥५६॥

(१) ए. क. को.-लगस्ति, अगस्त ।

(३) मो.-तीन फौजे रचवे गज बाजन ।

(५) ए.-पथयं ।

(२) ए. क. को.-ढरि ।

(४) ए. क. को.-सुख ।

(६) ए. क. को.-कोतिकं ।

पृथ्वीराज का पडाव डालना ।

दूहा ॥ सुनि अवाज सुरतान दल । हरपि राज प्रविराज ॥
कोस पच दुअ सवचिग । हिंदुअ मेच्छ अवाज ॥ छ० ॥ ५७ ॥
अरुणोदय होते ही पृथ्वीराज का गत्र पर आक्रमण करना ।

उदय भान प्राची अरुन । चव्यौ राज सजि सेन ॥
उर पातर कातर ^१इसे । मेच्छ पीर फर सेन ॥ छ० ॥ ५८ ॥
माथा ॥ अच्छरि कच्छिय गैन । चैन चवसठ गैन गोमाथ ॥
हर हरषे हाराय । जुह सज्जाइ दो दसा दीन ॥ छ० ॥ ५९ ॥
हिन्दू और मुसलमान दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना ।

दूहा ॥ मिलिवि सेन अरुन सु अनी । तनी तनी दुअ ^२दीन ॥
असुर ससुर सज्जे सयन । दोउ वीर रस भौन ॥ छ० ॥ ६० ॥
गहावुद्दीन का अपने सैनिकों को उत्तेजित करना ।
भोटि साहि भर पाग सब । पति पुच्छी इह वत्त ॥
अरिय प्रचड प्रचड दल । करहु समर सक मत ॥ छ० ॥ ६१ ॥
सूर्योदय होते होते दोनों सेनाओं में रणवाद्य बजना
और कोलाहल होना ।

अरिस्त ॥ प्रगटित भान पयानिति पूर । वाजिग दुदभि धुनि सुर झर ॥
चव्यौ साहि समर करि झर । अरुन वरुन मिलि तथ्य ^३सनूर ॥
छ० ॥ ६२ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे पर धावा करना ।

दूहा ॥ ठलकि ठाल बहुरग वर । ^४गुस्त मत गजराज ॥
भालकि नीर वपु दल चढिय । मनो पावस गुर राज ॥ छ० ॥ ६३ ॥

(१) ए रु को जिसे ।

(२) ए रु को -दीम ।

(३) ए रु को -न यर ।

(४) मो -“गुस्तम चढि गजराज” ।

दोनों सेनाओं के उत्कर्ष से मिलने की शोभा और यवन
सेना का व्यूह वर्णन ।

भुजंगी ॥ ढलकौ सु ढालं, हलकैति 'हरं' । धमकै धरा, नाग नीसान^१ पूरं ।
किलकै सुभैरं, बजे बाज तूरं । भलकै सुनेजा धरा 'धूम धूरं' ।
छं० ॥ ६४ ॥

बरकै वितालं, बजै तार तालं । करै कूह कूहं, जगी जोग भालं ।
नचै सट्टि चारं, करै राग सिंधू । वकै भूत प्रेतं, कठै तार तिंदू ।
छं० ॥ ६५ ॥

मिली सेन सेनं, टगी लगि 'नेनं' । वढी काल काया, चढी गिद्धि गैना ।
भरं भीर भीरं, भिरै बीर भारं । रची अठु फौजं, विचै साहि सारं ।
छं० ॥ ६६ ॥

भुषं अग्ग मने, पुरासान अनी । भरं चिगानं, धान तेयं दिठनी ।
दिसं वाम मारफ, पीरोज सज्जे । दिसा दखनं, चिगानं जभरज्जे ।
छं० ॥ ६७ ॥

अनी चारि पिठं, अनी दोइ अग्गं । गुरं गौर तारं, फारी पाइ कभी ।
जय्यौ जगं जोरं, हुअौ बीर सोरं । धनं नद नीसान, भइं सघोरं ।
छं० ॥ ६८ ॥

दूहा ॥ भर सहव सज्जिय अनी । जिवन जोर चतुरंग ॥
सुभर प्रफुलित वीर भुष । काइर कंपत अंग ॥ छं० ॥ ६९ ॥

हिन्दू सेना की शोभा और उपस्थित युद्ध के लिये उस के
अनी भाग और व्यूह वद्ध होने का वर्णन ।

भुजंगी ॥ चढ्यौ राज चहुआन कुथ्यौ करं । बढी वेद साषी चढी जाग री ।
ढलकौ सुढालं सु ढालं धमकै । करं छत घग्गं सु पट्टे चमकै ।
छं० ॥ ७० ॥

(१) ए.-निसानं ।

(३) मो.-“धरा धूर पूरं” ।

(२) ए.-मेरं, कृ.-मूरं ।

(४) मो.-गैने ।

धनआगम जानि विज्जू दमकै । घनधोर नीसान नाद धमकै ॥
 रची पच 'सेना मधे 'महि राज । गज बाजि रोह हथनार साज ॥
 छ० ॥ ७१ ॥

मुप अग कौमास चावड स्तर । सहस्र अठ सेन गज बाजि पूर ॥
 'भुजा दच्छिन भीम कण्ठ किवार । सत तथ्य सामत सेन सवार ॥
 छ० ॥ ७२ ॥

दिग वाम पम्मार आवूँ प्रईस । चमू चारी सोभ भिरौ आनि सीस ॥
 'रस रौद्र मध्यौ पग 'पडि जीस । फिरै वेक ढाल 'दुरै नागरीस ॥
 छ० ॥ ७३ ॥

पछ जाम जाज दल सिध साज । सय पच पचास सगी विराज ॥
 दह तीन पच 'तथ पच सज्ज । इल लेप नद गन गेन गज्ज ॥
 छ० ॥ ७४ ॥

धम धम्म नीसान रीसान वज्ज । सवह 'सु सइ सु सिद्ध सु लज्ज ॥
 चढे मेच्छ हिंदू मिली जुद्ध अग्नी । कथी थास भारथ्य सा आज वन्नी ॥
 छ० ॥ ७५ ॥

कुर पड बध्यौ बधे आप अग्नी । इसे मेच्छ हिंदू भर पग लग्ने ॥
 । ॥ छ० ॥ ७६ ॥

दोनों सेनाओं की अनियों का परस्पर यथाक्रम युद्ध होना ।

दूहा ॥ जनुकि पथ्य भारथ्य भर । लगि कुर पड प्रचड ॥
 चाहुआन दल मेच्छ दल । हकि हय गाय भुड ॥ छ० ॥ ७७ ॥
 इत हिंदू उत मेच्छ दल । 'रन चहुे बर धीर ॥
 हकि तेज असि बेग बढि । लगे सुभर हर भीर ॥ छ० ॥ ७८ ॥

- | | | |
|--------------------------|---------------------------------------|----------------------|
| (१) मो फौज । | (२) ए कू को मय । | (३) ए कू को दिसा । |
| (४) मो अईस । | (५) मो "रस शङ्कर मडि पग पाडे जीस" । | |
| (६) ए कू को पड । | (७) ए कू को ढलै, ढलें । | |
| (८) ए कू को मय । | (९) ए कू को सुसज्ज । | |
| (१०) ए कू को चले चढि । | | |

युद्ध का दृश्य वर्णन ।

दंडमाल ॥ मेछ हिंदू जुद्ध घरहरि । धाड़ धाड़ अधाय धर हरि ॥
 रुंड मुंडन घंड पर हर । मत्त बहृत सुरत गरहरि ॥ छं० ॥ ७६ ॥
 भग्ग काइर जूह भीरन । छंडि जल खरिअं धीरन ॥
 रुंड चट्टिय रचि थर हरि । रता जुगिगनि पत्र पिय भरि ॥ छं० ॥ ७७ ॥
 चवत नीरति अच्छ अछरि । सुफाटि पट्ट सुपट्ट फर हरि ॥
 सिद्ध खरन बीर जुरि जुरि । ॥ छं० ॥ ७८ ॥
 प्रवल पीलिय पाल सेनिय । विचलि थल दिग परै ऐनिय ॥
 गोम गैन निसान नंगिय । थान थान विवान संगिय ॥ छं० ॥ ७९ ॥
 मुअन भिरि मुअधार धारन । ओन तुष्पिय हीर झारन ॥
 हिंदु मेच्छ अघाड़ घाड़न । नचि नारद जुद्ध चायन ॥ छं० ॥ ८० ॥

गाथा ॥ नंचिय नारद मोदं । क्रोधं धन देषि सु भट्टायं ॥
 हर हरषिय हारं । पत्तो चंद भानं आ यानं ॥ छं० ॥ ८१ ॥

सायंकाल होने पर दोनों सेनाओं का विश्राम करना ।

दूहा ॥ थकि गुरुभक्त संध्या सपत । सपत भान पायान ॥
 पहु प्राची वजि पंचजन । लह खल्लत गोयान ॥ छं० ॥ ८२ ॥

प्रातःकाल होतेही इधर से कैमास का और उधर शहाबुद्दीन
 अपनी अपनी सेना को सम्हालना ।

कुंडलिया ॥ पहुलगे चामंड सुभर । अरु चिमन्न चतुरंग ॥
 इंद्रजीत लखिमन रहसि । बहसि बढी सु तुरंग ॥
 बहसि बढि सु तुरंग । पंच साइक भाले मिलि ॥
 फुनि गोरी दाहिगा । सु हथ छंडे सु बंधि कलि ॥
 जिम रघुपति पतिलकं । वकं कंकन कर अगौ ॥
 तिम गोरी दाहिगा । सु हथ छंडे जुध लगौ ॥ छं० ॥ ८३ ॥

सूर्योदय होतेही दोनों सेनाओं का आगे बढ़ना और
अपने अपने स्वामियों का जैकार शब्द करना ।

कवित्त ॥ उदय भान पापान । कोर विधिय दल चहुिय ॥
हय गय 'नर आरिय । सद्य पर सहन चहुिय ॥
अच्छरि तन सच्छरिय । व्योम विमानह चहुिय ॥
दिधि स्तर सामत । देव जैजै मुख पहुिय ॥
हथिय सुधारि हथनारि धरि । गजैनारि कारनारि वजि ॥
चढि छिदु मेछ मुह मिलि अनिय । मनो अम्म पावस सु रजि ॥
छ० ॥ ८७ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे पर बाणों
की वर्षा करना ॥

दूहा ॥ भर भीषम तीकम अमर । धनुष बान अधान ॥
छिदुअ मीर सुइक हुअ । मीरचद सनमान ॥ छ० ८८ ॥
दोनों सेनाओं का एक दूसरे में पैठ कर शस्त्रों की मार करना ।
भुजगी ॥ मिले हिदु मेछ अनौ एक मेक । 'वजे पग्ग धार रजे तोन तेक ॥
कर पच'सती चवै ' सिध नह । अवै ओन गडूष पग्ग उनग ॥
छ० ॥ ८९ ॥
उठें रक्त पीत धम धूम रग । सत ' सेत नील जल जात सग ॥
उठ पच'डडूर सर सोभ सज्जी । मनो डड साल समड डरज्जी ॥
छ० ॥ ९० ॥
विताल विताल रजे ताल गेर । गिर मेच्छ हिदू घन घाइ बेर ॥
जमं जाम जग्यौ जमान सुजग्ग । तिल 'तिभुभ अग्ग' वढे पग्ग पग्ग ॥
छ० ॥ ९१ ॥

(१) ए कृ को अर ।

(२) मो - "वजे पग्ग धार जेतो शततेक" ।

(३) ए कृ को सट्ठी ।

(४) मो सिद्ध ।

(५) मो सेल ।

(६) ए-डेंडूर ।

(७) ए कृ को तिल ।

जयं अग्नि जग्गी जनू जग्य जूनं । रते अंग अंगं चले संगं छनं ॥
चढ़ी गिद्धि गैनं छयौ वान भान । परे पाइ सामंत सो चंद जानं ॥
छं० ॥ ६२ ॥

जिमं पंड^१ कौरुं परे मभिगत जुद्धं । सही सचु कथ्यौ पगं बट्टि उषं ॥
कवीचंद कथ्यौ कुरप्पेत हेतं । इसे हिंदु भीरं चढ़े बंदि नेतं ॥
छं० ॥ ६३ ॥

युद्ध भूमि में वैताल और योगिनियों के नृत्य की शोभा वर्णन ।
कवित्त ॥ नेत बंधि हिंदू । नरिदं-सामंत मत्तभर ॥

भीर भार असरार । सबे ढाहे सु सद्धि सर ॥

पथ्य जेम भारथ्य । कथ्य सुभमै जिम कथ्यय ॥

सु कविचंद वरदाइ । एम कथ्यय रन वत्तिय ॥

धन घाइ आघाइ सुधाइ घट । तेक तानि नंचिय करस ॥

चहुआन राइ सुरतान दल । नृत्य वीर मंझौ सरस ॥ छं० ६४ ॥

दूहा ॥ तेग तार मंडिय समर । नचिय नंच विन पैर ॥

चाहुआन सुरतान रिन । रचे नृत्य वर बैर ॥ छं० ॥ ६५ ॥

योगिनी भूत वैताल और अप्सराओं का प्रसन्न होना
और सूरवीरों का वीरता के साथ प्राण देना ।

भुजंगी ॥ रचे नृत्य वर बैर 'हिंदू रु भीरं' । अदुंमंदलं तज्ज राजंत धीरं ॥
धनं गज्ज नीसान ईसान सोरं । करें नृत्य भूतं रचे और कोरं ॥
छं० ॥ ६६ ॥

करंताल भालं बजें रंग रंगं । अमै गिद्धि गैनं नचै चारि जंगं ॥
सुरं सुंदरी नंदरी चट्टि थोमं । छबी छब्बि छायं वरं वार सोमं ॥
छं० ॥ ६७ ॥

उडै रत्त गुल्लाल फूले सु फागं । पलं पग्ग कूचं समं माल लागं ॥
उठे गाइनं नंचि तोरंत तानं । लगे पग्ग पत्तं सु पेरंत मानं ॥ छं० ॥ ६८ ॥

(१) मो.-रूनं ।

(३) मो.-हिन्दू समीर ।

(२) ए. कृ. को.-केरं ।

(४) ए. कृ. को.-कागं ।

कटै अइ सीस बहै रतजान । रत पट्ट बध्यौ मनो रिम्झि भोन ॥
 सुर सठि नह चवै मुष्य गानं । फिरै जुइ जोध बहै मोह वानं ॥
 छ० ॥ ९९ ॥

बढे मास प्रासाद भूत अस्तर । रत पानि डार तकै सूर नूर ॥
 सरै रत्त रूप कच कुच वास । विधि छित्ति राजी रस रग रास ॥
 छ० ॥ १०० ॥

नचै प्रेत पान विना सीस केल । मनो अग्य फाग जगे नृत्य खेल ॥
 पग घटि नाना कटे रुड सेप । इम रुड सठ्ठी निने नारि देप ॥
 छ० ॥ १०१ ॥

बकै मत्त हालाहल पग पडे । जिसे राम रन मझम रावन्न महे ॥
 नव नारिका वाटिका वीर तुहै । धन घाइ प्रध्याइ जुग जाग छुहै ॥
 छ० ॥ १०२ ॥

युद्ध रूपी समुद्र मथन को उक्ति वर्णन ।

कवित्त ॥ नव बहिय नाटिका । पग कट्टी असु हकिय ॥
 हिंदु मेच्छ मिलि घेत । अण्य अण्यन चडि ककिय ॥
 रा चावँड रा जैतसौ । राइ पञ्जून 'कानकह ॥
 मौर पान भर पच । पग बहूए तननकह ॥
 वपु वेद चन्द वानी विमल । विदुरि पग पल घेत बडि ॥
 केवल सु कट्टि 'सुरतान दल । लिय रतन मथि देव दधि ॥
 छ० ॥ १०३ ॥

कुडलिया ॥ मथि कळौ सुरतान दल । दधि केवल मन वडि ॥
 मौर पान मारुफ दल । वीर विमानन चडि ॥
 वीर विमानन चडि । दिष्ट बहूी वारह परि ॥
 भर चदेन विरम । घेत मोरी सुमोह भर ॥
 गय नगच द अमृत भरिग । कुसुम गुच्छ कविच द पथि ॥
 विमान पथ्य रवि कुत रथ । पग नेत कडि केल मथि ॥
 छ० ॥ १०४ ॥

इस युद्ध में जो जो वीर सरदार मारे गए उनके नाम
और उनका पराक्रम वर्णन ।

मोतीदाम ॥ मथ्यो सुस्तानय सेन पयार । लई जस कौरति चंद सुचार ॥
परे रन मरगह चंदेल सुचाइ । परे बहु धान सुचाइ अधाइ ॥
छं० ॥ १०५ ॥

पय्यौ धर बाहर राइति साल । धरद्वर पगन तुडिय ताल ॥
बरे कर अछर सुच्छर माल । धकाइका काइर छति विसाल ॥
छं० ॥ १०६ ॥

रगुकि गगुकि तुंडन अछ कामछ । मनें हरि चक्रन केतन वछ ॥
पय्यौ धन धाव सु वीरमदेव । हयगाय विद्विय छत्र अनेव ॥
छं० ॥ १०७ ॥

बिनों सिर नंचत भीर कामंध । हये हय नाग नरभर संध ॥
लथौ धर सीस सुभ्यौ असि साइ । हनें लगि पंचय पंचय धाइ ॥
छं० ॥ १०८ ॥

हए लगि पंचल पिमान धाइ ।
पय्यौ पीरोज सु रावन नंद । करे नय कोतिग खरन चंद ॥
छं० ॥ १०९ ॥

चले दल चंचल दो सुरतानें । लगे करे देषि चंदेल परानें ॥
परे मफारह सुमंच विभीर । लगे ग्रहलुटि कषी कर कौर ॥
छं० ॥ ११० ॥

गिरे सु पिरोज तिलत्तिल गात । विय छवि छंछ बढ़ी हविपात ॥
रजे रति आगम राव वसंत । नगमानि जंग परे बर संत ॥
छं० ॥ १११ ॥

(१) मो.-राय विसाल ।

(२) मो.-घाय ।

(४) ए. कृ. को.-“पर्यौ पुं पीरोज”

(६) ए. कृ. को.-विभीर ।

(३) ए. कृ. को.-हनें, हने ।

(५) ए. कृ. को.-जय ।

(७) मो.-रते ।

गह्वी तरवार विपानि सु आरि । नवतिय वाइस अत उत्तारि ॥
 पय्यौ सम बाज सु द्वाजमपान । रचे गज इद्र सु 'ब्रह्म धियान ॥
 छ० ॥ ११२ ॥

कय्यौ मन खेर तिलतिल पग । उडे रिन 'पतरि तप्यत अंग ॥
 चढे सारूप सु गैवरे रूप । छयौ समसीस धरदर भूप ॥ छ० ॥ ११३ ॥
 भिरे भर हिदुअ मीर अथाइ । गिरे दस पंच सहस्रह छाइ ॥
 छ० ॥ ११४ ॥

युध होते होते रात्रि हो गई ।

दूहा ॥ गिरे मेच्छ हिदू सुभर । हय गय धाइ अथाइ ॥
 'सुड रुड मुडन भरत । रत्त भाकि भुकि ताइ ॥ छ० ॥ ११५ ॥
 उपरोक्त वीरो के मारे जाने पर पहाड राय तोमर का
 हरावल मे होकर स्वय सेनापति होना ।

भिरि तूअर लिय वग भरि । हय करि नीरे प्रवाह ॥
 सधन धाइ समुप 'समर । लगे मेच्छ पति थाइ ॥ छ० ॥ ११६ ॥
 पहाडराय तोमर का बल और पराक्रम वर्णन ।

धाइ धाइ तन छाइ छिति । रत्त छिछ उछरत ॥
 भर तौवर हर जिम तमकि । लगि 'जमन गज अंत ॥ छ० ॥ ११७ ॥

कवित्त ॥ भर तौअर अभि रत्त । धरत कर कुत जत अरि ॥
 गजन बाज धर डारि । धरनि बर रत्त जुथ्य परि ॥
 भग्नि मीर काइर कनक । हिय पत 'मुच्छि 'द्रद ॥
 भग्नि सेन सुरतान । दिष्य भर सुभर पानि कढ ॥
 उभमारि सिंगि कुभन छरिय । भरिय ओन मद गज ढरिय ॥
 हर हरपि हरपि जुगिनि सफल । जै जै जै सुरउच्चरिय ॥ छ० ॥ ११८ ॥

- (१) मो ब्रह्म सुगान । (२) मो पातरि ।
 (३) ए कृ के मुड । (४) ए-ससन, कृ को सन । (५) मो जमुन ।
 (६) ए कृ को-मुटि० । (७) मो द्रग ।

दुतिया का चन्द्रगा अस्त होने पर युद्ध का अवसान होना ।

दूहा ॥ प्रदिपद परिपातह पहर । समर स्तर चहुआन ॥

दिन दुतिया दल दुअ उरगि । ससि जिम सद्धि पिसान ॥

छं० ॥ ११६ ॥

तृतिया को दोनों सेनाओं में शान्ति रही और चतुर्थी
को पुनः युद्धारंभ हुआ ।

कवित्त ॥ दिन चतिया वर तंग । शुकु झारन शुकु शुकुकिन ॥

हिंदु मेच्छ हय हकि । धक बजिय भर इकन ॥

काटि मंडल घटि घुमि । गुमि अंगरिन अकालहि ॥

भूत बीर बेताल । मंस तुहत अम चालहि ॥

दसकांध कोपि रघुपति रहसि । विहसि चंद वद्धिय वदन ॥

चतुरश्च जुद्ध जंगिय जगी । रंगि कांका डक्किन रदन ॥ छं० ॥ १२० ॥

चतुर्थी के युद्ध में वीरों का उत्साह क्रोध उत्कर्ष वर्णन
और युद्ध का जलमय वीभत्स दृश्य वर्णन ।

दंडक ॥ चवथि जुद्ध उदेत आरनि । सुभर भीर समुष्य धारनि ॥

कोपियं चहुआन भरहर । धाड़ कुंजर ढाहि धरहर ॥ छं० ॥ १२१ ॥

ओन द्रोण प्रवाह थरहर । अंत अंतन अंत गहर हर ॥

तार तान विताल करि करि । तेग पेंचत पाड़ परि परि ॥

छं० ॥ १२२ ॥

धुगि शुकुगि निसान बजिय । अगम मेघ असाढ़ गजिय ॥

धुनि सु असि असमान रजिय । दिष्य देव विमान छजिय ॥

छं० ॥ १२३ ॥

कांपि काथर लज्जि लज्जिय । विकल मुष ह्वै निकलि भजिय ॥

समुष तोवर साह सजिय । विचल अरि कर तेग तजिय ॥

छं० ॥ १२४ ॥

(१) मो.-तार वितान विताल कर कर ।

(३) ए. कृ.को.-निकारि ।

(२) ए. कृ. को.-विमल ।

(४) ए. विमल ।

बीर बहुरि विशेष वानय । छुट्टि छाथ अकास भानय ॥

रेन स्तूर दिसान थानय । सोक कोक 'अलोक आनय ॥ छ० ॥ १२५ ॥

भूमकि सुर मुष सख लगिय । दमकि दिसि दिसि पग्न नगिय ॥

रत्त पत्त प्रवाह अरि भरि । ईस सीस 'सजत गुरि गुरि ॥ छ० ॥ १२६ ॥

मच्छ मच्छन काच्छ काच्छिय । दलन दोन कलोन अच्छिय ॥

अत 'दतिय दत पाइन । गिद्ध जुग लै उडौ चाइन ॥ छ० ॥ १२७ ॥

नयत पित्त मुहत्त फिरि फिरि । मषि डोरि पसारि कर धरि ॥

रुहिर सर सम बहत धार स । भँवर पपिन काक पारस ॥

छ० ॥ १२८ ॥

मौका पाकर पहाड राय का शहाबुद्दीन के हाथी के पर तलवार
का वार करना और हाथी का भहरा कर गिरना ।

इनूफाल ॥ रगिय रदनु जुगिन बीर । है गै पारि असि 'वर मीर ॥

तोवर राइ दिख्यौ साहि । नय्यौ वाज सनमुष आइ ॥ छ० ॥ १२९ ॥

डारिय तेग सिर करि पीज । * गिर पर अनु कि करकिय बीज ॥

करि कर वारि गज धर ढाहि । 'गैवर गिरत निकरि साहि ॥

छ० ॥ १३० ॥

तोंवर दिप्यि राइ पछार । गैवर दिप्यि है क'ध डारि ॥

भावरौ भगि जव्व मेछान । जै जै जै जपिय चहुआन ॥ छ० ॥ १३१ ॥

मुसलमान सेना का धवरा कर भाग उठना ।

इह । ॥ भगि सेन सुरतान सब । रव लग्यौ मुष तक्कि ॥

गच्चौ साहि तोंवर 'पुरस । जानि राइ ससि वक्क ॥ छ० ॥ १३२ ॥

(१) ए कृ का असोक जानय ।

(२) मो जति ।

* मो गिर पर जानु करकिय तीन पाठ है और ए कृ को प्रतियों में "गिरि पर किंकर कीय बीज" पाठ है किन्तु इन दोनों पिछे में छन्दोभंग होता है । (३) ए कृ को -नातिय ।

(४) मो -चर ।

(५) मो -गिर चत गैर निकर साह ।

(६) मो पुरिस ।

अपनी सेना भाग उठने पर शहाबुद्दीन का पकित होकर
रह जाना और पहाड़ राय का उसका हाथ जा पकड़ना
और लाकर उरो पृथ्वीराज के पारा हाजिर करना ।

कवित्त ॥ जुग्गिनि गन गर सिंधु । करत उच्चार सार मुष ॥
अर्छि अर्छरि वर इच्छ । विसन अक पानि नैन सिष ॥
बज्जि ताल बेताल । रज्जि वर 'तुंड चंड संग ॥
ओन छोनि छय छँछ । गुंज गन देन रति अंग ॥
'मुरि मेच्छ धाड़ घट सधन परि । हस्थ धालि सुरतान लिय ॥
जितो जु आनि सोमेस सुअ । अमै सुमै अंगन धटिय ॥छं०॥१३३॥

सुलतान सहित पृथ्वीराज का दिल्ली को लौटना और
दंड लेकर उसे छोड़ देना ।

गहि गोरी सुरतान । अप्प ठिखी सँपतौ ॥
माह सुकल पंचमी । बार अगु वर दिन वित्तौ ॥
किय सु दंड पतिसाह । सहस सतह सुभ हैवर ॥
दुरद षट् प्रगान । वहै षट रित्त मह गहर ॥
कोटेक द्रव्य न्यप हेम लिय । धालि सुधासन 'पठय दिय ॥
कलि काज कित्ति बेली अमर । सुभत सीस चहु आन किय ॥छं०॥१३४॥

इति श्री कविपद विरचिते प्रथिराज रासके तौवर पहाड़
राइ पातिराह ग्रहन् नाम रौंतीसगो प्रस्ताव रांपूर्णम् ॥३७॥



अथ वरुण कथा लिप्यते ।

(अडतीसवां समय ।)

“सोमेश्वर” सासारिक सम्पूर्ण सुखों का आनन्द लेते
हुए स्वतंत्र राज्य करते थे ।

दूहा ॥ सुष लुट्टहि लुट्टहि मयन । अरि धर लुट्टै धाद्र ॥
अग नवनि करि उद्धरै । है पुर पगगह चाइ ॥ छ० ॥ १ ॥

चन्द्र ग्रहण पर सोमेश्वर जी का समाज सहित यमुना जी
पर ग्रहण स्नान करने जाना ।

सोम 'ग्रहण सुनि सोमन्वय । कालद्रौ मन आनि ॥
'है गै जन सब सग लै । तहा बोले विप्र ठानि ॥ छ० ॥ २ ॥
सोमेश्वर जीके साथ मे जाने वाले योद्धाओं के
नाम और पराक्रम वर्णन ।

मोती दाम ॥ जुषोडस दान विचारिय राज । रची विधि ज्यौ 'बध 'देवति साज ॥
तहा ढिगोसिध पँवार पवित्त । 'सुधर्मय धम्म तहा विपचित्त ॥
छ० ॥ ३ ॥

जुगौर गुरवर सिंह सुसग । जिनै करि जज्जर देहिय जग ॥
तहा ढिग सजम राव नरिदु । धरे जनु इद्र विराजत 'चन्द्र ॥
छ० ॥ ४ ॥

सुवाहन बीर बली कुनि तथ्य । तिने कलि धम्मन दृजि यकथ्य ॥
तहा गुर राज 'विराजत ताम । तिदिष्ट बचिष्ट मनो ढिग राम ॥
छ० ॥ ५ ॥

(१) ए रु को ग्रहणी ।

(२) ए कृ को होम जग्य ।

(३) ए कृ को शुध ।

(४) मो-देवनी ।

(५) ए रु को सुधर्मय धूम नहीं विपचित्त । (६) ए कृ को इन्द्र, इन्द्र । (७) गो विरामत ।

सु और अनेक महाभर मंग । अमंत क्रमंत सयन्तिय संभ ॥ छं०

उक्त समय पर पूर्णभा की शोभा वर्णन ।

साठक । मुँदी मुख कमोद हंसति कला, चक्रीय चक्रचितं ।

चंदं किरन कदंत पौडन पिमं, भानं कला छीनयं ॥

वानं मन्त्रय मत्त रत्त जुगयं, भोग्यं च भोगं भवं ।

निद्रा वस्य जगत भतां जनयं, वा जग्य कामी नरं ॥ छं० ॥ ७ ॥

चौटक ॥ * चक्री चक्र चक्रिय चित् मयं । विछुरे विय दिधिय संभ भयं ।

जु पयोधिम तत्त मभं सुरवी । सु मनो दिसि दिसि सिंदूर जबी ॥

छं० ॥ ८ ॥

धन सोर द्रुमं करि पंष धनं । सु मनो लागि पारसिय पढ़नं ॥

अलि वासिय पंकज कोक नदं । कुलटा बसि छैल रसं विमिदं ॥

छं० ॥ ९ ॥

विरही जन दिष्टि सु घाम हुरी । उलटै बसि डोरि ज्यौं चंग उरि

बजी बर देवल मल्लर गुर । तिसं पर सिंगिय सिद्धन पूर ॥ छं० ॥ १० ॥

कापी मुग धापिय केलि कठौर । मुदै हसि प्रौढत सुंदर चौर ॥

छवि दीपक द्वारन जोति जगै । जनु दंपति नैन सुमे उमगै ॥

छं० ॥ ११ ॥

जु लगीं धुअ धुमर रैनन मंडि । चले क्रम चोर मगं पियं छंदि ॥

जुरसे रस चामर सीस इसे । दिषि दीपक जोति पतंग जिसे ॥

छं० ॥ १२ ॥

विरहा उर शारिय केलि करी । इन दाहिय देहर प्रीति धरी ॥

विरही चिय मुख सु दुष्य सदं । कुम्हिले जनु पंकज कोक नदं ॥

छं० ॥ १३ ॥

(१) ए. कृ. को-सपन्निय ।

(२) मो. चक्रीचित ।

(३) मो.-निद्रया

(४) ए. कृ. को. जगत । * ए. कृ. को.-“कवि चक्र सु चक्रिय” ।

जु ए. कृ. को.-जु पयोध पतत मभं सुरवी ।

(५) मो. वची ।

(६) मो.-किपि ।

(७) ए. कृ. को.-पिम ।

जु ए. कृ. को.-“जुरसे रस चामर सीदक से” ।

(८) ए. कृ. को.-मुदं ।

जु सँजोगय भोग सुप सरसे । सु कमोदिन चद फुलै दरसे ॥
जु ग्रिह ग्रह जोवत दीप जुन । जु वए मनु काम के बीज भुव ॥
छ० ॥ १४ ॥

अर्द्ध रात्रि के समय ग्रहण का लग्न आने पर सब का
यमुना के किनारे पर जाना ।

दूहा ॥ साँस समय ससि उगि नभ । गइ जामिनि जुग जाम ॥
ग्रहन समय दिपि होतही । जमुन पधारे 'ताम ॥ छ० ॥ १५ ॥

वरुण के वीरों का जाग्रत होना ।

स्नान जकौ नौ न्यपति । जल रक्ष । जगि वीर ॥
'हकारे समुप उठे । मगन जुध 'सरौर ॥ छ० ॥ १६ ॥

इधर सामत लोग अस्त्र रहित केवल दूव और
अक्षत आदि लिए हुए खड़े थे ।

ए विन वस्त्र रुसस्त्र विन । हस्त दरभ कुस कोस ॥
तिल तदुल जव पुहय कर । वरन दूत उठि रोस ॥ छ० ॥ १७ ॥

वीरो का गहरे जल में शब्द करना ।

अति प्रचड गहराद गल । गल गज्जे बल वीर ॥
स्याम वरन भय भीत दिपि । धीरन छुट्टै धीर ॥ छ० ॥ १८ ॥

जलवीरो के सहज भयानक और विकराल स्वरूप का वर्णन ।

कवित ॥ अति उतग वज्र ग । उदित उर जोति रत्न द्रिग ॥
अशन रुधिर नय अधर । वस्त्र नन अस्त्र सस्त्र डिग ॥
दसन ऊच सिर केस । वेस भय भगिगय पास ॥
अति उनाह जम दाह । कौन मडै जुध आस ॥
कल कलह वचन किलकत सुर । सुर बाजत जनु धुनि धमनि ॥

(१) मो । बाम ।

(२) ए छ को-हकारे ।

(३) ए छ को-समीर ।

हम करत केलि जल संचरत । तुम 'संभुह कोइ' मत अवनि ॥
छं० ॥ १८ ॥

सांभितो का आव पर पला जाना ।

दूहा ॥ सुभट दिष्य करि क्रोध उर । मये भयानक स्वर ॥
सखे हथ्य दिष्ये नहीं । *आव ग्रहे जलपूर ॥ छं० ॥ २० ॥

जल वीरों के उछारने से वेग से जो जल आव पर पड़ती
था उसका दृश्य वर्णन ।

कावित्त ॥ परत आव जल पूर । स्मरत जनु रूप्य फल सुवन ॥
वजत धात आघात । फुरत अवसान वीर तन ॥
रावतन अवसान । देव दुंदुभि अधिकारी ॥
जोग ग्यान नय मान । वनिक बुधि मोहि सुनारी ॥
राजेंद्र दान सिद्धह तपह । भुगति जुगति विधि 'कोविदह' ॥
इतनी बत अवसान मिलि । मनहु मंच जनु गुन भिदह ॥
छं० ॥ २१ ॥

जल के बीच में जल वीरों की आरुरी माया का वर्णन ।

आवरि कर वर कारह । भिरत भारथ पचारिय ॥
अंग अंग संग्रहहिं । इक इकत अधिकारिय ॥
अधम जुझ जुरि करहिं । करहिं वल कापट अनंगिय ॥
काबहु धूम वे कारहि । कारहि कव शर भरनिय ॥
काबहुं बेध 'उठे' सुजल । काबहिं करन आवह वरष ॥
उचरहिं बैन बहु वीर वर । बिरचि काबहु बुझै हरष ॥ छं० ॥ २२ ॥

(१) ए. क. को-सुभूढ ।

(२) ए. क. को.-मति ।

*आव यह शुद्ध संस्कृत शब्द है यथा-शब्दकल्पद्रुम "पृथ्वी तावत् त्रिकोण विपिन नद न
आवरुद्ध तदद्वयम्" । इसका तात्पर्य डेलटा से है ।

(३) मो.-ज्यों ।

(४) मो.-कोविदह ।

(५) ए. क. को.- परचारिय

(६) मो. बुढ़े ।

जलवीरों के बहुत उपद्रव करने पर भी सोमेश्वर
के सामतो का भयभीत न होना ।

कबहु सख सर परहि । कबहु डक्के डकारहि ॥
तौन लोक तन हकाहि । बकाहि वीरन वकारहि ॥
अकल कलह बल करहि । समहि सनाम सुधारहि ॥
अजुत जग उद्धरहि । कलह बल धार उधारहि ॥
सामत भूमि भजहि मिरहि । गिरहि परहि उठुहि लरहि ॥
सोमेस छर सक न गनहि । विरचि गाल गल बल करहि ॥
छ० ॥ २३ ॥

वीरों को स्वय अपना पराक्रम वर्णन करके सामतो
का भय दिखाना ।

हम सु भयकर बल अभूत । सुभटन हकारहि ॥
हम सु प्रवत प्रमान । कनिष्ठ अगुरि उप्पारहि ॥
हम समुद्र प्रमान । डोहि जल पडुमि प्रवाहहि ॥
देपौ सुनौ न कोइ । सोइ ब्रह्म मडल गावहि ॥
किन काम धाम तजि वाम सुप । आइ सपत्ते जमुनि निसि ॥
चर बेर निसाचर हम फिरहि । नीर रमे तिल खेइ धसि ॥
छ० ॥ २४ ॥

वीरों का राजा सहित सामतो पर आसुरी शस्त्र प्रहार करना ।

दूहा ॥ इह काहि के लगगे लरन । गैन गुज जल फार ॥
मानहु भारत अत कौ । भार उतारन छार ॥ छ० ॥ २५ ॥
सामतों का वीरों से यथाशक्ति युद्ध करना ।

कवित्त ॥ काल सक अट्टरहि । तार बज्जत प्रहार सुर ॥
जम्मुन जल अदोल । वीर बोखत वीर गुर ॥

- (१) मो तरेहि । * कृ को कबाहि वीरन वकारहि । (२) मो गिनहि ।
(३) ए कृ को हकारिय । (४) ए कृ को चढ प्रवत समान ।
(५) मो प्रगनहि । को प्रगहिहि । (६) न होइ । (७) मो एह कोहि । (८) मो मजन ।

कलह केलि सम केलि । ठेलि कट्टै चावहिसि ॥

एक आव वरपंत । एक फारंत नथ कसि ॥

परि मुच्छि मध्य विक्रम बलिय । जुद्ध निसाचर विषम ^१अपि ॥

वर बीर धीर धम्मे लरन । फहु पट्टत नप सोम ^२लपि ॥ छं० ॥ २६ ॥

इसी प्रकार अरुणोदय की लालिगा प्रगट होते देख वीरो का
बल कम होना और सागतों का जोर बढ़ना ।

पञ्चरी ॥ तिम ^३तिम सु बीर तामसत थोर । दिन उगन ^४बढ़ै रजपूत जोर ।
बढ़ै ^५जु मल्ल मुठ्ठी प्रहार । फट्टै कि भूम पट तार तार ॥ छं० ॥ २७ ॥
उच्छरत जमुन जल इन प्रकार । क्रीड़ंत जानि मद गज फुंकार ।
तरफरहि मध्य जल इन प्रकार । कपि कोप नंघि गिरि समुदसारा ॥
छं० ॥ २८ ॥

वर भरहिं कारहिं लतननि हाइ । * वज्र ^६जनु विषम धाई ।
रन रह बहरिा उचार बैन । इतनै भयो ^७परताप गैन ॥ छं० ॥ २९ ॥
निसिचरन दिधि जब समय स्हर । शूलमलत किरन निमल कहर ।
तमचरह पूर प्रगटी किरन । प्रगटों सु दिसा विदिसान अन्न ॥
छं० ॥ ३० ॥

तब लगि पंच भर परिय मुच्छ । निसचर उतंग करि जुद्ध गच्छ ॥
छं० ॥ ३१ ॥

प्रातःकाल के बाल सूर्य की प्रतिभा वर्णन ।

दूहा ॥ ज्यों सैसव में जुवन ^८काछु । तुच्छ तुच्छ दरसाइ ॥
यों निसि मध्यह अरुन कर । उदित दिसा ^९लसाइ ॥ छं० ॥ ३२ ॥
*रति रही वर विलगि वर । ज्यों ससि कोरह राइ ॥
हरि डट्टै बाराह धर । कै हरि चंपत राइ ॥ छं० ॥ ३३ ॥

(१) ए. कृ. को.-पिषि ।

(२) ए. कृ. को.-लिपि ।

(३) ए. कृ. को.-तिमति ।

(४) मो.-वछे ।

(५) मो.-मुगल ।

* मो.-वज्र लेत हथ्य जम्बू विघाइ । (६) ए. कृ. को.-परभात ।

(७) ए. कृ. को.-कव ।

(८) मो.-ललसाइ ।

* मो.-“यो रति ही रविलग वर”

सुर्योदय होते ही वीरों का अन्तर्ध्यान होना और सोमेश्वर
सहित सब सामंतों का मुर्छित होना ।

अरिस्त ॥ गच्छिष्य सुद्ध निसाचर वीर । परै घर मुर्छि सु पच सरौर ॥
किए तन पान प्रमानन जान । सु देवहि दुदुभि जानिय गान ॥
छ० ॥ ३४ ॥

सब मुर्छित पड़े हुए थे उसी समय पृथ्वीराज
का वहा पर आना ।

दूहा ॥ मृतक समानति मृतक परि । रहिग जीव छिपि छान ॥
तब लागि तहँ प्रथिराज रन । आनि सपत्ते 'पान ॥ छ० ॥ ३५ ॥
निज पिता एव सब सामंतों की ऐसी दशा देख कर पृथ्वीराज के
हृदय में दुःख होना ।

साठक ॥ 'सोहिष्य न्यप राज तात निजय । बौभच्छ इच्छा क्रुध ॥
काल केलिय छिछ रुद्ध तनय, रुद्र सु सरत्तय ॥
माते तामस रस्त कस्त असुर, 'हालाहल नैनय ॥
राज जा प्रथिराज चिति तनय, पुच्छै गुर 'ततगुर ॥ छ० ॥ ३६ ॥
यमुना के सम्मुख हाथ बाध कर खड़े हो पृथ्वीराज
का स्तुति करना ।

दूहा ॥ जमुन सनमुप जोर कर । अस्तुति मडिय मुप्य ॥
तू माता दुष भजनौ । रजन सेवक मुप्य ॥ छ० ॥ ३७ ॥
यमुना जी की स्तुति ।

भुजगी ॥ नमो मात मातग 'हरज्ज जाया । नमो देवि भग्नी जम पै 'कहाया ॥
जग अधकूप सु दीपक गनी । नदी कौन 'पुज्जै सु तेरी करनी ॥
छ० ॥ ३८ ॥

(१) ए कृ को प्रान । (२) ए कृ को सो दिष्य ।

(३) ए कृ को हाली । (४) ए कृ को सद्गुर, तदुर । (५) मो सूरजि ।

(६) ए कृ को कहाये । (७) मो-पूजै ।

महा अम्भ धारन् तारन् देही । निकसी सलीलं सु सेलं सभेही ।
बलीभद्र रषी हरषी हलंदी । तुअं नाम पासं सुभै सो कलंदी ।
छं० ॥ ३० ॥

चयं ताप भंजै जगत्तं जननी । तुयं सेपियं सेसु नमं सरनी ।
तुही तारनी जुग हारनि पापं । तुहीं मात 'करनी अयं कष्ट कायं ।
छं० ॥ ४० ॥

तुही याम स्वरं जलं मुक्ति धारा । तुही नम्भ मातंग नर लोग सारा ।
तुहीं साधवी मात नय्यं समानी । तुहो तारनं लोक त्रैलोक्यरानी ।
छं० ॥ ४१ ॥

तुही बाल बेसं तुही दड काली । तुही तापसं ताप आयं सुराली ।
तुअं तट्टु सेवै जिते 'तिद्ध सिद्धं । तिते मुतिं मुक्ति मनं वंछ दिहा ।
छं० ॥ ४२ ॥

तुही 'मदनं मय्यनं तेज धारा । तुहीं देवता देव चय लोक हारा ।
तुही जोगिनी जोग जोगं कपालं । तुही कल्प 'में कंप राघंत आरा ।
छं० ॥ ४३ ॥

तुही विस्र रुपं तुहि विस्र माया । तुही तारनं जन्म संसार आया ।
कियौ अश्वमेधं पुनर्जन्म आवै । नही जन्म मातंग तो ध्यान पावै ।
छं० ॥ ४४ ॥

तुअं ध्यान मातंग अस्तान पूरं । करै अर्घ 'आचार उगांत स्वर ।
तनं तम्भनं तं जयं निर्विकारी । इसी जमुन 'अप्यं सदिष्पी ।
छं० ॥ ४५ ॥

स्तुति के अन्त में पृथ्वीराज का यमुना जी से वर मांगना ।

कवित्त ॥ गंगा मूरति विसन । ब्रह्म मूरति सरसत्तिय ॥
जमुना मूरति ईस । दिथ्य दैवन मुनि थपिय ॥

(१) ए. कृ. को.-कर वत, कर वत्त ।

(२) ए. कृ. को.-“सिद्धं सिद्धंति” ।

(४) ए. कृ. को. में कप्प ।

(६) ए. कृ. को.-अण्वं ।

(३) मो.-महंत ।

(५) ए.-आवार ।

मिली जाइ 'भूल मग । गग सागर अवधारिध ॥
 ता सोनेसरे रोग । दोष दोषह तन टारिध ॥
 अब सुभट सहित देवी सु तन । करि निरमल तन मोह मय ॥
 इह कहत जगि नृप मूर्छा । प्रति बुझौ प्रथिराज तय ॥ छ० ॥ ४६ ॥
 सोमेस की मूर्छा भग होने पर पृथ्वीराज का पुनः
 ब्रह्मज्ञान की युक्तिमय स्तुति करना ।

साटक ॥ 'त्व मे देह सु भाजनेव 'सरिसा जीव धन प्रनाय ॥
 दाइ अग्नि सु क्रम दास्य धरै आवस्य 'बद कर ॥
 स रुद्र जम जोग तिष्ठत तनै अन्न पल मध्यय ॥
 जीवी वारि तरंग चचल धिय विस्मृत 'अक्ष तर ॥ छ० ॥ ४७ ॥
 आसा अस्थ सरोवरीय सलिल पपी वर 'सुखय ॥
 सुष्य दुष्यय मध्य वृच्छ तवय सापास्य वै गुनय ॥
 मोह पतय रत्त वृन्नव क्रमे फूल फल धारन ॥
 एकअय सँतोष दोष तिगुना अस्थाय वा निर्गुन ॥ छ० ॥ ४८ ॥
 यों भूत आभूत बर्ष सु सत आयुर्वल अदभुत ॥
 तेया अर्द्ध निसा गत रवि उमै बाल्यैच वृद्धैगता ॥
 प्राप्त जीवन रत्त मत्तय रस व्याध क्रुध बधनै ॥
 ना भूत ससार तारन गुने 'सभार निस्तारय ॥ छ० ॥ ४९ ॥

स प्रकार मूर्छा जगने पर पृथ्वीराज का गन्धर्व यत्र का जप करना
 जिससे मूर्छित लोगों का शिथिल शरीर चैतन्य होना ।

दोहा ॥ ग्यान ध्यान अस्तुति करिय । भयसु प्रसन्नय देव ॥
 राज सहित सामत सब । जगे मूर्छा एव ॥ छ० ॥ ५० ॥
 गध्रव मच्च सुद्रष्ट 'जिय । आराध्यौ प्रथिराज ॥
 'वदन दोष तन ताप गय । उठि निद्रा जनु भाज ॥ छ० ॥ ५१ ॥

- (१) ए कृ को जल गग । (२) ए कृ को त्वमे । (३) ए सस्ती ।
 (४) ए कृ को सबद । (५) ए कृ को -नर । (६) मो सुठय ।
 (७) मो ससार । (८) ए कृ को हुआ । (९) ए कृ को वरन ।

पृथ्वीराज का रोगेश्वर को शिर नवाना ।

पद्धरी ॥ प्रथिराज राज सिर नामि ओइ । जानंत भरम तुम सकल राइ
सरिता रु ताल वापी अ-हाइ । निसि समय बरुन तन धरिय ।

छं० ॥ ५२ ॥

सरवरिय केलि सोइत ^१आइ । पोताल ईस क्रीलै सुभाइ ॥
सुभिरै न नाम सन सुइ ^२ध्याइ । उपजै सु विधन कै धर्म जाइ

छं० ॥ ५३ ॥

भौसेन तब तहँ एका ठाइ । करि वेद पठन तहँ विप्र गाइ ॥
करि होम जाप किसह पराइ । भए सुइ पाय गए तन ^३पुलाय ।

छं० ॥ ५४ ॥

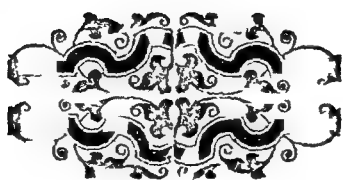
रोगेश्वर को लिवा कर पृथ्वीराज का राजमहल में आना ।

इहा ॥ बरुन दोष भैयौ सुप्रथु । ग्रह संपते आय ॥

देवि पराक्रम सोम नृप । फूल्यौ अंग न माय ॥ छं० ॥ ५५ ॥

इति श्री कवि वंद विरचिते प्रथिराज रारावै वरूण कथा नाम

अड़तीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ३८ ॥



(१) ए. कृ. को.-पाइ ।

(२) ए.-पाइ, कृ. को.- धाइ ।

(३) ए. कृ. को.-फुलाइ ।

अथ सोमवध सन्धौ लिप्यते ।

(उन्तालीसवां समय ।)

भीमदेव की इच्छा ।

क्रावित्त ॥ गुज्जर धर चालुक । भीम जिम भीम महावल ॥
कोइ न चपै सीम । कित्ति वर रीति अचगल ॥
सोमेसर समरिय । तास मन अतर सलै ॥
प्रथीराज ढिलीस । रीस तस 'अतर वल्लै ॥
मिलि मत तत्त बुझ्झवि मरम । करिय सेन चतुरंग सज ॥
धर लेउ आज दुज्जन दवटि । एकछच मडोति रज ॥ छ० ॥ १ ॥

भीमदेव का दिल्लो पर आक्रमण करने की सलाह करना ।

पहरौ ॥ समरिय राज गुज्जर नरेस । रतौ जु साम दानह 'असेस ॥
'कालिद कूल जगलिय जास । प्रथिराज अकस रब्बै इलास ॥ छ० ॥ २ ॥
चपौ जु अण्ण उर रपै डस । मन मध्य भीम इम भूमि गस ॥
हारे जुआरि कलमलिय 'पेल । चालुक चित्त इम 'मिलन सेल ॥
छ० ॥ ३ ॥

कुलटा छथल जिम मिलन हेत । इम पगन घेत चहुआन चेत ॥
जिम चद सूर मनि राह केत । कलमलिय चलिय उर भीम तेत ॥
छ० ॥ ४ ॥

रानग देव झाला नरिद । बुल्यौ सु राइ चालुक इद ॥
'तमि कछौ ताम हौ इतत रोस । कलहलत अग्नि ज्यौं जग्नि कोस ॥
छ० ॥ ५ ॥

बुझाइ सब मर इक ठौर । चढिवाइ बेगि वर करौ दौरि ॥
पेलत नारि नर लेइ गहु । इम लेउ भूमि पल यग वहु ॥ छ० ॥ ६ ॥

- | | | |
|---------------------|----------------------|-------------------|
| (१) मो-अवर । | (२) ए रु को अरेस । | (३) मो-कास्यद । |
| (४) ए रु को-येत । | (५) ए रु को मल्ल । | (६) मो-मत । |

जिम करिव बाल धर मिटत धूरि । तिम इला आउ चहुत्रान धूरि ।
भजंत भौल जिम धर सुहाल । संभरिय भूमि इम करो हाल ।
छं० ॥ ७ ॥

कवित्त ॥ बोलि काण कट्टीं नरिंद । रानिंग राज वर ॥
चौरा सिम जयसिंध । वीर धवलंग देव धर ॥
धौल हरै सुरतान । वीर सारंग मकवानं ॥
जूनागढ़ ततार । सार लग्यौ परवानं ॥
मत मंति सज्जि चालुक भर । पुध वैर साल्यौ हियै ॥
केतीक बत संभरि धरा । रहै रंग चच्चर कियै ॥ छं० ॥ ८ ॥

गाथा ॥ सोझती रन जित्ता । केवा किन्न संभरी राजं ॥
तं केलि कलहंतं । सखै सुल पग मगायं ॥ छं० ॥ ९ ॥

सब सरदारों का कहना कि वैर का बदला अवश्य लेना चाहिए ।

कवित्त ॥ बोलौ राव रानिंग । बोलि चौरासिम मानं ॥
स्यामा स्याम नरिंद । भौर कट्टी रन थानं ॥
अति उदार अति रूप । भूप साई रन रप्यन ॥
चाहुआन वरसिंह । पिक्थौ बड़वानल भय्यक ॥
जै जैत कित्ति संसै न करि । सुवर वैर कट्टौ विषम ॥
भारथ्य कथ्य भावै भवन । सुभर मुत्ति लभ्यै सुषम ॥ छं० ॥ १० ॥

दूहा ॥ सुषम पिंड संग्रहिय वर । जुग जोग नह लभ्य ॥
हिम ग्रीषम पावस सु तप । करै वीर प्रति अभ्य ॥ छं० ॥ ११ ॥

भीमदेव के रौनिक बल की प्रशंसा ।

भुजंगी ॥ करै वीर वीरं सु वीरं प्रकारं । लगे राह चहुआन सो जुद्ध ॥
सु रावत रता अभीरत कोनं । करै धेत भीमंग कौ सोन जोन ॥
छं० ॥ १२ ॥

(१) ए. क. को., "तंकेलि कुलहंता" ।

(३) मो.-पिज्यौ ।

(२) ए. क. को.-मगाई ।

(४) ए. क. को.-नहि ।

करै कोन जमजोति जोत्य^१ प्रकार । गनै कोन बेलूसु गगा प्रकारं ॥
गिनै कोन तारक ते तेज भोरै । लरै कोन चालुक सो जुध सोरै ॥
छ० ॥ १३ ॥

भीमदेव की सेना का इकट्ठा होना ।

गाथा ॥ फट्टै पुहु फुरमान । धाये धराजित जिताइ ॥

इस जुट्टे सब सेन । ज्यो मू नीर वट्टि सरताइ ॥ छ० ॥ १४ ॥

भीमदेव की सेना की सजावट और सैनिक

ओजस्विता का दृश्य ।

विअप्परी ॥ जुट्टे दल पहु पग^२ अपार । हैगै वर भर लम्भि न सार ॥
वनै हय पय पय समान । पह भूमौ जनु पय उडान ॥ छ० ॥ १५ ॥
गज गज्जै गज्यौ जनु नीर । भदव वदल जानि समीर ॥
दिपियै स्तर नूर पह पूर । सध्या सागर^३ नूर कलूर ॥ छ० ॥ १६ ॥
चलै मल्ल मग मल्लहारे । धावै धर पग पाहर कारे ॥
काच्छे काच्छे बधै डेरौ । चदन धेरि पिलै जनु होरौ ॥ छ० ॥ १७ ॥
जिन पग भूमि न ढिलै कोई । विचरै लरै जानि जम दोई ॥
पाइका पग पिनै जनु नट्ट । पडा कट्टि बढे गज दट्ट ॥ छ० ॥ १८ ॥
गोरी बिन तिन लोह न छिज्यै । धार अनी कर वर ठेलिज्यै ॥
चचल अश्वह^४ नयत स्तर । स्तर तेज जिन मुष्य सनूर ॥ छ० ॥ १९ ॥
वकी मोह भयकर नैन । फूलौ बवर लग्गो गैन ॥
रत्ते^५ स्वामि भ्रम रस रग । जोग जुगति मन चहुत जग ॥
छ० ॥ २० ॥

नेह न देह न माया ग्रह । चितत सदा ब्रह्म मन लेह ॥
तेग त्याग मन नड न अग । सुभत सेन मनो सुअ गग ॥ छ० ॥ २१ ॥
गहू परे न्यप गाहत गहू । जिम वाराह मोय रस दहू ॥

(१) मो-नेज ।

(२) ए क को प्रपार ।

(३) ए क को सूर ।

(४) मो गट्ट, कट्ट ।

(५) मो अनुपत ।

(६) मो साम ।

औगुन अंग न स्वामित जंग । ज्यों सह गोन दुहागिल रंग ॥
छं० ॥ २२ ॥

यों आतुर रतो धग मगगं । ज्यों कुलटान छैल मन लगगं ॥
दसहं दिसि दारुन दल बहं । ज्यों धुर बहल भदव चहं ॥ छं० ॥ २३ ॥
सिलह सज्जि बहू बल बंकं । रीछ लंगूर मनो कपि लंकं ॥
दिष्यत सेनह नैन भुलाई । मानहुं साइर पार डुलाई ॥ छं० ॥ २४ ॥

अमरसिंह सेवर परिमानं । भैरुं भट्ट तत वृधि जानं ॥
बंभन लीला लप्पिन मंडे । देव काम सब बंधि रु छंडे ॥ छं० ॥ २५ ॥
साम रूप सेवर परिमानं । दान रूप वर भट्ट सुजानं ॥
भेद रूप दुज राज वकारं । डंड रूप चारन आकारं ॥ छं० ॥ २६ ॥
लीने भीम संग चव मंची । दुष्ट अरिष्ट रमे जिन जंची ॥
सुर्ग मृत्यु पाताल सुसंकं । अस आडंबर मंडत कंकं ॥ छं० ॥ २७ ॥

भोलाराय भीम का साम दाग दंड और भेद स्वरूप अपने
पारों मंत्रियों को बुलाकर उपित परागर्श की आशा देना ।

दूहा ॥ साम दाम अरु भेद करि । निरनै दंड रु सार ॥
चारि दूत चतुरंग मन । वर सिधन आकार ॥ छं० ॥ २८ ॥
ए बुलाई चालुक्क वर । मंची भैरा राज ॥
अमरसिंह सेवर प्रसन । मंच जंच गुन काज ॥ छं० ॥ २९ ॥
इनहिं समीप बुलाई करि । बोलिय भीम नरिंद ॥
ज्यों तुम जंपौ त्यों करौ । तुम छत मो सुख निंद ॥ छं० ॥ ३० ॥
मंत्रियों का कहना कि इस कार्य में विलंब न करना चाहिए ।
जंपि सु मंची मंच तब । सुनि भीमंग सुदेव ॥
धरतौ वर पर अप्पनी । लेत न कौजै छेव ॥ छं० ॥ ३१ ॥

(१) ए. क. को-पाइ ।

(२) ए.-मंत्री ।

(५) मो.-वत ।

(३) मो.-इनह ।

(६) ए. क. को.-न्यंदे ।

(४) ए. क. को. ज्यों ।

(७) ए. क. को.-सेव ।

राज्य प्राप्त करने की लालसा से गत भीषण घटनाओं का
ऐतहासिक उदाहरण ।

साटक ॥ भूमीन धर भ्रम क्रम 'निरत, वध्यो वधे पाडव ॥
भूमी काज दधीच आस भृगया, नित वज कारन ॥
केकाइय भुअ काज रामय वन, दसरथ मगे वर ॥
सा भूमी कित कारनेव सरसा, खेहायय भूमय ॥ छ० ॥ ३२ ॥

पुन मत्रियो का आख्यान कहना ।

कवित ॥ जा जीवन जग पाइ । आइ अवनौ रस रगह ॥
जो जा जीवन वलह । विनोद रपह मन पगह ॥
जा जीवन काजह । कपूर पूरन प्रभु कोकाह ॥
जा जीवन आरभ । किति सा भ्रम सु रोपह ॥
जिहि काज जियन तप जप कारहि । भमर गुफा सांधहि अवस ॥
तिहि जियन 'त्यागि मडय कलह । तौ भूमिय लभै सु 'रस ॥
छ० ॥ ३३ ॥

दूहा ॥ सो जीवन इम पहुनि करि । अछित सती समान ॥
चावहिसि नयै निडर । वौ लभै 'मिम पान ॥ छ० ॥ ३४ ॥

भोलाराय का सेन सज कर तय्यारी करना ।

सुनत मत चलिथ नथति । सज्जि सेन चतुरंग ॥
जनु वदल यह उजर । दिठ न परत 'नभग ॥ छ० ॥ ३५ ॥

सेना के जुडाव का वर्णन

अरिख ॥ हाला हल मिलत सेन । 'ज्वाला मलि 'ज्वालाह क्षतेन ॥
देवत देव बधि चतुरंगी । है हिलन हिदू दल 'नगी ॥ छ० ॥ ३६ ॥

(१) भो सरस ।

(२) भो काज ।

(३) भो सर ।

(४) ए रु को पिम ।

(५) ए रु को भग ।

(६) भो क्षाल ।

(७) भो क्षालाह ।

(८) ए रु को लगी ।

गाथा ॥ सो चतुरंगय सेनं । हय गय सज्जि वीर उर रेवं ॥

अरुनोदय गुन मंतं । जानिज्यै स्वरतं वीर ॥ छं० ॥ ३७ ॥

भीमदेव के रिर पर छत्र की छाया होना ।

उद्यौ छत्र छिति राज सिर । निषत वीर रस पान ॥

यों सब सेना रज्जियें । ज्यौं जोगिंद जुवान ॥ छं० ॥ ३८ ॥

कवि की उक्ति कि मंत्री रादैव भला मंत्र देते हैं परन्तु
वे होनहार को नहीं जानते ।

कहहि मंच मंचिय सुमति । विधि विधि सुविधि न जान ॥

कै भंजै कै रंजई । कै दिवत्त प्रमान ॥ छं० ॥ ३९ ॥

सेना का श्रेणीवद्ध खड़ा होना ।

आनिअ अस्सित साल गुन । विधि चालुक सयन ॥

पुब्व बैर सोगिति कौ । गिरि भंजै रिन तन ॥ छं० ॥ ४० ॥

पंच सहस पंचौ सुकत । पंचौ पंच प्रकत ॥

पंच रषि पंचौ ग्रहै । तौ भारथ्य सु जित ॥ छं० ॥ ४१ ॥

सेना समूह का क्रम वर्णन ।

दूहा ॥ सली मिली काजल वरन । भेक भयानक भंति ॥

तिन अग्गै धर मँडे । तिन अग्गै गज पंति ॥ छं० ॥ ४२ ॥

उक्त सेनासमूह की सजावट के आतंक की पावरा नद
से उपमा वर्णन ।

माधुर्य ॥ गज पंति चस्त्रिय जलद हस्त्रिय गरज नग धन भुस्त्रिय ॥

हल हलन घंटन घोर धुंधर नाग दुभ्रमर डुस्त्रिय ॥

गत लग्गि गिरवर पुरहि तरवर हलहि धरवर धाईही ॥

रत्नकांत दंत कि पंत बग धन धाम कल सति गावही ॥ छं० ॥ ४३ ॥

गज बहत मदहद 'मनहुं धन भद छुटि छिछन उभरै ॥
 यग जोरि मोरि मरोरि मुर जनु दिप्यि सुरपति लुभरै ॥
 बनि पीलवाननि ढाल हालनि वनिय बैरप साजही ॥
 मनुं सिपर गिरि वर काम अगन छत्र चमर कि राजही ॥

छ० ॥ ४४ ॥

अथ धु धन चलत मगान सुनत वज्जन चलही ॥
 वै कोट ओटन अगड मज्जत सिपर गिर रद अलही ॥
 दल मुप्य मडिय मेंघ छडिय मनहु सुरपति वज्जय ॥
 सुर सोम सोमह मभक्त मोमह ग्रह तजि प्रज भज्जय ॥ छ० ॥ ४५ ॥
 परि देस देसन रौरि दौरिय सुनिय सभरि रज्जय ॥
 वर मणि वाजिय सिलह सजिय 'वहै भोरा अज्जय ॥ छ० ॥ ४६ ॥

इसी अवसर मे मुख्य सामंतो सहित पृथ्वीराज का उत्तर
 की तरफ जाना और कैमास के संग कुछ सामंतों
 को पीठि सेना की तरफ आने की आज्ञा देना ।

प्रतिपत्त ॥ उत्तर वै विजयत । रोह रतौ प्रथिराज ॥
 सोमेसर दिल्लीस । संग सामंत सुराज ॥
 पीची राव प्रसंग । जाम जहाँ घट भारिय ॥
 देवराज बगारिय । भान भट्टी पल हारिय ॥
 उद्दिग्ग वाह 'पगार भर । बलिय राव बलिभट्ट सम ॥
 इतने रप्य कैमास सँग । कलह कूच किनौ सुकाम ॥ छ० ॥ ४७ ॥

पृथ्वीराज के चले जाने पर उन सब सामंतों का भी चला
 जाना जिनके भुजबल के आश्रित दिल्ली नगर था ।

दूहा ॥ जिन कठन दिल्ली नथर । ते रप्य प्रथिराज ॥
 रसित स्वामि अभ्यतरह । कलह न 'दृष्टन काज ॥ छ० ॥ ४८ ॥

(१) मो मनल ।

(२) मो-वहो ।

(३) ए कृ को पागार ।

(४) ए कृ को-इउत ।

सुनत पुकारह छोह छकि । सत्तिय सत्त प्रमान ॥

चढ़त सोम चढ़े हयन । बिंढि नछिचन भान ॥ छं० ॥ ४६ ॥

रन बन घन सोमेस सुत । सजि सेन चतुरंग ॥

को विद गुन मन ज्यौं रमत । ज्यौं भर जानत जंग ॥ छं० ॥ ५० ॥

उसी समय पूर्ववैर का बदला लेने के लिये भीमदेव का अजमेर

पर पहुँचाना, प्रातःकाल की उराकी तैयारी का वर्णन ।

कवित्त ॥ नाग कलं मलि भार । सार सज्जत रन रज्जन ॥

द्वै दुवाह चालुक्क । भीम भारथ सों लग्गन ॥

सोभत्ती वर वैर । बहुरि हालाहल मच्च्यौ ॥

भरन पहंचिय आव । लेष लंघै को रच्यौ ॥

करि ^१दान दान इष्टं सु जप । भट अमंग सज्जे समुद्र ॥

विगसंत नयन दिय बयन । मनो प्रात फुल्लै कुमुद ॥ छं० ॥ ५१ ॥

इधर कन्ह और जैसिंह के साथ सोमेश्वर का भीमदेव के

सम्मुख युद्ध करने के लिये तय्यार होना ।

कुसुम जुड कुसुमेक । कुसुम संधन कुसुमेकह ॥

आदि जुड संपनौ । दैव बढ्यौ दुति देकह ॥

संभरि वै संभरिय । राज सोमेसह कन्नं ॥

उत्तर दिसि प्रथिराज । गयौ उत्तर दिसि मन्नं ॥

जै सिंह देव जै सिंह सुअ । धुअ प्रमान पय डड परौ ॥

इल अचल अचल लग्गन नदिय । गरिल गगार उभरौ ॥

छं० ॥ ५२ ॥

सोमेश्वर की सेना की तय्यारी वर्णन ।

हनुफाल ॥ सजि सेन सोम अपार । सुनि सज्ज सेन प्रकार ॥

सोमेस स्वर विचार । सजि चढे बीर जुझार ॥ छं० ॥ ५३ ॥

*धरा धरा कपिय भार ।

॥

चढि राइ चाणुक पान । धर धरिय दिक्षि सुधान ॥ छ० ॥ ५४ ॥

सुनि अवन समरि राज । वर वज्जि विजयत वाज ॥

तन चविधि तूल तरंग । विधि मडि वीर विजग ॥ छ० ॥ ५५ ॥

दल देपि सूर सुरग । उर होत अरियन पग ॥

ढलकात दिक्षिय ढाल । मधु माध नूत तमाल ॥ छ० ॥ ५६ ॥

छुटि अचग अच्छतुपार । पाहार फारि प्रहारि ॥

उडि वृत्त तिडिय सेन । मनो राम लका लेन ॥ छ० ॥ ५७ ॥

सैनिको का उत्साह सोमेश्वर की वीरता और कन्हैया
का बल वर्णन ।

कवित्त ॥ चिविध साज वडिय । अवाज मेरो कोकिल सुर ॥

भवर भुड भकार । चौर मोरह दूरत वर ॥

वर वसत सम वीर । नच्चि तोपार चिभगिय ॥

*रन रत्तो सोमेस । भीम भारय अनमगिय ॥

दल धरकि भरकि काइर सरकि । हरपि सूर वज्जिय करस ॥

कन्हा नरिद मथिराज विन । सुभर कका मडिय सरस ॥ छ० ॥ ५८ ॥

युद्ध आरम्भ होना ।

दूहा ॥ सुवर वीर मझौ समर । रन उतग सोमेस ॥

दै दुवाह दुज्जन धरी । धरी सु अक तरेस ॥ छ० ॥ ५९ ॥

कन्हैया का वीरमत और तदनुसार सेनापति उसका व्याख्यान ।

कवित्त ॥ जा दिन जीव रु जन्म । क्रमता दिज जम पच्छै ॥

सुध्य दुष्य जय अजय । लोभ माया नन सुच्छै ॥

* यद्यपि यह पाठ मो प्रति में ५३ छंद का चतुर्थ चरण करक दिया हुआ है किंतु अथ
तीनों ए क का प्रतियों में छ० ५३ क चतुर्थ चरण का "साजि चढ वीर सुझार" पाठ है । अतएव
यह पाठ भेद नहीं हो सकता, आगे चल कर छठ भग भी है—इस से मालूम होता है कि इसके साथ
का दूसरा चरण लेखक की भूल से छूट गया है । (२) मो विजयसु । (३) ए कृ को विधि ।

(४) को कृ नर, ए मर ।

(१) ए कृ दुज्जन ।

काल कलह संग्रह्यौ । मोह पंजर आरुद्धौ ॥

मुगति मग्न सुरागै न । ग्योन अंतह किन सुद्धौ ॥

प्रतिथं व अंब अंबह जुगति । मुगति क्रमा सह उद्धरै ॥

केवल सु अग्र ३ चिन्तिय तनह । कान् ए कंक जौ सुधरै ॥ छं० ॥ ६० ॥

दूहा ॥ बीर गजि गजिय विदुष । * नर निरदोष सदोष ॥

संभरवै ३ संभर सुमति । नृप लागि सुमत अनोष ॥ छं० ॥ ६१ ॥

कन्ह की आंखों की पट्टी खुलना ।

कवित्त ॥ सजिय सकल सन्नाह । दाह जनु दंगल पट्टिय ॥

सुमरि साह इक देव । द्रुवन दल देषि ५ दपट्टिय ॥

छुट्टिय पट्टिय नयन । भइ दुंदभी गयना ॥

तेग बेग कम कम्मिय । मच्च आरीठ भयना ॥

फूलह सु धार धर कान् ए वर । कर पर छुट्टिय छह धरिय ॥

पग सठि नठि भीरंग दल । वल अभूत कान् ए करिय ॥ छं० ॥ ६२ ॥

दोनों हिंदू रानाओं की परस्पर औजस्विता का वर्णन ।

दूहा ॥ काल चंपि वर चंपि कल । नर निर्दोष निसान ॥

सुवर बीर हिंदुअ सयन । वर बीरा रस पान ॥ छं० ॥ ६३ ॥

कन्हाराय के युद्ध का पराक्रम वर्णन ।

कालाकाल ॥ कलहंतय केलि सु कान् ए कियं । जु अनंदिय नंदिय ईस बियं ।

नचि १ नौ रसमं इक कान् ए भरं । मय मंचि भयानक अंत करं ।

छं० ॥ ६४ ॥

रक्तकंठ सु दंतन अस्सि शरी । जनु विजुलि पष्पत मेध परी ॥

उड़ि धुंधरियं नय छाइ जनं । जनु सजिय ६ जुग जुगहि पनं ॥ छं० ॥ ६५ ॥

(१) क. को.-मुकति, ए.-सुकति ।

(२) ए क. को.-छत्री । (३) ए.-संभर ।

* ए. क. को.-नर निर षोड दोष ।

(४) ए.-दुपट्टिय, मो. को.-लपट्टिय ।

(५) भा.-नौ रस में ।

(६) मो.-सज्जि ।

॥ इस छंद को “को” प्रति में मधुराकल करके लिखा है और “मो” प्रति में भ्रमरावली करके लिखा है परंतु भ्रमरावली छंद यह है नहीं भ्रमरावली अथवा नलिनी छंद ९ सगन का होता है पर इस छंद में केवल चारही सगन है ।

वजि 'डौर' अ डक निसान घुर । जनु वीर जगावत वीर उर ॥
दुअ सेन बल असियो वरपी । नचि जुगानि पप्पर लै हरपी ॥
छ० ॥ ६६ ॥

१जिनके सिर मार दुआर भरै । बहुच्यौ नन पजर आय परै ॥
छ० ॥ ६७ ॥

॥ कवित्त ॥ कहर भगर जिम पेल । ठेल सेलन सम ठिलहि ॥
इक धुकात धर तुटि । *इक वलन गल मिलहि ॥
इक कामध उठत । इक अतन आलुभभहि ॥
इक हथ्य पग भरहि । टिकि पग पग विन भुभभहि ॥
१तरफारत इक धर मीन जनु । रन रवन छिचिन काथौ ॥
धन धाद घुमि घट धुकि धर । इम सु जुध कन्हह भि-यौ ॥
छ० ॥ ६८ ॥

कन्ह राय का कोप ।

किन दति विन दत । सुभट सौसन विन किन्निय ॥
इय किन्निय विन नरनि । सेन भीमह करि झिन्निय ॥
१पुडा विन किय काल । बाल वर बिगरिन दिव्यिय ॥
पल डारिय पल पूर । कूर कूर भय भिष्यिय ॥
कौनी सुकिति भूमौ अचल । सचल सख सह भुभरिय ॥
मदमत गध महियो १दुरिय । मनो वाय दृष्टह गुरिय ॥ छ० ॥ ६९ ॥
दूहा ॥ सतह १आराधिय सुमहि । हरि दाढा ग्रन जान ॥
१सो सभरि सोमेस वर । सो कौनी पहिचान ॥ छ० ॥ ७० ॥

(१) ए क को - वरुभ ।

(२) मो । जिन ।

* मो इक वल भगल मिलहि ।

(३) ए क को पग । (४) मो - पग । (५) ए क को तरफत ।

(६) ए क को उत्री । (७) ए क को लयौ । (८) ए पुधा, क पुदया ।

(९) मो दुरत । (१०) ए क का आधारिय ।

(११) ए क को से भीरै सोमेस वर ।

अंपनी रोना को छितर बितर देख कर भीम देव का
रोरा में आकर स्वयं युद्ध करना ।

कवित्त ॥ मध्य रूप मध्यंत । मध्य अगान तन मोचन ॥

सिद्ध सुरध अनुरद्ध । वृद्ध वय कामति सोचन ॥

पुत्र बिना बिन बंध । बल सु बंध्यो भीमंदे ॥

सार सुकृत आरद्ध । सुष्य लष्य तंभंदे ॥

बंभनिय बिनै सद्धी सयन । * नय तरत रत्ती सुगति ॥

सोमेस स्वर सोमेस सो । सार लग्नि वीरह सुभति ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कन्ह और भीम देव का परस्पर धोर युद्ध होना ।

रसावली ॥ रसं बीर मत्ते, लरै लोह तत्ते । धुरा कन्ह मत्ती, रन रोस पत्ते ।

छं० ॥ ७२ ॥

मनों काल दंते, रसं रुद्र रत्ते । सरै फुल्ल पत्ते, विमानं विहत्ते ।

छं० ॥ ७३ ॥

धगंगे विहत्ती, उड़ै गज्ज मुत्ती । असं मंस कत्ती, रुथी धार रत्ती ।

छं० ॥ ७४ ॥

उमा हाथ कत्ती, उछारंत छत्ती । महा भीम मत्ती, इसी रुद्र रत्ती ।

छं० ॥ ७५ ॥

तजै मोह वंसं, मिलै हंस हंसं । गरै अंत गहूभीनां, मनों मेध भूमी ।

छं० ॥ ७६ ॥

कवि की उक्ति ।

कवित्त ॥ सधन घाय निधाइ । न मन्यौ को मरन अहुदिय ।

स्वरवीर संग्राम । धीर भारथ स जुदिय ॥

कोन धेत तजि गयौ । कोन हाथ्यो को जितौ ॥

लिधं अंक बिन कंक । कोन माया रस वित्तौ ॥

(१) मो.-धूम । (२) ए. क. को.-पुत्रि ।

* मो.-“नयन तरत तरती सुगति” । (३) मो.-सोम । (४) ए. क. को.-मत्ते ।

न मो.-“मुन्यो कौमर आहुदिय” ।

छह धरी ओन असिवर उद्यौ । धार मार रुधि धार चलि ॥
सजुत अग्निधूमह सजुत । 'खलि वलि वीर वलिष्ट वलि ॥ छ ॥ ७७ ॥

युद्ध स्थल की उपमा वर्णन ।

सिद्धि रिद्ध विष्टुरिय । लुब्ध पर लुब्ध अहुद्विय ॥
ओन सलिल बढि चलय । मरन मन किंकन जुद्विय ॥
कलमल सिर वहि गुरिय । नयन अलि वास सु वासिय ॥
जध 'मगरे कर मीन । कच्छ पुष्परि पग चासिय ॥
पोइनी अत सेवाल कच । अगुलि पग करि झिगं झरि ॥
सोमेस छर चहुआन रन । भीम भयानक जुद्ध करि ॥ छ० ॥ ७८ ॥

दूहा ॥ हय गय जुद्ध अनुद्ध परि । वहत सार असरार ॥

*मानो जालुग अत कौ । आनि सँपत्तौ पार ॥ छ० ॥ ७९ ॥

काहराय का भीम देव के हाथी को मार गिरना ।

कवित्त ॥ सोमेसर अरि छर । ढाहि 'दीने 'वरि वानै ॥
नल कूँवर मनि धीव । जमल भग्ना 'तख कान्हे ॥
वे सराय नारद प्रमान । दूरसन हर लक्षिय ॥
इन तमग उत्तरै । सार कहुँ बर बढिय ॥
न्निधधात धात मत्तौ कलह । असुर सुरन मत्तौ 'महन ॥
कहुँ सुरत कितिय सुभट । सु कविचद 'कितौ कहन ॥ छ० ॥ ८० ॥

दोनों सेनाओं में परस्पर घोर युद्ध ।

भुजगौ ॥ बजे वीर वीर सु सार धनकै । महा मुक्ति बत्ते सु वीर रनकै ॥
गजे वीर वह कान्नाल सह । सनाह सखर वहै सार हह ॥ छ० ॥ ८१ ॥
नचै जग रग ततथ्ये तथग । 'लचै रंक चित्त मन छर 'पग ॥
बढै बक कक ससकौ धरान । नग नग जुटै अमग परान ॥ छ० ॥ ८२ ॥

(१) ए कृ को बलि । (२) ए कृ को मर ।

* ए कृ को मनो जोग जुगति को ।

(३) ए कृ को दीनो ।

(४) ए कृ को -र ।

(५) मो तर ।

(६) ए सहन ।

(७) मो कीर्ति ।

(८) ए कृ को जग ।

(९) ए कृ को -चलै ।

ठनकत घंटं रनके नफेरी । मया मोह दोपत्र खरत्र 'नेरी ॥
 धरं धार ठौरै ठंडोरें सु ढालं । मनो चक्र फेरै कि पंक कुलालं ॥
 छं० ॥ ८३ ॥

जामराथ यध्व और उराके राममुख खंगार का युध करना,
 दोनों की मतवाले हाथियों रो उपमा वर्णन ।

कवित्त ॥ समर समुद्र भीमंग । मध्य वड़वानल राजं ॥
 चाहुआन चालुक । रोस जुद्धे बल सार्जं ॥
 दल दधिन जदु जाम । कल्प अंती कर कुप्यौ ॥
 ता मुष्यह पंगार । झार अग्नी गहर रुप्यौ ॥
 विरचे कि महिष बलवंड बल । दल चमूह चवदंत हुअ ॥
 नय काम जाम इक जहर गहर । बहरे रूप पिष्येति दुव ॥ छं० ॥ ८४ ॥
 रसावला ॥ जटू जाम जोधं, पंगारं सरोधं । भरं भार क्रुद्धं, रमै रोस उधं ॥
 छं० ॥ ८५ ॥

करें केलि कंकी, पुते लज्ज पंकी । कहरं करारे, मनो मारारे ॥
 छं० ॥ ८६ ॥

पियै लोह छकं, बकै मार छकं । धरा धीर धूनें, फिरं ब्रश् खनें ॥
 छं० ॥ ८७ ॥

विना दंत दंती, किए क्रुद्धवंती । गिरै कूट कारे, गरै रक्त धारे ॥
 छं० ॥ ८८ ॥

परै सार मारे, भयानं निनारे । हयं पाइ एकं, फिरै घेत केकं ॥
 छं० ॥ ८९ ॥

दुअं मुष्य लगै, डिगै नाति डिगै । परै लोह पूरं, गिनै नाति खरं ॥
 छं० ॥ ९० ॥

वहै ओन धारं, झरै गित्त तारं । छं० ॥ ९१ ॥

उपमा दोनों वीरों की गदान्ध बैल रो उपमा वर्णन ।

- (१) ए. क. को.-भेरी । (२) मो.-तसु । (३) ए. क. को.-वलष ।
 (४) ए. क. को.-समूह । (५) मो.-मार । (६) ए.-फिरन, क. को. मो.-झिलन ।

गाथा ॥ यों लग्यो रन स्तर । ज्यों मत्ते 'वृषभ रोस रगाइ ॥

गरजै धर पुर पुदे । तक्कै धाइ अप्य अगाइ ॥ छ० ॥ ६२ ॥

इन वीरों का युद्ध देख कर देवताओं का विस्मित
होना और पुष्प दृष्टि करना ।

दूहा ॥ अमर धर पन्नग असुर । पिपि सह रक्षित नैन ॥

सुमन ससध्रम पिपि क्रम । सुमन स 'दृष्टिय गैन ॥ छ० ॥ ६३ ॥

सघन धाइ धूमत विघट । पिलै कि पन्नग मच ॥

विस भोए डविस सबल । 'सगति नही जुग 'जच ॥ छ० ॥ ६४ ॥

सोमेश्वर जी के वाम सेनाध्यक्ष बलभद्र का पराक्रम वर्णन ।

कवित्त ॥ वाम अग सजि सग । बलिय बलभद्र विरचि रन ॥

सेत चमर गज सेत । सेत गज भय करनि गन ॥

सेत हथन गज गाह । घट धूधर धनधोर ॥

वध्यर पध्यर जौन । सार दहुर दल रोर ॥

गज गाज बाजि नौसान धुनि । अति उभभर दल जोर वर ॥

बजि लाग रागसिधूस धुनि । करन सु उथल 'पत्थलधर ॥ छ० ॥ ६५ ॥

भीम देव की सेना का भी भावस की रात्रि के
समान जुट कर आगे बढ़ना ।

दूहा ॥ पावस भावस निसि धुनिय । सजि सारगौ आइ ॥

पिभिर घेत घन धाइ मिलि । जानिक लग्यौ लाइ ॥ छ० ॥ ६६ ॥

सोमेश्वर जी की तरफ के बहुत से *कछवाहे वीरों का मारा जाना

(१) मो -मनय रोम ।

(२) मो द्रष्टिय ।

(३) मो सकति, ।

(४) ए तत्र ।

(५) मो पथ्य ।

* कछवाहा क्षत्रियों की एक जाति विशेष को कहत हैं । वर्तमान जैपुर राज्य उसी वंश में है । कवि ने इस कछवाहा शब्द के लिये प्राय कूरभ शब्द प्रयोग किया है जो कि कूम्भ (कछुप, कछुवा) शब्द का अपभ्रंस है ।

भुजंगी ॥ मिले सेन स्हरं कहरं करारे । छुटै बान कमान करि बार धारे
परै कत्तियं धात निरधात वीरं । फिर रुंड मुंड तनं तच्छ नीरं ॥
छं० ॥ ८७ ॥

उड़ै दंत सुंडं भसुंडं निनारे । मनो कलं कूट अहि चंद दारे ॥
उड़ै टोप टूकं गुरज्जं प्रहारे । मनो स्हर सीसं पसे चंद तारे ॥
छं० ॥ ८८ ॥

भई तीरयं भीर अप्रेव मानं । सरं पंजरं पथ्य घंटेव जानं ॥
मिले सेल मेलं भएकं भयंती । कुटे धान मानो धनं कूटकंती ॥
छं० ॥ ८९ ॥

रजं रज्ज रज्जे सुरज्जे अनूपं । रमै जानि वासंत भूपाल भूपं ॥
जिनं काछ वच्चं धरं अगा धारै । तिनं ठिस्त्रियं घग्ग अरि सख भारै ॥
छं० ॥ ९० ॥

जिते काछवाचं जितं अगा धारी । तिनं ठिस्त्रियं भार भर भीर पारी ॥
धरं धुक्कियं धार क्लरं भदेवं । सुभै सख सज्जा मनो संत नेवं ॥
छं० ॥ ९१ ॥

भीमदेव की सेना का चारों ओर से सोमेश्वर को घेर लेता ।
दूहा ॥ दक्षिण पच्छिम वाम दल । दत्त अनुद्धिय सार ॥

गोल गहर गाजी अनी । सोमेश्वर अरि भार ॥ छं० ॥ ९२ ॥

उरा रामय पहुआन वीरों का जीवन की आशा छोड़ कर
सुख करना ।

गाथा ॥ बज्जे रन रनतूरं । गज्जे गहर स्हर पल चूरं ॥

मंडे निजर कहरं । छंडे मरन मोह साहरं ॥ छं० ॥ ९३ ॥

सोमेश्वर और भीमदेव का परस्पर रासहना होना ।

साटक ॥ पिष्येयं सोमेश गुज्जर धनी, मचकंदु निद्रा तयं ॥

जलधियं गंजाल कोपित वलं, हालाहल नैनयं ॥

जो वड करवान कर्णित दलं, अज्जेन आयातय ॥

श्री वीर चहुआन वानति बल, चालुक सधातय ॥ छ० ॥ १०४ ॥

भीमदेव और सोमेश्वर दोनों की सेनाओं का परस्पर युद्ध करना ।

भुजगी ॥ बढे वान चहुआन चालुक घेत । महा मत्र विद्या गुर सुक जेता ॥

धने धोर नीसान गज्जे गहार । उठे जानि प्रासाद बर्पा 'महार ॥

छ० ॥ १०५ ॥

बजी मेरि भकार नफोरि नाद । तडकत विज्जू कारनाल साद ॥

छुटौ वाने जची उडौ गेन अगेगी । 'महादेव वीर चघ निद्र भगी ॥

छ० ॥ १०६ ॥

सहनाइ सिधू सुर हर्य वीर । नचे ताल समाल वेताल श्रीर ॥

नचे न्वथ नीसान नारह धाई । चढौ थोम विमान अपहरि सुहारी ॥

छ० ॥ १०७ ॥

जके जप्प गधर्व कौतिग हारी । प्रलैकालथ ध्याल 'ध्याल विचारी ॥

दुव दिग्गपाल दुव छत्रधारी । दुव ढाल ढिचाल मल्ल' करारी ॥

छ० ॥ १०८ ॥

दुअ 'तवल दार दुव विरद वान । दुअ भूमि सधार छिद्र हदान ॥

दुअ स्तर पूत दुअ 'कास्थ पाए । दुअ दद दाखन वाजे बजाए ॥

छ० ॥ १०९ ॥

दुअ लोह मेवाड मडूर मान । दुअ हकि हकार बडूव रान ॥

दुव सैन स्थाही जल बहलान । दुअ गज्ज गुमानय तेज मान ॥

छ० ॥ ११० ॥

रची चचरी लोह डंडं डरारी । प्रहत्तीय बेर अचती करारी ॥

'सर जाल भाल भिदै जच जीव । हर्य हीस महे गरज्जे करीव ॥

छ० ॥ १११ ॥

(१) मो पहारे ।

(२) ए कृ को महावीर देव ।

(३) को पत्री, ए कृ को-क्षत्री ।

(४) ए-तन्न, कृ को-तत्त्व ।

(५) को-अस्व, ए कृ-अस्थ ।

(६) ए कृ को-रस ।

तुटै हड्ड मंसं धरंगं अभंती । गहै अंत गिद्धी गयनं भमंती ॥
 उछै छीछ तारं अपारं उतंगं । सुरं दृष्ट बंधूक पूजं 'भुतंगं' ॥
 छं० ॥ ११२ ॥

छटें मभभ सभभं नरं केका कचे । लरें जंग हथ्यं विना केकरचे ।
 उड़ै पुप्परी षग्न झारं कारारी । मनो चंद स्वरं दधी पूज धारी ॥
 छं० ॥ ११३ ॥

किते धाड़ अछघाड़ धट धूम लुट्टै । तिनं जग्न भनं क्रमं बंध छुट्टै ।
 किते लोह छके रनं भूमि धूमै । तिनं वास वैकुण्ठ कै ठाम धूमै ॥
 छं० ॥ ११४ ॥

जिते अंग अंगं परे टूटि न्यारे । तिनं उप्पजै मुक्ति कै भूम त्यारे ।
 कहै कविय वध्यान किं वर्नि तेनं । फलै 'कृष्ण' पच्छं मरनं जितेना ॥
 छं० ॥ ११५ ॥

कवित्त ॥ हालाहल वित्तयौ । सार भत्तौ शोलाहल ॥
 जुगिनि जय जय जयहिं । पस्तु पंघिन कोलाहल ॥
 धर परंत दुरि धरनि । उत्त भंगतिहि कारहि ॥
 शर शरंत षग्गाह । बीर डंकिनि ढकारहि ॥
 महि मच्चि महरत मरन रन । सह जाइ जय सुर करिय ॥
 चहुआन स्वर सोमेश रन । पंड पंड तन शरि धरिय ॥ छं० ॥ ११६ ॥

अपना गण निइय जान कर सोमेश्वर का अतुलित वीरता
 रो युद्ध करना और उसका मारा जाना ।

हय गय नर भर परिय । भिरिय भारथ सगानं ॥
 सोमेश्वर संचयौ । मरन निहचै उनमानं ॥
 रत रंग सवरंग । जंग सारह उग्नगारै ॥
 हकि मार धकि सार । भुम्भि गग्न सार 'सु' रारै ॥
 कलहंत कांका अनभूत हुआ । उड़हि हंस हंसन मिलहि ॥
 तन तुटि रेधिर पल हड्ड सन । कै कमंध उठि रन धिलहि ॥ छं० ॥ ११७ ॥

सोमेश्वर के साथ मारे गए हाथी घोड़े पदाती एव रावत
सामतों की संख्या कथन ।

वाजि नयि सोमेस । सहस बर इक्क प्रमान ॥
तिन मघ कहि पचास । वीर भारथ भरि पान ॥
तीन तीस पट परे । पच्यौ सोमेसर घेत ॥
गिद्धि सिद्धि वेताल । कक बध्यौ सिर नेत ॥
लम्भी सु मुगति अद्भुत जुगति । हस हकि हसह मिल्यौ ॥
सोमेस करी सोमेस गति । पच तत्त पचह मिल्यौ ॥ छ० ॥ ११८ ॥

सोमेश्वर का मरना और भीमदेव का धायल
होकर मूर्छित होना ।

दूहा ॥ जुम्भिक पच्यौ सोमेस घर । डोला चालुक राय ॥
दुहू सेन भरि घर परे । वजी वत्त पग चौड ॥ छ० ॥ ११९ ॥
नए मृत्यु नय रिपि के । ज्यो फिरि करि है मुक्क ॥
चतुरानन चिता भई । नर भारथ्य अबुम्भ ॥ छ० ॥ १२० ॥

सोमेश्वर को मुक्ति सहज ही मिली ।

गाया ॥ जा मुक्कि जोगिद । काल काठ अम्भ अमाइ ॥
सा मुक्ती सोमेस । इक्क छिने लम्भिय राजा ॥ छ० ॥ १२१ ॥
भूमी भरत भरथ । कलय कर कथि कथ्येव ॥
जै जै जपि जगत । है है नम्भ सह सुर थाय ॥ छ० ॥ १२२ ॥

पृथ्वीराज का सोमेश्वर की मृत्यु सुन कर भूमि शय्या धारण
करना और षोडसी आदि मृत्युकर्म करना ।

कवित्त ॥ सुन्यौ राज प्रथिराज । भूमि सिज्जा अवधारिय ॥
तात काज तिन पिड । दान षोडस विचारिय ॥
भइ मइ सदयौ । राज गति अष्ट प्रकार ॥

द्वादस दिन प्रथिराज । भूमि सज्या संथारं ॥

विन भोग भोज इके टंक करि । सुहय दान दिय राज बर ॥

दिनौ न कोइ दैहै न कोइ । इतौ दान जनमंत नर ॥ छं० ॥ १२३ ॥

पृथ्वीराज का भूगि गो स्वर्णादि दान करना और पण
करना कि जब तक भोराराय को न मार लुंगा
न पाग बाधूंगा न धो खाऊंगा ।

अष्ट सहस दिय धेन । । * तब प्रथ्यी विधि धारिय ॥

हेम अंग पुर हेम । तौल द्वादस हिमसारिय ॥

जुगति जुगति विधि नान । दान षोडस विस्तारं ॥

तात बैर संग्रहण । लेन प्रथिराज विचारं ॥

घृत मुक्ति पाथ बंधन तजिय । सुदृत बीर लीनौ विषम ॥

चालुक भौम भर गंजिके । कढ़ौ तात उदरह सुषम ॥ छं० ॥ १२४ ॥

अरिस्त ॥ धिगे ताहि ताहि जीवन प्रमान । सथ्यौ न तात बैरह विनान ।

राजिंदु दृष्टि रग तेत नेन । बढ्यौ सु रोसु उर उमडि गेन ॥ छं० ॥ १२५ ॥

पृथ्वीराज का भोराराय पर चढ़ाई करने की इच्छा
करना परन्तु मंत्रियों का पृथ्वीराज को अजमेर
की गद्दी पर बैठाने का मंत्र देना ।

दूहा ॥ सजन सेन चाहै नपति । बैर तात प्रथिराज ॥

प्रोठ पुष्व बैठन मतौ । पश्च सु जुद्धह काज ॥ छं० ॥ १२६ ॥

पृथ्वीराज का राज्याभिषेक ।

कवित्त ॥ बोलि विप्र प्रथिराज । तत्त बुद्धी अधिकारिय ॥

राज क्रम सब जान । अगा क्रगाह तन धारिय ॥

जग्य जाय मति जोग । क्रगा बंधन बल बंधन ॥

दिषत ^१मुष्य जनु ^२ब्रह्म । पाप भंजन जन सज्जन ॥

* मो.-“तब प्रथिराज सुधारिय” पाठ है ।

(१) मो.-सुष्य ।

(२) मो.-ब्रिम्म ।

जोगिद जोग पुज्यै नही । काल चिदस जानै सुमति ॥

सासोति कूर सोमह करन । सुविधि कूर मडौ सुमति ॥ छ० ॥ १२७ ॥

दूहा ॥ राज विम्र बोले सुदत । अजन सुजग्य पवित्र ॥

तत्र कोइ पुज्यै नही । क्रम बारन वर मित्र ॥ छ० ॥ १२८ ॥

पृथ्वीराज का दरवार में बैठना और विप्रों का

स्वस्तयन पढ कर तिलक करना ।

पङ्करी ॥ आसु विम्र दरवार बार । 'साधत जोग मति सिद्ध 'सार ॥

मतिवत 'रति प्रथमोत जोग । जुग जगति सेव तिन 'देन भोग ॥

छ० ॥ १२९ ॥

पूजै प्रकार 'साधन अनेव । तिन प्रसन होइ तन मच्चि देव ॥

देवेति विम्र इन विधि प्रकार । जानत बुद्धि तत्ती प्रचार ॥

छ० ॥ १३० ॥

महि भगन मडि नहि निकट फाद । दिप्यत देह आनद कद ॥

प्रथिराज इद्र राजिद जोग । अण्यै सु मुक्ति अरु मुक्ति भोग ॥

छ० ॥ १३१ ॥

घर धरनि भिरन दै दान राज । सोवन भूमि मडौ विराज ॥

पद सहस सहस वर हेम इक । अण्यै सु दान मानेह विसिक्क ॥

छ० ॥ १३२ ॥

'जोगिद 'मति प्रथिराज किन । वर वीर धीर साधत भिन्न ॥

छ० ॥ १३३ ॥

पृथ्वीराज का ब्राह्मणों को दान देना और दरवार

में नृत्य गान होना ।

दूहा ॥ विविध दान परिमान करि । निगमबोध सुभ थान ॥

लिय दिव्या जहा प्रम सुत । करि अभिषेक नृपान ॥ छ० ॥ १३४ ॥

(१) क-सावयन ।

(२) ए क को चार ।

(३) ए क को-रत ।

(४) क ए नैन ।

(५) को मो राजन ।

(६) ए क को जोगिद्र ।

(७) मो मति ।

अमरावली ॥ नव बीर नवं रस बीर न शौ । अमरावलि छंद सु चंद रसौ । सुजंगी
सिद्धि बुद्धिय विप्र समान धरं । मति जानत तत्त सुमति गुरं ।

छं० ॥ १३५ ॥

गुर जानन गो विध तत्त सुरं । मनु बिंब सु बिंबर रंभ डरं । दूहा ।
त्रिय दिष्यिय रंभति रंभ गती । ॥ छं० ॥ १३६ ॥

वय स्याम सषी गुन गौर धरं । कविचंद सु व्रनन किति करं ।
तमकी तम तेज किरन रंजं । तिन देखत चंद कलाति लजं ।

छं० ॥ १३७ ॥ सुजं ।

गुर सत्त बुधं गुरमत्त असं । तिन कै उर काम ककान्न नसं ॥
षहकें नग ज्यों गज मग्ग फिरैं । तुटि वार प्रहारत धार धरैं ।

छं० ॥ १३८ ॥

... । मनु तारका तेज ससी उचारैं ॥
छलकै छिति मति जराइ जसं । गलकै जनु मुत्तिय मुति गसं ।

छं० ॥ १३९ ॥ दूहा ।

गुर चार ग्रहं गुरु जीव रवी । प्रगटी जनु जोति सु तेज हवी ॥
॥ छं० ॥ १४० ॥ गा ।

दर्वार गें रोव सांगंतों सहित बैठे हुए पृथ्वीराज
की शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ प्रगटि राज दर जोति । रंग रवनी रस गावहिं ॥
पाट बैठि प्रथिराज । सख्य सोमंत सु भावहिं ॥
दधि तंदुल हरि दूब । सुभ्रम रोचन कसमीरं ॥
मनों भान में भान । प्रगटि कल किरन सरौरं ॥
दिष्यियै बोल गावत सरन । सपत सुरस षट राग मति ॥
संसार भेद आभेद रत । पति प्रकति साधत सुरति ॥ छं० ॥ १

(१) प.-जरं ।

(२) प. क. को.-गति ।

(३) मो.-मुगनि ।

(२) ए. क. को.-किरति । (३) ए. क. को.-

(५) मो.-रन ।

(६) ए. क. को.-प्राग-

भुजगी ॥ कुरगी सु चगी द्रपगीति वाले । इक मोल अमोल लोलत भाले ॥
गरे पुष्प भाला विसालाति धरै । मयका मुपी कठ कलयठ सारै ॥
छ० ॥ १४२ ॥

दूहा ॥ वित मति गति सारत विधि । न्यप जै जै प्रथिराज ॥
मनो इदु सुरपुर गहन । उदै करै मनु साज ॥ छ० ॥ १४३ ॥
लोइ सपते तिन महल । जहँ सामत नरिद ॥

इच्छिनि अचल गठ जुरि । मनो इद्रानी इद्र ॥ छ० ॥ १४४ ॥
भुजगी ॥ नृप इच्छिनी गठि बधी प्रकारे । मनो कामता काम कौ बुद्धि तारे ॥
दुहू रग रगी सु रगीति साधी । मनो जीव गुर राह एकत बाधी ॥
छ० ॥ १४५ ॥

सही सत मत प्रकारे निनारे । मनो मेनिका रभ आषे अघारे ॥
वर देधि असमान अभिमान जानै । बने कोन धनत ता बुद्धि दाने ॥
छ० ॥ १४६ ॥

दूहा ॥ चौअगानी लच्छि दै । सब सामतन सथ्य ॥
जस जा हथ्यन बिप्य के । भौ कामिनिति समथ्य ॥ छ० ॥ १४७ ॥

गाथा ॥ उमै राम वर खर । सामत सत यट दून ॥
ता अप्यन प्रथिराज । चौ अगा लच्छि सग्राम ॥ छ० ॥ १४८ ॥

छछनी से गठवन्धन हो कर पृथ्वीराज का कुलाचर सबन्धी
पूजन विधान करना ।

भुजगी ॥ भई कामना काम कामित राज । दियौ कन्ह चहु आन हथ्यी विराज ॥
उमै राज राजग जोगिदु मित । मनो देवता जीव के जग्य जत ॥
छ० ॥ १४९ ॥

पृथ्वीराज का राज गद्दी पर बैठना । पहिले कन्ह का और
तिस पीछे क्रमानुसार अन्य सब सामतों का टीका करना ।

दूहा ॥ प्रथम तिलक सिर कन्ह किय । दुत्तिय निडर रठौर ॥
इन अगह सुभ सत करि । तापछ सुभर और ॥ छ० ॥ १५० ॥

कवित ॥ कियौ तिलक वर कन्ह । पाट प्रथिराज विराजहि ॥
 मनो इंद्र अरधंग । हथ इंदीवर राजहि ॥
 चमर सेत सोमंत । दुरत चावहिसि सौसं ॥
 मनो भान पर धरिय । किरनि ससि की प्रति रीसं ॥
 अवनिस इंद्र लग्यौ तपन । धुअ सुतेज तप उद्धरन ॥
 सुरतान गहन मोपन करन । बहु बीरां रस सविधन ॥ छं० ॥ १५१ ॥

पृथ्वीराज की शोभा का वर्णन ।

केनक दंड सिर छत्र । सुमत चौहान सौस पर ॥
 कै तरत ससि भान । तेज मंगल जंगल गुर ॥
 ग्रह सुसंत संग्रहन । पंच पंचौ अधिकारिय ॥
 चावहिसि चहुआन । दिष्टि नवग्रह बल टारिय ॥
 प्रज मिलिय आनि बढ्यौ अनंद । चंद छंद चातिंग रटहि ॥
 प्रथिराज सु वर दुजान मनह । काल लाल कारन ठटहि ॥ छं० ॥ १५२ ॥

इति श्री कवि वंद विरचिते प्रथिराज रासके भोला भीम विजय
 रोमेस बंधनो नाग उनधालिरागों प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ३९ ॥



अथ पञ्जून छोंगा नाम प्रस्ताव लिख्यते*

(चालीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर दिल्ली आना ।

दू० ॥ १ सुनि कगद प्रथिराज जब । बध्यौ भीम सीमेस ॥
आतुर परि आयौ जहाँ । दिल्ली देस नरेस ॥ छ० ॥ १ ॥

पञ्जून राय कछवाहे की पट्टन के संग्राम में
वीरता वर्णन ।

दू० ॥ कित्ति कला कूरभ वल । कहत चद बरदाय ॥
ज्यौ पट्टन संग्राम किय । जाइ सु भोरा राय ॥ छ० ॥ २ ॥
सुनी राज प्रथिराज ने । माला रनिंग खूय ॥
विरद बुलावे महबली । छोंगा सज्यौ सधूय ॥ छ० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज का पञ्जून राय के सिर पर छोंगा वाध कर
लड़ाई पर जाने की आज्ञा देना ।

कवित ॥ छोंगा ला सिर छत्र । सीस बध्यौ पञ्जून ॥
जस जयपत जु आनि । करै परसन सह 'जन ॥
अप्याते घर रौठ । रीस कीनौ चालुका ॥
हौय पटके साल । बात सभरि बालुका ॥
पुच्छैव पल्ल कूरभ कौ । अप्यानौ दल टारियौ ॥
पञ्जून भलधसी वीर वर । करन कूच उचारयो ॥ छ० ॥ ४ ॥

* मो प्रति में "पञ्जून कछवाहा छोंगा नाम प्रस्ताव" ऐसा पाठ है ।

१ यह दोहा मो प्रति मे नहीं है और पाठ से भा क्षयक श्राव दाता है ।

(१) ए क को दून ।

॥ एक प्रकार का राजमा या सरदारी चिन्ह जो पगडी के ऊपर बाग जाता है जिस क्षणी भा
कहते हैं । सरपंच, कलगी तुरा, इत्यादि का एक भेद है ।

दूत का पृथ्वीराज को समाचार देना कि भोलोराय इस समय
 सोनिंगर के किले में है और यहां पर पञ्जूनराय
 का पढ़ाई करना ।

दल भोला भीमंग । साल चिंतिउ सोनिंगर ॥
 किये कूच पर कूच । काल घेय्यौ कि कूट गिर ॥
 चंद मंडि ओपगा । सरद राका परिमानं ॥
 उद्धि मद्धि जिम अनिल । जलधि लंका गढ़ जानं ॥
 दल दूत राज पिथ्यह कहिय । हका-यौ पञ्जून बल ॥
 तुम जाइ गुरौ 'ऊपम करौ । हनौ राज भीमंग दल ॥ छं० ॥ ५ ॥
 दूहा ॥ सकल खर कूरंभ वर । सथ लिनौ अप 'जति ॥
 समर धीर वीरत सवर । लज्जी परै न 'भति ॥ छं० ॥ ६ ॥

पञ्जूनराय की पढ़ाई की शोभा वर्णन ।

पञ्चरी ॥ चक्यौ वीर पञ्जून कूरंभ सथ्यं । मनो कश्चियं जोग जोगी समथ्यं ।
 दुअं तोन बंधे दुअं ले कमानं । * मनो उत्तरा पथ्य पारथ्य जानं ।
 छं० ॥ ७ ॥

दुअं असं बंसं रचे रथ्य जोरं । लगे पाइ छवी उठी भोमि भोरं ।
 कियौ पट्टनं कूच चालुक थानं । अपं सथ्य वीरं सु लीए जुवानं ।
 छं० ॥ ८ ॥

पुछै पंथ पंथी तनं सच्च जपै । सुनै दुष्ट बैरी तिनं तेज कपै ॥
 इकां चित इष्टं 'निजा साइ माने । इसे वीर कूरंभ रैवान जानै ।
 छं० ॥ ९ ॥

तहा घेरियं ग्राम चालुक रायं । अचानक वीरं दरवार आथं ॥
 ॥ छं० ॥ १० ॥

(१) ए. क. को. ऊपर ।

(२) ए. क. को.-जिति ।

(३) ए. क. को.-मिति ।

* मो.-मनों उत्त, पारथ्य-जान-।

(४) ए. क. को.-जिन ।

दूहा ॥ * चौकी भीमानी चढ़ै । भोला रानिग सथ्य ॥

छोंगा वीर महाबली । वर वीरा रस कथ्य ॥ छ० ॥ ११ ॥

पञ्जून राय का घेरा डालना । मलय सिंह का मुकाबला करना ।

कवित ॥ चपि काल पञ्जून । वीर भोरा भीमदे ॥

कै आयौ उपरै । फुट्टि पायाल सवदे ॥

सकल सेन चमक्यौ । वीर भोरा उठि जग्यौ ॥

मलैसीह सुय काल । हाल सम व्याल सु भग्यौ ॥

* बकारे वीर छोंगा गद्यौ । सिर मडन लिय दथ्य धरि ॥

आए सु सीस पञ्जून करि । समर बाल वीर सुवरि ॥ छ० ॥ १२ ॥

पञ्जूनराय का चावुक भुल जाना और फिर सात कोस से

लौट कर चालुक की भरी सेना मे से चावुक ले जान ।

दूहा ॥ लै छोंगा वर वीर चलि । चावक भूल्यौ दथ्य ॥

सात कोस ते बाहु-यौ । वर वीरा रस कथ्य ॥ छ० ॥ १३ ॥

पट्टन षट्टन ममक ते । लै आयौ फिरि धीर ॥

ता पाछे बाहर चग्यौ । दल चालुकौ वीर ॥ छ० ॥ १४ ॥

चालुक सेना का पीछा करना और पञ्जून राय

का उसे परास्त करना ।

भुजगी ॥ चढे पच्छ चालुक सो सज्जि सेन । हकारे नरिद सु कूरभ तेन ॥

सुने सह क्रान्ति फिरे तथ्य वीर । छुटै तीर तीर मनो, सिधु नीर ॥

छ० ॥ १५ ॥

बजै धाड़ अधधाड़ गज्यै हवाई । बजै आवध ममक आवध भाई ॥

मिले वीर वीर स्वय सूर भारे । परे रग जय मनो मचवारे ॥

छ० ॥ १६ ॥

भरै सार सार चिनगीस उठे । मनो किंगन भदवं रेनि वुठे ॥

घन रत्त घटै उमा वीर रत्त । परै अठ्ठदह वीर कूरभ पत्त ॥ छ० ॥ १७ ॥

* ए क को "पिङ्गा विमान चिह्नयो" ।

(१) ए क को व्यालह ।

(२) ए क को लग्यौ ।

(३) ए चकार ।

(४) ए कलि ।

परे सहस्र चालुक द्वैवान वीरं । तहां इतनै भोन ब्रह्म नौरं ।
छं० ॥ १८ ॥

छोंगा देकर भीमदेव का पट्टन को जाना और मलय
शिंह और पञ्जून राय की कीर्ति का स्थापित होना ।

दूहा ॥ मल्लसिंह पञ्जून रा । दस दिसि किति अवाज ॥

द्वै छोंगा भोरा फिन्चौ । गयो रुपट्टन राज ॥ छं० ॥ १९ ॥

पञ्जून राय का पृथ्वीराज को छोंगा नजर करना ।

गयो सुचालुक ग्रहे तजि । रही कनै गिरि 'लाज ॥

छोंगा कूरंभ रावलै । 'कार दीनौ 'प्रथिराज ॥ छं० ॥ २० ॥

पृथ्वीराज का पञ्जून राय को ही छोंगा दे देना

और एक धोड़ा और देना ।

राज सु छोंगा फेरि दिय । वर है वर आरोहि ॥

घटि चालुक * वढ़ि कूरमा । अयुत पराक्रम सोह ॥ छं० ॥ २१ ॥

मल्लसिंह रानिंग सुत । सुभर भोरा राज ॥

कूर्म अचानक थों पन्चौ । ज्यों तीतर पर बाज ॥ छं० ॥ २२ ॥

* पञ्जून राइ महाबली । मल्लसिंह घर पारि ॥

छोंगा लै पाछे फिन्चौ । सुनि चालुक पुकार ॥ छं० ॥ २३ ॥

चन्द कवि की उक्ति से पञ्जून राय के वीर

शिरोमणि होने की प्रशंसा ।

बहुत जुद्ध कौनो सुवर । सुभर तेज प्रथिराज ॥

भट्ट चंद कीरति तवै । कूरंभह सिरताज ॥ छं० ॥ २४ ॥

इति श्री कवि चंद विरचिते प्रथिराज रासके पञ्जून कछ वाहा
छोंगा नाम च्यालीरामो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥४०॥

(१) ए. कृ. को.-छज्ज । (२) मो. कर दीनौ । (३) ए. कृ. को.-प्रथु हथ ।
(४) मे.-बवि । (५) ए. कृ. को.-तवी । * छन्द २१ और २२ मो.-प्रति
में नहीं है । इन छन्दों में पुनरुक्ति है इस से इनके क्षेपक होने का भी सन्देह हो सकता है ।

अथ पञ्जून चालुक नाम प्रस्ताव लिष्यते

(एकतालीसवां समय ।)

जै चंद के उभाडने से चालुका राय सौलकी और शहाबुद्दीन
की सेना का दिल्ली पर आक्रमण करना ।

दूहा ॥ 'चालुका हिंदू कमध । और सु गोरी साहि ॥

साम भेद जैचंद किय । पति दोलौ सम ताहि ॥ छ० ॥ १ ॥

दूत का पृथ्वीराज को यह खबर देना ।

कविता ॥ आइ पवरि बहुआन । 'सु दल चालुकराइ सजि ॥

आइस पग नरेस । साह साहाव बैर कजि ॥

लख्य दोइ भर दोइ । पुरह पोपद सुआइय ॥

दिपि है गै अनमत । दूत ढिली दिसि धाइय ॥

प्रथिराज रुधिर कारौ कदिय । समह राम प्रोहित रदिय ॥

सुरतान समध चालुक कमध । 'कहै कोन चम्भू चदिय ॥ छ० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का विचार करना की पञ्जून राय से यह
कार्य्य होना संभव है ।

चालुका परि राइ । बीर बज्जे नीसान ॥

सकल छुर सामत । पग मग किय पान ॥

सवर सेन सुरतान । राज प्रथिराज विचारिय ॥

विन कूरुंभ को दलै । नृपति इह तथ्य उचारिय ॥

जो चियन बस्य नन द्रव्य बसि । मरनसु तिन जिम तन मनै ॥

सिर धरै काम बहुआन कौ । विधौ काम चित न गनै ॥ छ० ॥ ३ ॥

(१) मो चालुका ।

(२) मो - "सुवर चालुका राह सज ।

(३) ए रु को प्रोहि ।

(४) मो कहै कान चढै ।

पृथ्वीराज का पञ्जूनराय को बुलाना ।

दूहा ॥ बोलि राज भथिराज तब । पान हस्थ दिय ^१साज ॥

कहौ जाइ कूरंभ ^२कौं । इह किज्यै हम काज ॥ छं० ॥ ४ ॥

पृथ्वीराज का राभा गें बीड़ा रखना और किराी का बीड़ा न
उठाना सबका पञ्जूनराय की पशंसा करना ।

कावित ॥ सुनि सुवत्त कूरंभ । कोइ शिक्खै न पान वर ॥

बड़गुजार दाहिगा । चूर चालुक चंपि धर ॥

परमारह कमधेज्ज । वीर परिहारय भट्टिय ॥

सकल स्वर वर नटे । काल चंपै मति धट्टिय ॥

पञ्जूनराइ षग अगारौ । करै नाम निरमल सु धर ॥

इन सम न कोइ रजपूत रन । डरहि काल ^३दिषिय ^४निजर ।

छं० ॥ ५ ॥

पञ्जूनराय का भरी रागा गें बीड़ा उठा कर दोनों शत्रुओं
का ध्वंसा करने की प्रतिज्ञा करना ।

ए कूरंभह वीर । धीर आवत धनुजर ॥

* जो मह नह पूजंत । जोग बल पंडन सखर ॥

इनह अप्प बल दौरि । जाइ असि असि अरि गहारिय ॥

एकल्लै पञ्जून सिंध । परि पिसुन पछारिय ॥

लै पान सौस कूरंभ धरि । सकल स्वर सामंत नटि ॥

चालुकराइ हिंदू दुसह । विषम काल न्यालह सु जुटि ॥ छं० ॥ ६ ॥

रुलतान और कमधुज्ज के दल की रापे और अफमि से उपमा
और पञ्जूनराय की गरुड़ और ऊँट रों उपमा वर्णन ।

(१) ए. कृ. को. बाज ।

(२) ए. कृ. को.-सौं ।

(३) ए. कृ. को.-दिष्ये

(४) ए. कृ. को.-नजरि ।

* मो.-प्रति-जोगन पुजै जोग बल पंडन वीर ।

दूहा ॥ कालव्याल सुरतान दल । कमध सु पयय कूट ॥

हरि वाहन पञ्जून दल । ते सजि धार 'ऊंट ॥ छ० ॥ ७ ॥

पञ्जूनराय के वीडा उठाने पर सभा मे आनन्द ध्वनि होना ।

भुजंगी ॥ लियौ पान पञ्जून कूरभराइ । स्वय जानते सोइ कीनी सु भाइ ॥

मिलि अग्नि कूरभ सोचित जान । गई दृढ़ चहु आन सुरतान मान ॥

छ० ॥ ८ ॥

वज्रै दुदुभी देव देव सु यान । भयौ मुष्य कूरभ चित स भान ॥

॥ छ० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज का पञ्जूनराय को धोडा देना ।

दूहा ॥ लरन हथ्य लिय तेग वर । वगसि राज तब बाज ॥

लिय कूरभ कुल उज्जये । सौस नवाइ सभाज ॥ छ० ॥ १० ॥

चढ़ाई के लिये तय्यार हो कर पञ्जूनराय का अपने कुटुम्ब

से मिलना और उसके पाचो भाइयो का साथ होना ।

कवित्त ॥ 'पग वधि कूरभ । आइ पञ्जून अप्पन भर ॥

सुवर वीर बलिभद्र । तात पञ्जून सथ्य वर ॥

कन्ह वीर वर वीर । सिध पाण्डन सुधार ॥

मलयसिद्ध सब हथ्य । सग लीने भर सार ॥

चित स्वामिभ्रम सो अरि भिरन । लरन भरन तकसीर नन ॥

सुनि राग वीर काइर धरकि । वजिग वीर नीसान घन ॥ छ० ॥ ११ ॥

पञ्जून राय की चढ़ाई की शोभा वर्णन ।

दूहा ॥ वजिग वीर नीसान घन । पावस सक ससीर ॥

चढिग जोध पञ्जून भर । सज्जि हयगय वीर ॥ छ० ॥ १२ ॥

भुजंगी ॥ चढ्यौ वीर बलिभद्र कूरभराय । कला पथ्य कोट सुजोट दियाय ॥

छवी तेज मुष्य सु सोमत वीर । मनो केवल अग वीर सरीर ॥

छ० ॥ १३ ॥

चढ़्यौ बीर संगं नरं सिंग रायं । दिठौ दिठु दिठौ मनो बेद गावं ।
चढ़्यौ राइ पज्जून छत्रं सुधारे । बदै जाहि स्वामी रधी रत भारे ।
छं० ॥ १४ ॥

द्रुमं सीस फेरै पज्जूनं सहेतं । मनो बाज राजं परं बंधि नेतं ।
चढ़े सेत बंधी सयं सज्जि सारं । तिथं पंचमी पूर आदीत वारं ।
छं० ॥ १५ ॥

पज्जून राय के कूच की तिथि वर्णन ।

दूहा ॥ तिथि पंचमि रवि वार वर । छंडि पंच भर आस ॥
चढ़े जोध है गै परिय । 'मुगति सु लूटन रासि ॥ छं० ॥ १६ ॥

पज्जून राय का कृत वीरताओं का वर्णन ।

साटका ॥ 'धीरंजं धर धीर कूरम बली, पज्जून रायं वरं ॥
जितेते सुरतान मान सरसं, आहत बानं विषं ॥
भूयो बाल भुआल भारय कृतं, कृष्णो धर धट्टियं ॥
तं काजं वर बीर धीर धरयं, संसार मुक्तं वरं ॥ छं० ॥ १७ ॥

पज्जून राय की चढ़ाई का आतंक वर्णन ।

पझरी ॥ चढ़ि चल्थौ सेन कूरंभ बीर । डपटीय जानि साइर गंभीर ॥
बंधिय सुतीन कूरंभ मंत । जाने कि जोग जोगाधि अंत ॥ छं० ॥ १८ ॥
तहाँ हए सगुन ए सुभ्र रूप । दाहारसिंध रवि रथ्य जूप ॥
दाहिनै पूठ मृग मृगिय जाय । बामह सुबीय सारस सुभाय ॥
छं० ॥ १९ ॥

उत्तरै तार देवीति वार । डहकत सह जुगिनिय भार ॥
मृगराज मिल्यौ दंतह प्रमान । 'बंदे सुराज पज्जून जान ॥ छं० ॥ २० ॥

पज्जून राय का यवन रोना के गुफाविले पर पहुंचना ।

दूहा ॥ सकल खर कूरंभ वर । मान भयग सुष बीर ॥
तबै राइ चालुक वर । आइ 'संपत्तौ तीर ॥ छं० ॥ २१ ॥

(१) ए. कृ. को.-मुकति ।

(२) ए. कृ. को.-धीरजं ।

(३) ए.-वडै, कृ.-वडै ।

(४) ए. कृ. को.-संपत्तौ ।

कमधुञ्ज और यवन सेना से पञ्जून राय का साम्हना होना ।

आइ सँपत्ते खर भर । सुरताना कमधुञ्ज ॥

क्रूरमह पञ्जून सम । चढे जोध गुर गञ्ज ॥ छ० ॥ २२ ॥

दोनो प्रतिपक्षा सेनाओं का अतक वर्णन ।

पहरी ॥ दुअ दीन हिदु समुहु प्रमान । चालुक्क राइ अरि मलन मान ॥

चहुआन खर रवि जेम बीर । पट्टन सु राइ अरि नसन धीर ॥

छ० ॥ २३ ॥

क्रूरम्म दान पग रूप दीन । अज्ञान जान रज रूप कौन ॥

छ० ॥ २४ ॥

दूहा ॥ करिण सेन समुप सुवर । गरुड व्यूह किय बीर ॥

लरन मरन भारथ्य कृत । जञ्जर कारन सरौर ॥ छ० ॥ २५ ॥

निह व्यूह क्रूरम करि । नाग व्यूह सुरतान ॥

या ततार पुरसान पति । नडि मौज मैदान ॥ छ० ॥ २६ ॥

पञ्जून सेना के व्यूहवध्य होने का स्वपष्टीकरण ।

कवित ॥ पग जहव परिहार । पुच्छ पामार सुधारिय ॥

भट्टी सेन विपन्न । पिड पाव अधिकारिय ॥

जानु होइ पुडौर । नय उर मस अस करि ॥

चच अघ सुभ जीह । बीरे क्रूरम पयधरि ॥

श्रीवा सुजोति गज गाह गहि । लहि लोहानौ ठौर बर ॥

खचह मुजौक पञ्जून सह । दौरि पच्यौ बलिभद्र बर ॥ छ० ॥ २७ ॥

युद्ध की तियि ।

धरिय सत दिन रछौ । बार नौमीति सुक बर ॥

पच बीस आवट्टि । *यट्टि लोध सुवधि थर ॥

(१) मो गरुड । (२) मो पग । (३) ए रु को राइ धरि ।

(४) ए रु को श्रीगह । (५) ए लरि । (६) मो मोठि । (७) मो मुनीक ।

* ए रु को - "लुधिय पर लुधिय बरि थर" ।

कूरगाह पग झारि । सार भारथ्य सु किनौ ॥

सार बज्ज धरियार । टोप टंकार सु गिनौ ॥

आचार चार राजन वरे । मरे वीर रजपूत वर ॥

संग्राम स्तर कूरंभ सम । नर न नाग दानव 'सुर ॥ छं० ॥ २८ ॥

श्लोक ॥ मानवं दानवं नैवं । देवांनां कुरु पांडवो ॥

कूरगा राइ समो वीरं । न भूतो न भविष्यते ॥ छं० ॥ २९ ॥

पञ्जून राय की सेना का बड़ी वीरता रो युद्ध करना ।

कवित्त ॥ हाइ हाइ कहि दृष्ट । इष्ट बलिभद्र अंमरिय ॥

बलिय तप्प कूरंभ । सार साहित धुमारिय ॥

यो पजून दल मल्यौ । सोइ ओपम कवि भाइय ॥

कमल पंति गजराज । सरित मरुगह झुकि आहिय ॥

घन धाइ अधाइ सुधाइ धट । करिय एम कूरंभ घट ॥

सुध्याट आइ कुध्याट किय । सुभट धाइ भारथ्य 'थट ॥ छं० ॥ ३० ॥

दूहा ॥ सुभट धाइ भारथ्य भिरि । ते अंगन दिष्याइ ॥

सधि सुकै कहम हुए । हय तरंग सुभभाइ ॥ छं० ॥ ३१ ॥

इरा युद्ध में पञ्जून राय के भाइयों का मारा जाना ।

जुद्ध सुचालुक राइ तहँ । चार बंध परि घेत ॥

पंच आत कूरंभ वर । उप्यारे सु अचेत ॥ छं० ॥ ३२ ॥

पञ्जून राय की जीत होना और शत्रु सेना का

गाल भता लूटा जाना ।

कवित्त ॥ उप्यारिग पञ्जून । वीर बलिभद्र उपारिग ॥

उप्यारिग पाण्डव नरिंदु । धाव 'सठ' तन धारिग ॥

परि पंचाइन कान् । जैत जैसिंह जवानं ॥

हिंदु वीर दक्षज्ञान । मेय्श गड्डन परिमानं ॥

लुट्टे दरद्व गज बाजि रथ । रिध राव उप्पारयौ ॥

जस जैत लियौ कूरम रैन । जीवन अवनि सु धारयौ ॥ छ ॥ ३३ ॥

पृथ्वीराज के प्रताप की प्रशंसा ।

दूहा ॥ * आज भाग चहुआन घर । आज भाग हिदवान ॥

इन जीवत दिखौ घरा । गज न सकै आनि ॥ छ० ॥ ३४ ॥

पञ्जून राय का भाइयो की क्रिया करना और

२५ दिन गमी मना कर दान देना ।

कोस पट्ट चहुआन वर । समुप गय वर वीर ॥

उमै बीस अरु पच दिन । न्हाइ दान दिय धीर ॥ छ० ॥ ३५ ॥

इति श्री कविचद विरचिते प्रथिराज रासाके चालुक समागम

पञ्जून विजय नामइकतालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४१ ॥



अथ चंद द्वारका समयौ लिख्यते ।

(वयालीसवां समय ।)

कविचन्द का द्वारिका को जाना ।

दूहा ॥ चलन चित्त चंदह कयौ । चलि द्वारिका सु चित्त ॥

मगि सौध ग्रथिराज पहु । सजिय सकल अष सध्य ॥ छ० ॥ १ ॥

कविचन्द का यात्रा समय का साज सामन और
उभके साथियो का वर्णन ।

कवित्त ॥ दोइ सहस है वर विसाल । सत वाहन सध्यह ॥

सत गयद रय रुढ़ । साज आसन ग्रथि रज्जह ॥

पक्षक बैद जोजन प्रमान । यटे * सधल कृत पाइय ॥

साज लख्य तन लख्य । सकल बल कोरि सजाइय ॥

धानुक धार सत अठु चलि । करन तिथ्य जाचह चलिय ॥

सत सुभट दान दिय सुरिय गज । मनहु जमन सागर मिलिय ॥

छ० ॥ २ ॥

चन्द का चित्तौर के पास पहुंचना ।

*गज धट्टन चवाल । मेरि सहनाइय बज्जिय ॥

चलत आइ चिचकोट । पुरन चियलोक सुरज्जिय ॥

कन्ध मान लेय न कविद । जोजन दुअ दिषिय ॥

शृगारिय गढ हट्ट । मनो इद्रासन पिषिय ॥

(१) मो चित्त ।

(२) मो पै ।

(३) ए क को-विलास ।

(४) ए क को बारुनह ।

(५) मो समध्यह ।

* पाठ अधिक है ।

(७) मो घन ।

(८) ए क का-पराधिय ।

(९) मो मनो इन्द्र थान विसिषिय ।

बजि चंब बंब वज्जन बहुल । मन उच्छोह मिष दान दिय ॥
गढ़ भद्रि धाम मनु राम पुर । कवि सु तथ्य डेरा करिय ॥ छं० ॥

चित्तौर गढ़ की स्थापना का वर्णन ।

*दूहा ॥ गिरवर गूंगर गहर वन । प्रबल पेयि जल ठौर ॥
चिचंगद मोरी बसिय । दे गढ़ नाम चितौर ॥ छं० ॥ ४ ॥

चित्रकोट गढ़ की पूर्व कथा ।

कवित्त ॥ चित्रकोट दिय नाम । बंधि चिचंगद सर वर ॥
पंषि असंघ निवास । सधन छाया तट तरवर ॥
बुरज कोट कंगुरा । गौष जारी चित्रसारी ॥
महलायत चहवचा । शिरन कारंज किनारी ॥
पागार पोरि आगार करि । थान सदेवत पिष्ययौ ॥
छतीस बंस महिचंद कहि । मोरी नाम सुरक्ष्ययौ ॥ छं० ॥ ५ ॥

उक्त गोरी का गोमुष कुंड बनवाना ।

अरिस्त ॥ गोमुष कुंड बंधि फुनि मोरिय । सुर पति विपन सोभ सब चोरिय
भार अठार उगी बन राइव । देषि कें रीझ रह्यौ वरदाइय ॥ छं० ॥ ६ ॥
एक सिंहनी का त्रिषि के शिष्य को खालेना ।
कोरि कहि पापान महि । गिरि कंदर इका रिष्य ॥
मुहु अग्गे सिंधनि भषत । हनि बालक तिहि सिष्य ॥ छं० ॥ ७ ॥

सिंहनी की पूर्व कथा ।

कवित्त ॥ नगर अजोय्या नृपति । नाम कौरति धवस्त ॥
सर जसुरि तातदृ । रमत सिकार सयस्त ॥
तानि वान कृपान । हनिय हिरनी ग्रभ वंतिय ॥
तरफारत अवलोकि । ओन घन धार अवंतिय ॥
उतपन्न ग्यान बैराग लिय । कुंवर स कोसल संजुगत ॥
अड़ सट्टि करे तीरथ अटन । चित्रकोट महि तप तपत ॥ छं० ॥ ८ ॥

(१) ए. क. को.-सथ्य । *छन्द ४ से ले कर छन्द १९ पर्यंत मो.-प्राति में नहीं है और
पाठ से भी यह अंश क्षेपक मालूम होता है ।

द्वरी ॥ तप तपत आइ चित्रकोट मझि । सहचरिय जाइ इह करिय सुझि ॥
 खूनि कान बानि रानी प्रफुल्लि । उतरन महल सोपानि भुल्लि ॥
 छ० ॥ ८ ॥

अनुराग सुतपति को हरय्य । उठि चलिय मिलन मारग गवय्य ॥
 चकचूर भइय परि पटुमि आइ । तडिता कि तेज तारका दिपाइ ॥
 छ० ॥ १० ॥

जल जलनि विष्य गिरि भूष पात । पावहि न गति इह सति वात ॥
 जप तप्य तिथ्य अस्नान दान । काटिक पढहु पंडित पुरान ॥ छ० ॥ ११ ॥
 अतह सुमति गति होइ सोइ । अहकार उअर जिन करहु कोइ ॥
 ॥ छ० ॥ १२ ॥

वित ॥ वधिनि होइ विकाराल । आइ गिरि कदर प्यासिय ॥
 प्रगटि पुब्र तामस । भजि अंग जगल नासिय ॥
 दूत कति चमकत । जरित कुदन मय मेप ॥
 ईह । 'मोह करत । जनम पछिलो सपेप ॥
 असराल चय्य अखू ढरत । पखूरहि तुच मस गलि ॥
 इक मास लगि अनसन करि । गय नगन उडि हस चरि ॥ छ० ॥ १६ ॥

ह । ॥ किति धवल धीरज धरि । अवन आइ उपकठ ॥
 राम नाम समलाइ सुर । कुअर पाइ बैकुठ ॥ छ० ॥ १४ ॥
 रघुवती राजिद नैं । मन छटकि रपि तब ॥
 अभवती हिरनी हनी । तिहि वदलो लिय अन्न ॥ छ० ॥ १५ ॥

कविचद का आना सुन कर पृथाकुमारी का
 कवि के डेरे पर जाना ।

कवि ॥ कवि सु सय्य मति प्रवल । बेलि सहचरी मति बर ॥
 नव नव रस भोजन । अनत इद्रानि इद्र घर ॥
 रूप माल सु विसाल । मेघ माला सुभ मजरि ॥
 मदन बेलि मालति । विसाल सत अड अनवर ॥

नरकांध रथ के आरुहिय । ठंकि छवि मनो अंब जल ॥
प्रति चलिय भट्ट कट्टन दरिद । मोघ निरधि मनुराज धल ॥
छं० ॥ १६ ॥

कितक छवि वस्त्रंग । मडि माला मुत्तिय मनि ॥
सौतारामो सहस । कनक थारी सत बीजनि ॥
अगर पान अड़सठ । रजक पालिका पठाइय ॥
सुवन इक्क पुत्तरिय । कर सु सौरंग मुह गाइय ॥
मुकलिय प्रथा कवि थान कहं । भरन भार अन्न भरिय ॥
प्रति प्रति सु दान मानह प्रवल । कवि सपियन आदर करिय ॥
छं० ॥ १७ ॥

कवि का चितौर जाना ।

दूहा ॥ दिय बहोरि नय नगरे को । प्रिय आसीस पढ़ाइ ॥
प्रति सुनंत मति दति प्रवल । करिस कूप कल नाइ ॥छं०॥१८॥
नील कांठ सिव दरस करि । मात भवानी भेटि ॥
फुनि नरिंद चित्रंग मिलि । चंद दंद तन भेटि ॥ छं० ॥ १९ ॥
कवि का किले गे भोजन करने जाना । पृथा का

उरो भोजन परोराना ।

अरिस्त ॥ प्रतिहारन रावन पधराइय । बोलि मंच भोजन बुलवाइय ॥
कारन प्रथा जेवन परिमानं । उड़ि युगार अगार सु प्रमानं ॥
छं० ॥ २० ॥

लोह कांड रचे सुर सची । कुरछन गहारि दियंत सु धिची ॥
मनो ओपमा में छवि रची । जेबै वरन अठारह जची ॥छं०॥२१॥
एकलिंग अवतार सु धारिय । नारि केल पुजै नर नारिय ॥
कालिनि कलंक काल काटि भारिय । जेबै सब परिगह परिवारिय ॥
छं० ॥ २२ ॥

(१) ए.-सुह ।

(३) मो लहो ।

(२) ए क. को.-कूप, कूर ।

(४) मो.-मेछ ते रंची ।

केसर अगर पौरि सब किछिय । पान सुपारि कपूर प्रसिद्धिय ॥
 हथ्यौ है मोती नग विद्धिय । दान मान रावर कर दिद्धिय ।
 छ० ॥ २३ ॥

कह अमरसिहादि सामतों का पृथा कुमारी को उपहार देना ।

कनक साज है तुरी पठाइय । कण्ठ एक गज मुत्तिय गाहिय ॥
 अमरसिध गज मुत्ति सुभाइय । जो चित्र ग अत्य सम राइय ॥
 छ० ॥ २४ ॥

मोरी रामप्रताप महाभर । सुप्यासन आरोहिय उप्पर ॥
 मोती जिरित मोल धन सज्जर । दीय सु दान मान अपरपर ॥
 छ० ॥ २५ ॥

चन्द का चित्तोर से चलना ।

दूहा ॥ चलिय चंद पट्टन पुरह । अहि सिर पर धरि पीर ॥
 पथ एक पप्पह चलिय । द्विग सागर दियि नीर ॥ छ० ॥ २६ ॥
 द्वारिकापुरी में पहुंच कर श्रद्धा भक्ति से दर्शन
 और यथाशक्ति दान करना ।

कवित्त ॥ उत्तरि हथिय वाजि । * पाइ प्रति मिले सु भगन ॥
 दिठिय देवल धज्ज । पाप परहरि अंग अगन ॥
 गजत पिठ गोमतिथ । भान तप तेज विराजिय ॥
 सागर जल उच्छलै । पाप भजन पाराजिय ॥
 रिनछोर राइ दरसन करिय । परिय मोह मानुष्य पर ॥
 सुरधान मान इतनी सुचित । देवलोक कैलास दर ॥ छ० ॥ २७ ॥
 दूहा ॥ घाटका मडप छत्र लहि । मुत्तिय पतिन मोल ॥
 मनो चंद बहु भान मभ । कल मय कटुत काल ॥ छ० ॥ २८ ॥
 फिरि परदख दरसन करिय । हुअ परतप्य प्रमान ॥
 तब अस्तुति सु प्रनाम करि । प्रभा विराजिय भान ॥ छ० ॥ २९ ॥

कावेन्द कृत रणछोड़ जी की स्तुति ।

रसावली ॥ तुअं देह हट्टी, तुअं मान वट्टी । तुअं बीर दट्टी, तुअं धाम ।

छं० ॥ ३० ॥

तुअं लोक पालं, तुअं जालमालं । तुअं भालमालं, तुअं र ।

छं० ॥ ३१ ॥

तुअं देस दण्डी, तुअं भीर भण्डी । तुअं द्रोप रण्डी, तुअं सर्ग सण्डी ।

छं० ॥ ३२ ॥

तुअं तीन रण्डी, तुअं ब्रह्म लण्डी । तुअं पंथ रोह्नी, तुअं गोप मोह्नी ।

छं० ॥ ३३ ॥

तुअं सचु दोह्नी, तुअं सय सोह्नी । तुअं सिद्धि तूह्नी, तुअं रिद्धि सोह्नी ।

छं० ॥ ३४ ॥

तुअं सर्व अडं, तुअं तीन कुंडं । तुअं पित्त पंडं, तुअं चार मुंडं ।

छं० ॥ ३५ ॥

तुअं ग्यान गट्टं, तुअं रंभ यट्टं, । कवीचंद पट्टं, गयौ दूर पट्टं ॥ छं० ॥ ३६ ॥

दूहा ॥ हरिहर वच सच वारि वर । पुर धरि सिर पर इंद ।

मनु गुरे तर फर भार नमि । गालमलि हलि गोविंद ॥ छं० ॥ ३७ ॥

देवी की स्तुति ।

भुजंगी ॥ नमो तुं नमो तुं नमो तुं कुमारी । नमो तुं नमो तुं ज संसार सारी ।

नमो तुं अमण्डी नमो बीज भण्डी । नमो रिष्य पूजंत सजंत सण्डी ।

छं० ॥ ३८ ॥

नमो तुं रटै राज राजें रजाई । नमो तुं ज संसार तें सिद्ध पाई ।

नमो तंत जालं विकालंत राई । नमो विश्वयानं गिरंजा गिराई ।

छं० ॥ ३९ ॥

* नमो ससिपालं अकालं अमण्डी । नमो कालजन्म न कालं न सण्डी ।

नमो एका भगनी भरतार पेंच । नमो कोरि कोरं करतार संच ।

छं० ॥ ४० ॥

(१) ए. कृ. को.-पंडं । (२) ए. कृ. को.-तूझ, तुझ, तुजे । (३) ए. कृ. का. गिरजा ।

* भो.-नमो ससि पाल अकालंत राई । नमो काल जन्म न कालं नसाई ॥

नमो सिद्ध तु रिद्ध तु दद्धि पानी । नमो काल तु भाल तु साल रानी ॥
नमो किति तु मत्र तु गीत गानी । नमो आदितु अत तुं जोग जानी ॥

छ० ॥ ४१ ॥

नमो विश्व तु भित्त तु भार भारी । नमो जोग तु जीव तु जुग्य चारी ॥
नमो भूमि तु धूम तु अब पानी । नमो तप्प तु ताप तु अक्षरानी ॥

छ० ॥ ४२ ॥

नमो बाल तु दृढ तु हल चाली । नमो भान तु मान तु मुक्ति माली ॥
नमो व्याध तुं सार तुं वाग वह । नमो भुड मुड तुही पारि सह ॥

छ० ॥ ४३ ॥

नमो पच तुं द्रव तु द्रिति धारी । नमो दृढ तु दृष्ट तु अघ्य हारी ॥
नमो रूप तु रग तु राग रत्ती । नमो भील तु भाव तु सील सत्ती ॥

छ० ॥ ४४ ॥

नमो अत्त तु दत्त तु वाद वानी । नमो चद चडी सदा चाद मानी ॥
छ० ॥ ४५ ॥

कवि का होम कर के ब्राह्मण भोजनादि कराना ।

॥ करि असतुति ससतुति सुवर । होम दवन हरि नाम ॥
सीवन तुला सु साज वर । करि सुभट्ट मुचि काम ॥ छ० ॥ ४६ ॥
हय हथ्यी सत दान दिय । रय रथिय थ्रव दिख ॥
हाटक चीर वसु धरा । कवि घर दीन सु निह ॥ छ० ॥ ४७ ॥

द्वारिकापुरि मे छाप लगवाने का महात्म्य ।

कवि ॥ * के द्वारामति जाइ । छाप भुज नाहि दिवावहि ॥
ते दरवारह चट्टि । न्याय हय पिठ दगावहि ॥
हरि चरन करि सेव । रहि न उभै जुरि करि वर ॥
ते वागुरि अवतरे । अधोमुप भूलत तर वर ॥
दीनी न जिनहि परदृष्टिना । दडदत्त करि सुइ उर ॥

(१) ए ठ को रगी ।

(२) ए कू को - समा ।

(३) ए ठ को - धर ।

(४) ए ठ को अनत अनि ।

* छन्द ४८ और ४९ दोनों में प्रति में नहीं हैं

या क्षेपक जान पड़ते हैं ।

(५) ए - क्षमत, को मूलत ।

* कविचंद कहत ते वृषभ होइ । अरहट जु 'पेरिरंत नर ॥४॥
 भद्र भेषनह हुए । जाइ गोमति न आवै ॥
 तजै न अम सेवरा । होइ करि केस लुचावै ॥
 मुष पावन हन करै । वस्त्र धोवै न विवेकां ॥
 आसु अंघ परंत । करत उपवास अनेकं ॥
 दरसन देव मानै नहीं । गंगा गथा न आइ क्रम ॥
 कविचंद कहत इन कहा गति । किहि मारग लगै सु अम ।
 छं० ॥ ४६ ॥

द्वारिकापुरी से लौट कर चन्द का भीमदेव की राजधानी
 पट्टनपुर में आना ।

बंदि देव द्वारिका । करिय अति दान अचंगल ॥
 पट्टन पति भीमंग । मनो चंदन मिलि अंगार ॥
 वास भट्ट गरलंत । लपटि लग्गा मन डोहर ॥
 तिन सेवर बदि बह । चंद मावस उग्गा बर ॥
 तिन नगर पहुच्यौ चंद कवि । मनो कैलास समाष लहि ॥
 उपकांठ महल सागर प्रवल । सधन साह चाहन चलहि ॥४७॥

पट्टनपुर के नगर एवं धन धान्य की शोभा वर्णन ।

सहर दिषि अंघियन । मनहु बहर वाहन दुति ॥
 इक चलंत आवंत । इक ठलवंत नवनि भति ॥
 मन दंतन दंतियन । इलो उप्पर इल भारं ॥
 बिष भारथ परि दंति । किए एकठ व्यापारं ॥
 रजकंब लष दस बीस बहु । दोइ गंजन बादह पयौ ॥
 अनेक चीर रूप फिरंग । मनो मेर कंठै भयौ ॥ छं० ॥ ५१ ॥

(१) ए. कु. को-फिरत ।

(२) ए. कु. को.-दारह ।

* "कविचंद कहत" ऐसा पाठ कहीं भी नहीं पाया गया है कथाक्रम, काव्य, भाषा आदि ४८ और ४९ छन्दों की बहुत कुछ भिन्न है अत एव इन दोनों छन्दों के क्षेपक होने का सन्देह है ।

(३) ए. कु. को.-वाहन ।

पलक विविध धन भार । रतन मुत्तिय द्विग रजत ॥

गज भरि लिज्जै कोरि । दान पुकत मति भजत ॥

मनों गुल फूलिय धरनि । किछ नवग्रह ताराइन ॥

लेख न इव हिम दान । रज्ज साला हिम माइन ॥

भापन सु भाय कहुँ सुपह । सिर खानह तरु धरु धवल ॥

प्रतिविध वसहु द्रव्य मानि मन । कवि मोहन दिप्यौय बल ॥ छ० ॥ ५२ ॥

पट्टनपुर के आनन्दमय नगर और वहा की सुन्दरी

स्त्रियो की शोभा वर्णन ।

अर्द्धनराच ॥ वज्रान वज्रय धन । सुरा सुर अनगन ॥

सदान सह सागरे । समुदय पटा झर ॥ छ० ॥ ५३ ॥

‘अथ द कै गज वर । ॥

हल मल हय गय । नरा नर नरिदय ॥ छ० ॥ ५४ ॥

गिर वर सुरा धर । सबह सागर पुर ॥

अनेक रिद्धि भानय । नव निध सु जानय ॥ छ० ॥ ५५ ॥

भरे जु कुभय घन । इला सु पानि गगन ॥

असा अनेक कुडन । ॥ छ० ॥ ५६ ॥

सरोवर समानय । परीस रभ जानय ॥

वतक सार समय । अनेक हस कभय ॥ छ० ॥ ५७ ॥

भरै सु नीर कुभय । ॥

अष्ट काम रथ्यय । सु उत्तरी समथ्यय ॥ छ० ॥ ५८ ॥

राज्य उपवन में चन्द का डेरा दिया जाना ।

दूहा ॥ दिय डेरा कुदन सुदिग । जे लीने सुरतान ॥

तर ते वर तबू तनिय । मनहु कलस कै भान ॥ छ० ॥ ५९ ॥

गज बधे गज साल में । हय बधे हयसाल ॥

अथ कोस विस्तार अति । भई भीर भर चाल ॥ छ० ॥ ६० ॥

किनक जान भोरा कह्यो । दिल्लीपति दानेस ॥

अंबाई वर दान इन । नाम चंद ब्रह्म बेस ॥ छं० ॥ ६१ ॥

भीमदेव का कविचन्द के पास अपने भाट जगदेव को भेजना ।

कवित्त ॥ कहै भीम जगदेव । जाहु तुम चन्द ^१समप्यन ॥

नग मनि मुत्तिय माल । परसपर वाद सपप्यन ॥

दियौ सु हृष्यिय एक । सत हय इक ऐराकिय ॥

लै सु जाहु तुम लच्छि । भट्ट पुच्छौ ^२मनुहाकिय ॥

पल दुष्ट भट्ट आयौ वरै । करि शुभभौ मंचह सुपरि ॥

आरंभ डंभ सुनियै बहुत । कर पिछानि मन घेद करि ॥ छं० ॥ ६२ ॥

जगदेव का कविचन्द से मिलना ।

दूहा ॥ चर लगा दिसि कवि चरा । आयौ भोरा भट्ट ॥

करिय अनूपम रूप दुरि । बेस अचंभम ^३नट्ट ॥ छं० ॥ ६३ ॥

दीवी जाल कुदाल ढिग । अंगुस पैरी हथ्य ॥

पूछै भोरा भट्ट इह । किन समान इह काथ्य ॥ छं० ॥ ६४ ॥

जगदेव का अपने स्वामी भीमदेव के बल

वैभव की प्रशंसा करना ।

कवित्त ॥ सोमसर किन बधिय । चंद जानौ वह गतिय ॥

आबू गढ़ किन लीन । भीम चालुका जुध मत्तिय ॥

इह दरिया कौ राव । सिद्ध पट्टनवै नंदन ॥

इह सु जुद्ध तें वडौ । गाम धामह गति गंमन ॥

कवि जुगति जानि अधिकौ कहों । बुझभौ नाहिन मरम गति ॥

इह पंच दीह में जानिहौ । इह तुम इह हम जुद्ध मति ॥ छं० ॥ ६५ ॥

दूहा ॥ मिलिय परसपर रसन रहि । मिलि नाहर इक ठौर ॥

वत्त धत्त भर सब मिलि । ^४सह अष्यिय द्रव कौर ॥ छं० ॥ ६६ ॥

(१) मो. सलप्यन ।

(३) ए. क. को.-मन भट्ट, भट्ट ।

(२) मो.-मनुहारिय ।

(४) मो.-“सह अष्यिय इव कौर”

साज वाज सब फेरि दिट । प्रथु किय किति अपार ॥

जगदेवह भोरा मनिय । 'काह सु कवित उचार ॥ छ० ॥ ६७ ॥

कविचन्द का पृथ्वीराज की कीर्ति का उच्चार करना ।

सोमेसर किन बधिय । सार सेंमुह कित सजिय ॥

कन्द पीर क्यों सहिय । किछ किन आवु कजिय ॥

इह गुजरी नरेस । वह सु दिल्ली विरदा मै ॥

झूय पीर आदरै । धाम उदरे वत धामै ॥

वागुरिन वृत्त अवतार गनि । भिरि भुअग भोरा सुवर ॥

अवतार लियौ कलि उप्परौ । कलि प्रगटिय मनु सहस कर ॥

छ० ॥ ६८ ॥

पुहमि राइ हस्तिनी । चार हडी रधानिय ॥

इक गजनी सहाव । सुइ सुपौ तुर 'तानिय ॥

इक राइ परमार । सधर सिर वानग जित्यौ ॥

कारन मद चालुक । दर्ई तिहुवार विधुतौ ॥

मेल्ही जु तीन तिहु राइ घर । सु इह बत्त जुग सब का य ॥

इम चन्द कहै जगदेव सुनि । एक राइ तुम उबरिय ॥ छ ॥ ६९ ॥

६॥ दस लखन भयन करै । प्रथु सामत कुमार ॥

भोरा उठि गोरा गयन । तब सिर छव उभार ॥ छ० ॥ ७० ॥

चढि भोरा तुम उप्परै । दरियापति दस लख ॥

'यग साहि भजै सुभर । सित सूर पति भय ॥ छ० ॥ ७१ ॥

जगदेव का कहना कि अच्छा तो तुम अपने पृथ्वीराज
को लिवा लाओ ।

कवित ॥ दइय सौय जगदेव । जाहु तुम लै आचौ प्रभु ॥

जदिन सूर सामत । तदिन पिप्यौ सुरति सुभ ॥

ताम करिग तुम सुथिर । पाव चचल होइ जैहै ॥

(१) का - कवि ।

(२) ए रु को - रधानिग ।

(३) ए रु को - सुतानिग ।

(४) ए रु - मृग ।

मेछ मिलै षट पंड । परम ^१उतमंग जुध जुरहै ॥
 रन पुध संपूरन भगिहै । जब महिमानी हम करै ॥
 जगदेव भट्ट संची चवै । चंद भट्ट इम उच्चरै ॥ छं० ॥ ७२ ॥

भोराराय भीगदेव का चन्द के डेरे पर आना ।

दूहा ॥ आइ सु भोर चंद थह । हय गय नर भर भार ॥
 सथ्य सपन्नौ तथ्य सब । बजा बजाय सार ॥ छं० ॥ ७३ ॥
 देषिय डेरा भीम नटप । उच्चै थह आवास ॥
 गौष पट्टिका बनि गरुअ । देषिय बादर ^२रास ॥ छं० ॥ ७४ ॥

कविचंद का भीगदेव को अगवानी देकर मिलना ।

आदर करि आसीस दिय । मुअ भोरा भीमंग ॥
 सिद्ध दिद्ध जै सिंध तुअ । तिन पहु पुजि पवंग ॥ छं० ॥ ७५ ॥
 कविचन्द का भोराराय भीगदेव को आशीर्वाद देना ।

पञ्चरी ॥ जिन सिद्ध दिद्ध लिङ्गी विषंड । अनेक दीप वाहन उतंड ॥
 जिन धर मनुष्य पहिरे न चीर । कलि कूट रूप देषंत वीर ॥ छं० ॥ ७६ ॥
 गिर धरै कंध उप्पारि नंष । पहिरे सु एक ओटं सुपंष ॥
 प्रति तिरे मच्छ सागर पयाल । बहु लिए रतन अनेक माल ॥
 छं० ॥ ७७ ॥

तिन जीति लिए बहु रिद्धि देस । सब दीप सगुग गुजर नरेस ॥
 भक्ति दीप रोम राहव कुसाव । संजाल दीप प्रति काल आव ॥
 छं० ॥ ७८ ॥

गिरवान दीप कंचन गुहीर । ^३तिन गुगुग दगिग आसिध वीर ॥
 हय मुष्य ग्राह चर अंब एक । तिन जीति लिए जल जानि देक ॥
 छं० ॥ ७९ ॥

(१) ए. क. को -उतकंठ ।

(३) ए. क. को.-जिन ।

(२) को.-राव, ए.-रात ।

(४) ए. क. को.-टेक ।

वाहन अरोहि लीने असय । प्रति पान पुरोतन लख पय ॥
 अवतार सेस लीनौ अवन्नि । इन भति चद्र कवि करि तवन्नि ॥
 छ० ॥ ८० ॥

कविचन्द और अमर सिंह सेवरा का परस्पर वाद
 होना और कविचन्द का जीतना ।

कवित्त ॥ तब पुष्टिय भीमग । तुम वरदान सु दिडिय ॥
 वाद 'वहि देवग । सुपन पिप्पिय मन सिद्धिय ॥
 चद देव किय सेव । तिन सु अमर । बुलाइय ॥
 थूल रथ्य आरूढ । चद असमान चलाइय ॥
 तरवर सुपत्त बैठी तिनह । फिरि न वाद कौनौ बलिय ॥
 नट्टी जु सपी उपजी अनल । सुरस वचि नचौ कलिय ॥ छ० ॥ ८१ ॥
 अरिस्त ॥ जीता वे जीता चदान । परि पिप्पिय रथिय रमान ॥
 मुप बुलै जै जै चहु आन । नाटिक करि नचै निरवान ॥ छ० ॥ ८२ ॥
 हल हलत तबू हल हलिय । बदि भक्त है गै पति चलिय ॥
 चद मन पट्टन चल चलिय । मनो अब ताराइन तुलिय ॥
 छ० ॥ ८३ ॥

भीमदेव का अपने महल को लौट जाना ।

दृष्ट ॥ आरोहिय असु उप्परह । उडी रेन पुर घेह ॥
 भोरा चढि सोरा भयौ । गयौ अप्पने ग्रहे ॥ छ० ॥ ८४ ॥
 कविचन्द का सुरतान की चढाई की खबर सुनकर
 दिल्ली को प्रस्थान करना ।

प्रथु कागद चंदह पडिय । आयौ परि गजनेस ॥
 कूच कूच मग चद परि । पहुँचौ घर दानेस ॥ छ० ॥ ८५ ॥
 इति श्री कविचन्द विरचिते प्रथिराज रासके चद
 द्वारिकागमन देव मिलन परस्पर वादजुरन
 नाम बयालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४२ ॥

(१) मो छद ।

अथ कैमास जुद्ध लिप्यते ।

(तैंतालीसवां समय ।)

एक समय शेहाबुद्दीन का तत्तार खां से पृथ्वीराज
के विषय में चर्चा करना ।

गाथा ॥ इक दिन साहि साहाब । अभिय समह पान तत्तार ॥
अरु पुरतान विचार । समर समुप राज प्रथिराज ॥ छ० ॥ १ ॥

तत्तार खां का वचन ।

उच्चरि ताम तत्तार । अरि अति जोर खर सम रार ॥
सम कैमास विचार । पट्ट दिसि मंत साह साहाब ॥ छ० ॥ २ ॥

कैमास युद्ध समय की कथा का खुलासा या अनुक्रमणिका
और शेहाब की फौजकशी का वर्णन ।

इनूफाल ॥ बर भव किय सुरतान । कैमास दिसि परवान ॥
चहुआन दिखिय चित । पट्टूअ दिसि मन पति ॥ छ० ॥ ३ ॥
सवत हर आलीस । वदि चैत एकमि दीस ॥
रवि वार पुष्य प्रमान । साहाब दिय मेलान ॥ छ० ॥ ४ ॥
चय लप्य अस असवार । वानैत सहस चिआर ॥
पयदल सु लप्य प्रचड । चय सहस मद गल मंडे ॥ छ० ॥ ५ ॥
चलि फौज दुदमि वज्जि । भद्व कि अबर गज्जि ॥
वाने सु गज्जि सिरज्जि । सुर राज विपन विरज्जि ॥ छ० ॥ ६ ॥
दस कोस दिय मेलान । पह पेह रुधिग मान ॥ छ० ॥ ७ ॥

शहाबुद्दीन का सिन्ध पार करके पारसपुर में डेरा डालना ।

दूहा ॥ पारसपुर तहाँ सरित तट । उतरि आय साहाब ॥

रबि उगगत दल कूच किय । उलटि कि साइर आव ॥ छं० ॥ ८ ॥

हनूफाल ॥ उलथ्यौ कि साइर आव । सम चढ़े पान नवाब ॥

ततार मंच सु प्रौढ़ । पुरसान पानति गूढ़ ॥ छं० ॥ ९ ॥

मारफा पान सुमन्न । वर लाल पान नहन्न ॥

आकूब तेजस पान । ममरेज बंधव मान ॥ छं० ॥ १० ॥

सब लिए हय गय रिद्धि । उत्तरिय पानति सिद्ध ॥ छं० ॥ ११ ॥

दिल्ली से गुप्तजर का आना ।

दूहा ॥ उतरि साद वर सिंधु नदि । किय मुकाम सब सस्थ ॥

निसा महल सुरतान किय । बोले पान समस्थ ॥ छं० ॥ १२ ॥

आइ भट्ट केदार वर । दै दुवाहु तिन वार ॥

कहै साहि के दारसम । कहौ अर्थ गुन चार ॥ छं० ॥ १३ ॥

मंडि भट्ट रिन जंग गुन । साहि पस्थ सम सोइ ॥

तन विभूति सिंगी गरै । आइ दूत तब दोइ ॥ छं० ॥ १४ ॥

धृम्माइन काइथ सुकर । इह लिख्यी अरदास ॥

आपेटका खेलन नृपति । मन किय पट्टू पास ॥ छं० ॥ १५ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना ।

परी हक दस दिसि नृपति । चढ़ि चख्यौ चहुआन ॥

धर गुजर अह मालवै । सब दिसि परत भगान ॥ छं० ॥ १६ ॥

शाह का समाचार पाकर गुप्त गोष्ठी करना ।

मुनिय वत इम दूत मुष । भय चलचित सुरतान ॥

गुज्ज महल सब बोलिकै । बैठे कारन मतान ॥ छं० ॥ १७ ॥

(१) मो.-रति ।

(२) मो.-सूढ़ ।

(३) ए. क. को.-मुसन्न ।

(४) ए. क. को.-पान हसन्न । (५) ए. क. को.-चाइ । (६) ए.-मनि ।

(७) ए. क. को. सुरतान । (८) ए. क. को.-ए । (९) ए. क. को.-गुह्य ।

पद्मरो ॥ साहाब कहै तात्तार पान । उपजै सुमच अघ्यौ सवान ॥
 'दिल्लीय तेँ जु ग्रथिराज आय । कैमास आन कीनी सहाय ॥

छ० ॥ १८ ॥

'फिरि गये लोज घट्टै अनत । मुम्भक्त छारि तो सेन अत ॥
 आपूव तमि आपैति वार । सम लालपान हस्तन हकार ॥छ०॥१९॥
 हम चारि पान बधव सु प्रीति । साहाब साहि आने सु जीति ॥
 कै जियत करै धोरह प्रवेस । कै गहँ पथ्य सका विदेस ॥छ०॥२०॥
 सामत कितक बल स्हर कौन । लग्ये सु रम जिम चून लौन ॥
 चारों सु बध हम बल 'अछेह । देही सु ग्रथक जिय एक 'एह ॥

छ० ॥ २१ ॥

जीवत बध आने सु राज । हम जुह करै साहाब काज ॥छ०॥२२॥
 दूहा ॥ सुनिय मच सब पान मुष । बध्या जोर सहाब ॥

रह पट्टू दिसि चलिथै । उलट कि साइर आव ॥ छ० ॥ २३ ॥

गहाबुद्दीन का आगे बढ़ना और पृथ्वीराज के
 पास समाचार पहुंचाना ।

कवित्त ॥ ग्यारह से चालीस । चैत विदि सस्सिय दूजौ ॥
 चथ्यौ साहि साहाब । 'आनि पजावह पूज्यौ ॥
 लप्य तीन असवार । तीन सहस मय 'मतह ॥
 चथ्यौ साहि दर कूच । 'फठिय जुगिनि घुर वतह ॥
 सामत स्हर विकासे उअर । काइर कपे कलह सुनि ॥
 कैमास मनि मचह दियौ । डिँग बैठे चामुड 'फुनि ॥ छ० ॥ २४ ॥

पृथ्वीराज का कैमास सहित सामतो से सलाह करना ।

दूहा ॥ कछ्यौ मत कैमास तहँ । सजि आयौ सुरतान ॥
 अब विलव किज्यौ नही । दल सज्यौ चहुआन ॥ छ० ॥ २५ ॥

- (१) मो "दिल्लीय तेज पृथ्वीराज आय" । (२) मो परि गए । (३) ए क को अठेक ।
 (४) ए कृ को मेक । (५) मो आय पजाव सु पुज्यौ । (६) मा सत्तह ।
 (७) मो पठिय । (८) मो पुनि ।

बेर बेर आवंत इह । मानै मेछ न संधि ॥

उरह लौन प्रथिराज कौ । आनौ साहि सु बंधि ॥ छं० ॥ २६ ॥

सुनत बचन कैमास के । कहौ राव चावंड ॥

आन राज बहुआन पिथ । हौं मारौं गज गुंड ॥ छं० ॥ २७ ॥

सुनि संमरि नृप मौज दिय । हैवर सहस भंगाइ ॥

मनि मोती सोवन रजक । हसती सपत अमाइ ॥ छं० ॥ २८ ॥

गैवर दस हय सात सै । दिय कैमासह राइ ॥

तुरी तीन सै बीज गति । दै चावंड चितचाइ ॥ छं० ॥ २९ ॥

पृथ्वीराज की सेना की उड़ाई और सागंतो के नाम कथन ।

भुजंगी ॥ चल्थौ संमरी नाथ बहुआन राजं । चढ़े लब्ध पावं समं स्वर साजं ॥

चलै मुष्य अगौ सुहृथी हजूरं । मनो प्रब्रतं गिरन मद भरत पूरं ॥

छं० ॥ ३० ॥

चल्थौ मंच कैमास सा काम अगौ । वियौ राइ चावंड सम बीर सगौ

जूचल्थौ लंगरीराइ रन जंगं । सकं राइ गोइंद सा काम अगं ॥

छं० ॥ ३१ ॥

* चल्थौ चच्च कन्हा नरं नाह रनं । चले बीर पामार तेजं तिननं ॥

नंबरं बीर नर सिंध हर सिंध दोजा । भरं राम वड़ गुजरं कनक सोजा ॥

छं० ॥ ३२ ॥

चल्थौ अचल स्वरं सुजंगं गुरनं । चल्थौ च-र पुंडीर च-रं वरनं ॥

नरं निद्धुरं स्वर कमधजा रायं । चल्थौ वधघ वधघेल रन गुरन चायं ॥

छं० ॥ ३३ ॥

शहाबुद्दीन की सेना की उड़ाई और यवन योद्धाओं के नाम ।

भुजंगी ॥ चल्थौ तमकि पुरसान साहाब भानं ।

चली फौज तत्तार पुरसान पानं ॥

वरं रुतामं पाने आषूब भानं ।

सुभै फौज साजी किधौ समुद पानं ॥ छं० ॥ ३४ ॥

(१) मो सत्त अनाइ ।

(२) मो -एकं ।

* ए.कृ.को-चल्थौ सथ्य काका नरनाह कन्हं । नं ए कृ को.-वरं वीर हरमिह वरसिंह दोऊ ।

(३) मो.-आकूत्र ।

दिपै पान दरियाव दरिया समान । लुप्यौ अश्व 'पुर पेहर वि आभमान ॥
चढ्यौ पय्यर धार पति पान पान । उमै सोर सिगी चली पति वान ॥
छ० ॥ ३५ ॥

चढ्यौ मलिक समार या ताजपान । फतेपान पाहारपा बध ज्वान ॥
अलूपान 'आलम ते अग्न वान । सुमै गय्यर पान कम्भाल पान ॥
छ० ॥ ३६ ॥

चढ्यौ पतिव मारुफपा सो अमान । चढ्यौ पहिलवान सुगाजी पठान ॥
चढ्यौ हव्वसी एक हव्वीवपान । चढ्यौ समसदीपान रुमी अपान ॥
छ० ॥ ३७ ॥

चढ्यौ ग्यास दीचस्त गरुअत पान । चढ्यौ चिच पान गुर वीर दान ॥
छ० ॥ ३८ ॥

दोनों सेनाओं का चार कोस के फासले पर डेरा पडना ।

दूहा ॥ चारि कोस चौगिरद रन । दोज समद समान ॥
उत साहिब पुरसान कौ । इत सभरि चहुआन ॥ छ० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज की सेना का आतक वर्णन ।

भुजगी ॥ चढ्यौ साहि साहाव करि जुद्ध सोज । करी पच फौज सुभ तथ्य राज ॥
बर मह वारे अकारे गजान । "हलै रत्त चौ सट्ट वैरत्त वान ॥ छ० ॥ ४० ॥
परौ फौज में सौस सुविहान छत्र । तिन देयते कपर्ई चित्त सच ॥
तहा थारि हथनारि कमनेत पच । ॥ छ० ॥ ४१ ॥
तहा लप्य पाइक पती सपेय । तहा रत्त वैरप्य की बनिय रेण ॥
तहा तीन पाहार मै भत्त जोरं । तिन गज्जतें मद मधवान सोर ॥
छ० ॥ ४२ ॥

तहा सेत उमराव सुरतान जोट । मनो पेपियै मध्य साहाव कोट ॥
इम सज्जि सुरतान 'रिन चट्टि अप्य । बिना राइ चहुआन की सहै तप्य ॥
छ० ॥ ४३ ॥

- (१) मो पुर हेवर । (२) ए रु को आगम । (३) ए रु को -मलिक ।
(४) ए को -प्रमान । (५) ए रु को -"हलै रत्त चौर सपै रत्तवान" । (६) मो चट्टिय अप्य ।

शाहबुद्दीन की रोना का पट्टूवन की तरफ कूब करना ।

कवित्त ॥ षवरि आइ प्रथिराज । निकट सुरतान सुहाइय ॥

सज्जि स्हर गज बाजि । धाक दुरजन दल पाइय ॥

किय मुकाम दिन चार । रहे गोइंदपुरा मह ॥

सुनि अवाज संसार । लख्य नयमीर सु संग्रह ॥

सत लख्य पच्छ भर आइ मिलि । कहै चंद वरदाइ वर ॥

चहुआन कलह सुरतान सम । धमधमंकि धुनिय सु धर ॥ छं० ॥ ४४ ॥

दूहा ॥ चल्थौ साहि षट्ठू दिसा । दिय मेलान मिलान ॥

लाल हसन आकूब सम । चारि भए अगिवान ॥ छं० ॥ ४५ ॥

शाह के सारुंडे गें आने पर पृथ्वीराज का पुनः रामंतों
से सलाह करना ।

कवित्त ॥ चारि धान अगवान । साहि सारुंड सु आइय ॥

सुनिय षवरि चहुआन । मंत्रि कैमास बुलाइय ॥

कहै राज प्रथिराज । साहि आयौ तुम उप्पर ॥

दल सज्जौ अप्पान । जुरें जिम आइ अडभर ॥

इह कहै राव चामंड तब । राज रहै षट्ठू धरह ॥

हम जाइ जुरें सामंत सब । बंधि साह आने धरह ॥ छं० ॥ ४६ ॥

पृथ्वीराज का पावंडराय की प्रशंसा करना और
प्रातः काल होते ही तय्यारी की आशा देना ।

कहै राज प्रथिराज । राइ चामंड महा भर ॥

तुम कुलीन वर लज्जा । लज्जा मो तुमह कंध पर ॥

रहत धटै मुहि लज्जा । बंधि आनै लज बढू ॥

कहै तामे कैमास । राज दिन सुध ल चढू ॥

इह कहिर धाव नीसान किय । भर सामंत सु बोलि लिय ॥

प्रथिराज चल्थौ रवि उगतह । पंच कोस मेलोन दिय ॥ छं० ॥ ४७ ॥

शाह का मुकाम लाडून में सुन कर पृथ्वीराज का
पचोसर में डेरा डालना ।

दूहा ॥ किय मुकाम चहुआन दल । पुर पाचो'सर नाम ॥
सुनी पवरि सुरतान कौ । लिपि लाडून मुकाम ॥ छ० ॥ ४८ ॥
कैमास को शाह के प्रात काल पहुचने की खबर मिलना ।
दूत आइ पहरेक निसि । कही पवर कैमास ॥
पहर एक पतिसाह कौ । मो पच्छै दिपि पास ॥ छ० ॥ ४९ ॥
पृथ्वीराज की सेना की तथ्यारी होना और कह
का हरावल बाँधना ।

कवित्त ॥ राज पास कैमास । पवरि सुरतान कही अप ॥
सजौ सेन अप्पान । जाइ सनमुप मडै 'वप ॥
पच फौज साहाव । करिय भर पच सु अगगर ॥
सजौ फौज अप्पान । नाम लिपि लिपि तहा सुभर ॥
मनौ सु वत्त सामत मिलि । पच फौज राजन करिय ॥
अन भग जग 'नटप नाह नर । कन्ह कक अगो धरिय ॥ छ० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज की पचअनी सेना का वर्णन ।

भुजगी ॥ 'सजी नचि कैमास की फौज दूजी । सयें पच हज्जार है अनिय पूजी ॥
सुभै पच हज्जार कामनैत पाले । वर पच में मत मै मत' वाले ॥
छ० ॥ ५१ ॥
तहा कन्ह चहुआन सामत साजे । तवै 'तीसरी फौज वाजिच बाजे ॥
सहस पच असवार गेहे सु पच । सहस पच 'माले सहे लोह अच ॥
छ० ॥ ५२ ॥
सज्यौ गरुअ गहिलौत गोइ दर्राज । चली फौज चौथी करै लोह साज ॥

- (१) ए रु को रस, रस नाम । (२) मो पव । (३) मो नर नाह नृप ।
(४) मो करी । (५) ए रु को चाले ।
(६) मो तीस करि । (७) ए रु को वाले याले ।

बरं पंच हथ्यी सहस्र पंच बाजं । सयं पंच हज्जार ढिंग भलै पाजं ॥
छं० ॥ ५३ ॥

सजी पंचमी फौज पामार जैतं । तहा पंच हज्जार असवार घेतं ॥
सुभै पंच हज्जार पाले पचंडं । तिनं संग भै मत्त बर पंच ठहुं ॥
छं० ॥ ५४ ॥

इसी पंच फौजै चल्थौ सज्जि अय्यं । विना साहि साहाव को सहै तय्यं ॥
प्रथीराज चहुआन करि चल्थौ रीसं । सुभै दूधके फेन सम छव सीसं ॥
छं० ॥ ५५ ॥

शहाबुद्दीन का भी अपनी फौज को पांच अनी गें राजे
जाने की आशा देना ।

दूहा ॥ सुनी वत्त साहाव तब । सजि आयौ चहुआन ॥

फौज पंच सज्जौ सु भर । मीर मलिक सधान ॥ छं० ॥ ५६ ॥

भुजंगी ॥ सुभै गोरियं जंग ठहौ गुमानं । उभै लख्य बाजं सु तथ्यं प्रमानं ॥

उभै लख्य पाले लरै लोह पानं । ॥ छं० ॥ ५७ ॥

अढ़ी सहस्र भै मत्त मद मत्त प्रनारं । दुजी ओपमा गिरत स्तिरना प्रहारं ॥

भलै मीर देषे दिये देढ़ लख्यं । इमं चहुयं पान तत्तार भयं ॥

छं० ॥ ५८ ॥

तियं फौज पुरसान धां चहु तेजं । उभै लख्य असवार बर बाज भेजं ॥

उभै लख्य कमनैत हथनारि हथ्यं । सजे फौज नौहथ्य दस जुद्ध सथ्यं ॥

छं० ॥ ५९ ॥

बनी फौज चौथी चल्थौ पान पानं । सुअं पान घंधार बर विरद वानं ॥

दुअं लख्य असवार पल्ले दुलख्यं । अढ़ी सहस्र हथ्यी कमनैत लख्यं ॥

छं० ॥ ६० ॥

असी सहस्र असवार करव लह सेनं । सवै अंग सन्नाह विन दोड़ नेनं ॥

इकां पान पानं सुतं लाल पानं । चलै लख्य द्वै जंग रस जुरन जवानं ॥

छं० ॥ ६१ ॥

(१) मो.-भेले, भल्ले ।

(२) ए. कृ. को.-बहुं ।

(३) मो.-बीसं ।

(४) मो.-लख्यै, भल्लै ।

(५) ए. कृ.-सहेनं, को.-काव सनेहं ।

सजी पचमी फौज वनि व्रन एव । गुर गप्पर पग्ग कहूँ रनेवें ॥
 वली मरद क माल पा बध सथ्य । लियै सकात मन सात कौ गुर्ज हथ्य ॥
 छ० ॥ ६२ ॥

सजे लप्य है सुभट करि लोह सार । तहा देयि पाइ हल दुप्य जार ॥
 तहा पच हज्जार गहूँ गयन्न । सजी पचय फौज सा 'इद्र व्रन ॥
 छ० ॥ ६३ ॥

रणक्षेत्र में दोनों फौजों का बीच में दो कोस का मैदान
 देकर डटना और व्यूह रचना ।

दूहा ॥ 'है दल बीच सकोस है । प्रथीराज कहि बात ॥
 चौकौ चढि चक्रह कटक । दल अरिथन करि धात ॥ छ० ॥ ६४ ॥
 चौपाई ॥ चढिय सुचेक सेन चहुआन । सुवर स्वर जोधा परिमान ॥
 उत सज्ज्यौ चक्रह सुरतान । दीसै फौज मनो दधि पान ॥ छ० ॥ ६५ ॥
 कटक चक्र रथ्यौ सुरतान । प्रथीराज सज्जिग तिहि थान ॥
 परी पवरि कहियौ परिमान । पच फौज पचौ 'चहुआन ॥ छ० ॥ ६६ ॥
 डामर ॥ चढ्यौ सुरतान, सुन्यौ चहुआन, तमकि कटौ किरवान कसी ।
 मय मत सुमत, पढे वर पत । सहस है स्वर, सहस्र असौ ॥
 दस सठि हजार, चले 'पयदाज, जमाति सु जुगिनि जानि हसी ।
 वर वान कमान, छयौ असमान, अरी मुष समुह, फौज धसी ॥
 छ० ॥ ६७ ॥

पुष्प सम्बन्धी तिथिवार वर्णन ।

कवित ॥ ग्यारह सै च्यालीस । सोम ग्यारसि वदि चतह ॥
 भए साह चहुआन । 'लरन ठाढे बनि पेतह ॥
 पच फौज सुरतान । पच चहुआन बनाइय ॥
 दानव देव समान । ज्वान लरन रिन धाइय ॥

(१) मो सावन्न इन्द्र ।

(२) ए. क. को है दल कोमह बीच है ।

(३) मो सुरतान ।

(४) मो पयदार ।

(५) मो मरन ।

काहि चंद दंद दुनिया सुनौ । बीर कहर चस्वर जहर ॥

जोधान जोध जंगह जुरत । उभय मध्य वित्थौ पहर ॥ छं० ॥ ६८ ॥

अनीपत योद्धाओं की परस्पर करनी वर्णन और अग्न्यास्त्र युद्ध ।

भुजंगी ॥ प्रथीराज पतिसाह रिन जुरत जोधं । मनो राम रावन् संमरिय क्रोधं ॥

जुरे षान ततार कौमास मंची । दुअं धिगि लग्गो दुअं भूप छिची ॥

छं० ॥ ६९ ॥

समं का-९ पुरसान रिन जुरि कपानं । उड़ी घेह पुरयंन सुगगंत भानं ॥

गहिछौत राजंस गोइंद पानं । उतै धनिय घंधार पां पान पानं ॥

छं० ॥ ७० ॥

चथ्यौ कोपि परचंड परमार जैतं । उतै गप्परं ग्गाम कंमाल धेतं ॥

छुटै नारि हथनारि वानैत वानं । करै अत्य चहुआन सुरतान आनं ॥

छं० ॥ ७१ ॥

तहाँ कोपि बाहंत बर तेग राजं । इकां एका ने जे लरै छोह लीजं ॥

इकां एक सेलंत कहुंत कोपं । इकां एक जमदहू करि सेइ धोपं ॥ छं० ॥ ७२ ॥

इकां एक फारसी सु कहुंत हथ्यं । इकां एक गुरजं लरै स्हर बथ्यं ॥

इकां एक हथ्यीय हथ्यी जुरंता । इकां एक स्हरं उठै भू^२ भिरंता ॥

छं० ॥ ७३ ॥

दादसी का युद्ध ।

दूह । ॥ इम वित्ती एकादसी । होत दादसी प्रात ॥

रवि उगगत सम द्वै लरै । हिंदू तुरक नधात ॥ छं० ॥ ७४ ॥

भुजंगी ॥ कहूं एक न्यारे परै रुंड मुंडं । उड़ै ओन छंछं जरे जानि रुंडं ॥

इकां स्हर सेलं करं कहुि तेगं । *इकां हथ्य कम्मान संचत वेगं ॥

छं० ॥ ७५ ॥

इकां इक हथियार बिन लात धातं । इकां मुष्टिकं मुष्टि किय गात पातं ॥

इमं वित्ति मथ्यान अस्तिमिति भानं । इकां जमदहू लरै लै जुवानं ॥

छं० ॥ ७६ ॥

(१) मो.-तरे ।

(२) ए. क. को.-तुरंता ।

(३) ए. क. को.-रुंड ।

* मो.-“इक अस्व कीनं रिन वायु वेगं ।”

इकं बीर बर बीर बैठे विमान । इक स्वर हर निरप्यत पान ॥
 इस जाम द्वै जुध करि रहे ठाढ़े । गुरे बाज गजराज नरराज गाढ़े ॥
 छ० ॥ ७७ ॥

पृथ्वीराज का यवन सेना में अकेले धिर जाना,
 और चामडराय का पराक्रम ।

कवित्त ॥ घेच्यौ नृप चहु श्रान । सग सब सथिय जुट्यौ ॥
 जग करै चामड । परिग गज भुडन जुट्यौ ॥
 वाग लेइ वगभेलि । सेल मैगल सिर फुट्यौ ॥
 कारन काटि करिवार । दत सम भसुँड सु तुट्यौ ॥
 तुट्यौ सु दत सम सुड मुप । रूप किन्निय सुरतान तन ॥
 दल दत कारत दाहर सुतन । मद वासन दासन दसन ॥ छ० ॥ ७८ ॥

दूहा ॥ कलह राइ चामड करि । इह माच्यौ गजराज ॥
 साह गहन को मन काच्यौ । चच्यौ हास लै वाज ॥ छ० ॥ ७९ ॥

कवित्त ॥ गुरि गयद गोरी नरिद । चतुरंग दल सज्जिग ॥
 उर निसान घुमरिग । आइ उप्पर सिर तज्जिग ॥
 जहा हच्यौ तहा भिच्यौ । तिनह घर नदी पलटिय ॥
 पग ताख वाजत । सीव तरवर बन तुटिय ॥
 कातरीय पुरप गय घर मुरिग । चद बरदिय इस भन्यौ ॥
 भाजत भीर तुप्पार चढि । चौडराव चावक हन्यौ ॥ छ० ॥ ८० ॥

चार यवन सरदारों का मिलकर चामड
 राय पर आक्रमण करना ।

दूहा ॥ लाल पान मारफा पा । हसन धान आकूष ॥
 चार लरे चामड सौ । पग गहौ तुम पूब ॥ छ० ॥ ८१ ॥

- (१) ए रु को गुमान । (२) मो राज ।
 (३) मो नन । (४) ए रु को कहि ।
 (५) मो हस । (६) ए रु को कसरी ।

कवित्त ॥ घूब घान तहाँ लाल । बान बरधंत वीर पर ॥
 हह भरद मारुफ । तेज फेरंत कहर कर ॥
 हसन घान सेहथ्य । पग बाहंत सीस पर ॥
 कट्टि कटारिय जंग । अंग आकूब इक भर ॥
 भर भार सह्यौ भुज दुअन पर । दाहिमै कौनो समर ॥
 कविचन्द कहै बरदाइ वर । कलह केलि भूले अमर ॥ छं० ॥ ८२ ॥
 लाल घान दुअ वान । तानि सुरतान आन किय ॥
 एक लगि हथ अंग । एक चामंड बंधि हिय ॥
 सकति छंडि मारुफ । जंघ हथ उर महि भिहिय ॥
 हसन घान तरवारि । मारि दै धा मुष किहिय ॥
 आकूब कटारी कट्टि कर । घसिय चामंडह गरे ॥
 सुभिय सुभट्ट संग्राम इम । भगल खेल नट्टह करे ॥ छं० ॥ ८३ ॥
 कैमास का चामंड राय की राहायता करना ।

दूहा ॥ चारि घान चामंड इक । एकाकी जुरि जोध ॥
 अंग अम दाहिगा कौ । भिच्यौ भीम सम क्रोध ॥ छं० ॥ ८४ ॥
 चामंडराय का पारों यवन योद्धाओं को पराजित करना ।

कवित्त ॥ क्रोध जोध जुरि जंग । अंग चावंडराइ जुरि ॥
 पग जभि करि रीस । सीस सिप्पर समेत दुरि ॥
 एक धाव आकूब । घूब जस लियौ लोह लरि ॥
 हसन मारि कट्टारि । पारि मारुफ मुच्यौ धर ॥
 मारुफ मुच्यौ उछ्यौ हसन । आकूबह सिर धर पच्यौ ॥
 सह दूअ आन चहुआन किय । लाल घान रन विफ्फुच्यौ ॥
 छं० ॥ ८५ ॥

लाल खाँ का वर्णन ।

दूहा ॥ लाल ढाल ढिंचाल ढिग । लाल बरन हथ अंग ॥
 लाल सीस सिंधुर धजा । लाल घान किय जंग ॥ छं० ॥ ८६ ॥

(१) ए. क. को.-तेज ।

(२) मो.-हथ ।

(३) ए. क. को.-इह ।

(४) ए. क. को.-अंग ।

कवित्त ॥ लाल वरन वानैत । पग कटि आन जुद्ध किय ॥
 पान पान किय थाउ । कध कटि गिन्ह्यौ तास हय ॥
 निरपि राइ चामड । विरचि फिरि बीर पचाय्यौ ॥
 गहिय तेग या लाल । अग न्दप धरनि पछाय्यौ ॥
 धर डारि रिदय पर पाव दिय । केस गहै बकुरि करहि ॥
 एकथ्य सुनौ हिदू तुरक । जै जै सुर नारद ^१करहि ॥ छ० ॥ ८७ ॥

लाल खा का मारा जाना ।

दूहा ॥ लाल पान के केस गहि । सिर धरि करि दुअ पड ॥
 दूसासन ज्यों भीम बल । रन ठढौ चामड ॥ छ० ॥ ८८ ॥

कैमास और चामड राय का वार्तालाप ।

कवित्त ॥ रन ठढौ चामड । मनि कैमास पहुतौ ॥
^२हयह चढायौ आइ । बहुरि मुप वचन कहतौ ॥
 तू मेरौ लघु वध । इतौ दुप कौन सहतौ ॥
^३तौ विन जग सब धध । अंध हुअ अवनि रहतौ ॥
 चढि वाज आज सग्राम में । राज लाज मो भुजनि पर ॥
 हठि हसन पान आकूव से । पल पडे ते अग वर ॥ छ० ॥ ८९ ॥

दूहा ॥ पल पडे तुम अग वर । ^४रगत वरन किय अग ॥
 रहि ठढौ इक पिनक रन । कारो निरपि हौ जग ॥ छ० ॥ ९० ॥

कुंडलिया ॥ कहै राइ चामड तब । तुम मेरे बड आत ॥
 क्यो पिची देयै परै । कलि न अमर इह गात ॥
 कलि न अमर इह गात । बान मो मति तिम किज्यै ॥
 हम तुम हय हकारि । बधि सुरतानह लिज्यै ॥
 विरचि मार मचाइ । तवहि गज्जन पति ^५ग्रहिहै ॥
 लरत किति होइ तुरत । तुरक हिदू सब ^६कहिहै ॥ छ० ॥ ९१ ॥

(१) मो - कहिय । (२) मो - हयानि ।

(३) मो - "तौ विन जग जुनु धर अर हुअ अवनि परतौ ।" (४) ए कृ को रक्त ।

(५) मो घात । (६) ए रु को ग्रहियै । (७) ए रु को कहियै ।

कैमास का युद्ध वर्णन ।

दूहा ॥ ताज बाज सहबाज पां । जाज पान महबूब ॥
 मान अदल कैमास कौ । लगि पुरसानह पूब ॥ छं० ॥ ६२ ॥
 कवित्त ॥ सुनत साहि कौ बत्त । सत्त सब भित्त मरहारै ॥
 करत कलह ^१अस्मान । बान कमान प्रहारै ॥
 सख सार कौ मार । हक मंची तहां टेय्यौ ॥
 जवरजंग नीसान । मनहुं बहल धन धे-यौ ॥
 जिम पथवान कर बेग गहि । च्यायौ कैमासह लगे ॥
 दिष्येव सबल संग्राम भर । ब्रह्म जोग निंदह जगे ॥ छं० ॥ ६३ ॥
 नीर भीर ^२सक सख । मंचि कैमास तमकि तम ॥
 कर गहि कठिन कमान । बान बाहत पथ जिम ॥
 जाज पान दुअ बान । तानि मायौति पय्यौ धम ॥
 तप्यि बाज सहबाज । मरद ^३महबूब मुरहि किम ॥
 अहंकार धर विमन महि । जाइ जु-यौ चामंड सम ॥
 दुअ करत जुद्ध मंची सरिस । लरत धाव दुअ धरिय अम ॥ छं० ॥ ६४ ॥

मध्यान्ह के उपरान्त सूर्य की प्रखरता कम होने पर
 दोनों दलों में धमसान युद्ध होना ।

भुजंगी ॥ धरियजुद्ध द्वै धरियवितीमथानं । जुरेज्वान हथ्यं सुबथ्यं जुधानं ॥
 दलं दोई वीरं वरं जुद्धवानं । धकां धक हकंत पेतं सु ढानं ॥ छं० ॥ ६५ ॥
 वहै सख अस्मान कमान बानं । गिरै तथ्य हिंदू तुरकं अधानं ॥
 करै खर खरं सु धावं कपानं । इकां तेग लग्गे सु ठहूँ ^४धुमानं ॥
 छं० ॥ ६६ ॥

मनो धुमाई ध्यानं जोगिंद बानं । लरै खर सामंत जो जाउ मानं ॥
 जुरै जंमरंगं सु ठहूँ गुमानं । तहां मंचि कैमास महबूब पानं ॥ छं० ॥ ६७ ॥
 पछै पथवानं तता तेज ज्वानं । इसे सुभिभयै तथ्यलै पग पानं ॥

(१) मो.-असमान ।

(२) मो.-सब ।

(३) मो.-महमूद ।

(४) मो.-गुमानं ।

धन धाव वज्रत सो द्वै समान । जुरे बाज सो बाज सम जुद्ध ठान ॥
छं० ॥ ६८ ॥

जुरे चार पानं सु चावड 'मान । जुरै अग अग करै अप्य 'मान ॥
भजै काइर कलह देधे कपान ।
छं० ॥ ६९ ॥

रूपौ मच महबूब दुअ जुद्ध यट्ट । तिन बाहिय उअर नह तेग तुट्ट ॥
तवै थरहरे काइर कपि नट्ट । तहा ताज पा पान राधत पुट्ट ॥
छं० ॥ १०० ॥

दल देवता जुद्ध देधे विमान । तहा देव निवरत अछरीय गान ॥
तहा चौसठी करत भरि पच चल्ली । तहा रम धालत गर माल भल्ली ॥
छं० ॥ १०१ ॥

तहा स्वामि काम लरै हिदु भीर । इम सस्त्र वस्त्र पुटे तीर तीर ॥
तहा मल्ल जिम लरै बलवत श्रीर ।
छं० ॥ १०२ ॥

तहा लसत धसत सुवान धतान । जिसे मत्त आमत्त मत्ते मतान ॥
तिसे दरसिय स्हर दत्त दँतान । तहा हथ्यजोर सु हस्ती हतान ॥
छं० ॥ १०३ ॥

सुभै ठाम ठाम परे तुरक झुड । तहा हह हिदू भये पड पड ॥
तहा करत सरितान मै मगर तुड ।
छं० ॥ १०४ ॥

तहा कच्छ सिर मच्छ फारके भुजान । तहा केस कुस दत्त वगपति मान ॥
तहा भोर ज्यो भँवर हथ्य करार । तहा कज कर धार उरधार धार ॥
छं० ॥ १०५ ॥

तहा चक्र चक्री सु सोभत नैन । तहा तीसरी नदिय बहिपाद्य ऐन ॥
तहा श्रीन कौ सरित जल पूर भल्ली । तहा चौसठी पच भरि कुभ चल्ली ॥
छं० ॥ १०६ ॥

छादसी का युद्ध वर्णन ।

दूहा ॥ चैत प्रथम उज्जास पष । मगल बारसि सुद्ध ॥

कैमासह चामड सम । किय सहाव वर जुद्ध ॥ छं० ॥ १०७ ॥

दोनों सेनाओं के मुखिया रारदारों का परस्पर तुमल युद्ध वर्णन ।

कवित्त ॥ धरिय दोइ वर जुद्ध । क्रुद्ध जोधा रन जुद्धे ॥
 मंचि भिया महबूब । 'जंग से अंग निहट्टे ॥
 परिय भीर 'सिर भार । भार दुअ भुज वर पिसै ॥
 घायतन धन धुंमि । चाय पिचौ भग पिसै ॥
 भग खेल खेल महबूब सिर । कैसासह कार टारियौ ॥
 तकि बाज पान बल 'चंड करि । गहि गिरदान पछारियौ ॥
 छं० ॥ १०८ ॥

चिंति राइ चामंड । इतें उत निरपि उभय तन ॥
 भग करह धनकांत । मंचि सहबाज धाव धन ॥
 पहुँचि जाज परिहार । धार मीरन सिर बढिय ॥
 रन जित्यौ दाहिम्न । कित्ति पहुमी पर चढिय ॥
 दल दल्यौ सबल दाहर सुतन । कहै धन्य हिंदू तुरक ॥
 सुनि बत साह संभुह अरिय । जनु असि वर उग्यौ अरक ॥
 छं० ॥ १०९ ॥

आपनी फौज हारती हुई देख कर शहाबुद्दीन का अपने हाथी को आगे बढ़ाना ।

रसावली ॥ मत्त मत्त लरी, मेछ दाहिगारी । सेन साहाबरी, खुरिमा संभरी ॥
 छं० ॥ ११० ॥
 काइरं कंपरी, जुद्ध देवे डरी । जेन पष्पंबरी, तेन धीरं धरी ॥
 छं० ॥ १११ ॥
 भग भगों जुरी, सख कट्टे अरी । रंभ आयं बरी, प्रेम वीरं बरी ॥
 छं० ॥ ११२ ॥
 ईस माखं धरी, 'अग जालंधरी । राइ चामंडरी, जैत लड्यौ घरी ॥
 छं० ॥ ११३ ॥

(१) ए. क. को.-जंम ।

(२) मो.-पर ।

(३) ए. क. को.-बंड ।

(४) ए. क. को.-ढिल्या ।

तेग लगीतरौ, मेच्छ ग्रम्भ टरी । भीर छुट्टे धरी, साहि दिख्यौ करी ।

छ० ॥ ११४ ॥

शाह के आगे बढ़ने पर यवन सेना का उत्साह बढ़ना ।

कवित्त ॥ करिय साहि ठेकत । भीर छकत प्रबल दल ॥

या ततार रुस्तम । भीर भगोल सबल बल ॥

चक्रसेन चहुआन । लोह बाहत आय पल ॥

नर हय गय गुजार । लोह लगगत हयदल ॥

असि मार धार आकाँस उडि । उठि गुरत कमध रिन ॥

चहुआन चक्र सुरतान लगि । तन तिपड पडे 'करिन ॥ छ० ॥ ११५ ॥

शहाबुद्दीन का वान वर्षा करके सामंतों को घायल करना ।

तब सहाब सुरतान । वान कमान कोपि धरि ॥

अलूपान आलम । सार बहि 'कही सु पुष्परि ॥

चक्रसेन सिर पडि । कियौ दह भरे लोह खरि ॥

या ततार रुस्तम । पान पुरसान रहै डरि ॥

उर डरि धरकि हिदू तुरक । खर नूर सामत मुप ॥

कविचन्द देपि कीरति कारत । खरत अप्प अपनी सु रूप ॥ छ० ॥ ११६ ॥

दूहा ॥ अप्प अपानी रूप खरत । कारत अग अंग मार ॥

चक्र सेन चहुआन कौ । भरनि सख्यौ भुज भार ॥ छ० ॥ ११७ ॥

कवित्त ॥ भरनि सख्यौ भुज भार । साह सकवान प्रहारिय ॥

एक वान चामड । लगि भुज दड मुहारिय ॥

दुतिय वान सिरे बहिग । चक्रसेनह सिर सधे ॥

सुकार कट्टि अप वान । पचि बसतार 'सम सधे ॥

वर बधि धायक पग गहि । बिजल पान बगसी बख्यौ ॥

कौमास राइ चामड मिलि । धन्य दुअन जै जै कख्यौ ॥ छ० ॥ ११८ ॥

१) मो किरन, करन ।

(२) ए मो कदिड ।

(३) ए क-सस ।

कैमास और जागंडराय का शाह पर आक्रमण करना और यवन सरदारों का रक्षा करना ।

कैमास रु चामंड । साहि गज तेग प्रहारिय ॥
अलूपान आलंम । सीस दुअ घाइन पारिय ॥
चक्रसेन षग बहिग । चमर कर सिर सम तुदिय ॥
बहि क्रपान कासिगा । ^१लरत धर पर धर लुदिय ॥
लुदुति मीर तिहि साह रिन । छत्र धार छत्रिय पगन ॥
दाहिगा जुद्ध दिषि ब्रह्म सुर । भय तुंमर नारद मगन ॥ छं० ॥११६॥

चक्रसेन का गारा जाना ।

अलूपान धर उठिग । पानि धरि षग पनंक्यौ ॥
चक्रसेन कटि कंध । सिलह फुटि तनह ननंक्यौ ॥
उमड़ि उठि अधकाइ । धुमड़ि धन घाइ धनंक्यौ ॥
तीन भरन किय धाउ । ठाम तिन तनह ^२ठनंक्यौ ॥
जुध करत षग तिय जोध सम । चक्रसेन सिर धर पयौ ॥
बोहिथ्य बीर तरवारि सर । उभय हथ्य धर ^३रन तिथ्यौ ॥ छं० ॥१२०॥

चक्रसेन का वंश और उसका यश वर्णन ।

* धर कर गहि तरवार । हेत हिंगोल सँभारिय ॥
चढ़त साहि ढिग सज्जि । बाज सिर ताज बिहारिय ॥
सचह बरस सपन्न । राय बाहर कौ जायौ ॥
कलिजुग जस विस्तारिय । बहुरि बैकुंठ सु आयौ ॥
बिन सिर कभंध करिवार गहि । पगन ^४मारि षल घंड किय ॥
मारयौ मीर ^५जइव मलिक । बीर परे पारंत बिय ॥ छं० ॥१२१॥

त्रयोदशी बुधवार को पृथ्वीराज की जय होना ।

(१) मो.-लगन ।

(२) ए. क. को.-तंक्यौ ।

(३) ए. क. को.-रत रिय्यौ ।

* मो.-धर तर कर करिवार ।

(४) मो.-सार ।

(५) ए. क. को.-जव दल ।

दूहा ॥ त्रयोदसी सुदि चैत की । गयौ लरत बुधवार ॥

समर साह चहुआन सम । भर भारथ किय सार ॥ छ० ॥ १२२ ॥

भुजगी ॥ भर भारथ कीय तिन बेर वीर । जुरे सभरी साहि सिरदार श्रीर ॥

नर काइर लामले भग्न भीर । चढौ भीर मारुफ मुष नीर धीर ॥

छ० ॥ १२३ ॥

तहा चारि बधौ भए एक स्वर । लगे मच कैमास दिष्यै कर ॥

लगे वान कमान फुट्यै परार । किय छिन सनाह देही विहार ॥

छ० ॥ १२४ ॥

तहा राग मारु बजै तबल तूर । घुरै घोर नौसान ईसान दूर ॥

तहा पान हिदवान भए चक्र चूर । तहा हूर रभा बरै वरह स्वर ॥

छ० ॥ १२५ ॥

तहा मेछ भग्ने भए प्रात तारे । तहा मचि कैमास जित्यौ अघारे ॥

छ० ॥ १२६ ॥

दूहा ॥ जिति मचि सुरतान घर । बधव चोड हजूर ॥

उमै लष्य असुरान के । मेटि प्रवल दल पूर ॥ छ० ॥ १२७ ॥

कैमाम और चामडराय का शहाबुद्दीन को दो तरफ
से दवाना और उसके हाथी को मार गिराना ।

कवित्त ॥ मेटि प्रवल दल पूर । साह समुह गज पिल्ल्यौ ॥

बाज राज चामड । मचि बधव मिलि ठिल्ल्यौ ॥

सगि बाहि कैमास । पीत बाने बिच थद्विय ॥

गहिय समर चामड । तुड पर करिय निहद्विय ॥

कद्विय सु सुड गज दत सम । गिरत गज साहाब धर ॥

दाहिम गछ्यौ गज्जन असुर । जय जय सुर सहे अमर ॥ छ० ॥ १२८ ॥

चौपाई ॥ प्रथीराज जित्यौ परगास । साह सहाब गछ्यौ कैमास ॥

सचह पान परे चिहु पास । जै जै सबद भयौ आयास ॥ छ० ॥ १२९ ॥

दोनों भाइयो का शाह को पकड कर पृथ्वीराज के पास लेजाना ।

कवित्त ॥ अमर सह जयकार । डारि साहाब कध हय ॥

लै मची सुरतान । बधि बिय राज पास गय ॥

दिषि नृपति साहाब । ताम अप्पन हिय डर्यौ ॥
 किय हुकमा चहुआन । आनि सुधासन धर्यौ ॥
 नृप जीति चल्थौ दिल्ली पुरह । उप्पारि चामंड वर ॥
 दुंद्यौ घेत दाहिम तहां । उप्पारिग केइक सुभर ॥ छं० ॥ १३० ॥

कैमास का रणाक्षेत्र में से धायल और
 गृत रावतों को डुँढ़वाना ।

उप्पारिग चहुआन । राज बंधव सु चक्रधर ॥
 रामकिश गहिलोत । बंध रावर सु समर वर ॥
 उप्पारिग नरसिंघ । बीर कैमास अनुजिय ॥
 सामल सेवा टांक । नेह जंजरिय बंध बिय ॥
 उप्परि घेत सामंत घट । पट्टपुर भारथ परिग ॥
 दल हिंदु सहस असुरह अयुत । रहे घेत कंदल कारिग ॥ छं० ॥ १३१ ॥

रण में मृत्यु होने की प्रशंसा ।

दूहा ॥ जे भग्ने तेज मरे । तिन कुल लाइय पेह ॥
 भिरे सु नर गय जोति मिलि । बसे अमरपुर तेह ॥ छं० ॥ १३२ ॥
 पृथ्वीराज का दंड लेकर सुलतान को छोड़ देना और वह
 दंड सामंतों को बांट देना ।

कवित्त ॥ गय दिल्ली प्रथिराज । दंड सुरतान सीस किय ॥
 गज द्वादस दल सोभ । बाज हजार अठ दिय ॥
 अरध दंड प्रथिराज । दियौ कैमास चौंड मिलि ॥
 दंड अरध दिय राज । सुभर उप्पारि मंगल रिन ॥
 पतिसाह गयौ गजानपुरह । बडाइय सामंत वर ॥
 जै जै सु सबद सब लोक किय । चंद अषि कीरति अमर ॥ छं० ॥ १३३ ॥

इति श्री कवि चंद विरां येते प्राथेराज रासके षट्ठ वन मध्ये कैमारा
 पातिसाह अहनं नाम तैंतालीरामो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४३ ॥

अथ भीम बध समयौ लिख्यते ।

(चौवालिसवां समय ।)

पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर शोक करना और सिध
प्रभार का वीर वाक्यों से धैर्य देना ।

दूहा ॥ उर अहौ भीमग नृप । नित पटकै धाद ॥
अगनि रूप अगटै उरह । सिचै सचु बुझाद ॥ छ० ॥ १ ॥
पिता बैर सिर ससहै । अह रमनी रस रग ॥
दिन दिन सो जल ओन सम । पियै सचु अनभग ॥ छ० ॥ २ ॥
कवित ॥ सुनिय बत्त प्रथिराज । भीम सोभेस सखि रन ॥
हरि हरि मुप उचार । किन प्रथिराज सुभट गन ॥
करत दुष्य चहुआन । बरजि प्रभार सिध तहा ॥
आदि भ्रम पिचीय । करे सताप तात कहा ॥
पग धार पडि तन मडि जस । तब सुर लोकह सचरै ॥
आजानवाह अवनीस सम । आववै इस उचरै ॥ छ० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज प्रति सिह प्रभार के वचन ।

कहै सिध प्रभार । बत्त चहुआन चित धरि ॥
गुजर धर उज्जार । पारि प्रज्जारि छार करि ॥
सोभेसर सुरलोक । तोहि सभरिय लज्ज भुअ ॥
कितका बत्त चालुक । किम सु अगमय जुद्ध तुअ ॥
सुरतान भूमि ककार जहा । तह थानौ मडौ भलौ ॥
तुछ सुभट सग करि विकट घट । पुन अप्पन गेहा चलौ ॥ छ० ॥ ४ ॥

पृथ्वीराज का पिता के नाग से अर्ध देकर दान करना और पितृ वैर लेने की प्रतिज्ञा करना ।

दूहा ॥ स्नान सलिल अंजुलि करिय । मुनि सु पिंड दे तात ॥
सहस धेन संकल्प करि । ग्रंथौ काव्य व्रतांत ॥ छं० ॥ ५ ॥

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज । सुनहु सोमंत स्वर 'सम ॥
जो निरमान भवस्य । सोई संपजै क्रमक्रम ॥
जदिन भीम संग्रह्यौ । सोम उग्रह्यौ तदिन रन ॥
जोगिनि बीर बेताल । करो संतुष्ट 'चपति तिन ॥
धृत छंडि पाद्य बंधन तजिय । सजिय अप्य संभरि दिसह ॥
अवतार भूत दानव प्रबल । अग्नि अंग प्रज्वलि रिसह ॥ छं० ॥ ६ ॥

गाथा ॥ जाइ संपते स्वरं । ग्रहे ग्रहे अप्य अप्यानं ॥
पिष्यि नैरवि रूपं । भूपं बिना दुब्रलं 'सहरं ॥ छं० ॥ ७ ॥

प्रातःकाल पृथ्वीराज का सब सामंत और सैनिकों की राभा
करके अपने वैर लेने का पण उनसे कहना ।

दूहा ॥ भूमि सयन प्रथिराज करि । निसा बिहानी निठ ॥
'असन समै उद्योत हीं । मंडि सभा सुभ विठ ॥ छं० ॥ ८ ॥

पद्वरी ॥ बोले सु काय चहुआन राइ । 'आनंद चित्त सब बैठि आइ ॥
कर जोरि सभा सब उठ ताह । नरनाह विरद 'छजांत जाहि ॥ छं० ॥ ९ ॥
चप पटी रहत जिन रति दीह । बजंग अंग 'संग-यौ सीह ॥
तन तच्छ तुच्छ ह्वै धट्ट घुगि । तब बीर स्वर 'सोमेस शकुनि ॥
छं० ॥ १० ॥

(१) मो.-सब ।

(२) मो.-नृपति ।

(३) ए. क. को.-सहयं ।

(४) मो.-असन ।

(५) ए. क. को.-आदर अनंत, ए.-आइर अनंत ।

(६) ए. क. को.-सज्जंत ।

(७) ए. क. को.-संकर्ष्यौ ।

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-II.

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OR
CHAND BARDÂI,
EDITED
BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B A

WITH THE ASSISTANCE OF KUNWAR KANHAIYA JU
CANTOS XLIV to XLVIII



महाकवि चंद वरदाई
द्वित

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी ए ने

कुँवर कन्हैया जू की सहायता

से

सम्पादित किया ।

वर्ष १४ से ४८ तक ।

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS AND PUBLISHED BY THE
NAGARI PRACHARINI SABHA BENARES

1907

मूवीपत्र ।

.0

(४४) भीमवध समय	पृष्ठ १२०१ से १२२७ तक
(४५) संयोगिता जन्म प्रस्ताव	" १२२९ " १२५८ "
(४६) विनयमंगल नाम प्रस्ताव	" १२५९ " १२७४ "
(४७) सुकवर्णन	" १२७५ " १२९१ "
(४८) बालकरराह प्रस्ताव (अपूर्ण)	" १२९३ " १३२८ "
रासोसार	" १०५ " १३६ "

फुनि आइ जीम जइव नरिद । जमनेस भेस वज्र ग ज्य द ॥
 वलिभद्र आइ कूरभ देव । बहु भति भूय जिन करत सेव ॥ छ० ॥ ११ ॥
 पुडीर आइ तहा चद वीर । सम इष्ट इष्ट शृंगार श्रीर ॥
 अतताइ आइ चहुआन चड । जनु भीम भयानक सभा पड ॥
 छ० ॥ १२ ॥

लगरौ राव तहा वैठि आइ । जगि जुद्ध समै जनु अगनि वाइ ॥
 गहिलौत आइ गोइंद राउ । पर भूम भूम दैयत दाउ ॥ छ० ॥ १३ ॥
 लधु दिध सूर सामत सब । बैठे जु आइ दरबार तब ॥
 फुनि चद चड 'बरदाइ आय । जिन प्रसन देव द्रुगा सदाय ॥
 छ० ॥ १४ ॥

प्रथिराज कही 'सवहि सुनाइ । सोमेस भीम जिम सम उपाइ ॥
 सजि सेन जुरौ गुजर नरिद । पनि पोदि 'कडौ चालुक कद ॥
 छ० ॥ १५ ॥

अप्रमान वत भीमग कीन । जिम जीति जुद्ध सोमेस लीन ॥
 गर्भनी गर्भ कडौ नरीन । प्रथिराज नाम तौ विग्र दीन ॥ छ० ॥ १६ ॥
 जहा जहा निसक वके मवास । पनि पोदि डारि दीजै अवास ॥
 छ० ॥ १७ ॥

ज्योतिषी का गुजरात पर चढाई के लिये मुहूर्त साधन करना ।

दूहा ॥ करि प्रनाम सामत सब । बोलिय जोतिगराइ ॥
 सखि महरत चढ़ियै । जिम अगौ 'जीताइ ॥ छ० ॥ १८ ॥
 व्यास आन दिधिय लगन । धरी महरत जोइ ॥
 इन समयै जो सजियै । सही जैत तौ होइ ॥ छ० ॥ १९ ॥
 हकाव्यौ जगजोति नृप । कही महरत सखि ॥
 जीति होइ सखी बयर । सिचो अगि समखि ॥ छ० ॥ २० ॥

ज्योतिषी का ग्रह योग और सुदिन मुहूर्त वर्णन करना ।

(१) मो -न्दरार ।

(२) मो -सवन ।

(३) ए चढौ ।

(४) ए कृ को जैपाय ।

कवित्त ॥ केन्द्रीय ससि सोम । भोम पंचम अधिकारिय ॥

राह बीर अष्टमो । वक्र सत्तम सुद्धारिय ॥

जंगम थावर धरिय । हलिय तिन नाम सेन भर ॥

कहे विप्र प्रथिराज । राज पंचम पंचम गुर ॥

^१मन काम होइ सो किजियै । अरि जितह पडर दिवस ॥

पिठ्ठीय पवन रथ्यै महन । तौन वसाइय कोल वस ॥ छं० ॥ २१ ॥

दूहा ॥ रैन परै संमुह अरिय । चक्र जोगिनी अग ॥

दई होइ दुजन सयन । तौ तन भग्नै षग ॥ छं० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ कहे व्यास जगजोति । राज चहुआन प्रमानिय ॥

गुज्जर गुज्जर सयन । बैर सोभेसर ठानिय ॥

एक लष्य आरुहहि । लष्य लष्यन षग रुंधहि ॥

होइ जैत चहुआन । पानि भीमंग सु बंधहि ॥

^२गुजरात होइ तुअ अहनिय । एक बत्त संमुह मँडौ ॥

जो मिटै बत्त इह जोग कोइ । तौ हथ्यह पनौ छँडौ ॥ छं० ॥ २३ ॥

पृथ्वीराज का लग्न राध कर अपनी तय्यारी करना ।

दूहा ॥ विक्रम अरु चहुआन नप । पर धरती सकबंध ॥

असम समै साहस ^३हसह । हिंदुराज दुअ कंध ॥ छं० ॥ २४ ॥

चढ़ि चक्षिय सज्ज्यौ सयन । बोलि अत्य प्रथिराज ॥

लगन महरत सद्धि कै । बढि निसान अवाज ॥ छं० ॥ २५ ॥

कवित्त ॥ जिति राज वर साज । बीर बीरह रस सजिय ॥

विजे जिति विजैपाल । सोइ राजन जस ^४छजिय ॥

तर उतंग इल ^५भूल । भूप ^६बक्षिय चित चढिय ॥

जय जय जय उचार । देव दानव नर पढिय ॥

सामंत गति साध्या धर । उद्धारन वर बैर षल ॥

चहुआन सजि चालुक पर । बीर बीर बढे ^७सबल ॥ छं० ॥ २६ ॥

(१) मो.-मम ।

(२) ए. कृ. को.-हुअ गुज्जर ।

(३) मो.-करान ।

(४) ए. कृ. को.-सजिय ।

(५) ए. कृ. को. रूप ।

(६) ए.-चलिय ।

(७) ए.-सकल ।

गाथा ॥ इच्छिनि अस्सित मान । वितीत जाम भगयो नथ्य ॥

अरुनोदय चहुआन । रुगथा आइ पच्छिम थान ॥ छ० ॥ २७ ॥

पृथ्वीराज का ठिकार के मिस पश्चिम दिसा को कूच करना ।

कवित ॥ सा रुगथा चहुआन । राज सज्जी दिसि पच्छिम ॥

सब सेना जानी न । राज एकग सु अच्छम ॥

आषेटक सजि बीर । भयौ अरुनोदय जोग ॥

चिहू दिसिग सभरिय । सेन सज्जी मति भोग ॥

जित तित फौजन हलिय । चलिय खरे सामत वर ॥

सपत जाइ चहुआन को । निहुर करिय जुहार सिर ॥ छ० ॥ २८ ॥

राजा के साथ सैन्य सहित निहुर राय का आन मिलना ।

दूहा ॥ निहुर मन सजुरि सयन । मिलिय आन प्रथिन्य ॥

मनु टिड्डिय धरि उलटिय । कौ चिकूट पर कप ॥ छ० ॥ २९ ॥

पच सबद बाजे गहिर । धन धुसर बरजोर ॥

जग जुभाज बजिय । बछौ अवनन सोर ॥ छ० ॥ ३० ॥

पृथ्वीराज की तय्यारी का वर्णन, भीमदेव को इसकी

खबर होना और उसका भी तैयारी करना ।

पहरी ॥ चढि चलयौ राज प्रथिराज सेन । कपि चले कोपि जनु लका लेन ॥

जनु उदधि उलटि छडिय रुजाद । दहवट करन गुजर प्रसाद ॥

छ० ॥ ३१ ॥

चर चरत चरित जगल नरेस । बढि चले मध्य भीमग देस ॥

सब पवरि कही भीमग जाइ । सजि सेन खर चहुआन आइ ॥

छ० ॥ ३२ ॥

सामत नाथ सामत जोर । बढे कि जानि दरिया हिलोर ॥

चौसठि हजार परिमान तेह । अनभग जग बढे बलेह ॥ छ० ॥ ३३ ॥

घत तज्यौ पान चहुआन राइ । चितै सु चित्त बल विषम थाइ ॥

चहुआन कन्ह गोयंदराइ । सिव सीस उदक छंद्यौ रिसाइ ॥
छं० ॥ ३४ ॥

वर भरे अन्ध भट घट ^१अभंग । अप अप्य विहसि सिर लगिन भंग ॥
अप्यान बंध अप करौ राइ । जिम जुरो घग्ग पल विषम धाइ ॥
छं० ॥ ३५ ॥

सब काही पवर सो सुनी दूत । ^२शलहलिय रोस जैसिंह पूत ॥
फारकांत बांह थरकांत कांध । चप ^३चढ़ि कापाल भुअ हुअ असंध ॥
छं० ॥ ३६ ॥

बुझाइ सब भर राजकाज । सम काह्यौ जुद्ध तिन कारन सोज ॥
परवान फाट देसान देस । तिन के सु चढ़ि आए नरेस ॥छं०॥३७॥
दुअ सहस पान तेजी पठान । हथनारि धारि संग कुहकवान ॥
चढ़ि कच्छ देस काछी बलान । हय सहस तीन पप्पर पलान ॥
छं० ॥ ३८ ॥

चढ़ि सहस देड़ सोरठ ठाट । तिन सहस विषम अवधट घाट ॥
चढ़ि काकरेच कोली कारूर । कामनेत काहर अन भूल रूर ॥
छं० ॥ ३९ ॥

चढ़ि झालवारि शाला अभंग । तिन लरत लोह रवि उगिन भंग ॥
चढ़ि मचि ^४मुकुंद कावा नरेस । तिन चढ़त सुनत उड़ि जात देस ॥
छं० ॥ ४० ॥

चढ़ि कठवार कठ्ठी नरिंद । तिन सचु सुष न दिन राति न्यंद ॥
लधु दिध और को गने देस । इतने कटक आए असेस ॥
छं० ॥ ४१ ॥

चढ़ि सुभट और गुर ^५गुरज षंड । जनु ^६जुरन जुद्ध कुरु षेत पंड ॥
छं० ॥ ४२ ॥

भीमदेव की तय्यारी का रामावार पृथ्वीराज को मिलना ।

(१) मो.-अनंट ।

(२) मो.-शलहलत ।

(३) ए. क. को.-चरि ।

(४) मो.-कुद ।

(५) ए. क. को.-गुजर ।

(६) ए.-जुरत ।

दूहा ॥ चढे देधि चालुक दल । बहुरे सभरि दूत ॥
 मेघ दिगबर दुति तनह । जे अवधूत न धूत ॥ छ० ॥ ४३ ॥
 गनि गनिका कविचद कौ । ठग विघा परवीन ॥
 दूत धूत अनभूत मन । नवनि राज तिन फौन ॥ छ० ॥ ४४ ॥
 गाथा ॥ समुप पिबिय राज । बुझे बयन सुहित सुभाज ॥
 चढि चालुकौ गाज । नर भर समुद उलटि जनु पाज ॥ छ० ॥ ४५ ॥
 दूहा ॥ एक लख सेना सकल । अकाल कलौनह जाइ ॥
 इक सहस मद गज करौ । दिबिय जानि बलाइ ॥ छ० ॥ ४६ ॥

पृथ्वीराज की प्रतिज्ञा ।

कवित्त ॥ इस भजो भीमग । जुझ जौ माहि जुरै रन ॥
 ग्रीधम 'पवन सहाय । दग जरि जात सधन धन ॥
 इस भजो भीमग । भीम कुलनद पक्षरिय ॥
 यों भजो भीमग । सगति महिपा सुर मारिय ॥
 इस जुरौ जुझ भीमग सम । अगनि तेज वाय हित ॥
 प्रथिराज नाम तदिन धरौ । उदर फारि कट्टो पिता ॥ छ० ॥ ४७ ॥
 पृथ्वीराज का शिकार खेलते हुए आगे बढ़ना ।
 दूहा ॥ आपेटक खेलन चलय । करिय पति भर साज ॥
 चावडिसि बन बिटि कै । मडि सपतौ राज ॥ छ० ॥ ४८ ॥
 *अरिस्त ॥ मन इच्छा आपेटक लगिय । पग पतौ मन ममभह जगिय ॥
 जमुन विहड बिटिय बहु बके । मालि सिंह वाराहन हके ॥ छ० ॥ ४९ ॥
 पृथ्वीराज का गहन बन में पडाव पडना ।

दूहा ॥ जमुन बड बके विषम । हकत पतिय सक ॥
 जो जहा हतौ सो तहा । हुअ डेर । बन मम ॥ छ० ॥ ५० ॥
 सूर उदय जे 'बढि हुते । उत्तरि सध्या सूर ॥
 अन्न पान पहुच्यौ सकल । कहा नीरे कहा दूर ॥ छ० ॥ ५१ ॥

(१) ए रु को जनों पचम ।

* मो मुखि ।

(२) ए रु को - चढे ।

।

हुकम नकीबत कह फिरै । डेरा डेरा गाहि ॥

जो जिय जा ढिग निकरै । राज न षिज्यै ताहि ॥ छं० ॥ पू२ ॥

कैमासादि सब सामंतों का रात्रि को राजा के पहरे पर रहना ।

गाथा ॥ उत्तरि सेन सुराजं । निद्रा धुमित सब सेनायं ॥

पासं नृप कयमासं । सो सुते षष्ठा बंधाद्रं ॥ छं० ॥ पू३ ॥

यों सुता सब सेनं । सा निद्रा चंपियं वीरं ॥

मोह चंपि विग्यानं । निद्रा ग्यान नृद्वियं कालं ॥ छं० ॥ पू४ ॥

कवित्त ॥ राज पास कैमास । कन्ध कनकू सञ्चूरा ॥

सवर स्वर पांभार । जैत साहिव अञ्चूरा ॥

सलष अलष पुंडीर । दर्ई दाहिंस चामंडं ॥

* सागुर गुर सिरमौर । राज हंमीरति पंडं ॥

सारंग स्वर कूरंभ वलि । वर पहार तूंअर सुभर ॥

लंगरीराव लोहान वर । गहिग सेन वर वीर पर ॥ छं० ॥ पू५ ॥

एक पहर रात्रि रहने से शिकार किया जाने की सलाह ।

जाम एक निसि पच्छ । वत आपेट विचारिय ॥

सुनौ सब सामंत । मंत इह चित्त सुधारिय ॥

जंत जीव जगौ न । तंत क्रम सिद्ध न होई ॥

पुष्प अवन संभव्यो । निगम जंये वर लोई ॥

चिंतयौ चित्त चिंता सुमन । मास तीय तिय सह सुनि ॥

निरवान राज प्रथिराज गुन । सुवर सगुन बज्ये सु धुनि ॥

छं० ॥ पू६ ॥

कन्ह का रात्रि को स्वप्न देखना और साथियों से
कहना कि राबेरे युद्ध होगा ।

(१) को.-निज ।

(२) ए. क. को.-नद्वियं ।

(३) ए. क. को. सकल ।

* मो.-“सागर गुर सिर मौर राज संभीरति पंडं” ।

(४) ए. क. को.-चपे ।

(५) मो.-सुगुर सुवन ।

अरिस्त ॥ इहै चित्त चित्ती चहुआन । वर मासति सह सुनि कान ॥
 धरी अह अह निरमान । कहै वीर कन्हा चहुआन ॥ छ० ॥ ५७ ॥
 दूहा ॥ प्रात प्रगट वत्ती कहिय । आगम चिति प्रमान ॥
 सुवर काल बिती प्रिय । कलह परै परथान ॥ छ० ॥ ५८ ॥
 गाथा ॥ अवन सुनि सामत । रत्त आचिज्ज मतथ युद्ध ॥
 आगम होइ प्रमान । भूकष पकथ पड ॥ छ० ॥ ५९ ॥
 मुरिस्त ॥ काल सुचपि काल कराल । इन सगुन स्वर आनत ताल ॥
 आमुम्भक्त सुम्भक्त नजिय प्रकार । वर वीर भीर विस्तार भार ॥
 छ० ॥ ६० ॥

स्वप्न का फल ।

दूहा ॥ कहिग स्वर सामत सब । कहि आगम सत काज ॥
 सिध दीप दुज्जन भिरन । मरन सु अरि प्रथिराज ॥ छ० ॥ ६१ ॥
 जिहित स्वर सोमेस हनि । सोइ सगुन रन भीम ॥
 सोई सगुन ए सद्धियै । काल न चपै सीम ॥ छ० ॥ ६२ ॥
 सवेरे कविचन्द का आशीर्वाद देना और राजा

का स्वप्न कथन ।

अरुन उदै जगो नृपति । निकट भट्ट सिरनाइ ॥
 सरन कमल थल भरन मुप । फूले आनद पाइ ॥ छ० ॥ ६३ ॥
 चौपाई ॥ मुदत कमोदनि उदयति भान । विसत वसमति अभ्यत थान ॥
 को चपै कै मरन जहूर । यों मत मत विमत कहर ॥ छ० ॥ ६४ ॥
 चढि पति घट्टि सु सख रसाल । अर वरि वीर अर वरि भाल ॥
 जिते सगुन दिधि रत्ति प्रमान । तिते कहे चक्रित चहुआन ॥
 छ० ॥ ६५ ॥

दूहा ॥ सभरि रा सभरि सुकथ । सगुन सु प्रातय राज ॥
 कछु सगुन निसि उच-थौ । सुनहु सु जपहु काज ॥ छ० ॥ ६६ ॥

काहे सख्य पयलखि भर । भर निहचै सामंत ॥

जु काछु राज दिख्यौ नयन । जंषि गंषि बर कांत ॥ छं० ॥ ६७ ॥
गाथा ॥ सो संधौ निसि सहं । बहे कर तीनयो सहं ॥

नं जानय किंमानं । परिमानं किंनयं होइ ॥ छं० ॥ ६८ ॥

राजा के स्वप्न का फल ।

चोटका ॥ दिन सह सगुनन सह घरी । कलहंत विषंमति बीर भरी ॥
कलि कारन भोकलि वानि रसं । धरि एक धरी महि जुद्ध रसं ॥
छं० ॥ ६९ ॥

भय भ्रत भयानक बीर भटं । कलहंत कलेवर बीर धटं ॥

छं० ॥ ७० ॥

दूहा । कलह कलेवर बीर धट । सगुन सु दृष्टिय पान ॥

सुबर राज बहू विपम । देवासुर जु समान ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कन्ह के शनिमय वचन ।

नको जियत दिख्यौ नयन । न को मरत दिख्यान ॥

मान गरभ आवन गमन । कर नंच्यौ बंधान ॥ छं० ॥ ७२ ॥

धंधौ नटु सुभटु भ्रम । जस अपजस लभ हानि ॥

जिन जिन जुरि धर नष्यौ । सो दुरजोधन जानि ॥ छं० ॥ ७३ ॥

सो दुरजोधन जोधवर । सगुन बंधिय पान ॥

सुई अग्र नन भूमि दिय । बर भारथ्य प्रमान ॥ छं० ॥ ७४ ॥

पृथ्वीराज का रोना सहित शिकार करना, वन की हकाई होना ।

गाथा ॥ बर भारथ्य प्रमानं । जानं जुझाय बीतयौ धटयं ॥

अवत वत चारौ । सगुनानं लभिमयं पारें ॥ छं० ॥ ७५ ॥

सुरिख ॥ चहुिय पति धटि आवरि खरं । सुधट धटय जमुना जल पूरं ॥

पथ इंदय अवति पति खरं । मयति काल विग्यानति खरं ॥ छं० ॥ ७६ ॥

दूहा ॥ सुर विग्यान विग्यान पति । भयति भयंतर जुद्ध ॥

कानन बीर सु हक्यौ । सुबर बीर गुन सुद्ध ॥ छं० ॥ ७७ ॥

(१) ए. क. को.-भ्रतय ।

(२) ए. क. को.-जनम ।

(३) मो.-वन्धौ ।

(४) ए. क. को.-मान ।

वन हकन नृप हुकम भय । जहँ तहँ गज्जत खर ॥
 तबल तूल चक्क चहिय । कह नीरे कह दूर ॥ छ० ॥ ७८ ॥
 धुधर गज धटानि धुनि । हय गय हस मह लच्छ ॥
 सयन सव्य सोवत जगिय । कानन हाकिम पच्छ ॥ छ० ॥ ७९ ॥

वन में खर भर होते ही एक भूखे सिंह का निकलना ।

कवित्त ॥ छुटत तीर चिहु पप्प । सह बज्यौ सु खर धन ॥
 सिंह सह पर सह । बज्जि पर सह मत्त पन ॥
 रद विमद गज भइग । बान भग्गे मन आरि ॥
 हाइ हाइ आरिष्ट । दिष्ट लग्गे पति गारि ॥
 गौधत्त भूत पचाप नय । कानन पति कानन भुकिथ ॥
 कोई सु भज्जि मूलन रजिय । जत्ति काल कालह बकिय ॥ छ० ॥ ८० ॥
 दृष्ट ॥ सिध छुधित निद्रा ग्रसित । सिधनि सिधु यह पथ्य ॥
 काल नाग नागिन जग्यौ । बर बीरा रस हथ्य ॥ छ० ॥ ८१ ॥

सिंह का वर्णन ।

पहरी ॥ भाल्यौ सु सिध इक षेल वार । खतौ सु मझ कदर लवार ॥
 लड्यौ सु वास नर निकट जानि । अज्यौ सु गर्ज नभ घोर बानि ॥
 छ० ॥ ८२ ॥
 पुच्छिय पटकि मडिय सु सौस । बक्कारि उच सिर दुदस दौस ॥
 छुटत भाल जुगनेन दौस । पाटत मुच्छ रिस अधिक दौस ॥ छ० ॥ ८३ ॥
 तिथ्ये सु जोर जमदठ वत । फटत धरनि हथ्यल तुरत ॥
 हथ्यौन सौस नप हनि तुपार । देयत दत जनु काल धार ॥
 छ० ॥ ८४ ॥
 सिधनि सु पास ससि दोइ तथ्य । लीनौ सु घेरि सामत सथ्य ॥
 छ० ॥ ८५ ॥

सिंह का कन्हा के ऊपर झपट कर वार करना ।

कवित्त ॥ झपटि लपटि जनु अग । कन्हा दिसि किन लटकि ॥

अतुल पाइ बल अतुल । अग्नि जनु जग्नि भटकिथे ॥
 जाजुहित गंभीर । गरुअ सदअ उचारिये ॥
 हाइ हाइ आरिष्ट । राज हकम वकारिये ॥
 असवार चूकि चप्पौति हथ । करि वुंडल कमान रजि ॥
 नर नाह वाह अवसान फाबि । परिय बस्थ नर अश्व तजि ॥
 छं० ॥ ८६ ॥

कन्ह का सिंह का सिर मराक कर भार डालना ।

इत सु कन्ह उत सिंध । जन्ह जुग जानि प्रलै बर ॥
 दुअ दंतिन दल दलन । दुअह जम जोध अडर डर ॥
 कांध कांध तिन चंपि । कर कट्टिय कट्टारिय ॥
 पेट फारि धर डारि । फेरि पग भूमि पछारिय ॥
 सिर फट्टि मेज मेजिय उडिय । हड्ड मंस नस भूर हुअ ॥
 जय जय सु सह सह भूमि भय । बलि बलि कन्ह नरिंद भुअ ॥
 छं० ॥ ८७ ॥

भंज्या सिंधह स्वर । कन्ह जंगह चहुआन ॥
 भयौ नूर मुख स्वर । सगुन लखौ परिमान ॥
 उहांइ सेन सजि राज । गुज बुझगौ न महरति ॥
 कूच कूच उपरे । देस पट्टन धर चूरति ॥
 आकास मध्य तारा तुटै । यों तुटौ अरि सेन पर ॥
 कल मलत सेस काइर कंपत । कीजहि उज्जर जारि धर ॥
 छं० ॥ ८८ ॥

कन्ह के बल और उराकी बीरता की प्रशंसा ।

गाथा ॥ स्वरं किञ्च प्रकारं । सारं भार जुझ मय मतं ॥
 कै देवत विष्णु । कै जुटा कालयं करनी ॥ छं० ॥ ८९ ॥

अस्त्र शस्त्रो रो सुसज्जित होकर रागांतों सहित राजा
 का आगे कूच करना ।

कवित्त ॥ सज्जि सिलह सामत । मत्त मत्ते जनु चलिथ ॥

'सो चौसठ्ठि हजार । भार भारथ वै हल्लिय ॥

चामर छत्र रपत । छत्र दीनौ तिर कण्ठ ॥

छुट्टिय पट्टिय अपि । बिरद नरनाह जिनन्ह ॥

सेनाधि पति कण्ठ । कियौ । अग्न फौज ग्रथिराज वर ॥

पच्छली फौज निहदुर बलिय । ता पच्छै पमार भर ॥ छ० ॥ ६० ॥

दूहा ॥ कूच कूच जिम जिम चले । तिम तिम छडत मोह ॥

ज्यौं बच्यौ दुज राज ने । तिथि पचानह सोह ॥ छ० ॥ ६१ ॥

कूच के समय पृथ्वीराज की फौज का आतक वर्णन ।

पक्षरी ॥ चढि चल्थो राज बहुआन सर । दैवत वाह दुग्जन कारुर ॥

गुग्जर नरेस पट्टन प्रवास । दल बढ़ै राज जगल सु चास ॥ छ० ॥ ६२ ॥

कलमलिय काय क कह कठार । * सारथ्य कित्त सम राज जोर ॥

करि गिरद सेन सज्जी सभति । मानों कि भाति किरनाल पति ॥

छ० ॥ ६३ ॥

कलमलित कमठ भर पिठु भूमि । सल सलित सेस सामत भूमि ॥

हलमलत आव बके मेवास । पल भलत पपि सम सहि न चास ॥

छ० ॥ ६४ ॥

चल मलत रैन सुभक्तौ न पथ । मल मलत स्वर जनु समय अथा

नल टलत चित्त काइर सु सक । गल बलत स्वर जनु कपि लक ॥

छ० ॥ ६५ ॥

नल कलत अथ रह बल सु चाल । तल फलत ढाल हिरनाल फाल ॥

दल हलत जानि सरिता सपूर । मलहलत छील साइर हिलूर ॥

छ० ॥ ६६ ॥

थल जलत इक्क मिलि कीच उट्टि । मिलि चलित ससि सामत सुट्टि ॥

फाल फलित मरन बछत जिनरैन । कल कलत चद कवि बल तिनरैन ॥

छ० ॥ ६७ ॥

पृथ्वीराज का भीमदेव के पारा एक * चुल्लू भेजना ।

दूहा ॥ अही चंद चंदह मरन । दिन दिन 'सखै दुष्य ॥

कहौ जाइ चालुक सम । मंगै बैर समुष्य ॥ छं० ॥ ८८ ॥

* ले चखौ नट भीम कौं । चंगी दोय रसाल ॥

एक सुरंगी पधारी । इक कंचुकी भुजाल ॥ छं० ॥ ८९ ॥

वावित्त ॥ मन मानै सोइ गहौ । करिव चित्त इकतारं ॥

इह संसार सुपन्न । अपन झुझै इक वारं ॥

चंद हथ्य कहि पठय । भीम सम संभरि वारं ॥

तात बैर संग्रहन । वचन तत्ते उचारं ॥

गज माट सुभर धट भंजि तुअ । सरित चलाउं रुधिर की ॥

धार सिंचि सोमेस कहुं । तपति बुझाउं उअर की ॥ छं० ॥ १०० ॥

रोमाइन मघवान । वरषि धन अमृत धारं ॥

बालमीक पीयूष । सौंच लव रघुपति रारं ॥

अरजुन सयन सभेत । आनि बखर पताल मनि ॥

बेद व्यास भोरथ्य । सकल क्षोहनि दीपक बनि ॥

चहुआन कहाइय चंदकार । पिता बैर कज इह बथन ॥

* चालुक भीम उन सम सुनहु । तुमह जिवावन अब कवन ॥

छं० ॥ १०१ ॥

चन्द का भीमदेव के पारा जाकर युक्ति पूर्वक कहना कि

पृथ्वीराज अपने पिता का बदला लेने को तय्यार है ।

चखौ चंद गुजरह । गरै जारी जंजारह ॥

नीसरनी कुदाल । दीप अंकुस आधारह ॥

(१) ए क को.-चलैं ।

* चुल्लू==स्मरण रहे कि यह चुल्लू Challenge का अपभ्रंश नहीं है । यह राजपुतानी भाषा का प्रचलित शब्द है जिसे बुन्देलखंड में चिन्नू चुन्नू भी कहते हैं । इसका अर्थ "किसी को अपन मुकाबले के लिये बमर्का देना भड़काना या उभाड़ना है ।

* छन्द ९९ से लगा कर छन्द १०१ पर्यन्त मो. प्रति में नहीं है ।

कल झल सग्रहै । गयौ चालुक दरवारह ॥
 इह अचम जन देपि । मिल्यौ पेयन सेसारह ॥
 भेद्यौ सु भीम भोरा सुभर । कहिय बति सभरि वयन ॥
 हो भट्ट चट्ट बोलहु कथन । कहा इहै डवर सयन ॥ छ० ॥ १०२ ॥
 एन जाल सग्रहो । जाम जल भीतर पड्यौ ॥
 इन नीसरनी ग्रहो । जाम आकासह चढ्यौ ॥
 इन कुदालै पनौ । जाम पायाल पनठ्यौ ॥
 इन दीपक सग्रहौ । जाम अधारै नठ्यौ ॥
 इन अकुस असिबसि करों । इन चिह्नल हनि हनि सिरों ॥
 जगमगै जोति जग उप्परै । तोडर प्रथम नरिदरै ॥ छ० ॥ १०३ ॥
 भीमदेव का उत्तर देना कि मै भी उसे ढड देने को प्रस्तुत

हू जो मेरे समुख आवे ।

जाल ज्वाल करि भसम । कारस नीसरनी कट्यौ ।
 धन भजों कुदाल । दीप कर पवन आपट्यौ ॥
 अकुस अकुर मोडि । तिनह चहल सकोडों ॥
 हनन कहै ताहनौ । जोति जग मच्छर मोडो ॥
 हौ भीम भीम कदल करो । मो डर डक अचम नर ॥
 मम करइ ग्रव धरि लज्ज अव । वितक पुव परचि पर ॥ छ० ॥ १०४ ॥
 रे डर विह्वल । कोइ कारन भिर मचौ ॥
 रे गिहिन सिर हस । दैव जोगह सिर नचौ ॥
 रे अग वघ सँग्राम । लरै वर अप्पन आयौ ॥
 रे अप्पह सो समर । करै मडुक जस पायौ ॥
 आचम ब्रह्म गति वह नही । बार बार तुहि सिप्यै ॥
 प्रज्जरै भार तरवर गिरह । का दीपक लै दिप्यै ॥ छ० ॥ १०५ ॥
 बैन वाद सो करै । होइ भट्टह कौ आयौ ॥
 गारि रारि सो भिरै । जेन रस पप्य न पायौ ॥
 हथ्य वथ्य सो भिरै । घरह धन बधव बट्टै ॥
 इह सोभसर बैर । लेहु अप्पन सिर सट्टै ॥

तुम कहौ जाइ संभरि बयन । इन डिंमन डिंभरु डरै ॥

संच्यौ दरका हकै चरत । सज्ज फटकै निकरै ॥ छं० ॥ १०६ ॥

चन्द का भीगदेव के दरवार से कुपित होकर चला आना ।

दूहा ॥ चंद मंद मन आतुरह । उद्यौ रत्त करि नैन ॥

फिरि पहंच्यौ नट पिश्र्य पै । कहैं चरका बैन ॥ छं० ॥ १०७ ॥

भीगदेव का अपने भाट जगदेव को चंद के पारा भेज कर
अपनी तय्यारी की रूपना देना ।

कावित ॥ सुनौ भट्ट जगदेव । कहै भोरा भीमरे ॥

तुमहु चंद पै जाहु । पवरि पायान दियंटे ॥

जो कछु तुम बुझए । ज्वाब मंगन हौ आयौ ॥

ज्यौं सुतौ सुप उरग । मीड़ि वर पुंछ जगायौ ॥

आयौ नरिंद गुजर सवर । करिय सेन चतुरंग भर ॥

मो दिठ्ठ दिठ्ठ पुच्छिय सयन । बयन वाद मनो न उर ॥

छं० ॥ १०८ ॥

जगदेव वचन ।

कहु मिसरे छेड़्यौ । राउ गुजरी नरेसर ॥

दीवा जाल कुदाल । कहमि वह सह आडंबर ॥

कह मिसरै कैमास । जास पुच्छंत विचष्यन ॥

चामंड रा कहां गयौ । बहुत राया वर दष्यन ॥

कह मिसरे क-ए विष्यनौ । जगदेव संचौ चविय ॥

वंमन हय या दिइ घर । कह मिसरें संभरि धनिय ॥ छं० ॥ १०९ ॥

चन्द वचन ।

वार वार बेलयौ । सरस बतडिया गुजर ॥

अव विगति लभिमहै । मिरच चज्यौ ज्यौ गजर ॥

(१) मो.-“क्यो छज्ज फटकै निकरै” ।

(२) ए. कृ. को.-झुठ ।

(३) ए. कृ. को.-लागे है ।

(४) मो.-मिरच चढ़े ज्यौ गजर ।

तूअनि राव मजाम । जिके रन अगन जिता ॥
 इन सभरिवैराव । कोडि सै सहस विधता ॥
 भेदयौ नही गुर अप्परो । कविथ वयन सग्हौ सरै ॥
 कर नही मच बौछिय तनौ । धतौ हथ्य सप्पा हरै ॥ छ० ॥ ११० ॥
 जगदेव का चन्द का रूखा उत्तर सुन कर भीमदेव
 के पास फिर जाना ।

दूहा ॥ सुनि सु बेंन जगदेव फिरि । कहि भोरा भीमग ॥
 आयौ नृप चहुआन सजि । हय गय भर चतुरग ॥ छ० ॥ १११ ॥
 पृथ्वीराज का निड्डुर को युध का भार सौपना ।
 कवित ॥ ढिग बुलाइ प्रथिराज । हथ्य निड्डुर कर धारिय ॥
 सकल सूर सामत । जुइ मगह अधिकारिय ॥
 आदि राज पहु आदि । आदि सम जुइ समडौ ॥
 दैव काल सग्रहौ । बलह मारथ जिम पडौ ॥
 मनै अनन्य ससार सह । छिति छचिन सहि छजत रज ॥
 एकग अग जगह अटल । करन जुरी सामत सज ॥ छ० ॥ ११२ ॥
 निड्डुर का पृथ्वीराज को भरोसा देकर स्वामिधर्म
 की प्रशमा करना ।

कहि निम्भर सामत । जुइ जगन दल मडन ॥
 समर समै रति स्वामि । तनह तिनुका सम पंडन ॥
 इक उभत जुध उह । इक गज दत उपारहि ॥
 इक कमध उठि लरहि । इक रुधि बीर बकारहि ॥
 सभरि नरिद तुम सभरौ । धरिय उदर इम रह बल ॥
 बड बस अस दानव प्रवल । करहु मोह हम भाग बल ॥ छ० ॥ ११३ ॥
 निड्डुर का कन्ह राय की प्रशसा करना ।

दूहा ॥ वालप्यन जोवन विरध । रन रतौ जोधार ॥
 कन्ह दलन अरि मडइय । नन तिक्का करि डार ॥ छ० ॥ ११४ ॥

जिन अंघिन भर पट रहै । सोइ छुट्टै द्वै ठाम ॥

कै सज्या वामा रमत । कै छुट्टत संग्राम ॥ छं० ॥ ११५ ॥

जे बंके विरदन वहै । नरन नाह जग जप्प ॥

कै भारथ भीषम सुभट । कै रामायन कप्प ॥ छं० ॥ ११६ ॥

पृथ्वीराज का निहटुर को मोती की गाला पहनाना ।

अमुल माल मुत्तिय सजल । मोल लप्प गुन मान ॥

अप उरते उत्तारि नप । दीनी निहटुर दान ॥ छं० ॥ ११७ ॥

**निहटुर का रोना की तय्यारी करके स्वयं युद्ध के
लिये तय्यार होना ।**

कवित्त ॥ हालाहल उर गाल । माल मुत्तिय दुति राजै ॥

रवि कांठह जनु गंग ॥ ईस जनु सौस विराजै ॥

सुभर निडर रठौर । बाजि नीसान गराजै ॥

जैसे बज्जत डंका । बीर बहुत बल ताजै ॥

मंडई मरन मन अरि कलन । चलन चित मन अटल हुअ ॥

सब सेन मध्य इमराजई । पह मगह ज्यौं जानि धुअ ॥ छं० ॥ ११८ ॥

पृथ्वीराज का कन्ह को पवाई पहिनाना ।

दूहा ॥ फुनि कन्ह प्रथिराज नप । पाव पवंग परठि ॥

लेइ नहौं मन संगत मल । निठु चढ़ाईय हठि ॥ छं० ॥ ११९ ॥

कन्ह का युद्ध में अपने रहते हुए सोमेश्वर के मारे

जाने पर पछतावा करना ।

कन्ह कहै नप जंगल । मोहि सजीवन भिटु ॥

सोम अरिन तन सङ्ग्यौ । पंजर हंस न नठु ॥ छं० ॥ १२० ॥

निहटुर का कन्ह को रांतोष दिला कर उत्साहित करना ।

कवित्त ॥ एक समे सुग्रीव । चिया न रषिय अप्प बल ॥

एक समे द्रुजोध । करन रष्ये न जिति षल ॥

एक समै श्री राम । सीय वनवास अरि न ग्रहि ॥

एक समै पडवन । चीर रघौ न द्रोपदह ॥

तुम कन्ह क कह अकलक कहि । इष्ट रूप हम सब जपहि ॥

तुम तेज अपि देपत नयन । मोर अप्य सम भर जपहि ॥ छ० ॥ १२१ ॥

दूहा ॥ निदुदुर कन्ह प्रभोधि इम । सोलकी सीमग ॥

सुनि आए धाय दुसह । दल दोहन भीमग ॥ छ० ॥ १२२ ॥

सेना का सज कर आगे वढना ।

गाथा ॥ जाइ सपते स्वर । पटन सेनाय मड भारथ्य ॥

तांत वैर प्रमान । बह्वे वीराइ वीर पल याइ ॥ छ० ॥ १२३ ॥

चहुआन और चालुक्य की सेनाओं का परस्पर

मुठभेड होना ।

दूहा ॥ दिपादिपी दुअ सेन भय । नारि गोर गहरानि ॥

कुहकवान आधात उठि । उडिय अगि असमान ॥ छ० ॥ १२४ ॥

अग पन्छ बाजू वियन । दल मडै दुअ राइ ॥

तत्त तुरी जे तत भरे । असि कह्यै धन धाइ ॥ छ० ॥ १२५ ॥

भीमदेव के घोडे की चचलता का वर्णन ।

कुडलिया ॥ फिरत तुरी चालुक्क रन । वर रप्यै चिहु कोन ॥

नस चपै न सु ढिसवै । ज्यो बदर को छोन ॥

ज्यो बदर को छोन । भुप्य भजै नन पचै ॥

तेज तुरी नप्यते । जानि आसन मन सचै ॥

राग समचै वाग । सीर लप्यै पति हेरै ॥

लिपिय चित्र असवार । मत्त मत्त हय फेरै ॥ छ० ॥ १२६ ॥

दोनो सेनाओ का परस्पर एक दूसरे मे भिडना और

उनका विषम युद्ध ।

दूहा ॥ कदत वैर वकम विषम । विषम ज्वाल छिति सार ॥

सार सरीरन झेल नह । भर ^१निचिंत पहार ॥ छं० ॥ छं० ॥ १२७ ॥
 रसावला ॥ ^२मिले वीर भट्टं, सुरंग सुथट्टं । हवी हथ्य छुट्टं, नरं खर लुट्टं ॥
 छं० ॥ १२८ ॥

मनों लागि नट्टं, झरै हड्ड फट्टं । मनो कठ ^३कांठ, वट्टे तेग तट्टं ॥
 छं० ॥ १२९ ॥

मनों चट्ट पट्टं, सिरं गुर्ज फट्टं । फुटै दडि मट्टं, पगं गे उहट्टं ॥
 छं० ॥ १३० ॥

परै सीस कट्टं, धपै लोह थट्टं । मुषं मार रट्टं, छुटी कन्ध पट्टं ॥
 छं० ॥ १३१ ॥

अगी ज्यों लपट्टं, परै बट्ट बट्टं । धरा ज्यों रपट्टं, गजं दंत भट्टं ॥
 छं० ॥ १३२ ॥

मनों कांद जट्टं, मिले बथ्य चट्टं । मनो मल्ल हट्टं, गजं यों उहट्टं ॥
 छं० ॥ १३३ ॥

मनों भीम हट्टं, ठहै ढाल वट्टं । मनो चट्ट अट्टं, लगौ तीर तट्टं ॥
 छं० ॥ १३४ ॥

उरं फारि फट्टं, नचै ईस नट्टं । उमा अग थट्टं, रुधं काल चट्टं ॥
 छं० ॥ १३५ ॥

^४धरं माल अट्टं, पलं गिद्धिगट्टं । लगै गैन घट्टं, वट्टे सुर्ग वट्टं ॥
 छं० ॥ १३६ ॥

मगं मग ^५थट्टं, मुकती स लुट्टं । ^६रिनं पत्त फट्टं, ... ॥ छं० ॥ १३७ ॥

कन्हराय की पट्टी छूटना और वीर मकवाना
 रो कन्ह का युद्ध होना ।

दूह । ॥ पट्टे छुटत कन्ध चष । पल धारा धर बज्जि ॥

मानो मेधन मंडली । वीर बीजली रज्जि ॥ छं० ॥ १३८ ॥

कवित्त ॥ इत सु कन्ध चहुआन । उतह सारंग मकवानो ॥

बल बट्टे बल बंड । जानि कंठौर लोहाना ॥

(१) मो.-तिचित्त ।

(२) मो.-जुरे ।

(३) ए. क. को. कट्टं ।

(४) को.-वरं, मो.-खं ।

(५) मो.-हट्टं ।

(६) मो.-रिषं ।

कर कहुँ करिवारि । भार ठिलिय भर भारी ॥

स्वामिधर्म सुद्धरै । बार दत्ती सु करारी ॥

लिप्ये जु अक विधि कक जिहि । आनि सपत्तिय सो धरिय ॥

अद्भुत रुद्र रस विस्त-यो । सु कविचद छदछ धरिय ॥ छ० ॥ १३८ ॥

मकवान का माराजाना ।

दूहा ॥ पत फटे सारग ने । रस जम कण्ठा वत ॥

भुक्ति पन्थौ मकवान रिन । गल गज्जे सानत ॥ छ० ॥ १४० ॥

सामतो का परक्रम और शूरवीर योद्धाओं की

निरपेक्ष वीरता की प्रशंसा ।

रडरि धर 'सारग की । परत पहुँमि मकवान ॥

सूर सु गज्जे जगली । मै भगौ अरियान ॥ छ० ॥ १४१ ॥

सिद्धि न लभ्यै सिद्धि जै । ते लड़ी सामत ॥

छाया माया मोह विन । विमन सुमन धावत ॥ छ० ॥ १४२ ॥

कवित्त ॥ द्रुमति तजत वर अत । रत्त चचर सौ स्मारन ॥

अप्य अप्य सग्रहै । पार दुज्जनन उतारन ॥

सार सुगति सग्रहै । जियन सुपनौ करि जानै ॥

राति दिप्यि जगल । प्रात पीछे न पछानै ॥

यौ जानि सूर सद्यत रनह । वन सु अग्नि अनु वाय वसि ॥

स्वामित तेज तिम तन तपन । दोष न लग्ये जीर जस ॥ छ० ॥ १४३ ॥

गाथा ॥ उठुय आवत स्मार । धार पादार पति सुमटाथ ॥

घहर घोष धन भट्ट । यो वरपत वीर वकाथ ॥ छ० ॥ १४४ ॥

दूहा ॥ बहुरि न हसा पजरह । जे पजर तुठि धार ॥

हस उडा जव नदृष्टी । पजर सार असार ॥ छ० ॥ १४५ ॥

कवित्त ॥ पहर एक भर भरह । टोष असिवर वर वज्जिय ॥

वपर पपर जिन सोल । सूर सामत न भज्जिय ॥

(१) मो झुझि ।

(२) ए कू को चालूक ।

(३) ए कू को लट्ठी ।

हय हय हय उच्चार । धाय घायल घट गजिय ॥

चह चह चबंक बजिय । तुष्टि पाइक विन तजिय ॥

रोस रसि वसिय सामंत रसिय । अयुत युद्ध उद्धह गतिय ॥

सामंत स्वर दिसि सुर लरत । कहत धन्य राजन रतिय ॥छं०॥१४६॥

रगक्षेत्र की सरित सरिताओं से उपमा वर्णन ।

गाथा ॥ साभर मती सरितं । गुजार पंडेव धार धारायं ॥

दुअ तद रुधिर उपट्टं । वहै प्रवाह हस्थियं वाजं ॥ छं० ॥ १४७ ॥

दूहा ॥ हस्थि वाजि नर भर वहत । सिंधनि धुनि गरजंत ॥

एक घरी अदभूत रस । रुद्र भयो विसमंत ॥ छं० ॥ १४८ ॥

भोतीदाम ॥ मिले बहुआन सु सतय बीर । तजै भव मोह भजै घग श्रीर ॥

शरै सिर शार दुधार प्रवाह । परे रन में ज्यु मंदंध गवार ॥

छं० ॥ १४९ ॥

उठै धर ओनिय छिंछ उतंग । सु पावक ज्वाल मनो गिरि शृंग ॥

उड़ै धन सार शूनंकत पग । मनो जुग जुगिनि लगिय मग ॥

छं० ॥ १५० ॥

भनंत कि भोर कि तीरन तार । विठं तजि पंकज फुटत फार ॥

परे बहु पंतिय सोलंक सेन । लियो तिन तात सुवैर बलेन ॥

छं० ॥ १५१ ॥

इसे रन रंग सुभैत सुठार । मनो मय मत्त परे विकार ॥

छुटंतय तीर सुभंत सुमार । उड़ै जनु सिंगन भद्व पार ॥छं०॥१५२॥

दमंकत तेज सु बांकिय बजि । रहै रन राज फवज सु सज ॥

॥ छं० ॥ १५३ ॥

प्रसंगराय खीची का पराक्रम वर्णन ।

कवित्त ॥ पिगि खीची परसंग । समुद अरि ग्रहन कि गसिय ॥

बड़वानल बलिबंड । घग घोहनि दल घसिय ॥

बढ़त सेन तेइ जरहि । पढ़त जनु भस्म कुड़ी हुय ॥

जह तह जगल सूर । कहि सुप सकै न आन कुय ॥
 कर पत्र मत्र जुगिनि जगहि । रजि पलहारिय घुह विन ॥
 चमरैत वैत जनु किमु वन । इम तन रजिय सोभ तिन ॥ छ० ॥ १५४ ॥
 पिक्ति नरिद हय नपि । वज्जि घुरतार कपि भुअ ॥
 अष्ट सु चल दस विचल । कपि सपात पात हुअ ॥
 उठिय सुप्य सुख वक । सीस लग्यौ असमान ॥
 पपि जान पावै न । करहि कुडल कमान ॥
 घरि एक घावि विधम भयौ । छाड़ छाड़ मच्च्यौ कलह ॥
 तिन सह सिम सिभासनह । उघरि वीर दिप्यौ पलह ॥ छ० ॥ १५५ ॥

गाथा ॥ यों कुटे सुर सार । धाव घडय धन सु लोहार ॥

भद्र सूर प्रकार । आभद्र द्रुज्जनो ग्रह ॥ छ० ॥ १५६ ॥

भीमदेव की फौज का विचलना ।

साठक ॥ आभद्र वर ग्रह दुज्जन वर, भद्र नृप राजय ।

जे भग्ना सामत वीर वसुधा, तत्तेव जीवतय ॥

भग्ना सनेय वीर चालुक रन, मुक्ती वर मुक्कय ॥

अती अत सु अत अतर रत, जुक्ती तुमत करौ ॥ छ० ॥ १५७ ॥

शूरवीर पुरुषो के पराक्रम की प्रशंसा ।

दूहा ॥ काल व्याल सम कर ग्रहन । भिरत परत अरि तथ्य ॥

दिव देवासुर उचरै । धन्न सु छचिय हथ्य ॥ छ० ॥ १५८ ॥

सूर हथ्य हथिय ग्रहिग । चरत भान आनद ॥

सूरज मडल भेदिते । जोति जगति न इद ॥ छ० ॥ १५९ ॥

घट घटै लुटै मुगति । छिति छुट रति चाव ॥

यो मत भते रत्त रन । ज्यौ वलि वावन पाव ॥ छ० ॥ १६० ॥

गाथा ॥ वामन दिख सु पाव । ईस जचि मुर्वीय सहय ॥

एकाक पाइक सूर । सो जिते तीनय लोक ॥ छ० ॥ १६१ ॥

(१) ए कृ को दल ।

(२) ए रु को मुठठ भुर ।

(३) मो रन ।

(४) मो भेदिके ।

(५) मो घुटै ।

खामिअगा सुध मत्तं । सुधयं मत्ताइ तत्त गुनयं मी ॥

धीरं धीर अधीरं । धीरं छुट्टेव हथ्ययं दिधधं ॥ छं० ॥ १६२ ॥

परस्पर धमसानि युद्ध की दृश्य वर्णन ।

चोटका ॥ सुमिले चहुआन चलुक अनी । जु 'वजे जनु देवय दिव्य धुनी ॥

रनकावत षगगत हथ्य कारे । मनु बीर जगावत बीर उरै ॥

छं० ॥ १६३ ॥

गहि चचरसी चवरंग रजं । मनो भद्व वदल मद्द गजं ॥

सपरै गज कांका करंन भरं । सु उड़ै जनु पंतिय पंय भरं ॥

छं० ॥ १६४ ॥

भननंकय बीरति बीर सयं । स नचै जनु रुद्रय बीर हयं ॥

ततये ततथुंगय सार रजी । उड़ि काम किरचिन मंत गजी ॥

छं० ॥ १६५ ॥

पल में पल वित्तय पंच उड़ै । बहुच्यौ नन कालय बीर बुड़ै ॥

मसुरति सरति सरत रसी । सु उड़ै जनु सार सपति वसी ॥

छं० ॥ १६६ ॥

मय मंत सु मंति न दंति यता । भजि बीर डरावन साज हिता ॥

रननंकत तुंग तुरंग रनं । गननंकहि षग सुमग धनं ॥

छं० ॥ १६७ ॥

दुअ बीर दुहाइय हथ्य पढ़ै । सु बढै तनु विजुल हथ्य कढ़ै ॥

॥ छं० ॥ १६८ ॥

दूहा ॥ बढि विजल सय हति कार । गुर धर धंमति वाउ ॥

देव दिषै देवत रिशै । धनि सामंत सु धाउ ॥ छं० ॥ १६९ ॥

कवि का कहना कि कायर पुरुषों की अपगति होती है ।

गाथा ॥ तब कैमास सु जुडं । बुधं किन्न तीनयो वारं ॥

आहत दत्तिय चायं । न चायं नेह नारियं बीरं ॥ छं० ॥ १७० ॥

बंचै मुगति न बंचै । बंचै खामित जुडनो वरयं ॥

सा धट धट भौ थिरयं । जंगम जुक्ताय यावरं बीरं ॥ छं० ॥ १७१ ॥

चौपाइ ॥ थिरा थावर जगम नह वीर । बज गी घर बज सरीर ॥
बज धाइ आधात न छुटै । फिरि फिरि मुक्त रास करि लुटै ॥
छ० ॥ १७२ ॥

दूहा ॥ ढाहि सेन चालुक बर । धटिय सेन चहुआन ॥
दुहु मभमै कोविह ज्यौ । घर छडै नह थान ॥ छ० ॥ १७३ ॥
चौपाइ ॥ धूअ धूअ थानय नन छडै । भान सक्त सभया गुन पडै ॥
कैवर रत्त अटतत चार्डै । कैवर स्तर परे धन धार्डै ॥ छ० ॥ १७४ ॥
दूहा ॥ बजहि धाव घरियार जिम । राइन दोऊ सेन ॥
चालुकर चोहान रिन । भयौ भयानक गैन ॥ छ० ॥ १७५ ॥

पृथ्वीराज और भीमदेव का साम्हना होना और कन्ह का
भीमदेव को भार गिराना ।

मोतीदाम ॥ मिले रिन चालुक सभरिनाथ । बजी कल कूह सु वजन हाथ ॥
ढहै गज गुजत रीस चिकार । परे हथ तुष्टि अदम्भुत रारि ॥
छ० ॥ १७६ ॥

जहा तहा सग फुटै घर पार । बहै सर ओन कि जावक धार ॥
भई सिर छाह कमानन तीर । फुटै घर पजर धुक्कि गहीर ॥
छ० ॥ १७७ ॥

भयानक मेघ भय असकक । थलपल रहि मची जनु पक ॥
अदम्भुत कक विरचिय वीर । कढौ अस कोह भरकिय भीर ॥
छ० ॥ १७८ ॥

उते नृप भीम इते चहुआन । गही कर नागनि सी असि पान ॥
धनदिन भीम रछौ घट जत । सु आनि के आज पडूचिय अंत ॥
छ० ॥ १७९ ॥

करौ घर रडरि गुजर देस । हकारिय भीम भयानक भेस ॥
हहकिय भीम न पावहि जानि । विठाउन सोमह सुर्ग दिगान ॥
छ० ॥ १८० ॥

(१) ए कु को प्रायण ।

(२) ए कु को साज ।

(३) ए कु को धनहन ।

(४) मो-सिपत ।

(५) मो-वैठे जत ।

पचारिय कण सु पिथ्य पछाय । हनै किन स्वरन निकरि जाइ ॥
 कियं सुनि घाव सु संभरि वार । वही अस कंध जनेउ उतारि ॥
 छं० ॥ १८१ ॥

धुकंत सु घाव कियौ भर भीम । सु रेंपसि सेप वही असि हीम ॥
 जयं जय जंपय देव दिवान । रही धर अछरि अछ विमान ॥
 छं० ॥ १८२ ॥

धरें सिर राजन अंमर फूल । परी सुनि चालुक सेनह हूलि ॥
 जितं तित उठहिं छिंछ अनंत । निपज्जिय धेत प्रवालिय भंत ॥
 छं० ॥ १८३ ॥

जितं तित हकत सौस धरंन । भयानक सेप वकंत वरेन ॥
 कभंध करंत जितंतित धाइ । हनंत फरंत कि भूत विलाइ ॥
 छं० ॥ १८४ ॥

जितं तित धाइल धूमत सार । रेनंकिन छकि कि छकि गमार ॥
 जितं तित तफत लुथ्य चिहार । जलं मझि डारि कै मीन कहार ॥
 छं० ॥ १८५ ॥

जितं तित हथिय लुहत भूमि । रची जनु भीम भयानक भूमि ॥
 जितं तित धाइल पारत चीस । लरै जनु प्रेत करी कल रीस ॥
 छं० ॥ १८६ ॥

जितं तित ओन भभक्त धाइ । फटै जनु नाव दयाव मझाइ ॥
 भयं डूम भीम भयानक अंत । सु बैठि विमान सुरप्पुर जंत ॥
 छं० ॥ १८७ ॥

भई रिन जीति जयं प्रथिराज । बजे रनयंच सबदय बाज ॥
 जपै सुर चारन गंधव भाट । मिले सब आनि फवज्जनि थाट ॥
 छं० ॥ १८८ ॥

जयं जय सह सु जंपिय मेव । झरै सिर पुष्प सु अंबर केव ॥
 ॥ छं० ॥ १८९ ॥

कन्ह की तलवार की प्रशंसा ।

कविता ॥ सिलह ममक पग धार । वीर उग्यौ ससि सोमै ॥
 कै नव वधु नप पित । काम आकार अलोमै ॥
 मरम वीर कातरी । दिसा वर तिलक पुष्ट वर ॥
 कै कुची शृंगार । वहुरि सोमै ओपम धर ॥
 सोमंत चंद की कला नभ । कल कल क सोमै न तन ॥
 दुग्यौ जु घेत सामत नै । बुभ्यौ राज तामस मन ॥ छ० ॥ १६० ॥
 चहुआन का पितृ वैर वदलने पर कवि का वधाई देना ।

दूहा ॥ लियौ वैर चहुआन नृप । वजि निरघोष सु धाव ॥
 चावहिसि सेना फिरी । वर वीर रस चाव ॥ छ० ॥ १६१ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों की प्रशंसा ।

वीर रस वर वढिय भर । धट्टिय घट तन पत ॥
 जम तजत जोगिनि सुजस । धनि सामत सु मति ॥ छ० ॥ १६२ ॥
 गाथा ॥ लज्जी कज मरिजौ । उदर दत्त धाव घन घडय ॥
 कठिन कप्य कलहत । मरन पच्छ निपजौ साइ ॥ छ० ॥ १६३ ॥
 गरजि तबै वेताल । रन रगेव रचिय काली ॥
 पलहारी पल पूर । हरं हर वरन वरनाई ॥ छ० ॥ १६४ ॥

सायंकाल के समय युद्ध का वद होना ।

सक्त सपत्तय हर । मेघ भयान भतिय क्रूर ॥
 कलन वीर रस पूर । नूर दुअ सेन दिव्याइ ॥ छ० ॥ १६५ ॥
 दूहा ॥ राति रहे तिन रनह मै । सब सामत पट हर ॥
 धाइ रहै घट धाइ सों । भयौ प्रात वर नूर ॥ छ० ॥ १६६ ॥

प्रभात समय की शोभा वर्णन ।

कविता ॥ निस सुमाय सत पत्र । मुकि अलि अम तक सारस ॥
 गय तारक फटि तिमर । चंद भग्यौ गुन पारस ॥

देव क्रमा उधरहि । बीर बर क्रम सुनिजहि ॥
 सोर चक्र तिय तजिय । नयन घुघू रस भिजहि ॥
 पहु फटि फटि गय तिमर नम । बजिग देव धुनि संप धुर ॥
 भय भान पनान न उध-यौ । करहि 'रोर द्रुम पथ तर ॥ छं० ॥ १८७ ॥
 सरद इंद प्रतिथि ब । तिमर तोरन किरनिय तम ॥
 उगिग किरन वर भान । देव बंदहि सु सेव क्रम ॥
 कमल पानि सारथ्य । अरुन संभारति रथ्य ॥
 जमुन तात जम तात । करन कंचन कर वरषै ॥
 ग्रीषम जवास बंध्यौ कमुद । अरुन वरुन तारक बसहि ॥
 सामंत खर दरसन दिषिय । पाप धरम तन बसि लसहि ॥ छं० ॥ १८८ ॥
 सुरिख ॥ के विगया महि मंडल खरं । पग पंछे बर बीर सपूरं ॥
 हनिग राव भीमंग सु हथ्यं । बह्वी किति जिति मनमथ्यं ॥
 छं० ॥ १८९ ॥

रणक्षेत्र की राफाई होकर लाशें ढूँढ़ी गई ।

कवित्त ॥ मिरिग खर सामंत । लुथ्य पर लुथ्य अहुदिय ॥
 सधन घाव पगार । बीर बीरां रस जुदिय ॥
 बड़वि सेन दोउ बीर । पेत ढुंढ्यौ न बीर दुहुं ॥
 उत्तर भुगिा भारथ्य । सार नंध्यौति सार मुह ॥
 बय ध्यान मान सम स्थाम दिष । किय कीरति अचल कलह ॥
 सामंत खर सम खरतन । कवि सु चंद जयै बलह ॥ छं० ॥ २०० ॥
 युद्ध में मरे हुए सूरवीर और हाथी धोड़ो की संख्या ।
 छेठ हजार तुरंग । परे रन बीर बीर भट ॥
 अड्ड सहस हथ्यी प्रमान । आरुहिय मेघ घट ॥
 पंच सहस परि लुथ्य । दंत सों अंत अलुगिगत्य ॥
 दूइय काल संग्रहै । लिषे बिन कोइ न श्रुगिगत्य ॥
 दै धरौ ओन वरधंत घर । पति पहार धर डोलयौ ॥
 सामंत खर खामित्त पति । जीम चंद जस बोलयौ ॥ छं० ॥ २०१ ॥

ससार की असारता का वर्णन ।

है ससार प्रमान । सुपन सोमै सु बन्न सब ॥

दिष्टमान विनसिहै । मोह बध्यौ सु काल अब ॥

काल क्षत्य षट्हीक । आज बंध्यौ नर गेही ॥

दया देह सभवै । दया बधै तिन देही ॥

सामत स्वर साधुस धनि । सज्जिय भज्जिय जानियै ॥

ससार असत आसत गति । इहै तत्त करि मानियै ॥ छ० ॥ २०२ ॥

दूहा ॥ बंध्यौ भौम जब राज प्रथि । वैर लियौ पगवाहि ॥

दोहित सजस स्वर कौ । कीनौ कचरा राइ ॥ छ० ॥ २०३ ॥

दस बदर कचरा दिये । दियौ चमर छेच सोज ॥

चौरासी बदर महै । और रुपै प्रथिराज ॥ छ० ॥ २०४ ॥

भौम दई दीनों तिलक । लीनो कचरा सग ॥

* प्रथीराज दिल्ली चले । काढि वैर अनमग ॥ छ० ॥ २०५ ॥

गुजरात पर चढ़ाई करके एक मास में पृथ्वीराज का दिल्ली
को वापिस आना ।

कवित ॥ तात वैर सग्रह्यौ । जीति जैपत्त सु लिनौ ॥

ढौली पतौ राज । किति ससार स भिनौ ॥

निप सधव 'सो उदर । सोइ सामतनि रणिय ॥

एक 'मगा उग्रहै । एक मगाह रत्त भणिय ॥

पचमी दिवस रवि वार वर । इद्र जोग तहा बरति तिथ ॥

दिन चढै राज प्रथिराज जय । जैहय गय नर भर समथ ॥ छ० ॥ २०६ ॥

इति श्री कविचद विरचिते प्रथिराज रासके भोलाराय भीमंग
वधो नाम चौवालीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४४ ॥

* छन्द २०३ से २०५ तक मो प्रति में नहीं है ।

(१) मो जो ।

(२) ए क को मया ।

अथसंयोगिता पूर्व जन्म प्रस्ताव लिख्यते ॥

(पैतालिसवां समय।)

पृथ्वी का इन्द्र प्रति वचन ।

दूहा ॥ कहै चडि सुरपति सुनहि । धरनि 'अघावहु लोहि ॥
रामाइन भारथ्य 'छुघ । रहीं निहारै तोहि ॥ छ० ॥ १ ॥

इन्द्र का उत्तर देना ।

कवित्त ॥ 'सा वसुमति वर चवै । सुनहु वर चड दड सुर ॥
रामायन रन वह । राम रावेन भान 'भुर ॥
'धर मुय्यै क्यों 'रहै । कहन हर हार तार गर ॥
ह्वर समर सुर धय्यि । अय्यि जन पय्यि तय्यि कर ॥
धक धार सार करिवार कर । मार मार मुप उच्चरिय ॥
असुचर अचभ चव मस चर । रुधिर केम अचिपत परिय ॥ छ० ॥ २ ॥
दूहा ॥ कर जोरै सुर राज सो । कहत असभम बात ॥
कोपि गोप उरगनि गरति । कौन ओन आधात ॥ छ० ॥ ३ ॥

तदनुसार राम रावण युद्ध ।

सिर स्यंदन लोचन अलग । धोरन अनि जग धोर ॥
वरपि वीर रस बहुल सर । सोसि सार रत धोर ॥ छ० ॥ ४ ॥

राम रावण युद्ध का आतक ।

हनुफाल ॥ हक हकि देव अदेव । धर कपि धर धरकेव ॥
पिठ कामठ कठ कलर । अत कजत काइर नूर ॥ छ० ॥ ५ ॥

- | | | |
|-------------------|------------------|---------------------|
| (१) मो अघावहि । | (२) मो वृष । | (३) मो सच सुमति । |
| (४) मो सुर । | (५) मो - तुम । | (६) मो रहो । |

बलि मथ्य वीर करूर । जग घग्ग लग्गि ^१गरूर ॥
 पथ पथ्य अंमर स्तूर । दह दिग्ग सुष्यम ^२नूर ॥ छं० ॥ ६ ॥
 चवअंत अंत नमंत । छुय लोक चामर अंत ॥
 विग्मान ^३मानिय रुढ़ । ^४अंवरन रच्चिय गूढ़ ॥ छं० ॥ ७ ॥
 छत ^५विछति ^६रधु लछिराय । रथ निगछ सुर हथ चाय ॥
 भाल भयंक जाम अतंक । सेन सु भूमि सेन पतंक ॥ छं० ॥ ८ ॥
 बातन तात तेज अपान । उपट उपट्टि दोन सु धान ॥
 लगि रधुपग्ग अंग उतंग । गो परिवान दग्गि पतंग ॥ छं० ॥ ९ ॥
 सुर सुर राज सोच दिवांन । जय जय अछि कछि विमान ॥
 ॥ छं० ॥ १० ॥

मुरिस्स ॥ अंमर जय जय सहिय अंमर । रेनि रेनि अक वदिय संमर ॥
 संमर अंमर ^७कोतिक जच्छिन । छांय छलं छिति भद्र सु पच्छनि ॥
 छं० ॥ ११ ॥

गौता मालची ॥ सुमिरंत सुमिरिय मंच मूरध उरध हंकह धकयं ॥
 * किल किलकि दनुज कि यच्छ भूत कि जलकि किल्लय कल्लयं ॥
 वका ^८वकाय डोरू डमर अंमर चमर वपुअस पंगुरं ॥
 झलमलत भाल विसाल विधु वर अंब रालक अंमरं ॥ छं० ॥ १२ ॥
 जट बिकाट तट जल उछत हलि हलि प्रजलि नलिनिय चच्छयं ॥
^९चव अग्ग सट्टिय चवति चवदिसि पत्त जोगिनि कच्छयं ॥
 भुअ इंद जीति समीति ह्वै अरि अमै लच्छिन जाइयं ॥
 उडि अरुअ अंग सु सस्त्र निसजर गिरित गिरघर छाइयं ॥ छं० ॥ १३ ॥
 विनि रंग अछरि थोम थोमनि ताल वाल बितालयं ॥
 सुर अवत अम जल चवत संमर पानि अंजुल मालयं ॥
 छं० ॥ १४ ॥

- (१) ए. क. को.-करूर । (२) ए. क. को.-तूर । (३) मों.-मानिन ।
 (४) ए. क. को.-अंमरन । (५) ए. क. को.-विछकि ।
 (६) ए.-रधु । (७) ए. क. को.-कोतिक ।
 * मों.-किल किलकि दनुज कि दनुज कि जल के किल्लयति कल्लयं ।
 (८) ए. क. को.-बहुय । (९) ए.-अव ।

कविता ॥ पजलिदग चवरग । छत्त रत छिछ छाइ भर ॥
 अग रिति रिति राइ । चाइ नक कोप रग वर ॥
 निसचर वन चर चमर । अरिन लग्गे अरि 'धाइन ॥
 जुत्त तत्त करि सौस । पाइ कर कजन छाइन ॥
 अरि इद्रजीत भय भीत छै । भूत भति तडव चरनि ॥
 किल किलकि अमर अजुल पहुय । लच्छि राइ मूरध धरनि ॥
 छ० ॥ १५ ॥

ऊधो ॥ चढि 'चढि गूढ मंच अमच । हकि सु हक चक्रिय वत ॥
 नत नुत चाप सु इप्प । सरसाइ भू भरतिप्प ॥ छ० ॥ १६ ॥
 देह तिसल सेल 'सवान । बलि सुय उरवि सेज सजान ॥
 वेस निसक स्यदन रुढ । वकवि कूल रासिव रुढ ॥ छ० ॥ १७ ॥
 कपिय कोपि कप करुरे । नागति गोपि गरनि गरुरे ॥
 अनुचित लच्छि रधुपति चेत । किनर नाद नारद केत ॥ छ० ॥ १८ ॥
 फिरि परदच्छि दच्छिन देव । चिभुवन स्वामि अमित अनेव ॥
 हरि हर हर न होरन ताय । निकट निकठ काटत जाप ॥ छ० ॥ १९ ॥
 आसन असन अनल 'गरुत । रधुपति रधुकुल धूत ॥
 धारत धरेनि धारनि हेत । सोपन करहु धोरन चेत ॥ छ० ॥ २० ॥
 राधव धरन 'प्रधन प्रचाल । षग सुर गवन किती काल ॥
 तजि 'भजि अहि गन वान । जय जय चवत सेवग थान ॥ छ० ॥ २१ ॥
 दूहा ॥ तजौ तूझ भजि भजि सरै । भजि भजि रधुपति रुढ ॥
 गोप गोप गर गर 'गरनि । छिन इक गुनपति गूढ ॥ छ० ॥ २२ ॥
 कविता ॥ 'निसि निसक स्यदन सु । वक कल कक तग सुपि ॥
 चढिय देव मडल मरुत । आवन धूप धुपि ॥
 कप्य गोप गहि गोप । डारि जरन अग लागि ॥

- | | | |
|-------------------------|----------------|------------------------|
| (१) ए को धाइय, छाइय । | (२) मो वढि । | (३) ए रु को -तिवान । |
| (४) मो गत रूत । | | (५) ए रु को प्रसेन । |
| (६) ए रु को -भति । | | (७) मो सिरनि । |
| (८) मो निकसि सक । | | |

भाष साप मृग मंजु । सैन भुमि सैन प्राण दगि ॥

जय जयति सह नारद चवत । करे किन्नर तारिछ भजि ॥

तजि पासि पास तन दर विकार । कहि रघुपति 'अम भित्त रजि ॥

छं० ॥ २३ ॥

मेघनाद और कुम्भकर्ण का युद्ध वर्णन ।

दूहा ॥ भजि ताप तन मानि मन । बाल व्याल उडि सैन ॥

सोपि ओन तदिन सरनि । रघौ राज विनु चेन ॥ छं० ॥ २४ ॥

लच्छिराड भर पंच मिलि । मंडि सरस धनुवान ॥

इंद्रजीत भर अवनि परि । छयौ अमर असमान ॥ छं० ॥ २५ ॥

हय बजौ दस सुप दरनि । भय मंदोदरि वाम ॥

जाइ जगावहु कुंभ कहुं । छनै रिपुन धन जाम ॥ छं० ॥ २६ ॥

उद्यौ कुंभ अवनौ सु रर । करि जंगत धन रीस ॥

सुर किन्नर धुनि सवद वर । पिप्पहु पगन सीस ॥ छं० ॥ २७ ॥

गाथो ॥ दानं प्रमद प्रमादं । परयं भर कुंभ वहि लासायं ॥

सम गुच्छन धर धारं । चढ़ि चढ़ि अटन रटन रित जेयं ॥

छं० ॥ २८ ॥

विज्जुमाल ॥ किलकि किलकि कूक । बज्ज दनु गन भूक ॥

तजि वह बश्चन थूर । भजि सुरगन भूर ॥ छं० ॥ २९ ॥

कहकि कुंभ कनंक । चिहूं दिग्ग वर नंक ॥

सुरि भुरि मेर पंड । जुर छरि जूर मंडि ॥ छं० ॥ ३० ॥

रन रेन छय स्वर । मिल कहका वितूर ॥

दह दिग्ग जगि अग्य । वर मंस रम लग्य ॥ छं० ॥ ३१ ॥

नचि नचि मय भूत । रमत सुरेस स्तुत ॥

चव चव सद्धि ताल । भवति भल कराल ॥ छं० ॥ ३२ ॥

(१) ए. क. को.-जुम ।

(२) ए. क. को.-जित ।

(३) ए. क. को.-मर ।

(४) ए. क. को.-सद्धि ।

१कुपित कुभक रषि । गरुत्र गढु गरधि ॥
 येइ येइ पुर नाद । वितल उचित माद ॥ छ० ॥ ३३ ॥
 प्रगटि २दानव दल । प्रलय सम अस मल ॥
 गहवर धुन पान । रौस रघु असमान ॥ छ० ॥ ३४ ॥
 रिन तत निन पच । तनकि तनकि रच ॥
 उडि भर भुज भूर । तरसि मय वतूर ॥ छ० ॥ ३५ ॥
 पच्छ छिन छिनवान । करि रधुराय रन ॥
 जगध मूरध पड । मरि कुभ राइ दड ॥ छ० ॥ ३६ ॥
 समर अमर ऐन । अवत चवत चैन ॥ छ० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ पच्यौ कुभ धरनौ सु धर । पड पड तन तेह ॥
 मानो प्रवल सनूर ढरि । चडि पछौ नल छेह ॥ छ० ॥ ३८ ॥
 सजि डवर धन सौस पर । सज स्यदन ३घर घेह ॥
 चडि दससिर रधुपति विहसि । ररसि वढी रन केह ॥ छ० ॥ ३९ ॥
 हल हल सेनन चर चरन । उडि आडवर धूरि ॥
 वजे तूर वनचर चमू । देव पचजन पूर ॥ छ० ॥ ४० ॥

राम रावण का युद्ध ।

गौतामालची ॥ मौसह नहि निसान स्यदन सेन अकुरि सेनय ॥
 मिलि रहसि रधुपति राइ रावन गजि आनक ऐनय ॥
 थिर भान थोम विमान निज्जर जच्छि रच्छिन अरछनी ॥
 ४नग नाग नागिनि पच पचन मत मतन ५वच्छनी ॥ छ० ॥ ४१ ॥
 किल किलक काल विताल मालनि व्याल जालन तडव ॥
 डव डवरु डोरु अ कारह किन्नर कारत कुडल पडव ॥
 मिलि दैत्य वस अदैत्य असह सधि सिधुर नहय ॥
 गन गिद्धि अवर छाइ पच्छिन डकि डकि नरहय ॥ छ० ॥ ४२ ॥
 तन तुनकि चामर चाप चपिय ताप कपिय तिप्पुर ॥

(१) मा कुपित । (२) ए कू को -दानव । (३) मो -सम चढ नूर ।

(४) ए कू को पन ।

(५) ए कू को गन ।

(६) ए कू को चच्छनी ।

तर तरकि चिक्कुट चक्र चक्रिय धक्क पंकिय ईसुरं ॥
 उडि चक्र स्थंदन चूर चामर धेर चच्चर पंडयं ॥
 दानव दुरासय पलं आसय समर धन वर मंडयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥
 धुर सेत पीत सुरंग सातकं ओन नील अकासयं ॥
 जनु जून वृज भूमंति अंतर पत्त रिति निल तामयं ॥
 परि स्हर सुरगन चवत जय सुर अंचि कर मुक्तामरं ॥
 बडि कंध दस कुल पित्त पंचर बडि वर रन धूमरं ॥ छं० ॥ ४४ ॥
 गिरि गिरिन दस ग्रव सोपि सर सिंग रक्षौ राज अभय्यं ॥
 सुरपत्ति मुप अग मंडि जंपिय राम रावन कव्ययं ॥ छं० ॥ ४५ ॥

राम चन्द्र जी की उदारता ।

दूहा ॥ चवत राज सुरराज सौं । इह रधुकुल व्योहार ॥
 लेत लंक छिन इका लगी । देत न लग्गी वार ॥ छं० ॥ ४६ ॥
 कहै देवि सुर देव सौं । लंक भभीपन अप्पि ॥
 रधुपति से सांड सिरह । तूं किम रही अधप्य ॥ छं० ॥ ४७ ॥

इन्द्र का वचन ।

घन तोभर अरि दल अलय । सस्त्र सस्त्र वर मंच ॥
 तिन रत चपत न छिन भई । ढवि दुरि दुंढि अमंत ॥ छं० ॥ ४८ ॥
 अब कनवज दिस्सी बयर । दलन दुअन बडि बेद ॥
 हंड मुंड घंडन पलन । विधि बंधी बदि वेद ॥ छं० ॥ ४९ ॥
 चंडि वरन पुजाइ त्रिष । मंडि मुंड डर माल ॥
 जो कनवज दिस्सिय बयर । भरहि पच रज बाल ॥ छं० ॥ ५० ॥

इन्द्र का एक गंधर्व को आशा देना कि वह पृथ्वीराज और
 जयचन्द में शत्रुता का सूत्र डाले ।

कवित्त ॥ मति प्रधान गंधर्व । देव दिव राज बुलायौ ॥
 कलह करौ भारथ्य । मति अप्पनी बढ़ायौ ॥
 भूमि भार उत्तार । कलह कित्तिथ विस्तारौ ॥

चाहुआन कमधज्ज । वीर विग्रह जंगारौ ॥
 करि कौर रूप कनवज गयौ । उभय दिवस दिव्यिय पुरिय ॥
 वभनिय मदन अगन सु तरु । निसि निवास तहाँ उत्तरिय ॥
 छ० ॥ ५१ ॥

कन्नौज की शोभा वर्णन ।

प्रलोक ॥ सतयुगे काशिकोदुर्गे । चेताया च अयोध्यया ॥
 दापरे हस्तिनावास । कलौ कनवज्जका पुरी ॥ छ० ॥ ५२ ॥
 गंधर्व की स्त्री का उससे सयोग के पूर्व
 जन्म की कथा पूछना ।

दूहा ॥ गंधर्व चिय प्रिय पुच्छि 'वर । नाथ कथा समुक्ताय ॥
 सजोगिय अवतार कहि । न्वप ग्रह ज्यो 'जमि आइ ॥ छ० ॥ ५३ ॥
 गंधर्व का उत्तर देना कि वह पूर्व जन्म की अप्सरा है ।
 राज पुचि उत्तमर्ग मुनि । इह अश्वरि अवतार ॥
 'सुमन आप सत लोक भहि । खरन करन सहार ॥ छ० ॥ ५४ ॥
 कविचद् का अपनी स्त्री से संयोगिता के जन्मान्तर में
 शापित होने की कथा कहना ।

सुकौ सुनै सुका उचरै । पुब्व 'सजोय प्रताप ॥
 जिहि छर अश्वर मुनि छय्यौ । जिन चिय भयौ सराप ॥ छ० ॥ ५५ ॥
 शिव स्थान पर ऋषि की तपस्या का वर्णन ।
 चोपाई ॥ जटा वीर शकर सिव थान । गिरिजा गहिर गग परिमान ॥
 साधत रिधि तहो जर नाम । गइ दस इद्र हन्यौ तिन काम ॥
 छ० ॥ ५६ ॥

प्रलोक ॥ त्वचा इन्द्रिय नेत्रस्थ, नासा कर्णय जिह्वया ॥
 हृदय जघ सुमासप्रच, दस इन्द्रिय पराक्रम ॥ छ० ॥ छ० ॥ ५७ ॥

(१) मो रस ।

(१) ए कृ को जम ।

(३) ए कृ को सुमत ।

(४) मो-संजोग ।

एक सुन्दर स्त्री को देख कर ऋषि का चित चंचल होना ।

‘जहं प्रसाद सिव निकट प्रमानं । मनो ईस तहं आत्म जानं ॥
गुरु मुक्ती यह अर्घ्यो विसेषं । धिमा नाम एका सुंदरी देषं ॥
छं० ॥ ५८ ॥

कवित्त ॥ बाल नाल सरिता उतंग । आनंग अंग सुज ॥
रूप सु तट मोहन तडाग । अम भए कटाच्छ दुज ॥
प्रेम पूर विस्तार । जोग मनसा विध्वंसन ॥
दुति ग्रह नेह अथाह । चित करपन पिय तुहन ॥
मन विमुद्ध बोहिथ्य वर । नहि थिर चित जोगिंद तिहि ॥
उत्तरन पार पावै नहीं । भीन तलफि लगि मत्त विहि ॥ छं० ॥ ५९ ॥

उक्त स्त्री का सौंदर्य वर्णन ।

पद्मरी ॥ दिष्टी सु दिष्ट विषया कुमारि । जनु लता लोंग कै काम धारि ॥
मनमथ बजार मनमथ्य धाम । मनमथ्य तडाग कै प्रेम वाम ॥
छं० ॥ ६० ॥

जीवनि सु सुति छिन एक रंग । मन भीन पांद जनु चरि अनंग ॥
घंचन कितकि कुचि इष्ट जानि । रति रचिय सचिय जनु सोभ सानि ॥
छं० ॥ ६१ ॥

दिठि दिठु टरिय नह नेन चास चकोर चंद जनु अभिय ग्रास ॥
हेषंत नेन नह चेन अंग । विंध्यौ सु वाम नेनन निषंग ॥
छं० ॥ ६२ ॥

स्वर भंग कंप वेपथ्य पथ्य । फुरकंत नयन इस भय अवथ्य ॥
पथ्य समान मन नेन भिंदि । फुथ्यौ सु दूध मनु छाछ छंठि ॥
छं० ॥ ६३ ॥

बहल समूह सब गगन छाड । फट्टे कि जानि छिन छुट्टि बाड ॥
सुरछाड रछ्यौ इस ब्रह्म बाल । व्यापंत सीत जनु तरु तमाल ॥
छं० ॥ ६४ ॥

साठक ॥ जा जीवत पसार पार सुमती, रत्त हरौ ध्यानय ॥

पिमया कामय चित्त सित पिमया, पिमया रस ^१दृश्य ॥

सा सुपनतर दीह रत्ते सुप, आनपि पिमया रूप ॥

ना सुभक्तौ विथ ध्यान ^२पन्नर ^३रूप, पिमयाय पिमया सुप ॥छ०॥ई५॥

परंतु ऋषि का पुन अपने मन को साधकर बदरिकाश्रम

पर्यंत पर्यटन करके धोर तप करना ।

गाथा ॥ पिमया सुप मय अमिय । रमयाइ अग कौटयो मनय ॥

चित्त न जिन लपि सुअग । सो भिदेव काम वामाइ ॥छ०॥ई६॥

कवित्त ॥ प्रथम तिथ्य अडसठि । न्याय बद्री 'तप रत्तौ ॥

जठरागनि कारि चपत । छुधा निद्रा चस जितौ ॥

हिम रित हिम तन तुटहि । पचगिन ग्रीसम सहयौ ॥

वरपा काल प्रचड । 'मेध धारइ वपु 'वहयौ ॥

कर धूम पान मुप अइ रहि । कर अगुट नर देव हरि ॥

सत वरप ध्यान लगै भयौ । जोति चित्त चिहुटी सुहरि ॥

छ० ॥ ई७ ॥

ऋषि के तप का तेज वर्णन और उससे इन्द्र

का भयभीत होना ।

दूहा ॥ तप बल कपत सुभर सुअ । रछौ ध्यान दिव देव ॥

सुस्त तेज द्रिग सिवल हुअ । लछौ सुरप्पति मेव ॥ छ० ॥ ई८ ॥

तव चितिय सुरराज मन । का विचिच वर वाम ॥

आदि अत सोधिय सकल । अप्छरि अप्छरि नाम ॥ छ० ॥ ई९ ॥

इन्द्र का अप्सारओं को आज्ञा देना कि वे तेजस्वी

तापस का तप भूष्ट करें ।

(१) मो वृज्यय ।

(२) रु पडर ।

(३) ए रु को दृग ।

(४) ए रु को -पति ।

(५) ए रु को मेप ।

(६) ए रु को सहया ।

बोलि धृताची भेनिका । रंभ उरवसी रूप ॥

जानि सुकेस तिलोत्तमा । मंजुधोष सुनि भूप ॥ छं० ॥ ७० ॥

अति आदर आदर कियौ । कछ्यौ आप इह बैन ॥

छलह सुमंतन जोइ के । रहै राज सुष चैन ॥ छं० ॥ ७१ ॥

अप्सरारों का सौंदर्य वर्णन ।

गाथा ॥ नयनं नलिन नवीनं । गवनं गयं मत्त तुलायं ॥

बैनं पर अत दीनं । शीनं कट्टि मगं राजेसं ॥ छं० ॥ ७२ ॥

अर्थी ॥ * सपत सुर गान निपुना । नृत्य कला कीटि आलया मानं ॥

तार तरलेव अमरी । अमरी अमरी सय सथसं ॥ छं० ॥ ७३ ॥

मंजुधोषा का सुमंत नक्षत्रि को छलने के लिये

मृत्यु लोक में आना ।

कवित्त ॥ भो आयसि सुरराज । मंजुधोषा सुनि वत्तिथ ॥

मृत्यु लोक में जाहु । सुमति छल छलौ तुरत्तिथ ॥

दुसह तेज को सहै । मोहि आसन डर दुस्सिय ॥

सेस संकि कलमलिय । नेन तिय तालिय पुस्सिय ॥

जल पंचि सुरन हिय दुष धरि । नहिन सु रस उड़गन सुअन ॥

तप ताप देव सब कलमलत । सुकज काज रष्यहि दुअन ॥

छं० ॥ ७४ ॥

दूहा ॥ पग पगपति आसन ग्रह्यौ । गए वित्ति बहु काल ॥

रंभ धिमा सम रूप धरि । आय सपत्नी ताल ॥ छं० ॥ ७५ ॥

मानि बैन सुरराज लिय । नरपुर पत्तिथ आइ ॥

जहं ताली लग्यौ सुमति । तहं नूपुर बजाइ ॥ छं० ॥ ७६ ॥

मंजुधोषा का लावण्य भाव विलास और शृंगार वर्णन ।

अधरि अट्ट विमान ^२बनि । कुसुम समान सरौर ॥

नग जगमग अंग अंग सुबनि । कनक प्रभा दुति चौर ॥ छं० ॥ ७७ ॥

* छन्द ७३ मो.-प्रति में नहीं है ।

(१) ए. कृ. को.-संपत्तौ ।

(२) ए. कृ. को.-रचि ।

नराज ॥ वनी विमान कामिनी । मनो दिपत दामिनी ॥
 दुतौ उपम लोभय । कि इंद्र चाप सोभय ॥ छ० ॥ ७८ ॥
 उरवसी सु केसय । तिलोत्तमा सुदेसय ॥
 सु मुजधोप रभय । दृताचि मेनका सुय ॥ छ० ॥ ७९ ॥
 सुरग अग सोहनी । मनो कि अष्ट मोहनी ॥
 सुसकि मद हासय । विगास कौल भासय ॥ छ० ॥ ८० ॥
 सु नेन डोल भौरही । कि कौल भौर भौरही ॥
 तिहाइ भाइ ठानही । जुगिद चित्त भानही ॥ छ० ॥ ८१ ॥
 मरोरि अग मारही । सकेलि सुद्ध सारही ॥
 विलास नेन लगवै । तिमुनि छ काम जगवै ॥ छ० ॥ ८२ ॥
 विराज मान मोहनी । सु कौल माल सोहनी ॥
 चवत बेन माधुरी । न कोकिल सु माधुरी ॥ छ० ॥ ८३ ॥
 प्रवीन कोक केलय । कुकी कुकेकि केलय ॥
 सुभाय वास अग कौ । सुगध गध भग कौ ॥ छ० ॥ ८४ ॥
 विमान छडि उत्तरी । मनो कि चिच पुत्तरि ॥
 सुमत मुप्य ठठिय । प्रवान पान पठिय ॥ छ० ॥ ८५ ॥
 दिपत मेन लगय । जिहाज जोग भगय ॥ छ० ॥ ८६ ॥

अप्सरा के गान से ऋषि की समाधि क्षणिक के लिये डगमगाई ।

दूहा । करिय गान विविधान सुर । ताल काल रस भाइ ॥
 छिनका पलक मुप उब्धरिय । अम्हरि रही लजाइ ॥ छ० ॥ ८७ ॥
 अप्सरा का शक्ति चित्त होकर अपना कर्तव्य विचारना ।
 उलटि गयै सुरपति हंसै । रहै रपौस रिसाइ ॥
 इह चिता मन उप्यजिय । फिर दिव लोक सुजाइ ॥ छ० ॥ ८८ ॥
 जौ न छरौ तौ देव डर । रिपि तप जप्य प्रचड ॥
 दुहु विधि सकत कामिनी । आप ताप सुर दड ॥ छ० ॥ ८९ ॥

(१) ए कृ को -तावहीं ।

(२) ए कृ का -भग ।

(३) ए कृ को श्रिय ।

(४) मो रह रिपि भाय रिसाय ।

(५) मो -दाहु विधि सक न सामिन ।

उलटि गई सुर धरनि धर । देवन देव बुलाइ ॥

इंद्र रोस कै डर डरौ । आप ताप डर पाइ ॥ छं० ॥ ६० ॥

तब तक ऋषि का पुनः अखंड रूप से ध्यानमग्न होना ।

मन माया अम दूरि करि । फिरि लग्यौ रिषि ध्यान ॥

ब्रह्म जोनि प्रगटी उरह । रंभ प्रगटिय आन ॥ छं० ॥ ६१ ॥

मुनि की ध्यानावस्थित दशा का वर्णन ।

कवित्त ॥ बहुरि गई रिषि पास । सांस जिन गहिय उरध गति ॥

मूल पवन दिग बंधि । गरजि ब्रह्मंड भेघ अति ॥

बंका नाल जल पंचि । 'सींचि उर कमल प्रफूलिय ॥

ब्रह्म अगनि प्रजरिय । पाप करि भसम समूलिय ॥

तब मारग सुज्यौ सीन जल । पंछि पोज पायौ सगुन ॥

सुनि तार सु बज्यौ करन बिन । सह स्वाद छंडिय चिगुन ॥ छं० ॥ ६२ ॥

तालिय लगिय ब्रह्म । लीन मन जोति जोति मलि ॥

कमल अमल उघरिय । हृदय अवनीय धरनि 'अलि ॥

चिकुटिय ताटक लगि । अगुटि गंगा तन मंडिय ॥

रिषि सवह अवन्न । नह अनहह सु बजिय ॥

अधमुष जरध चरन करि । गति पतिय मंडल गगन ॥

ता रिषहि जगावत सुंदरिय । रह्यौ सु धुनि मझझह गगन ॥

छं० ॥ ६३ ॥

वाद्य वजना और अप्सरा का गाना ।

दूहा ॥ जंच मृदंग उपंग सुर । धुनि झंझर झनकार ॥

करत राग श्रीराग सुर । कर बर बजत तार ॥ छं० ॥ ६४ ॥

चटुवात माठा धुआ । गीत प्रबंध प्रवीन ॥

'उधटत ललिता ललित पिय । पुजवति सुर कर बीन ॥ छं० ॥ ६५ ॥

(१) ए. क. को.-सिंचि कमर उर फूलिय ।

(२) ए. क. को.-उर ।

(३) ए. क. को.-उधटन ।

लोक ॥ 'मृदंगी दडिका ताली । धुरधुरी स्तुति काहली ॥

गीत राग प्रवध च । अष्टाग नृत्य उच्यते ॥ छ० ॥ ८६ ॥

मुनिका समाधि भंग होकर कामातुर हो, अप्सरा के
आलिङ्गन करने की इच्छा करना ।

ह ॥ सोर सुरनि के सुर जग्यौ । भग्यौ ध्यान जगईस ॥

चित्त चक्रित करि सोच मन । इह अपुण्य कहा दीस ॥ छ० ॥ ८७ ॥

नूपुर धुनि श्रवणनि सुनत । भई ध्यानगति पग ॥

ताली छुट्टिय गगन मय । पुलिय पलक मन लग ॥ छ० ॥ ८८ ॥

कहिय रिष्य सुर अप्छरी । कान्हा गभ्रव जक्ष ॥

कै नागिनि जनमी कुश्ररि । तो सिव रर्या रक्ष ॥ छ० ॥ ८९ ॥

अप्सरा का अन्तर्ध्यान हो जाना ।

कामातुर चित कर जग्यौ । तप जप छडिय आस ॥

हँसि छुडाइ कर तडित मन । गई अवास अयास ॥ छ० ॥ १०० ॥

मुनि का मुर्छित हो जाना, परंतु पुन सम्हल

कर ध्यानावस्थित होना ।

छिन इक घर मूरछि पय्यौ । चित कलमल्यौ अधीर ॥

बहुर ग्यान मन आनि कै । मुनि वर भयौ सधीर ॥ छ० ॥ १०१ ॥

कवित्त ॥ फिरि उत्तरि मन धय्यौ । हेमगिरवरह ध्यान धरि ॥

चित्त ब्रह्म लवलौन । बरध सित कियौ तेम करि ॥

छुधा पिपासा जीति । नौद निसि नसिय इद्रि तस ॥

बहुत जतन तप कियौ । बधि दढ पवन उरध बस ॥

पौवत वाम दक्षिन मुचै । कुभक पूरक जीग बल ॥

करि उड्य चरन ध्यान सुरग्यौ । गद्यौ पथ गगनह अकल ॥

छ० ॥ १०२ ॥

(१) मा मृदकी ।

(२) मो रछा ।

(३) ए कृ को सहि ।

(४) ए कृ को-अधीर ।

कवि चन्द की स्त्री का अप्सरा के रौंदर्य के विषय में जिज्ञासा करना ।

दूहा ॥ सुकी सुकह पुच्छै रहसि । नप सिष बरनहु ताहि ॥
जा दिष्यन मुनि मन ट-यौ । रछ्यौ टगटग चाहि ॥ छं० ॥ १०३ ॥

अप्सरा का नख रिरख वर्णन ।

साटक ॥ चरने रत्तय पत राइ रितए, कंजाय चंद्रानने ॥
मातंगं गय हंस मत्त गमने, जंघाय रंभाइने ॥
मभ्यं छीन अगेन्द्र भार जधना, नाभिंच कामालए ॥
सिंभे सिंभ उरजा नयनयौ, एने ससी भालयौ ॥ छं० ॥ १०४ ॥

अर्धमालची ॥ तल चरन अरुनति रत्तए । जल नलिन सोका सपत्तए ॥
नप पंति कांतिय सुत्तए । जनु चंद अमृत जुत्तए ॥ छं० ॥ १०५ ॥
नग जरति नूपुर बजाए । कलहंस सबद विलज्जए ॥
गति मत्त गरव गयंदए । छवि कहत कविवर चंदए ॥ छं० ॥ १०६ ॥
गहि पिंड कनक विमानयं । रंग रंग बंदन सानयं ॥
कर करिय जंधति ओपमं । रंग फटिक केसरि सोपमं ॥ छं० ॥ १०७ ॥
घन जधन सधन नितंबयं । छिन काम केलि विलंबयं ॥
कटि सोम बर मृग राजयं । कहि चंद यौं कविराजयं ॥ छं० ॥ १०८ ॥
बनि नाभि कोस सुकाजयं । मनु काम अमरय रंजयं ॥
रव मधुर अदु कटि किंकिनी । गलमलत नग फलनी कनी ॥
छं० ॥ १०९ ॥

सलि उदर त्रिबलि त्रिरेषयौ । कुच जधन मंडि सु भेषयौ ॥
बनि रोमराजि सपंतयं । प्रतिबिंब बैनि सुभंतियं ॥ छं० ॥ ११० ॥
उर उरज जलज बिराजही । कलधूत औफल लाजही ॥
उर पुहप हार उहासियं । इक होत जोजन वासियं ॥ छं० ॥ १११ ॥
गर लजति कंठतु कामिनी । कलयंठ कोक सुधाभिनी ॥
रचि चिबुक बिंद सु स्यामए । जनु कमल बसि अलि धामए ॥ छं० ॥ ११२ ॥

बलि पुहय तिलक सु नासिका । जनु कौर 'चुंच प्रहासिका ॥
 तिन मुक्ति बेसरे सोभए । ससि सुक मिलि रसि लोभए ॥ छ० ॥ ११३ ॥
 तस नयन यजन कजए । सुरराज सुर मन रजए ॥
 चाटक नग जर जगमगै । विय चक्र करि ससि परजगै ॥ छ० ॥ ११४ ॥
 विय भोंह बकित अकुरी । जनु धनुक कामति 'सकुरी ॥
 तसु मध्य तिलक जराइ कौ । 'रविचंद मिलि रस आइ कौ ॥ छ० ॥ ११५ ॥
 गुथि केस चिकन बेनिय । जनु असित अहि ससि ऐनय ॥
 सित दिव्य अमर अमर । नह मलिन होत अडवर ॥ छ० ॥ ११६ ॥
 अगवास 'आस सुगंधय । सग चलत मधुघृत सगरय ॥
 सम उदधि मथि कौनौ हरी । फटि फेन प्रगटित सुदरी ॥ छ० ॥ ११७ ॥

अप्सरा के सर्वाङ्ग सौंदर्य की प्रशंसा ।

मालिनी ॥ हरित कनक काति कापि चपेव गोरौ ।
 रसित पदम गधा फुल्ल राजीव नेचा ॥
 उरज जलज सोभा 'नभिकोस सरोज ।
 चरन कमल हस्ती लीलया राजहसी ॥ छ० ॥ ११८ ॥
 दूहा ॥ कामालय सो सदरो । जिम अरि अग्नि अनग ॥
 विधि विधान मति चुक्यौ । किये मेन रन अग ॥ छ० ॥ ११९ ॥

मालिनी ॥ अधर मधुर बिब, कठ कलयठ रावे ।
 दलित दलक अमरे, अग अकुटीय भावे ॥
 तिल सुमन समान, नासिका सोभयतौ ।
 कलित दसन कुंद, पूर्ण चद्रानन च ॥ छ० ॥ १२० ॥

कवि की उक्ति कि ऐसी स्त्रियो के ही कारण संसार
 चक्र का लौट फेर होता है ।

दूहा ॥ न्याय छुयौ मुनि रूप इन । सुरति प्रीय चिय आहि ॥
 जा मोहै सुर नर असुर ॥ रहै ब्रह्म 'सुय चाहि ॥ छ० ॥ १२१ ॥

- (१) ए क को हस । (२) ए क को सहरा । (३) ए क को रचि ।
 (४) ए क को सास । (५) ए क को नासिका । (६) मो-सुय ।

कावित्त ॥ इनह कोज सुर धरत । स्वर तन तेजत ततच्छिन ॥

परत कंध नंचत कभंध । पर हनत खामि रन ॥

भरत पच जुगिनि समत । रति पिवत पिवावति ॥

चरम चष्य पल अवत । पंछि जंबुक न अधावत ॥

पुनि वपु किरचि करतें समर । तब लहत रस अछरिय ॥

तजि मोह पुत पुतिय सु तिय । वरत वरंग नभच्छरिय ॥ छं० ॥ १२२ ॥

दूहा ॥ तिन मोहनि मोह्यौ सु मुनि । मोहे इंद्र फुनिंद ॥

नर नरिंद जुग जोग रत । उड़ उड़गन रवि इंद ॥ छं० ॥ १२३ ॥

अप्सरा का योगिनी भेष धारण करके सुगंत

गङ्गधि के पास आना ।

कावित्त ॥ तीय धन्यौ तन जोग । अवन मुद्रा सु फटिका मय ॥

करि अष्टंग विभूति । नय जनु निकसि सिंधु पथ ॥

जटाजूट सिर बंधि । दिसा दस अंमर मानिय ॥

सिंगौ कांठ धराइ । जोग जंगम सिव जानिय ॥

पवनं सु अरध जरध चढ़ै । बंक नालि पूरै गगन ॥

धरि ध्यान सुमन नासिक धरै । रहै ब्रह्म मंडल मगन ॥ छं० ॥ १२४ ॥

दूहा ॥ तजिग भोग मन जोग धरि । निकट सुमंतह आइ ॥

करिवर डंवरु डहडह्यौ । अंवर सव सिव भाइ ॥ छं० ॥ १२५ ॥

अप्सरा के योगिनीवेष की शोभा वर्णन ।

कावित्त ॥ गिरिजा पसुनह संग । गंगनह शूलक अलक जल ॥

भूतन प्रेत पिचास । नयन नह चतिय गरल गल ॥

कटिन बंधि गज चर्म । पहरि अंग अंग दिगंबर ॥

नह गनेस पट बदन । पुत्र गननंदि अंग सुर ॥

नहविय लिलाट पट तिलक ससि । व्याल न माल बनाइ उर ॥

नाहिन चिशूल चिपुरारि पल । नह कर लगिय धवल धुर ॥

छं० ॥ १२६ ॥

मुनि का छद्मवेषधारिणी योगिनी को सादार आसन देकर बातें करना ।

बहु आदर आदरिय । 'अरध आतिथि तिहि दिनौ ॥
करिय ग्यान गुन गोष्ट । कष्ट वह तप करि किन्तौ ॥
डुलिय इद्र रवि चद्र । इद्र सुर लोकह मानिय ॥
सो अगौ कर जोरि । देव सब तजतहु गुमानिय ॥
तव्ह सु ग्यान मन उप्पज्यौ । देव दुपौ करि सुष लख्यौ ॥
चिदानन्द ब्रह्मपद अनुसरिय । धरिय ध्यान 'गगनह रच्यौ ॥
छ० ॥ १२७ ॥

तपसी लोगों की क्रिया का संक्षेप प्रस्तार वर्णन ।

दूहा ॥ मात गरम आवागमन । मेटि 'अमन ससार ॥
ज्यो कचन कचन मिलै । पय पय मक्त सचार ॥ छ० ॥ १२८ ॥
सोइ ग्यान तुम सौ कहौ । निरगुन गुन विस्तार ॥
वरन्थौ वपु बैराट हरि । जा मुनि लहै न पार ॥ छ० ॥ १२९ ॥
पद्मरी ॥ कहौ ग्यान मत सुमत विचारौ । गहौ अद्भ मूल उरइ सचारौ ॥
धरौ ध्यान नासा चिदानन्द रूप । चिकुट्टी 'चिलोकी स्वय जोतिरूप ॥
छ० ॥ १३० ॥
पियों बकनाल चढै दड मेरें । सुनै सह अनहद अनदत टेरे ॥
धुनी अतर जोति जानौ गियानी । जपै मच हस सु मोह विनानी ॥
छ० ॥ १३१ ॥
सर नामि मूल सरोज प्रकासै । दल अष्ट 'पद्म तह सो उहासै ॥
तपत कनक चरन 'भलकै । दस अगुल नालि हिरदै डलकै ॥
छ० ॥ १३२ ॥
जिम पुष्प कल्लौ तिम कज फूलै । करै जोग उड धरै वाय मूलै ॥
तह देव अगुष्ट मानत वासै । धरै अष्ट वाह बसै देव वासै ॥
छ० ॥ १३३ ॥

- (१) मो -अरध । (२) मो -गगन । (३) ए रु को -त्रिभूमन ।
(४) मो तलोक । (५) मो सत । (६) ए चरकै ।

दलं अष्ट कंजं सु रुद्रान देवं । रहै मध्य भानं अलप्यं अछेवं ॥
रहै भान मध्ये ससी सो निरतं । ससी मध्य अमी रहै रूप रतं ॥

छं० ॥ १३४ ॥

सु ज्वाला मई तेज तामे विराजै । तहां पिठु सिंघासनं देव साजै ।
रतनं जरे वज्र कोटीस कोटी । तहां देव नाराइनी जोति मोटी ॥

छं० ॥ १३५ ॥

अंगुं लच्छिनं वक्ष कौस्तुभ सोछै । धरै चक्र पद्मं गदा कंबु रोछै
धरै पानि पगं धनुं वान सखं । इसौ ध्यान दिव्यो महा जोग वखं ॥

छं० ॥ १३६ ॥

महा पद्मकोसं परागंति तासी । महा उज्जलं कांति फटिकं प्रभासी ॥
तहां खर कोटी ससी कोटि सीतं । वयं वाय कोटी मृदं नाच नीतं ॥

छं० ॥ १३७ ॥

प्रकितं सेत व्रनं अरतां सु चेता । जुगंदापर पीत कलि छपण नेता ॥
निराकार देवं अकारं सु ध्यानं । रहै आप आपंगुहं पच्छि ध्यानं ॥

छं० ॥ १३८ ॥

अछेदं अमेदं प्रमानं न मानं । अकासं न वासं न जानं पुरानं ॥
न रूपं निरूपं अरूपं समर्थं । रहै सास मैवास करि देह रुथं ॥

छं० ॥ १३९ ॥

कह्यौ रूप बैराट गुर जो वतायौ । जिसौ अरजुनं छपण भारथ सुनायौ
महाकास सीसं चरनं पतोलं । कढ़ी नाभि मुर्ग दिसा बाहु पालं ॥

छं० ॥ १४० ॥

द्रुमं रोम उद्रं समुद्रं सु इमं । निरं अस्त नैनं ससी खर नभं ॥
नदी तास नारी महा प्राण प्राणी । कहै देव वेदं न जानंत जानी ॥

छं० ॥ १४१ ॥

(१) ए. क. को.-सूर ।

(२) ए. क. को.-श्रिय ।

(३) ए. क. को.-सांग ।

(४) ए. क. को.-मुसल्लं ।

(५) ए. क. को.-प्रभा ।

(६) मो.-अनुक्तं सुनेता, ए.-अरस्तु ।

(७) मो.-त्रेता ।

(८) ए. क. को.-साम ।

(९) ए. क. को.-वनायौ ।

(१०) ए. क. को. खर । (११) ए. क. को.-बाहु । (१२) ए. क. को.-जनानं न ।

जगै रेनि दीह महा जोग जोगी । विराट सख्य कहै भोग्य भोगी ॥
निराकार आकार दोऊ विमायो । कहै देव औतार गुर जो बतायो ॥
छ० ॥ १४२ ॥

अप्सरा की सगुन उपासना की प्रशंसा करना ।

दूहा ॥ मन मानै सोई भजहु । कहत तजहु तुम देह ॥
सुरति प्रीति हरि पाइयै । उर भेटहु सदेह ॥ छ० ॥ १४३ ॥
सुरग बसै फिरि घर बसै । मनो ग्यान मन ईस ॥
गरभ दोष भेटहु प्रबल । उर धरि ध्यान जगोस ॥ छ० ॥ १४४ ॥

दसो अवतारों का संक्षिप्त वर्णन ।

दूहा ॥ कहै प्रह्लाद अवतार दस । धरे भगत हित काज ॥
रूप रूप अति दैत्य दलि । दुपद सुता रपि लाज ॥ छ० ॥ १४५ ॥
कवित्त ॥ मच्छ काच्छ वाराह । अप्स नरसिंह रूप किय ॥
वामन बलि छलि दान । राम छिति छत्र छीन लिय ॥
लकापती सहस्र्यौ । उभय बलदेव हलायुध ॥
दयापाल प्रभु बुद्ध । रहे धरि ध्यान निरायुध ॥
कलि अत कालकौ अवतारहि । सत्य भ्रमा रप्पन सकल ॥
करि सरस रास राधा रमन । मवन ग्यान प्रह्लाद अकल ॥ छ० ॥ १४६ ॥

अप्सरा का कहना कि परमेश्वर प्रेम में है

अस्तु तुम प्रेम करो ।

दूहा ॥ कापट ग्यान मुष उचरे । मन छल धूत अधूत ॥
कापट रूप कठोर कर । चरन चित अवधूत ॥ छ० ॥ १४७ ॥
इह कहि छल सध्यों तिनह । मै विन प्रीति न होइ ॥
हर छल तजि हर रूप करि । मान प्रगटिय सोइ ॥ छ० ॥ १४८ ॥

नृसिंहावतार का वर्णन ।

कवित्त ॥ पीत वरन कजलीय । छोह आरोह सरप जनु ॥
दसन सु तिप्य कुदाल । नयन बिय वज्र धन्यौ तनु ॥
वज्र बक अकुस गयद । नप कुम विदारन ॥

उड्डिक्केस कग सह । गरव दंती 'दल गारन ॥

धर पटकि पंछ मुंछाल छेल । पीठ दिठु अवधू पच्यौ ॥

भय भीति कपि कामिनि कुटिल । घाय विप्र अंकह भयौ ।

छं० ॥ १४६ ॥

मुनि का कामातुर होकर अप्सरा को स्पर्श करना ।

दूहा ॥ उर उरोज लगत सु मुनि । सर सरोज हति काम ॥

रोमंचित अंग अंग सिथल । मन मोह्यो सुरवाम ॥ छं० ॥ १५० ॥

दिप्यत अछरि अष्ट उन । रच्यौ नेन मन लाइ ॥

देह भुलानौ नेह कै । और न स्तुतौ काय ॥ छं० ॥ १५१ ॥

अमन भयानक सुपन छल । सिंघन अवधू संग ॥

जानिक पंप परेवना । करि डवरू इन अंग ॥ छं० ॥ १५२ ॥

कामजोरि सिव भसम किय । कर विभूत रति सोक ॥

भोग भुगति रति सुंदरी । द्विड़ नह जोग न जोग ॥ छं० ॥ १५३ ॥

अप्सरा का कहना कि ऐसा प्रेम ईश्वर से करो मुझसे नहीं ।

गाथा ॥ वनिता वदंत विष्णु । जोगं जुगति 'केन कगायं' ॥

स्थामा सनेह रमनं । जनमं फल पुत्र दत्ताइं ॥ छं० ॥ १५४ ॥

उसी समय सुमंत के पिता जरज मुनि का आना ।

दूहा ॥ चित्त चल्यो मन डगमग्यौ । रच्यो रूप रस रंग ॥

आनि पहुंतौ जरज रिषि । दहौ भात ज्यों डंग ॥ छं० ॥ १५५ ॥

मुनि का लज्जित होकर पिता की परिक्रमा पूजनादि करना ।

अरिस्त ॥ पहर एक पर निठु । जगाइय अप्य गुर ॥

भौ लज्जा लवलीन । विचारत अप्य उर ॥

जाइ सु पत्तो तात । सु नेनन मेदयौ ॥

मेथ्यो अंगन अंग । अनंगह बेदयौ ॥ छं० ॥ १५६ ॥

दूहा ॥ देवि तात परदच्छ फिरि । भय लज्जा लवलीन ॥

विमा अरथ तप रंभ कै । काम कामना भीन ॥ छं० ॥ १५७ ॥

जरज मुनि का अप्सरा को शाप देना ।

पहचानी रिपि सुदरी । कुस गहि कौनौ दाप ॥
 अगुटि बक रिस नैन रत । दिथ अप्सरी सराय ॥ छ० ॥ १५८ ॥
 हम रिषीसर बन बसत । रसह न जाने एक ॥
 कद भयत तन कष्ट करि । लेइ आप इक मेक ॥ छ० ॥ १५९ ॥

सुमत का लज्जित होना और जरजमुनि का उसे धिक्कारना ।

कवित्त ॥ नयन चकित दुअ बाल । भाल चकुटी दिपि तातह ॥
 गयौ वदन कुमिलाइ । जानि दीपक लपि प्रातह ॥
 पुच कवन तप तप्यौ । भयौ बसि काम वाम रत ॥
 इनहि आप करो भस्म । कवन छडैय तोहि हित ॥
 वपु क्रोधवत रिपि देपि करि । रम अरम न कछु रह्यौ ॥
 सम अग्नि रूप दिधौस रिपि । तवह आप रमह कछौ ॥ छ० ॥ १६० ॥

जरज मुनि के शाप का वर्णन ।

कलह 'करतहौ डहि कुबुधि । कलहतर कहि रह ॥
 पुहचौ भार उतारनह । जनमि पग कै ग्रह ॥ छ० ॥ १६१ ॥
 कवित्त ॥ 'एम छल्यौ चयवार । रोस करि आप आप दिथ ॥
 मृत्य लोक अवतार । नाम तुअ कलहप्रिया किय ॥
 इन अवधू मन छल्यौ । सुप्य नन लहहि चीय तन ॥
 पित पति कुल सहरहि । पीय तो हथ्य रहै जिन ॥
 जैचदराइ कमधज्ज कुल । उअर जुन्राइय पुच छल ॥
 सजोग नाम प्रथिराज बर । दुअ सुमार अनमग दल ॥ छ० ॥ १६२ ॥

अप्सरा का भयभीत होकर जरजमुनि से क्षमा प्रार्थना

करना और मुनि का उसे मोक्ष का उपाय बतलाना ।

दूहा ॥ अवन सुने रमह डरिय । रही जोर कर दोइ ॥

अब साँई अपराध मुहि । मुगति कहो कब होइ ॥ छं० ॥ १६३ ॥
 पद्धरी ॥ कर जोर करत बिनती रंभ । 'साक्षात् रूप तुम सम सु प्रह्म ॥
 संसार रूप साइर समाज । कटुनह पार तुम तहं जिहाज ॥
 छं० ॥ १६४ ॥

२पाले सु अग्न रिषि क्रम जोग । चैकाल क्रम पट रहत जोग ॥
 अबला अवध्य हम अंग आहि । कहि क्रोध देव कों करिय ताहि ॥
 छं० ॥ १६५ ॥

उच्चार होइ सो कहो देवा । तुम चरन सरन नहिं और सेव ॥
 सु प्रसन्न होइ रिषि कहिय एह । अवतार लेहु पहुपंग मेह ॥
 छं० ॥ १६६ ॥

तुम काज जग्य आरंभ होइ । जैचन्द प्रथौ दल दंद 'दोइ ॥
 भुगीय भार उतार नारि । फुनि सर्गलोक कहि तोष 'व्यार ॥
 छं० ॥ १६७ ॥

इह कहि रु रिष भय अप्य थान । दुष पाइ रंभ बैठी विमान ॥
 गइ सुरग लोग सब सधिन संग । 'कुमिलाइ बदन मन मलिन अंग ॥
 छं० ॥ १६८ ॥

अपराध के स्वर्ग से पात न होने का प्रकरण । तीनों
 देवताओं का इन्द्र के दरबार में जाना और
 द्वारपालों का उन्हें रोकना ।

कवित्त ॥ एक दीह बर इन्द्र । रमन क्रीड़ा अधिकारिय ॥
 ता देषन चयदेव । प्रह्म, सिव, विष्णु सुधारिय ॥
 ए चलंत तिन थान । इन्द्र दरवानति रुकै ॥
 मूढ़ मति जानिय न । दैव गत्ती गति पकै ॥

(१) ए. क. को.-साक्षात् रंभ ।

(२) ए. क. को.-पाले ।

(३) ए. क. को.-होइ ।

(४) ए. क. को.-थार, पार ।

(५) ए. क. को.-कुम्हिलाय ।

धरि एक तमसि तामस तिहुन । बहुरि धात सुर उच्चरिय ॥
जानेन काल निमान गति । तिन विधान विधि सचरिय ॥ छ० ॥ १६६ ॥

विष्णु का सनत्कुमारो के शाप से पातित

द्वारपालो की कथा कहना ।

विधि न जपि आध्रम्म । इद्र दरवान न जानिय ॥
सुक सनकादि सनक । सनद सनातन 'न्यानिय ॥
ए दरवान अबुद्ध । लच्छि रोकिय परिमानिय ॥
सनत सनदन देव । 'मुनी व्रत आदि भिमानिय ॥
ए कुअर पच पचौ हटकि । पच बाल पचौ प्रकृति ॥
रिपि बर न होइ तामस कवहुँ । सो ओपम कवि राज मति ॥
छ० ॥ १७० ॥

गाथा ॥ हटकि सु अग्रहप्रमान । अज्ञान साध दारुनो वरय ॥
ज्यों रिपि नाम समर्थी । तामसय द्वार पालक ॥ छ० ॥ १७१ ॥
भाटक ॥ स्याम स्यामय स्याम मूरति घने, उद्यापित बुदबुदौ ॥
नारेप नासेप उच्चत नन, दीर्घ न रूप 'वर ॥
नमाया चलय बलति किरिया, एकस्थ जोती तह ॥
बैकुण्ठ गुरु मुक्ति धामति धरं, नापत्ति नो तावहु ॥ छ० ॥ १७२ ॥
दूहा ॥ मापत्ते रिपि थान तिन । दै सराप तिन वार ॥
हरि विरोध तो सहि है । तो सध्यौ कारतार ॥ ॥ छ० ॥ १७३ ॥
पद्यरी ॥ पाधरी छद वरगत मुम्भक्त । 'वस्वरन वीर कल वरन रुम्भक्त ॥
अवतार एक एकाह प्रकार । ससिपाल दत्त 'वक्रह विधार ॥
छ० ॥ १७४ ॥

अवतार दुतिय जौ कह मडि । अवतार किरण गोकुलह छडि ॥
तिन काज किष्ण अवतार कौन । भूभार हरन अवतार लीन ॥
छ० ॥ १७५ ॥

- (१) ए कृ को ध्यायि । (२) ए कृ को - मुनि । (३) मो पर ।
(४) ए कृ को उल्लोच वीर कल बन्धन रहस्य । (५) मो चक्र ।

अब साँई अपराध मुहि । मुगति कहो कब होइ ॥ छं० ॥ १६३ ॥
 पद्धरी ॥ कर जोर करत बौनती रंभ । 'साक्षात रूप तुम सम सु ब्रह्म ॥
 संसार रूप साइर समाज । कटुनह पार तुम तहं जिहाज ॥
 छं० ॥ १६४ ॥

२पाले सु अगा रिषि क्रगा जोग । चैकाल क्रगा षट रहत जोग ॥
 अबला अवध्य हम अंग आहि । कहि क्रोध देव कपों करिय ताहि ॥
 छं० ॥ १६५ ॥

उद्धार होइ सो कहो देवा । तुम चरेन सरन नहिं और सेव ॥
 सु प्रसन्न होइ रिषि कहिय एह । अवतार लेहु पहुपंग मेह ॥
 छं० ॥ १६६ ॥

तुम काज जग्य आरंभ होइ । जैचर प्रथी दल दंद 'दोइ ॥
 भुम्भीय भार उत्तार नारि । फुनि सर्गलोक कहि तोष 'व्यार ॥
 छं० ॥ १६७ ॥

इह कहि रु रिष भय अप्य थान । दुष पाइ रंभ बैठी विमान ॥
 गइ सुरग लोग सब सपिन संग । 'कुमिलाइ बदन मन मलिन अंग ॥
 छं० ॥ १६८ ॥

अप्सरा के स्वर्ग से पात न होने का प्रकरण । तीनों
 देवताओं का इन्द्र के दरबार में जाना और
 द्वारपालों का उन्हें रोकना ।

कवित्त ॥ एक दीह बर इंद्र । रमन क्रीड़ा अधिकारिय ॥
 ता देषन चयदेव । ब्रह्म, सिव, विष्णु सुधारिय ॥
 ए चलंत तिन थान । इंद्र दरवानति रुकै ॥
 मूढ़ मति जानिय न । दैव गत्ती गति पकै ॥

(१) ए. क. को.-साक्षात रंभ ।

(२) ए. क. को.-पाले ।

(३) ए. क. को.-होइ ।

(४) ए. क. को.-यार, पार ।

(५) ए. क. को.-कुम्हिलाय ।

घरि एक तमसि तामस तिहुन । बहुरि घात सुर उच्चरिय ॥

जानेन काल निमान गति । तिन विधान विधि सचरिय ॥ छ० ॥ १६६ ॥

विष्णु का सनत्कुमारों के शाप से पतित

द्वारपालों की कथा कहना ।

विधि न जपि अध्रम । इद्र दरवान न जानिय ॥

सुक सनकादि सनक । सनद सनातन न्वानिय ॥

ए दरवान अवुद्ध । लच्छि रोकिय परिमानिय ॥

सनत सनदन देव । मुनी व्रत आदि भिमानिय ॥

ए कुञ्जर पच पचौ हटकि । पच बाल पचौ प्रकति ॥

रिपि वर न होइ तामस कवहुँ । सो ओपम कवि राज मति ॥

छ० ॥ १७० ॥

था ॥ हटकि सु अध्रुप्रमान । अमान साध दारुनो वरय ॥

ज्यों रिपि नाम समर्थ्यौ । तामसय द्वार पालक ॥ छ० ॥ १७१ ॥

टक ॥ स्याम स्यामय स्याम मूरति धने, उद्यापित बुद्धुदौ ॥

नारेप नासेप उच्चत नन, दीर्घ न रूप वर ॥

नमाया चलथ बलति किरिया, एकस्थ जोती तह ॥

बैकुण्ठ गुरु मुक्ति धामति धरं, नापत्ति नो तावहुँ ॥ छ० ॥ १७२ ॥

हा ॥ मापत्ते रिपि थान तिन । दै सराय तिन वार ॥

हरि विरोध तो सद्धि है । तो सर्थ्यौ करतार ॥ छ० ॥ १७३ ॥

धरी ॥ पाधरी छद वरनत मुभक्त । वस्वरन बीर कल वरन रुभक्त ॥

अवतार एक एकाह प्रकार । ससिपाल दत्त वक्रह विधार ॥

छ० ॥ १७४ ॥

अवतार दुतिय जौ कह मडि । अवतार किष्ण गोकुलह छडि ॥

तिन काज किष्ण अवतार कौन । भूभार हरन अवतार लीन ॥

छ० ॥ १७५ ॥

(१) ए कु को व्याधि ।

(२) ए कु को मुनि ।

(३) मो पर ।

(४) ए कु को उल्लूखीर बीर कल बलन रक्षक ।

(५) मो चक्र ।

अवतार दुतिय चयवर विरोध । राजसू जग्य सुत अग्ना सोध ॥
 अवतार दुतिय हिरनाकुसला । हरिमेव कुला विध बंध 'गला ॥
 छं० ॥ १७६ ॥

नरसिंह सिंह अवतार किन्न । मानुच्छ सिंह नन देव भिन्न ॥
 छाया न धाम 'नन सख 'धाय । सिव को प्रसाद लीनों 'सुचाय ॥
 छं० ॥ १७७ ॥

भरभरिय भार वर पच काज । रामहति राम जंपै विराज ॥
 छं० ॥ १७८ ॥

हिरणाक्ष हिरनाकुश वध ।

दूहा ॥ हरी लच्छि हरनंकुसह । दुअ 'विजुड किय देव ॥
 एकं त्यो पाताल प्रति । एक धंभ प्रति सेव ॥ छं० ॥ १७९ ॥

गाथा ॥ सो धिगित्यं प्रहलादं । किं थंभं मभक्त्यौ भनई ॥
 जंजं थानन हुतौ । तौ किनौ थंभयं भारं ॥ छं० ॥ १८० ॥

दूहा ॥ थंभ भार फुथ्यौ सुवर । नष हति धाम न छाह ॥
 वर सिंघासन बैठि कै । वर बैकुंठह जांह ॥ छं० ॥ १८१ ॥

रावण और कुम्भकरण वध ।

साटके ॥ राजा रामवतार रावन 'वधं, कुंभ वृत्तौ कर्नयं ॥
 सीतायं प्रति बोधितं प्रति 'लतं, प्रत्यंग 'प्रत्यंगितं ॥
 सा राजं प्रतिराज राज कपितं, चौकूटयं कूटजं ॥
 जंहल्ली धर धार उप्पम कवी, चक्रीय चक्रं फिरं ॥ छं० ॥ १८२ ॥

गाथा ॥ यों उद्धा कपि कांक । प्रब तर गाम प्रस्थरं लीयं ॥
 जिम धर सराय थानं । उड्डै सा भाजनं मुक्ति ॥ छं० ॥ १८३ ॥

दूहा ॥ यों उड्डौ लंका सुधर । चिया बैर प्रतिपाल ॥
 हर बंदे गोविंद कय । वर बैकुंठह हाल ॥ छं० ॥ १८४ ॥

(१) मो.- कस्त ।

(२) मो.-तन ।

(३) ए. कू. को.-पाय ।

(४) मो. सुभाय ।

(५) मो.-सु ।

(६) मो.-विधं ।

(७) मो.-लनं ।

(८) ए. कू. को.-प्रसगिनं ।

त्रिदेवताओं के पास इन्द्र का आप आकर स्तुति करना ।

चौपाई ॥ सो बोलिय इद्रह परदार । हरि स्वयौ तिय देव सँसार ॥

मुनि सु इद्र अस्तुति वर कौनिय । चरन सुरज वर सौस सु दीनिय ॥

छ० ॥ १८५ ॥

भुजगौ ॥ तुही देवता देवत विष्णु रूप । किते इद्र कोट नचै कोटि रूप ॥

नचै कोटि ब्रह्म रवि कोटि तेज । ससौ कोटि सौत सुधार राज सेज ॥

छ० ॥ १८६ ॥

किते कोटि ज कोटि से दुष्ट ढाहे । किते कोटि कदर्प लावन्य लाहे ॥

किते कोटि सामुद्र अज्जाद दिक्षि । किते कोटि कल्प तर मुक्ति सिद्ध ॥

छ० ॥ १८७ ॥

बल कोटि पोन द्विगं कोति भारी । तुही तारन तेज ससार सारी ॥

तुही विष्णु माया अमायात तूही । तुही रति दीह तुही तेज जूही ॥

छ० ॥ १८८ ॥

तुहीं तू तुही तू तुही सर्व भूत । तुही आदि अत तुही मध्य हूत ॥

जहा हू न हू तूतहा तू न नाही । गनो हू न देही रहै तू समाही ॥

छ० ॥ १८९ ॥

तुही ताप सताप आताप तूही । कह्यौ इद्र लग्यौ चरन समूही ॥

छ० ॥ १९० ॥

इन्द्रानी का त्रिदेवताओं का चरण स्पर्श करना ।

दूहा ॥ कहि रु इद्र सखीव सो । पय लग्यौ चय देव ॥

हरिचरणन छुडै नही । सोहरु चमक भेव ॥ छ० ॥ १९१ ॥

श्लोक ॥ कोटि सक विजासस्य । कोटि देव महावर ॥

इद्र ध्यानसमो सिधो । पचाननस्य राजय ॥ छ० ॥ १९२ ॥

अप्सराओं का नृत्य गान करना और शिव का उक्ते
अप्सरा को शाप देना ।

दूहा ॥ लै आई रंभा सवन । अहु परी संग साज ॥

हाहा हूह संग सजि । ए गुन गंध्रव गाज ॥ छं० ॥ १८३ ॥

चोटक ॥ गुन ग्रंध्रव गंध्रव लीन गुनं । इति चोटक छंद प्रमान सुनं ॥
सहतें बरनं बरनं रति राजं । नचै गुन अप्छरि अप्छरि काजं ॥
छं० ॥ १८४ ॥

रचै बर इंद्रति इंद्रह साज । ॥

लई पहु पंजलि वाम प्रकार । जपं जय इंद्र तियं जपि त्यार ॥
छं० ॥ १८५ ॥

पिज्यौ सुनि शंकर देव प्रकार । तजै चय देव कछ्यौ इंद्र सार ॥
कछ्यौ गुन मंत गनेस प्रकार । भयौ तहं शंकर आप सु सार ॥
छं० ॥ १८६ ॥

पतनं पतनं कछ्यौ तियवार । परै प्रति भूमि भयंकर सार ॥
छं० ॥ १८७ ॥

अपरा का शिव रो अपने उद्धार केलिये प्रार्थना करना ।

दूहा ॥ गहि चरन मुकै न हरि । रंभ कांपि इन भाइ ॥

मांनौ चल दल पतसौ । छीन वाइ विरुहाइ ॥ छं० ॥ १८८ ॥

गाथा ॥ कहु कब मुज उद्धारं । सुद्धारं कब्यं होइ ॥

तो पत्नी प्रकारं । इंद्रं चरन कब्व सेवाइं ॥ छं० ॥ १८९ ॥

उपरोक्त अपरा का स्वर्ग रो पतित होकर कनौज
के राजा के घर जन्म लेना ।

कावित ॥ सुनहि रंभ पहुपंग । पुत्रि बर ग्रेह देव गुर ॥

वर कनवज्ज प्रमान । गंग अस्नान सार कर ॥

इंद्र मरन बंछई । गंग स्नान जिय काजं ॥

ता कारन तुहि चीय । आप सुभ्यौ गुन भाजं ॥

पहुपंग ग्रेह जनमिय तदिन । तिय सराय तरुनिय भइग ॥

आरंभ विनेमंगल पढ़न । तदिन महरत बर लइग ॥ छं० ॥ २०० ॥

कन्नौज के राजा विजयपाल का दक्षिण दिश। पर चढाई करना ।

कनकवज्र कमधज्ज । राज विजयपाल राज वर ॥
हय गय नर वर भीर । सकल किय सेन जित पर ॥
वीर धीर वर सगुन । भार उद्धार महामति ॥
मत्तिराम चितविद्य । वीर्य रमाधि राज रति ॥
सचर्यौ सेन सजि विजै नग । सकल जीति भर राज धर ॥
भुरवस्थदिस्य नृप सग किय । कर्म्यौ देस दक्षिन सुधर ॥ छ० ॥ २०१ ॥

समुद्र किनारे क राजा मुकुट देव सोम वशी का
विजयपाल को अपनी पुत्री देना ।

सोम वस राजाधिराज । मुकुट देव प्रभु ॥
भरित समुद्र सुतटह । कटक मय मणि नयन नभु ॥
तोस लख्य तोपार । लख्य गेंवर गल गज्जाहि ॥
दसह लख्य पयदलह । पुलत दस छवति रज्जाहि ॥
दिव दिवस रीति मचह जपति । जगन्नाथ पूजत दिनह ॥
दिगविजय करन विजयपाल नृप । सपत कोस भिद्यौ तिनह ॥
छ० ॥ २०२ ॥

मुकुट देव की पुत्री का जयचंद के साथ व्याह्र होना ।

अति आदर आदरिय । सहस दस दीन गयदहु ॥
धन असय धन भुति । रतन घट समुनि मन्नदहु ॥
सौ प्रजक रजकति । कोटि दस पाट पटवर ॥
दिय पुत्री सु विसाल । दासि सैं सत अडवर ॥
परपौ सु पुति जयचंद दिपि । सुभभ जुन्दाइय आसरिग ॥
वर सवर पच दपति दिनह । पानि ग्रहन उत्तिम करिग ॥
छ० ॥ २०३ ॥

(१) ए कृ को रमादि ।

(२) गो देह स दक्षिण ।

(३) ए कृ को -रतन समुनि वन मनिदह ।

(४ , ए कृ को -सपत ।

दूहा ॥ अति सु ललित सखूप विय । रमहित राजन संग ॥

इक थार भोजन करहिं । अति सुष नपति प्रसंग ॥ छं० ॥ २०४ ॥

विजयपाल का रामेश्वर लों विजय प्राप्त करके अनेक

राजाओं को वश में करना ।

परिग देव दक्षिण दिसह । अंग भयौ सुभ देव ॥

सेत बंध अनु सरिय मग । गोवल कुंड संगेव ॥ छं० ॥ २०५ ॥

तोरन तिलगति बंधि नप । विष चढ़ि चिफिर चिकोट ॥

विद्या नैर सुजीति नप । सेत समुद्र सओट ॥ छं० ॥ २०६ ॥

नराज । करन नाट संकला पनेक भूप राजनं ॥

समुद्र ईषि भूप बंधि मैथिली सु भाजनं ॥

सुचंब कोटि मञ्जरी सुरंग राय कुंकनं ।

पुलिंग देश पै फिरी फिरेंग जीति संघिनं ॥ छं० ॥ २०७ ॥

असेर देस पानयं गंभीर गुजरी धरं ।

जु मंडवी मलेच्छ नटु गुंड देस सो धरं ॥

जु मागधं मवल्ल मुष्य चंद्रकास नटुयं ।

गुपाचलं गुरावयं प्रकास सोभ पटुयं ॥ छं० ॥ २०८ ॥

सुप्रच्यते प्रकार साध काम कगलं मिलं ।

अधम अगा सद्ध भूमि पंग राज संघिलं ॥ छं० ॥ २०९ ॥

कवित्त ॥ लयौ सुगढ़ सोव्रन । कोट मंज्यौ पर कोटह ॥

गोपाचल गैनंग । चक्रित वज्जी सिर चोटह ॥

सोव्रन गिर सिरताज । तटु लग्गे भग्गे पल ॥

दिय मोरा भीमंग । एक हथ्यी मद सबल ॥

दिय सीप कुंअर गज अठ सुवर । मोरा चलि पटुन भनिय ॥

विजपाल चले दिगपाल चलि । मंडोवर महि अप्पनिय ॥

छं० ॥ २१० ॥

सेतवन्द रामेश्वर के पड़ाव पर गुजरात के राजा के पुत्र का

विजयपाल के पारा आना और उरो नजर देना ।

दूहा ॥ सेबुजा हेरा सु पहु । लिय रसाल सिधराइ ॥
 मानक मुक्तिये दिव्य 'नग । लै पैलगि भोराइ ॥ छ० ॥ २११ ॥
 दस कुजाव सजावरी । दस पट वानी सिद्ध ॥
 हथिय सथिय सौपकिय । रिध दीनी नव निद्ध ॥ छ० ॥ २१२ ॥
 कवित ॥ भोरा कु अर सु भेट । सिध लग्यौ तट सागर ॥
 लाप दोय बाजी वितड । नगर भग्ग बहु नागर ॥
 सत्त लप्य तोपार । पति कनवज्ज प्रमान ॥
 लप सत्तरि गय गुरहि । तपै ग्रीषम जिम भान ॥
 जलथान जाइ धूलगि रह । रघौ एक बडवानलह ॥
 चहुआन देस तप्यह सुधर । पच पड कनवज्ज पछ ॥ छ० ॥ २१३ ॥

दिग्विजय से लौट कर विजयपाल का यज्ञ करना ।

गाथा ॥ किय दिगविजै विचार । जितवि सकल राइ किय सगे ॥
 पुर कनवज्ज सपत्ते । बज्जन बहुल बज्जि आनद ॥ छ० ॥ २१४ ॥
 दूहा ॥ मडि जग्य विजपाल नय । भूपन तुग विनास ॥
 जय जयचद विरह, बर । हठ लग्यो 'इतिहास ॥ छ० ॥ २१५ ॥

विजयपाल की दिगविजय में पाई हुई जैचद की पत्नी को
 गर्भ रहना और उससे मयोगिता का जन्म लेना ।

अरिस्त ॥ अति वरजो वा जुन्दाइय नारि । चद्र जेम रोहनि उनचारि ॥
 अति सुप वरस दुअश्रु प्रमान । ता उर आनि सजोगिन यान ॥
 छ० ॥ २१६ ॥

दूहा ॥ धटि बढि कलहन अनुसरै । पेम सदीरध होत ॥
 कलि कनवज दीपक सुमति । चद्र जुन्दाई 'जोति ॥ छ० ॥ २१७ ॥
 कवित ॥ जिते जुन्दाइय जोति । राज गवरी गुर बध्यौ ॥
 जिन जुन्दाइय चद । अष्ट पर्वत वित नध्यौ ॥

(१) ए कृ का गन ।

(२) ए कृ को अतिहास ।

(३) मो सौति ।

जिनं जु-हाइय चंद । तुंग तिरहन विमानय ॥

जिनं जु-हाइय चंद्र । कंठ कंठेर सु बानय ॥

जयचंद जु-हाइय पंगुरै । असी लख हैवर ^१परिग ॥

जयचंद जु-हाइय राज बर । बरनिय अरधंगह धरिग ॥ छं० ॥ २१८ ॥

दूई ॥ पुत्रकथा संजोग की । कही चंद बरदाइ ॥

पंग धरह जु-हाइ उर । आनि अगट्टिय लाइ ॥ छं० ॥ २१९ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज राराके संजोगिता पूर्व
जनम नाग पैतालिसगों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४५ ॥



अथ विनय मंगल नाम प्रस्ताव लिप्यते ॥

(छियालिसवां समय ।)

अप्सरा के संयोगता के नाम से जन्म लेकर
शाप से उद्धार पाने का वर्णन ।

दूहा ॥ पुत्र कथा सजोग की । कहत चद वरदाइ ॥

इस पृष्ठ (१२५६) में संयोगिता के जन्म का
संवत् जो ११३६ दिया है वह ११३३ चाहिए ।

बर पचम ससि तीथ ग्रह । जनम संयोग विषड ॥ छ० ॥ ४ ॥

ससि निमल पूरन उग्यौ । निसि निरमल अति रूप ।

निप निप कथा व्याहता । मरन अदबुद भूय ॥ छ० ॥ ५ ॥

जज बालते पढै गुन । तत बहुति काम ॥

सिद्धि विभतर तिथ सहज । लखि लखिनि विश्राम ॥ छ० ॥ ६ ॥

(१) ए क को - तत्त रस लित्रौ ।

(२) ए क को विपतर ।

* छन्द ४ के अंत में विखण्ड शब्द “समत ११३६” की सूचना देता है—यथा (वि = दो +
खण्ड = टुकड़ा) जनम संयोग—विखण्ड = संयोगता की आयु के आगेवाला समय में अर्थात् समत
११४४ में राजा पग ने राजसययज्ञ आरम्भ किया ।

जिनं जु-हाइय चंद । तुंग तिरुहन विप्रानय ॥

जिनं जु-हाइय चंद्र । कंठ कंठेर सु बानय ॥

जयचंद जु-हाइय पंगुरै । असी लख्य हैवर 'परिग ॥

जयचंद जु-हाइय राज वर । वरनिय अरधंगह धरिग ॥ छं० ॥ २१८ ॥

दूहा ॥ पुष्पकथा संजोग की । कही चंद वरदाइ ॥

पंग धरह जु-हाइ उर । आनि अगदिय लाइ ॥ छं० ॥ २१९ ॥

इति श्रीकवि चंद विरचिते प्रथिराज रासके संजोगिता पूर्व
जनम गाग पैतालिसभों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४५ ॥

अथ विनय मंगल नाम प्रस्ताव लिप्यते ॥

(छियालिसवां समय ।)

अप्सरा के संयोगता के नाम से जन्म लेकर
शाप से उद्धार पाने का वर्णन ।

दूहा ॥ पुत्र कथा सजोग की । कछत चद वरदाइ ॥

सुनत सुगधव गधवी । अति आनद सुहाइ ॥ छ० ॥ १ ॥

जनम सयोग सजोग विधि । कहि केविराज प्रकार ॥

जिम भविष्य भव निरमयौ । तिम सराय उद्धार ॥ छ० ॥ २ ॥

शाप देकर जरज ऋषि का अन्तर्ध्यान हो जाना और
सुमत का तप मे दत्तचित्त होना ।

चौपाई ॥ एक सराय पिमा अवतार । जरित रिष्य दरद्वार सुधार ॥

तिन सिध सिधिय क्षिमारत लिनौ । मनो तत्त 'रस तत्त सुभिन्नौ ॥

* सवत ११३६ मे सयोगिता का जन्म वर्णन ।

दूहा ॥ ग्यारह सै चालीस चव । पग राज कू मडि ॥

वर पचम ससि तीय ग्रह । जनम सयोग विषड ॥ छ० ॥ ४ ॥

ससि निमल पूरन उभ्यौ । निसि निरमल अति रूप ।

न्निप न्निप कथा व्याहता । मरन अदब्बुद भूष ॥ छ० ॥ ५ ॥

जज बालत पढै गुन । तत बहृति काम ॥

सिद्धि विभतर तिय सहज । लछि लच्छिन विश्राम ॥ छ० ॥ ६ ॥

(१) ए रु को तत्त रस लिन्नौ ।

(२) ए रु को विपतर ।

* छन्द ४ के अंत में विलण्ड शब्द "सवत ११३६" की सूचना देता है—यथा (वि = दो + खण्ड = टुकड़ा) जनम सयोग—विलण्ड = संयोगता की आयु के आगेआध समय मे अर्थात् सवत् ११४४ में राजा पग ने राजसवयज्ञ आरम्भ किया ।

संयोगता का दिन प्रति बढ़ना । और आयु के तेरहवें वर्ष
में उसके शरीर में कामोद्दीपन होना ।

कवित्त बढ़ै बाल जो दीह । धरिय सो बढ़ै स सुंदरि ॥
और बढ़ै इका मास । पाष बढ़ै रस गुंदरि ॥
मास बढ़ै षटमास । रित्त बढ़ै सु बरष वर ॥
बरष बढ़ै सुंदरी । होइ षट मध्य बरष भर ॥
पूरन बाल षट विय बरष । नव मासह दिन पंच वर ॥
ता दिनह बाल संजोग उर । मदन दृढ़ मंडिय सुधर ॥ छं० ॥ ७ ॥

संयोगता के हृदय मंदिर में कामदेव का
यथापन्न स्थान पाना ।

इह संजोइय रोज । पुत्ति बतीसह लच्छिन ॥
रची विधाता काम । धाम कर अप्य विचच्छिन्न ॥
छाजै छत्रिय गौष । गुमट कलसा छवि छाजिय ॥
करिय रस आवास । सरस रस रंग विराजिय ॥
तिन चिचसाल चिचत सुरंग । मनसिज आगम अंग अंग ॥
मन आस वास बसि मंदिरह । प्रथम दीप दीनौ सुरंग ॥ छं० ॥ ८ ॥

संयोगता के सौन्दर्य की बड़ाई ।

दूहा ॥ उड़गन सम सहचरि सकल । उड़पति राजकुमारि ॥
नव रस आए देह धरि । कोन चिया अनुहारि ॥ छं० ॥ ९ ॥

संयोगता का भविष्य होनहार वर्णन ।

इनूफाल ॥ संजोगि नाम सुजान । जिन तात विजय किआनि ॥
इह लच्छिनेव बतीस । इह पच्छ छत विदीस ॥ छं० ॥ १० ॥
इह उंच ग्रेह समान । भुअ राहनी दत आनि ॥
इन पानि वर चहुआन । जिन बंधिलिय सुरतान ॥ छं० ॥ ११ ॥

इन काज राजहू जग्य । मिलि राइ सहस विभग्य ॥
 कलहत काज सरूप छिति रति अनित भूप ॥ छ० ॥ १२ ॥
 इन रूप राचत देव । इन इट वधु अह भेव ॥
 इन सुरन पोटस दीन । इकतीस लच्छन भीन ॥ छ० ॥ १३ ॥
 भौ रुद्र माल विसेप । पर कलह कामिनि लेप ॥
 इन सब-यौ बह राज । भिरि सहस छचिय 'छाज ॥ छ० ॥ १४ ॥
 घटि मुकुट मुकुटनि पान । रवि कोटि उगिय जान ॥
 मिलि छत्र छत्रन धोह । सोइ छाह मडय वाह ॥ छ० ॥ १५ ॥
 सुनि सोति 'सतत काज । रन पानि वर भूत आज ॥
 इन कलह कामिनि नाम । ससार समनह वाम ॥ छ० ॥ १६ ॥
 इन पाइ पौरुष इद्र । ज्यौ रूपमिनी रू गोविद ॥
 दुज दुजन दुर्जन लोग । सुका सुनत अवन विभाग ॥ छ० ॥ १७ ॥
 दस सहस छत्र विभंग । रुधि भिन्न पोनिथ अग ॥
 परि लप्य छचिय जुह । इन बरह किमि असुद्ध ॥ छ० ॥ १८ ॥
 छिति छत्र बधन व्याह । तिहि सुचरे मडल धाह ॥
 वर मिलन वेस विरूप । चढ़ि चलन मनमथ भूप ॥ छ० ॥ १९ ॥
 जिहि जियन मरन सु 'लाह । दुअ नयर मंगल 'धाह ॥
 घट भाय भापन जान । सजोग जीवन पान ॥ छ० ॥ २० ॥
 बंधि पड राज सुराज । कनवज्ज राजन साज ॥
 धम्मागि काम विलास । सजोग रूप प्रहास ॥ छ० ॥ २१ ॥
 सुका सुकी केलि विभग । सुनि अवन भव अनुराग ॥
 चित विलापि उलयि कुमारि । लगि पढन केलि धमारि ॥ छ० ॥ २२ ॥
 अस ससिर रिति अतीति । पति तात ग्रह छिति जीति ॥
 सजोगि वारिय मडि । दुज दुजन गधव छडि ॥ छ० ॥ २३ ॥
 उअ मेह 'मोर मराल । पप्पीय सह सराल ॥
 उअ दप्य अवर मडि । मधु माधुरी सुव छडि ॥ छ० ॥ २४ ॥

(१) मो काज ।

(२) ए सतन ।

(३) ए ट को 'ज्यौ रूपमिनी रू गोविद ।

(४) ए रु को लार ।

(५) ए ट का 'वार ।

(६) ए रु को मोह ।

इह लगि केलि अहार । तिय ताल तेह सहार ॥

इह केतकिय सब छंडि । नव नलिन नागिन पंडि ॥ छं० ॥ २५ ॥

इय चंद एह प्रहोस । धट एह मय्य दुवास ॥

कनक राजन मगिगत । दिस षंड राइ सु मगिगत ॥ छं० ॥ २६ ॥

श्लोक ॥ * अन्धया नैव पिप्यंति । द्विजस्य वचनं यथा ॥

प्राप्ते च योगिनी नाथे । संजोगी तत्र गच्छति ॥ छं० ॥ २७ ॥

रांयोगता प्रति जय उन्द का स्नेह ।

दूहा ॥ सुय संयोग सभुष सुष । दिष्य सभोजन राइ ॥

अति हित नित नितह करै । तिय रयनी न विहाइ ॥ छं० ॥ २८ ॥

सुअठु आरि अपनी करै । सरै न सौधह तीत ॥

पढ़न केलि कलरव करै । कहत अपूरब बात ॥ छं० ॥ २९ ॥

नेवज पुष्प सुगंध रस । बज्जन सह सुढार ॥

सुरति काम पूजन मिलहि । एक समै चयवार ॥ छं० ॥ ३० ॥

रांयोगिता के विद्यारम्भ करने की तिथि आदि ।

पड़री ॥ ससि तीय थान रवि भोग जोग । दिन धन्यौ देव पंचमि संजोग ॥

संजोग बहुत उर पढ़न गति । दिन धन्यौ देव राजन सु मति ॥

छं० ॥ ३१ ॥

दूहा ॥ अति विचित्र मंडप सुरंग । अंगन सस सहकार ॥

अथ सु लाल कुंअरि पढ़त । सद्रिस प्रतंम सु मारि ॥ छं० ॥ ३२ ॥

पढ़त सु कन्या पंगजा । सुंदर लच्छिन रूप ॥

मानहु अंदर देषियै । मदन पचासन भूष ॥ छं० ॥ ३३ ॥

लहु भगिनि तारा सुअन । अति सु चंग प्रति रूप ॥

जिन जिन भेद अमेद गति । जं जं मंडहि धूप ॥ छं० ॥ ३४ ॥

रांयोगता का योगिनी वेष धारण कर अपनी पाठिका

(मदन वम्हनी) के पारा जाना ।

* इस श्लोक की प्रथम पंक्ति के आगे मो. प्रति के पाठ का एक पत्रा खंडित है ।

(१) को.-संमुष्ण सुख ।

(२) ए.-तस ।

अरिस्त ॥ ए लज्जा सौ लज्जहि बाल । दिगवरह वस्त्र गुन चाल ॥

जगत वस्त्र सो रामय भोग । वस्त्र रचै नहि राचै जोग ॥ छ० ॥ ३५ ॥

योगिनी वेष में संयोगिता के सौन्दर्य की छटा वर्णन ।

दूहा ॥ सो रघ्वी सुदरि सु विधि । मदन दृष्टि दिय हृथ्य ॥

सो कौनी मदन सुदृष्टि । अति कोविद गुन कथ्य ॥ छ० ॥ ३६ ॥

कविता ॥ अति कोविद गुन कथ्य । मदन कौनी भँति दृष्टह ॥

जोग जिहाजन जाइ । ताहि जल मद्धित सहह ॥

अति भय मितिय बाल । रूप राजति गुन साजति ॥

आभूषन घट धरै । देव बडू दिषि लाजति ॥

आरभ अवता धाम भधि । अति विमुक्त चिहु पास सधि ॥

सजीव जोग जगम सवै । तप सुतप्य मध्या सु लिषि ॥ छ० ॥ ३७ ॥

संयोगिता का लय लगा कर पढ़ना और पाठिका

का उसे पढ़ाना ।

दूहा ॥ लय लगिय भगौय गुन । अति सुदर तिन साथ ॥

एक मत्त दस अंगरिय । विनय पढावत गाय ॥ छ० ॥ ३८ ॥

इक सत पचत अंगरी । राज कथ्य रज रूप ॥

तिन मध्ये मध्यात में । काम विराजत भूप ॥ छ० ॥ ३९ ॥

तादिन तैं है दुजन बर । पदिय सु शास्त्र विचार ॥

उन आरभ अरभ करि । आप सपत्तिय बार ॥ छ० ॥ ४० ॥

एक दिन ब्राह्मणी का अपने पति से संयोगिता

के विषय में प्रश्न करना ।

आय सपत्तिय बाल बर । वेदिषि चष सह बाल ॥

मानौ रस अलि अलिनि कौ । लै आयहु ग्रह काल ॥ छ० ॥ ४१ ॥

पढ़ि संजोग सजोग दृढ । विजय सु देवह दाव ॥

चक्रह चक्र सु बेन बस । दिषि संजोग अनहाव ॥ छं० ॥ ४२

जाम एक निसि पच्छिणी । दुजनिय दुजवर पुच्छि ॥

प्रात अप्य धर दिसि उड़ै । जे लच्छिन कहि अच्छि ॥ छं० ॥ ४३ ॥

ब्राह्मण का संयोगिता के भविष्य लक्षण कहना ।

कवित ॥ इन लच्छिन सुनि वाल । निपति करि रुधिर प्रकारह ॥

बहु छचिय गहुझिहैं । रुंड हरि हार अधारह ॥

गिद्ध सिद्ध बेताल । करै छत्यह कोलाहल ॥

इह लच्छिन सुनि सख । वाल लच्छित जिन चोहल ॥

संजोग फूल फल नन दियन । ए कन्या जिम प्रथम तिम ॥

कलहंत राज छची सुवर । भविस बात होवै सु तिम ॥ छं० ॥ ४४ ॥

दूहा ॥ तिन कारनहों जक्ष गुन । भुगति भुगति सह देन ॥

सो कन्या पहुपग कै । आय सपत्तिय मेन ॥ छं० ॥ ४५ ॥

जयति जग्य संजोग वर । दिषि अंगन लष चार ॥

एक अलष्यन भिन्नहै । सो कलहंतर साल ॥ छं० ॥ ४६ ॥

कलहंतरि सुंदरिय वर । अति उत्तंग छिति रूप ॥

तिन समान दुज पिष्य कै । मदन लभत तन भूष ॥ छं० ॥ ४७ ॥

गीतामालची ॥ लषि लपित अच्छि, सपिन सच्छि, नमित गुरजन, अंगुरं ।

लहु गुरु सुमंडित, अगन छंडित, दूह गाह, समुद्धरं ॥

सका सगन संचित, अगन वंचित, जगन भगन, प्रबंधयं ॥

उग्गाह गाह, विगाह चंचल, नष्ट निहचल, छंदयं ॥ छं० ॥ ४८ ॥

छिति छत्र बंधति, चित्त वित्त, सु नगन निंधति, अंभयं ॥

हरि हरय अंसय, विमल वंसय, रूप गंसय, अंसयं ॥

सुभ अलस साटक, काम हाटक, भाप पटक सु संचयं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

संजोग जोगय, सुमति भोगय, थप्य जोगय, भोगयं ॥

इन काल विद्ध सख सिद्ध, एक दोष संजोगयं ॥

मय मत मतिय, काम कतिय, विज्ज जतिय उच्चय ॥
ज कहै अछरि, पढै तच्छरि, लिपै नच्छरि, मडिय ॥

छ० ॥ ५० ॥

पापान लीह, दीह तीह, काम सीह, विच्छुरै ॥
कवि करै कितिय, मत्ति इतिय, जीह तितिय, उच्चरै ॥

छ० ॥ ५१ ॥

सयोगिता का मदन वृद्ध ब्राह्मणी के घर पढने जाना और
सयोगिता का यौवन काल जान कर ब्राह्मणी का उसे
विनय मगल पढाना ।

कवित ॥ मदन वृद्ध बभनिय । ग्रह हिडोल सजोगिय ॥

कनक डड परचड । इद्र इद्रिय वर जोइय ॥

परहि लत हिडोल । दुजन उप्पम तिन पाइय ॥

कनक पभ पर काम । चद चकडोल फिराइय ॥

लगै नितव बेनिउ 'वढि । सो कवि इह उप्पम कही ॥

सैसव पयान कै करतही । कामय 'वग्गी कर गही ॥ छ० ॥ ५२ ॥

अरिस्त ॥ पुते अव कदव कुरगो । तै किरपल पछै अनमगा ॥

चक्रित वत्त सुनि बाल प्रकार । सह सुदरि सोभत सिरदार ॥

छ० ॥ ५३ ॥

दूहा ॥ सजि सु पग वर व्याह कृत । वह रचना गुन लाहु ॥

बाल सु वय जिम बाल मुन । त्यो समुझै गुन चाह ॥ छ० ॥ ५४ ॥

कवित ॥ एक सु पुतिय पग । देव दक्षिन देवग्रह ॥

मेनहीन माननी । हीन उपजै अरम कह ॥

मनमोहन मोहनी । निगम करि वत्त प्रकार ॥

आसमान इप्पियै । नाग नर सुर नहि भार ॥

अप्पौ उमाह मगलविनय । भ्रम सकल जिम मुगति मति ॥

सुनि मत्ति गत्ति रतिय सुवर । विधि विधान निरमान गति ॥

छ० ॥ ५५ ॥

(१) ए रु नेनी उगटि ।

(२) ए का काम अगगी ।

(३) ए नार ।

अथ विनय मंगल पाठ का प्रारम्भ ।

वचनिका ॥ मदन दृष्ट बंभनी संजोगिता को विनय मंगल

पढ़ावति हो सु कैसो विनय मंगल ॥

दूहा ॥ सुकल पच्छ बंभनि सुकल । सुकल सु जुवति चरिते ॥

विनय विनय बंभनि कहै । विनय सु मंगल दत्त ॥ छं० ॥ ५६ ॥

* मुगध मुद्ध प्रौढ़ा प्रकृति । सुवर बमौकर चित्र ॥

सुनि विचित्र बाला विनय । अवन भवद्विन चित्त ॥ छं० ॥ ५७ ॥

विनय मंगल की भूमिका ।

चोटका ॥ प्रथमं उठि प्रात मुघं दरसं । उतमंग सुत्रंग पथं परमं ॥

विनया गुन तुच्छ विमच्छ मनं । हरहं जय काम सु तामे मनं ॥

छं० ॥ ५८ ॥

ग्रह गामिय रेनि परप्परसं । प्रगटी तय भावन ताम रसं ॥

द्रिग द्रप्पन लैह बदन दसं । प्रति प्रीतय चारु चघं दरसं ॥

छं० ॥ ५९ ॥

भय कामिनि काम मनं दतलौ । मिथि नासिय पानि कुअदत जौ ॥

मन दत्ति सु गति मनं गहनं । रह रत सु व्रत वरं बहनं ॥

छं० ॥ ६० ॥

जिययं जिय रसा रसं रसनं । भय भीर उदत्त पथं वसनं ॥

परि पिग्गह पिग्गा सबक कसं । जह ईजह दिष्टि हीय ससं ॥

छं० ॥ ६१ ॥

मुगतं वर अन वरं विनयं । प्रथमं निज काल ग्रिहं गननं ॥

भव रूप चिरूप तनं लहनं । अनि ईस नसीस समं बहनं ॥ छं० ॥ ६२ ॥

अनि पूज न जाप न ईसगनं । पति पूज मनोरथ लभिभ मनं ॥

प्रिय दिष्पहि दिष्पि मुगड मनं । वय बद्धिय ताम सुकाम वनं ॥

छं० ॥ ६३ ॥

वसनं रुचि पीय सुकीय धरं । तन मंडन भूषत ताम करं ॥

(१) ए.-मुद्ध ।

* यहा से मो.-प्रति का पाठ पुनः आरंभ है ।

(२) ए. क. को.-इसं ।

(३) मो.-सरस ।

गहन रस सार शृंगार बन । गति गठिय ग्रथ सु काम मन ॥
छ० ॥ ६४ ॥

इति गति चरित जुधाम धरं । सु जितै चिय वत अधीन कर ॥
छ० ॥ ६५ ॥

पति का गौरव कथन ।

दृढ़ ॥ जो वनाय बनिता बनिय । सपौ न भगल माल ॥
सपि आग्रह मानै नही । पिय छडै तितकाल ॥ छ० ॥ ६६ ॥
उव निस बस दृती ग्रहन । सपिन विरुव न बग ॥
पियन पियहि अतह करन । करहित सुभग अभग ॥ छ० ॥ ६७ ॥
ध धौरज विरहै बनह । आतमेछ अप सिद्ध ॥
त तन मन मान न धरहि । करै सु कामह विद्ध ॥ छ० ॥ ६८ ॥

स्त्रियो की पति प्रति अनन्य प्रेम भावना ।

सुरिस्त ॥ तू धनय मनय तुअ मत्तिय । तू हियय जियय तुअ गत्तिय ॥
तू वरय धरय तुअ तत्तिय । तू पियय नियश निज रत्तिय ॥ छ० ॥ ६९ ॥
तू ग्रहय नरय नय नत्तिय । तू गनय जपय जक जत्तिय ॥
तू सहय वसय धन घत्तिय । तू द्वियय छियय छवि हत्तिय ॥
छ० ॥ ७० ॥

तू सहय दुहय दुह कत्तिय । तू विनय दिनय दिन गत्तिय ॥
तू तपय अपय अप नत्तिय । तू सथय नथय सथ सत्तिय ॥
छ० ॥ ७१ ॥

पाठिका का उपरोक्त व्याख्या को दृढ़ करना ।

कवित्त ॥ विलसि भाइ भामिनिय । जाम जामनिय प्रमानहि ॥
विलसि काम कामिनिय । ताम तामिनिय प्रमानहि ॥
हौं सुवम बभनिय । रभ रमान सिपावन ॥
अवन मूढ़ मन मूढ़ । रुढ़ रजन गहि दावन ॥

तन तुंग द्रुग उग्रह हिम सु । सुनि सु बाल हर धवलु ^१हन ॥
चंदनह चारु चंदन कुसुम । तन चिपान चिग्गुन पवन ॥छं०॥७२॥

विनय भाव की गर्यादा गौरव और प्रशंसा ।

जुगति न मंगल विना । भुगति विन शंकर धारी ॥
मुगति न हरि विन लहिय । नेह विन बाल द्यारी ॥
जल विन उज्जल नश्चि । नश्चि निमान ग्यान विन ॥
कित्ति न कर विन लहिय । छित्ति विन सख लहिय किन ॥
विन मात मोह पावै न नर । विनय विना सुष असिन तन ॥
^२संसार माह विनयौ बडौ । विनय बयन मुहि अवन सुनि ॥
छं० ॥ ७३ ॥

सुआ सार विनय का एक आरव्यान वर्णन करता है
और रति और कामदेव उसे सुनते हैं ।

ढूहा ॥ ^३निकट सुकी सुक उच्चरय । कर अवलंबित डार ॥
भवरिय अंब ^४सु अंब लगि । सुनत सु मारनि मार ॥छं०॥७४॥
विनय साल ^५सुक सुकनि दिषि । सर संभरिय अपार ॥
मानो भदन सुमत की । विधि संजोगि सु सार ॥ छं० ॥ ७५ ॥

मान एवं गर्व की अयोग्यता और निन्दा ।

साटक ॥ मानं भंजन नेहमान ^६त्रगुना, सज्जन सा दुर्जन ॥
मानं छंदय तोरनेव जुरयं, मानेव मंदं पिमं ॥
मानं छंदय तोरनेव गुनयं, मानेपि नरुयं बुरं ॥
इकं मानय बार भारथ गुरं, आवंत मानं लधुं ॥ छं० ॥ ७६ ॥
ढूहा ॥ न भवति मान संसार गुन । मान दुष्य को मूल ॥
सो परहरि संयोग तूं । मान सुहागिनि ^७मूल ॥ छं० ॥ ७७ ॥

(१) ए. कृ. को -सुनइ ।

(२) ए. कृ. को -सारसा ।

(३) ए. कृ. को. निकर ।

(४) ए. कृ. को.-रत ।

(५) मो.-विनय सार सुक्कीय दिषि ।

(६) मो -त्रगुना ।

(७) मो.-मूल ।

विनय का गौरव ।

एक विनय गरुश्रंत गुन । अव्वह विनयति सार ॥
 सीतल मोन सु जपियै । तौ वन दम्कै 'तुसार ॥ छ० ॥ ७८ ॥
 विनय की प्रगसा और उसके द्वारा स्त्रियोचित
 साधनो का वर्णन ।

विनय महा रस भतिगुन । अत्रगुन विनय न कोइ ॥
 जोगीसर विनय जु पढै । मुगति सलभ्यै सोइ ॥ छ० ॥ ७९ ॥
 विनय नही जौ पपियन । तरु नहि दोष दिखत ॥
 फल चम्पै पतइ हतें । मानय गुनय गहत ॥ छ० ॥ ८० ॥
 एकै विनय सभग गुन । तजत न विनय अरिष्ट ॥
 जाने घर खन। हुआ । भोइ नता करि मिष्ट ॥ छ० ॥ ८१ ॥
 मो पुच्छै जौ सुदरी । तौ जिन तजै सुरग ॥
 जिम जिम विनय अत्यासिहै । तिम तिम पिय मनपग ॥ छ० ॥ ८२ ॥

कविता ॥ विनय देव रजिये । विनय बहु विद्य देइ गुर ॥
 विनय द्रव्य लहि सेव । विनय विष तजै अण्य सुर ॥
 विनय दत्त अदतार । विनय भरतार हार उर ॥
 विनय करह करतार । विनै ससार सार सुर ॥
 वय चढत चढै विनया सुवर । सब भृगारति भार वपु ॥
 बभनिय भनै सजोग सुनि । विनय बिना सब आर तपु ॥ छ० ॥ ८३ ॥
 चौपाई ॥ बभनिय भनिय सजोई । वयसध्या सु सुधा बुधि भोई ॥
 तू सक सौतिन पिय बसि होई । विनय सुबुद्धि देहि बुधि तोही ॥
 छ० ॥ ८४ ॥

दूहा ॥ विनय उचारन चाचु मुप । दिषिय सारन सार ॥
 कामतन सुझै सगुन । कत करै उरहार ॥ छ० ॥ ८५ ॥
 चंद्रायन ॥ काम धरा धरकत सुरतौ । तब सजोगिनी बोल अहितौ ॥
 अश्विर छद सु चद विरतौ । सकरया पय सुबुह पितौ ॥ छ० ॥ ८६ ॥

(१) ए रु को तुपर । (२) ए रु को अश्विर छद सुउन्द सु । तौ ।

गाथा ॥ सुष पित्तौ पति रोगै । लग्नै विषभाइ सकरं सुषयं ॥

जंतुर पये सुबाले । कामं रत्ताय मोहनो धरयं ॥ छं० ॥ ८७ ॥

उपरोक्त कथनोपकथन के प्रमाण में एक संक्षेप आख्यान ।

कावित्त ॥ एक काल सुंदरी । दोइ भगनी अधिकारी ॥

एक मान सधयौ । एक बनिया विचारी ॥

जिन चय किन्नी मान । सुष्य तिन देह न लखौ ॥

अंतकाल संग्रहे । चित्त तन मोह विलुखौ ॥

जामंति अंति सा गति हुई । ता मत्तौ सारन सुबर ॥

जरइ नरक बहु मोगि कै । जग लम्भ पसु पंषि तर ॥ छं० ॥ ८८ ॥

स्त्रियों के लिये विनय धारणा की आवश्यकता ।

दूहा ॥ जिन चिय लभ्यौ विनय रस । सुष लखौ तन संग ॥

विनय बिना सुंदर इसी । विन दीपक ग्रह संग ॥ छं० ॥ ८९ ॥

कावित्त ॥ ज्यों विन दीपक ग्रह । जीव विन देह प्रकारं ॥

देवल प्रतिम बिह्वन । कंत विन सुंदरि सारं ॥

लज्जा विन रजपूत । बुद्धि विनु भोग न जानिय ॥

बेद बिना वर विप्र । करन विन किति न ठानिय ॥

विनय बिना सुंदरि अधम । कंत देइ दूनौ सु दुष ॥

संजोगि भोग विनयौ बडौ । लहै विनयमंगल सुसुष ॥ छं० ॥ ९० ॥

विनयहीन स्त्री समाज में सुशोभित नहीं होती ।

गाथा ॥ वेदयौ वंचितं विप्रं । भेषजं बहु लोइ ग्रंथयं गुनयं ॥

सब जंजार सु जानं । जुन्दाई नेव जानयं ततं ॥ छं० ॥ ९१ ॥

तंतू विनय बिहूनी । युं दिहाइ सुंदरी तनयं ॥

यो वासंतति काल । पत्रं बिना तरवरं रचयं ॥ छं० ॥ ९२ ॥

(१) ए. क. को.-सुनर ।

(२) ए. क. को.-तन ।

(३) ए. क. को.-सुधर ।

(४) ए. क. को.-वेदया वंचित विप्रौ ।

(५) मो.-यौ वासंत सुकालं ।

दूही ॥ वह लज्जा कहि जात चिय । तन मडन अवलान ॥

काल बसत रु बाल यह । सो मनिमत सुजान ॥ छ० ॥ ८३ ॥

एक मात्र विनय की प्रशंसा और उपयोगिता वर्णन ।

कवित्त ॥ विनय सार ससार । विनय बध्यौ जु जगत सब ॥

विनय काल निकाल । विनय ससार स्वर अव ॥

विनय बिना ससार । पलक लम्भै न सुख तनु ॥

जह जाइ सो रिप । ग्राह सग्रहौ देह अनु ॥

नृप रीति विनय लगौ रवि । विनय उचारन चार रस ॥

विनय बिना सुदरि इसौ । सुपन होइ उद्यान अस ॥ छ० ॥ ८४ ॥

सोरठा ॥ विनय तरुन अरु बाल । विनय होइ जुवन दिनन ॥

तौ पल्लै प्रतिपाल । विनय सु दृढ्य बधि रस ॥ छ० ॥ ८५ ॥

दूहा ॥ भरत भाम तारन सुरस । विनय भाष जस साय ॥

जिम जिम विनय सु सग्रहै । तिम लम्भै अभिलाष ॥ छ० ॥ ८६ ॥

कवित्त ॥ विनय सार ससार । विनय सागर रसधारी ॥

विनय उतारन पार । भुक्ति अर्पण अधिकारी ॥

विनय लहै सब जुगति । विनय विन भक्ति न होई ॥

विनय सुरस उचार । पार कहुन रस होई ॥

गुनवत निगुन सगुन अगुन । विनय बिना तन बालयौ ॥

गुन बिना धनुष क्रम विन सुफल । उभर मठ देवाल्यौ ॥

छ० ॥ ८७ ॥

दूहा ॥ विनय सुबधी सुबुध हिय । जौ सुष चाहत बाल ॥

विनय न छड्य सुदरो । तिन पनन प्रतिपाल ॥ छ० ॥ ८८ ॥

गाथा ॥ बाले विनयति सार । देह मध्य तत्त ज्यौ जीव ॥

त्यौ जीव सुष देही । विनय बिना बालय नेह ॥ छ० ॥ ८९ ॥

दूहा ॥ विनय सुरस बभनि कहै । पढन सुपग कुआरि ॥

बलह बस्ति दूजै सुबल । तौ बसि बलह सु नारि ॥ छ० ॥ ९० ॥

(१) मो काल वसै तरु बालग्रह ।

(२) मो रस, रु को-रस ।

(३) मो-रस ।

(४) ए कृ को-उज्जर मठ ।

प्रथम सुरस हृथ्यै अपन । तो हृथ्यै अप पीव ॥
सुनि संजोग सजोग है । जीव दै लीजै जीव ॥ छं० ॥ १०१ ॥

कवित्त ॥ निकट सुष्य संजोग । पीय अप्पन बसि होई ॥
सोइ विनय सजोग । तीय प्रिय वदन न जोई ॥
सोई विनय सजोग । अप्प छोडै विषया रस ॥
सोई विनय संजोग । दई किअपै अप्पन बसि ॥
सोइ एक विनय जौ तूं पढ़ी । बढ़ी भक्ति चढ़ि चंद बिय ॥
रति छंडि मान किमबीय चिय । तो ग्रह जीवन मंचलिय ॥
छं० ॥ १०२ ॥

कां बसि कीनी कांत । विनय बंध्यौ परिमानं ॥
जिम जिम विनयति बढ़ै । सुष्य तिम तिम सरमानं ॥
विनय नेह तन सजल । सिंचि सुष बेलि बढ़ावै ॥
फल अमृत-संग्रहौ । मान सब कहीं दिढ़ावै ॥
सो विनय बिना नारीन कौं । विनय बिना संसार सह ॥
पसु पंषि जीव जल थल जिमय । विनय बिना संयोग वह ॥
छं० ॥ १०३ ॥

गाथा ॥ सम विस हर विस गंतं । अप्पं होइ विनय बसि वाले ॥
षट नवरस दुअ सद्धे । गारुड विना मंच सागरिथं ॥
छं० ॥ १०४ ॥

कवित्त ॥ विनय सय्य जस जीव । विनय भोगवन सुष्य वर ॥
विनय देन रसपान । विनय आचरण अमृत घर ॥
अद्ध रयनि अंतरै । विनय सुंदरि अभ्यासै ॥
मान नेह संग्रहै । मान भंजै गुन भासै ॥
इम बिनै बाल मुकै न तूं । सुनहिं सुकी सुक अवन कथ ॥
लच्छिन सहजा अरु विनय गुन । दिषित माल उप्पर सुतथ ॥
छं० ॥ १०५ ॥

दूहा ॥ विनय पढ्यौ संजोग सुभ । तन में विनय सुभंत ॥
ज्यों जल बलि जलहीं जियै । विनय जियै बर कांत ॥ छं० ॥ १०६ ॥

इति विनय मंगल कांड समाप्त ।

चद्रार्थन ॥ सुनि सजोग सिपावन सावन सभारिय ।

हीय हितानिय पीर न पावै बझरिय ॥

गुर गुग्गु नन कन्न जमावन जुग हुअ ।

अच्छर अथ्य प्रमान विराजत मसक्त धुअ ॥ छ० ॥ १०७ ॥

ब्राह्मणी का रात्रि को पुनः अपने पति से सयोगिता के
विषय में पूछना और उसका उत्तर देना ।

सुरिह ॥ सु धरता तर रत्तिर रत्तिय । दुज्ज दुजानौ वत्तर मत्तिय ॥

प्राग प्रिय रज राजन मडिय । जीहा जाम उभै षट पडिय ॥

छ० ॥ १०८ ॥

दुजी का दुज से कथा कहने को कहना ।

कवित्त ॥ मदन दृढ़ बभनिय । मार माननिय मनोवसि ॥

कामपाल सजोग । विनय मंगलति पढति रस ॥

तहा सहारतर एक । अग अगन धन मौरिय ॥

सुक पिक पयि असष । वसहि वासर निसि घोरिय ॥

इक वार दुजी दुज सों कहै । सुनहि न पुच्च अपुच्च कथ ॥

उतकठ बधै मन उलसै । रहहि नौद आवै सुनत ॥ छ० ॥ १०९ ॥

दुज का उत्तर ।

दृढा ॥ दुज फुनि दुजि सौ उचरिय । कहि राजन वर वत्त ॥

जोग भोग जुद्ध जुन । करन सु कारन हित ॥ छ० ॥ ११० ॥

पृथ्वीराज का वर्णन ।

कवित्त ॥ एक राव सभरीय । दुतिय जोगिनि घुर भूपति ॥

तेज भौज अजमेर । उअर उदरति भूरति ॥

वान मध्य वय मध्य । मध्य मह महि तन मोचन ॥

(१) ए कू को -गुह्यनन ।

(२) मो षट पडिय ।

(३) ए कू को सुनत ।

छिति छितान धर अगा । आम धर हिय रति रोचन ॥

अचि देव देव मंडल समा । इक इक अषि अषंडलिय ॥

सुरतान बंधि पुरसान रति । मंत अषंड सुदंड लिय ॥ छं० ॥ १११ ॥

कथा सुनते सुनते ब्राह्मणी का निद्रामग्न होजाना ।

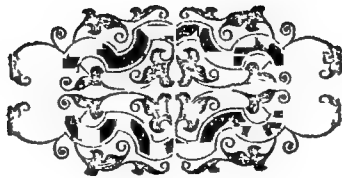
दूहा ॥ सुनत कथा अछिवतरौ । गइ रतरौ बिहाय ॥

दुज कछौ दुजि संभल्यौ । जिहि सुष अवन सुहाय ॥ छं० ॥ ११२ ॥

होत प्रात तब पठन तजि । याइ हिंडोरन आइ ॥

इह चरित दुज देषि कै । पछ जुगिनिपुर जाइ ॥ छं० ॥ ११३ ॥

इति श्रीकवि पद विरचिते प्रथिराज रासके रायोगिता कौ
विनय गंगल वरननो नाग छियालीरामो प्रस्ताव
संपूर्णम् ॥ ४६ ॥



अथ शुक वर्णन लिप्यते ।

(सैतालीसवां समये ।)

सयोगिता का यौवन अवस्था में प्रवेश ।

दूहा ॥ मदन दृढ ग्रह बभनिय । पठन कुँआरिका दृढ ॥
बार बार लोकन करहि । जिम नछिच विच चद ॥ छं० ॥ १ ॥
बालप्यन अप्पान सुष । सुष्य कि जुष्वन मेंन ॥
सुभर श्रवन सापिन करहि । दुरि दुरि पुच्छत नैन ॥ छं० ॥ २ ॥
'श्लोक ॥ प्राप्त च पंग ग्रेह । जग्य जापय होमन ॥
तच बध दड देह । राजा मध्य महोवत् ॥ छं० ॥ ३ ॥

शुक और शुकी का दिल्ली की ओर जाना ।

हनुफाल ॥ इति हनुफालय छद । गुरु चार नम जिम चद ॥
उडि चले दंपति जोर । चित्तइ स पिथ्यह ओर ॥ छं० ॥ ४ ॥
शुक का ब्राह्मण के वेष में पृथ्वीराज के दरबार में जाना ।
जित सभरौ दतथान । वर मच इष्ट समान ॥
पते सुठिलिय थान । अपमेद किय परिमान ॥ छं० ॥ ५ ॥
नरमेध धरि साकार । दुज मेज मुक्कौ सार ॥
दियि ब्रह्म मेस अकार । किय मान अर्थ अपार ॥ छं० ॥ ६ ॥

ब्राह्मणी का संयोगिता के पास जाना ।

दूहा ॥ सोई दुज दुजनी करै । बहु तरवर उडि जानि ॥
सो सहार सजोग किय । तीयह रम्य सु थान ॥ छं० ॥ ७ ॥
दुज का पृथ्वीराज से संयोगिता के विषय में चर्चा करना ।

(१) अन्य प्रतियों में गाथा करके लिखा है ।

(२) ए जाय ।

(३) को कृ पिथ्यह ।

कवित्त ॥ कहै सु दुज दुजनीय । सुनौ संभरि न्यप राजं ॥
 तीन लोक हम गवन । भवन दिष्ये हम साजं ॥
 जं हम दिष्यय एक । तेह नभ तड़िक अकारं ॥
 मदन बंभनिय ग्रह । नाम संजोगि कुमारिं ॥
 सित पंच कन्ध तिन मध्य अव । अथर सोभ तिन समुद वन ॥
 आकास मद्धि जिम उडगनिन । चंद विराजै मनो भुवन ॥ छं० ॥ ८ ॥

दूहा ॥ मदन चरिच सु बंभनिय । मदन कुंआरि सु अंग ॥
 सोइ बत्त कनवज्ज पुर । पंग पुत्ति मम चंग ॥ छं० ॥ ९ ॥
 गाथा ॥ अप्पन तन छवि दिष्यं । सिष्यं भेदाइ दुष्यनो जीवी ॥
 दुष्यं संभरि राइं । कहियं आज आगमं नीरं ॥ छं० ॥ १० ॥
 दूहा ॥ अप्पन तन छवि देषि कै । सुष भरि दिष्यी नाहि ॥
 दुष्य संभरिय अनूरंग । वर ओपम नहिं ताहि ॥ छं० ॥ ११ ॥

कवित्त ॥ माजन अग्नि उतिष्ट । मध्य चमकंत गरिष्टं ॥
 मिलि नषच भंजनं । नाभि दिव चरित सु मिष्टं ॥
 धनि धनि उच्चार । कल्यौ रधि जरजित नामं ॥
 गरभ जुन्दाइय जाह । होइ सुष किति सु तामं ॥
 जैचंद पुत्ति कलहंत गति । विधि अनेक वनन करिय ॥
 कनवज्ज वास गंगा सु तट । संत सुमंत सु विस्तारिय ॥ छं० ॥ १२ ॥

संयोगिता की जन्म पत्रिका के ग्रह नक्षत्रादि वर्णन ।

दूहा ॥ इह कहंत गुरराज नृप । जन्म पत्रिका वाल ॥
 जन्म सुषादी उद्धरिय । को यह उंच रसाल ॥ छं० ॥ १३ ॥
 कवित्त ॥ दुजनी दुज पुच्छ्यौ । दुज्ज दुजराज कवथ्यै ॥
 मंगल बुध गुरु सक्र । सन्नि सोमार चवथ्यै ॥
 केइंही गुर केत । राह अष्टम अधिकारिय ॥
 इन नछिच्च दुज कहै । देव जगि पंगह ढारिय ॥
 निरमान रंभ अवतार धरि । काम गनं गुन विस्तारिय ॥
 कलहंत नाम कलि जुग्म सहि । वर बंछै सोइ संभरिय ॥ छं० ॥ १४ ॥
 श्लोक ॥ जन्मस्थ पंचमो चैव । राहकेतं नक्षत्रया ॥
 पंगानी च जया पुत्री । मूल भारथ्य मंडिनी ॥ छं० ॥ १५ ॥

छ महीने में विनय मगल प्रकरण का समाप्त होना ।

दूहा ॥ इह कहत पट मास गय । लिपि अक्षर । वाल ॥

पञ्च दीय वर काढि कै । लिपि जनमोति रसाल ॥ छ० ॥ १६ ॥

विनय मगल समाप्त होने पर ब्राह्मणी का संयोगिता से
पृथ्वीराज और दिल्ली के सम्बन्ध की कथा कहना ।

पहरी ॥ लिपि छद् वध जनमोति ताम । तिहि दीह ध-यौ वर वाम काम ॥

तिन दिना तुच्छ हर नयन काज । जानियै वीर वाला विराज ॥

छ० ॥ १७ ॥

तन चिगुन भए देवत लाज । आवत लाज की लाज साज ॥

दिन धरउ पढन जपन सुबाल । मगलति विनय मगल विसाल ॥

छ० ॥ १८ ॥

अनगपाल के हृदय में वैराग उत्पन्न होने का वर्णन ।

इह पढहि वाल अप ग्रह थान । ढिम्मी नरिद कम्हार सु ताम ॥

वरजै न कोइ मची प्रमान । जिन देहि भुम्भि दुरजनति दान ॥

छ० ॥ १९ ॥

सिगार सग अनगेस राज । पायौ न पुच फल नीठ साज ॥

सत्तरिख सत वर्षह रसाल । पयौ सुदीह अन्न सु काल ॥ छ० ॥ २० ॥

आना नरिद तस वस राज । चित्यौ जु अण्य दोहित्त काज ॥

चितिय अचित्त मनि मित्त मित्त । जधार भीम ओडन विअत्त ॥

छ० ॥ २१ ॥

अनगेस ईस अनगेत पुज्ज । लिपि भोज वध आरभ काज्ज ॥

छ० ॥ २२ ॥

दूहा ॥ अनग सपत्ता काथ कथि । सोधि सु वधव वीर ॥

करि अप्पन तिथ्यह गवन । की साधन सरौर ॥ छ० ॥ २३ ॥

मन्त्रियों का अनगपाल को राज्य देने के लिये मना करना ।

चोटक ॥ मय मत गुरू दस हार पयौ । सह कफन चामर तीन नयौ ॥

पट हाटक चोटक छद् बली । सु कहौ कविचद उपंग भली ॥ छ० ॥ २४ ॥

जिन ठौर बरजत मंच पथं । नन मानिय राज कथा न काथं ॥
 भिरि भंजय रंजय प्रजा सबै । जिन जाइ सु तिस्थ्य अनंग अबै ॥
 छं० ॥ २५ ॥

धर रषिय लखि सुमंत मनं । उपजै तिम मझि विकार सनं ॥
 कत काम कला लषि षोडसयं । बरदाइ कहै सोइ देवतयं ॥
 छं० ॥ २६ ॥

अरिस्त ॥ उत्तर दिसि औरह उड्डाई । कागद लिषि प्रोहित बधाई ॥
 तब राजन सुनत लै लग्गी । बढि आनंद हृदय तब जग्गी ॥ छं० ॥ २७ ॥

अनंगपाल का पृथ्वीराज को राज्य देदना ।

भुजंगी ॥ लवं चित्त चिंता सुचिंता बिचारी । ननं मंच मानै गुरं धीर कारी ॥
 चवं चिंत चिंता अचिंता प्रमानं । मयं वीर वीरं लघू दिथ्य पानं ॥
 छं० ॥ २८ ॥

प्रथीराज राजंत दोहित पुतं । तिनं वंस मातुल अति प्रीत पत्तं ॥
 गलक गंगूरं लिषे पेषि हृथ्यं । हितं राज अंगं अनंगेस पुतं ॥
 छं० ॥ २९ ॥

पृथ्वीराज की कूटनिति से प्रजा का दुःखित होकर
 अनंगपाल के पारा जाना ।

दूहा ॥ आइ संपते लोग बर । संभ घरद्वर काज ॥
 नवन रीत राजस कहौ । जानि कुलंगन बाज ॥ छं० ॥ ३० ॥

अनंगपाल का पुनः बदरिकाश्रम को पला जाना ।

कवित्त ॥ संचरि सौच सुष्टत । राज पत्तौ सु धाम नृप ॥
 फल सु प्रीति हित हेम । सैत दिष्यौ रजक अप ॥
 अनंग पाल छितिपाल । मुकि चल्यौ सु तिस्थ्य अम ॥
 हेवर चीर रतन । गयो बदरी सुष्टत क्रम ॥
 यों मिले सख परिगह नृपति । ज्यों जल झरे बोहिथ्य फटि ॥
 दिसि दिसा चार अचरिजा बर । बजि निसान नीसान घटि ॥
 छं० ॥ ३१ ॥

गाथा ॥ ऐरापति फनिगग । चामर मराल मालती पहुथ ॥

ता अबीय प्रमान । उज्जल कितीय सोमजा खूर ॥ छ० ॥ ३२ ॥

दसो दिशाओं मे सुविस्त्रित पृथ्वीराज की उज्जल
कीर्ति का आकाश में दर्शन होना ।

अति किती अति उज्जली । वरने वा चदयो कद्यी ॥

जानिज्यै परिमान । राजान समयो नथ्यि ॥ छ० ॥ ३३ ॥

दूहा ॥ वह मडल न्यप देपि कौ । चद सु ओपम पाइ ॥

मानौ चद सरह कौ । सग उडगन आइ ॥ छ० ॥ ३४ ॥

दौ दुज्जनि दुज उत्तरह । दुह रूप चमकत ॥

कोइ कहै प्रतियंब है । को कहै प्रीति अनत ॥ छ० ॥ ३५ ॥

संयोगिता का वर्णन ।

कवित्त ॥ चद वदनि अगनयनि । मोह असित को वड बनि ॥

गग मग तरलति तरग । बैनी भुअग बनि ॥

कौर नास अगु दिपति । दसन दामिनि दारमकन ॥

छोन लक श्रीफल अपीन । च पक वरन तन ॥

इच्छति अतार प्रथिराज तुहि । अहनिनि पूजति सिव सकति ॥

अध तेरह वरप पदमिनी । इस गमनि पिअहु न्यपति ॥ छ० ॥ ३६ ॥

वारह के बाद और तेरह के भीतर जो स्त्रियों की वय.संधि

अवस्था होती है उसका वर्णन ।

दूहा ॥ तिहि तन बन न्यप सौं कहै । दुहु अतर सिमु वेस ॥

जुधन तन उद्दिम कियौ । बालप्यन घटनेस ॥ छ० ॥ ३७ ॥

बालप्यन तन मध्य वय । गादरि तन चष नूर ॥

ज्यौं वसत तर पल्लवन । इछ उठन अकूर ॥ छ० ॥ ३८ ॥

वय बालतन मध्य इम । प्रगट किसोर किसोर ॥

राकापति गोधूर कह । आभा उद्दिम जोर ॥ छ० ॥ ३९ ॥

ज्यों दिन रतिय संध गुन । ज्यों उल्लाह हिम संधि ॥

यों सिस जुबन अंकुरिय । कछु जुबन गुन बंधि ॥ छं० ॥ ४० ॥

ज्यों कारकादिक मकर में । राति दिवस संक्रांति ।

यों जुबन सैसव समय । आनि सपत्तिय कांति ॥ छं० ॥ ४१ ॥

यों सरिता अरु सिंध संधि । मिलत दुहून हिलोर ॥

त्यों सैसव जल संधि में । जोवन प्रापत जोर ॥ छं० ॥ ४२ ॥

यों क्रम क्रम बनिता सु बंध । सैसव मध्य रहंत ॥

सौतकाल रवि तेज ससि । धामरु छांह सुहंत ॥ छं० ॥ ४३ ॥

सैसव मध्य सु जोवनह । कहि सोमा कविचंद ॥

पाव उठै तर छांह छवि । षोज न नीच रहंत ॥ छं० ॥ ४४ ॥

जीति जंग सैसव सुबध । इह दिषिय उनमान ॥

मानों बाल बिदेस पिय । आगम सुनि फुलिकाम ॥ छं० ॥ ४५ ॥

गाथा ॥ यों राजति वध राजं । सैसव मध्येय सोमियं सारं ॥

ज्यों जल जोर प्रमानं । कमलानं कोर उच्चयं होइ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

दूहा ॥ यों सैसव जुबन समय । विधि वर कौन प्रकार ॥

ज्यों हथलेवहु दंपती । फेरे फिरिअन पार ॥ छं० ॥ ४७ ॥

यों राजत अवनी कला । सैसव में कछु स्थाम ॥

ज्यों नभ परिवा चंद तुछ । राह रेह बल ताम ॥ छं० ॥ ४८ ॥

स्त्रियों के यौवन से वसंत ऋतु की उपमा वर्णन ।

पद्मरी ॥ उत्तरन ससिर रति राज नाइ । अह संधि जिसें निसि संधि पाइ ॥

जुबनह अवन सैसव सुनाइ । कछु संक अंग पै निडर ताइ ॥ छं० ॥ ४९ ॥

सैसव सुससिर रितुराज यान । मानहिं वसंत जुबन न आन ॥

अनमंथ मधुप मधु धुनि करंत । धंचहि कोटक सिसिरह वसंत ॥

छं० ॥ ५० ॥

भुअ नीच नेन नचै नवाय । आवंत जुवन जनु करि बधाय ॥

जिम सीत मंद सुगंध वाय । कछु सकुच एम वर करहि पाइ ॥

छं० ॥ ५१ ॥

जुधन नवत्त सिसु सरिर मद् । बिरही सँजोग रस दुअनि छद् ॥
 मौन मन मत भहि सुनि बसत । जुधन उछाह सिसु सिसर जत ॥
 छ० ॥ ५२ ॥

अ कुरिन पत्त गड्डरित डार । सिसु मध्य स्थाम ज्यो सोमि सार ॥
 पिय ओर पिया जिम दिष्टि लुकि । सिसु मध्य वेस इम आइ दुकि ॥
 छ० ॥ ५३ ॥

उर धकि सिद्ध सैसव सु सुठ्ठ । जिम भेन भोज जुधन सउठ्ठ ॥
 कलय ठ कठ रण्यै सवारि । मिलिहै वसत करिहै धमारि ॥ छ० ॥ ५४ ॥
 चिय तरंस पुच्छ उठ्ठीय कोर । जल मौन जाल ज्यो हलत डोर ॥
 मुकलित वाय तरु हलत छीन । त्यो काम तेज चलि नेन मौन ॥
 छ० ॥ ५५ ॥

सजोगि अग जीवन चढत । तह उठ्ठि ससिर आयौ बसत ॥
 वयभोग बुद्धि सु दरि सहज्ज । रितुराज गयै जिम रैन लज्ज ॥
 छ० ॥ ५६ ॥

दूहा ॥ जनम सुख्य जीवन जई । उई सु सैसव ठार ॥
 सभरि न्यप सभरि धनौ । तनह सु भौ रति मार ॥ छ० ॥ ५७ ॥
 सजि सुपग राजा सुभर । दिसि दिसि जितन वान ॥
 उभै दिसा बर भच जित । अठ्ठदिसा भर पान ॥ छ० ॥ ५८ ॥

संयोगिता की बडी वहिन का व्याह और उसकी सुन्दरता ।

कवित्त ॥ एक सु पुत्रिय पग । दौथ दक्षिन सु देव ग्रह ॥
 मान हीन माननिय । रूप उप्पम रभा कहि ॥
 सुवर काम रति वाम । मनो फेरिय सो आनिय ॥
 कमल अनुपम काज । कछू ओपम मन मानिय ॥
 लच्छन वतीस वयसधि इह । सो ओपम अग कथ्यौ ॥
 चढनह सुमनमथ चित रथ । चढन भति चित रेथ्यौ ॥
 छ० ॥ ५९ ॥

संयोगिता के सर्वाङ्ग शरीर की शोभा का वर्णन ।

पदवी ॥ सजोग सधि जीवन प्रवेस । चितमंडि सुनौ सभरि नरेस ॥ -

श्रीपंड पंक कुंकम सुरंग । मानों सु करी कर मरदि गल ॥
छं० ॥ ६० ॥

उपमा नष्य आवै न कलि । तिन पड़ी होड़ मयुपन सरख ॥
इका अंग उपम कहियै सुदुति । तारकन तेज द्रप्यन सु मुति ॥
छं० ॥ ६१ ॥

पिंडुरी अंग शलकत सु रुर । मनुं रत रंग कंचन कि चूर ॥
ओपमा नष्य फिरि कहि उपाइ । कनैर कली फूलंत राइ ॥
छं० ॥ ६२ ॥

पिंडुरी पाइ सोभंत वाम । अँम ओन पंम भोवन्न वाम ॥
उर जंघ दंड ओपम निरंग । गज सुंड डिंभ कै ओन रंग ॥
छं० ॥ ६३ ॥

नितंब तुंग इन भाइ कश्चि । धरि चक्र सँवारि दुज वाम रब्धि ॥
नितंब भाग उतांग छंड । मनुं तुलत काम धरि जंक दंड ॥
छं० ॥ ६४ ॥

लंकाह प्रमान मुठ्ठीत धट्टि । बैनी ठलक दीसंत पुट्टि ॥
चिंतै सुकलि ओपम ओर । नागिनि सु हेम पंमह मुजोर ॥
छं० ॥ ६५ ॥

राजीव रोम अंकुरिय वार । मानों पपील बंधी विलार ॥
गति हंस चलत मुकत विचार । सिधवंत रूप गहि बंवि भार ॥
छं० ॥ ६६ ॥

कुच सरल दरस नारिंग रंग । मरदे कि कुंक कंचन उपंग ॥
जोवन प्रसंग इह रूप इह । छुर करी हरी मुकै मसह ॥
छं० ॥ ६७ ॥

तब लगि होत हम थान भति । जब लगि आन सैसव किरति ॥
अधबीच बात हम सुनी तास । कहि लेधि लोग आवै न हास ॥
छं० ॥ ६८ ॥

कलश्रीव रहे चिवलीय चाह । बैठोति चंद आसनति राइ ॥
अध अधर अरुन दीसै सुरंग । जानै कि बिंब फल चंद जंग ॥
छं० ॥ ६९ ॥

ओपम सुचंद बरदाइ लीन । मनु अंगर चंद मिलि सग कीन ॥
मधु मधुर वाणि सद सहति रग । कलथठ कठ केकीन लघ ॥
छं० ॥ ७० ॥

बर दसन पति दुति यों सुभाइ । मोइक चंद जुषन बनाइ ॥
नासिक अनूप बरनी न जाइ । मनो दीप भवन निध्यात पाइ ॥
छं० ॥ ७१ ॥

सुदरि बदन दूनौ बनाइ । मानो रथरवि दीपक बनाइ ॥
कहाँ लागि कहीं बहुआन वाम । सैसव सुवाल कपैति काम ॥
छं० ॥ ७२ ॥

अबुज नथन मधुकर सहित । यजन चकोर चमकत चित ॥
बैनीति साल सोभै विसाल । मनो अरध उरग चढि कनक साल ॥
छं० ॥ ७३ ॥

दूहा ॥ इह सुनि न्वपति नरिद दिन । भय ओतान सुराग ॥
तब लागि पग नरिद कै । बाजे वाजन लाग ॥ छं० ॥ ७४ ॥

ब्राह्मण के मुख से संयोगिता के सौंदर्य की कथा सुनकर
पृथ्वीराज का उस पर मोहित हो जाना ।

सुनि सजोगि अपुव्व कथ । पग चरित न काज ॥
मच मदन बभनि उभै । जोगिनि मुकै राज ॥ छं० ॥ ७५ ॥
जो चरिच चितै मनह । सोई रूपक राइ ॥
निप अग्यै हर बधि कै । कल कनवजह जाइ ॥ छं० ॥ ७६ ॥

कवित ॥ भय अनग न्वप अग । अवन ओतान सु वड्डिय ॥
सभरि सभरिनाथ । पच वानन तन दड्डिय ॥
मध्य हिय न छिन टरहि । अवन मन नैन निरप्यै ॥
चित गयदह फेरि । रति न मानै विन दिप्यै ॥
सभरि सुवत्त सभरि न्वपति । फुनि फुनि पुच्छै तिन सु कथ ॥
बुधि मदन सु बभनि केलि सुनि । कुटिल तभकि चढ्यौ सु रथ ॥
छं० ॥ ७७ ॥

पृथ्वीराज की काम वेदना और संयोगिता से मिलने के लिये उसकी उत्सुकता का वर्णन ।

कुटिल तमकि रथ चढ़त । बढ़िय ओतान कल न तन ॥
 निसा दिवस सुपनंत । राज रथोति मद्धि मन ॥
 फिरै संजोगिअ पास । और रस मुक्किल राजं ॥
 देउं द्रव्य मन बंछि । जोइ प्रमुधै चिय आजं ॥
 दुज चलै उड्डि कानवज्ज दिसि । गेह सपत्ते बंभनिय ॥
 चहुआन तेज गुन दुति सबल । सुनत संजोगी तं गुनिय ॥छं॥७८॥
 राती का ब्राह्मणी स्वरूप में कन्नौज पहुंचना ।

दूह । ॥ दुज सबह उच्चै कहै । कब कहि नीचं बैन ॥
 देषि संयोगि अचिज्ज बहु । तव करि उंचे नैन ॥ छं॥ ७९ ॥
 देषि संयोगि अचिज्ज हुअ । पुच्छत पंग कुमारि ॥
 कोन देस को भेस बनि । क्यों आवन सु विचार ॥ छं॥ ८० ॥

यहां पर ब्राह्मणी का पृथ्वीराज की प्रशंसा करना ।

पद्मरी ॥ सुनि एक राइ संभरि नरेस । पुरसान धान बंधे असेस ॥
 धनु धनुक धार अज्जुन समान । मनि रतन निद्धि जस आसमान ॥
 छं॥ ८१ ॥
 बर तेज ओज जमजोर जोर । अरि छिपै तेज मनु चंद चोर ॥
 जिन वान तेज गज सुकि मद्द । चतुरंग सज्जि चव कलन हद्द ॥
 छं॥ ८२ ॥
 इह जोग बीर भुर्वी न बीर । बेधत सत बर एक तीर ॥
 कानवज्ज रीति बजि जेय कंध । इह धकि राज सह होइ निंध ॥
 छं॥ ८३ ॥
 जोगिनी भूप औधूत रूप । कहां कहों रूप पंथी अनूप ॥छं॥८४॥
 पृथ्वीराज के स्वाभाविक गुणों का वर्णन ।

साटक ॥ लज्जारूपगुणै नैपथ सुतो, वाचा च धर्मो सुतं ॥
 वाने पार्थिव भूपति समुद्रिता, मानेपु दुर्योधन ॥
 तेजे स्तर सम ससौ अभिगुन, सत् विक्रमो विक्रम ॥
 इद्रो दान सुशोभनो सुरतरू । कामौ रभावस्रम ॥ छ० ॥ ८५ ॥
 दूहा ॥ दुज सुकही उप्पम भली । कथा सु उत्तम रीति ॥
 बढि आनद सु छद नन । सुनिग रीति सा रीति ॥ छ० ॥ ८६ ॥
 दुज दिसा अलिय जु अवन । द्विग अच्छरि दिसि जाइ ॥
 मनु सैसव जोवन विचै । बाल बसौठ कराइ ॥ छ० ॥ ८७ ॥

उक्त वर्णन सुनकर संयोगिता के हृदय में पृथ्वीराज
 प्रति प्रीति का उदय होना ।

जिमि जिमि सुदरि दुजि वयन । कही जु कथ्य सँवारि ॥
 वरनन सुनि प्रथिराज कौ । भय अभिलाप कुँआरि ॥ छ० ॥ ८८ ॥
 असन सेन सोभा तजी । सुनिन अवन्न कुँआरि ॥
 मन मिलिबे कौ रचि बढी । और न चित दुआर ॥ छ० ॥ ८९ ॥
 गाथा । अभिए अभिय बचने । रचने बाल ध्यान प्रथिराज
 गोलक दुलै न थान । जानै लिपि चिचय चरितं ॥ छ० ॥ ९० ॥

पृथ्वीराज की कीर्ति का वर्णन ।

मोतीदाम ॥ अभिगत दान कहै दुज पान । सुनी सुनि मान कथा चहुआन ॥
 इक इक बत्त सबै न्यप पाइ । सबै चहुआन दुती तन छाइ ॥
 छ० ॥ ९१ ॥
 सक बिय विक्रम ज्यों परमान । सत सत ज्यों सिवरी उन मान ॥
 बलवै बाह सहस्रयराज । प्रति प्रति काम सु मोचन काज ॥
 छ० ॥ ९२ ॥
 विधि विधि भागति पूरन तेज । ससौ सस सीतल ज्यों न्यप केज ॥
 सति सतह ज्यों हरिचद समान । बलबुझि साइर ज्यों उनमान ॥
 छ० ॥ ९३ ॥
 रस रज राजत जोति प्रकार । भयकर भीषम ज्यों करसार ॥

सयंकृत पालग पंचव जोति । तिनं मति एक अमंतिथ कोति ॥

छं० ॥ ८४ ॥

प्रतिं प्रति पारथ ज्यो प्रथिराज । करौ कविचंद सु ओपम साज ॥
मधवा सुमहीपति कौ बल बीर । तिनै बर विद्र बरष्यत नीर ॥

छं० ॥ ८५ ॥

धराधर हिंम सुतं लखिराज । उद्यौ मनु इंद्र सु प्राचिय कोज ॥

छं० ॥ ८६ ॥

ब्राह्मण का कहना कि चाहुआन अद्वितीय पुरुष है ।

दूहा ॥ या समान जौ राज होय । तौ कहियै प्रति जोति ॥

ना समान चहुआन कौ । तौ कहि ओपम कोति ॥ छं० ॥ ८७ ॥

कांत सुकांति सु दिष्यि द्रम । दुहु ओतान बढ़ाय ॥

दुहु दिसि पंग नरिंद दल । दत्त अदत्त समाय ॥ छं० ॥ ८८ ॥

संयोगिता का पृथ्वीराज से विवाह करने की प्रतिज्ञा करना ।

कवित्त ॥ सीय लीय दत्त राम । सुदत्त नलराज दमंती ॥

सिख दत्त लीनौ सिवा । छण्ण दत्त एकामनि कांती ॥

दत्त ज्यो काली धन्यौ । बीर बाहन शंकर बर ॥

ज्यौं दत्त लिय दत्तमान । मान पत्ती सुमंत वर ॥

दत्त लियौ देव देवत नृपत । दत्त संयोगि चहुआन वर ॥

बर वरौं एका एकाह सु दत्त । कौ चहुआन विसान नर ॥ छं० ॥ ८९ ॥

मन अभिलाष सु राज । वरन सुंदरी भद्रय मति ॥

जौ तन मध्यें सास । मोहि संभरिय नाथ पति ॥

कौ कुआंर पन मरौं । धरौं फिरि अंग पहुमि पर ॥

तौ राजा प्रथिराज । आन मन इच्छ नहीं वर ॥

इमं चिंत चित्त कुंअरी सु दत्त । रही भोद मन मोन अहि ॥

कलहंत बीज महि मंडि दुज । अप्य सपत्ते गेह कहि ॥ छं० ॥ ९० ॥

दूहा ॥ यौ दत्त लीनौ सुंदरी । ज्यौं दमयंती पुष ॥

कौ हथलेवौ पिय करौं । कौ जल मध्यें दुष ॥ छं० ॥ ९०१ ॥

संयोगिता का पृथ्वीराज के प्रेम में चूर होकर अहिर्निशि उसीके ध्यान में मग्न रहना ।

मुरिल ॥ विथ पगानि कुमारि सुमार सुमार तजि ।
धरी पहर दिन राति रहै गुन पिथ्य भजि ॥
भेद भजै और जोर मन में लजिहि ।
लपि पुच्छहि चिय वत्त न तत प्रकास किहि ॥ छ० ॥ १०२ ॥

वसत ऋतु का पूर्ण यौवनाभास वर्णन ।

दूहा ॥ सिसिर समय दिन सरस गत । मधु माधव वल मडि ॥
भार अष्टदस बेल तरु । पत्र पुरातन छडि ॥ छ० ॥ १०३ ॥
नूतन रत मजरि धरिय । परिमल प्रगटि सुवास ॥
छत्र रुचिर छवि काम जनु । अलि तुटत सुर रास ॥ छ० ॥ १०४ ॥
पहरौ ॥ आगम वसत तरु पत्र डार । उठि किसल नइय रँग रत्त धार ॥
अकुरित पत्र गहरति डार । लहलहति जग अठार भार ॥
छ० ॥ १०५ ॥

मधुपुज गुज कमलनि अधीन । जनु काम कोक सगीत कौन ॥
तरु तरनि कूकि कोकिल सभार । विरहिनी दीन दपति अधार ॥
छ० ॥ १०६ ॥

कलरव करत पग द्रुमति रोरे । निसि वीति सिसिररतिराजभोर ॥
विथ पुरुष चपनि रुचि अनंग बडि । दपति अनग विरहिनी जडि ॥
छ० ॥ १०७ ॥

इम अवनि राजरित गवन कौन । नव मुग्ध मध्य कतन अधीन ॥
ग्रह ग्रहनि गान गायत नारि । मन हरति मुग्ध मध्या धमारि ॥
छ० ॥ १०८ ॥

तन भरतिरत्त रग पीत पानि । हिय मोद प्रगट तन धरत जान ॥
इम हुअ वसत आगम अवनि । मदमत करिय जनु गवन वनि ॥
छ० ॥ १०९ ॥

मसि भीज दिननि पियतन वनग । अवतार अवनि जनु धरि अनग ॥

मुषं हर्ष गंड मंडल प्रकोस । फरेकांत अधर मधु रस विलास ॥
छं० ॥ ११० ॥

विगसंत कमल छवि नयन मंडि । बंधूक अरुन रुचि धंडि छंडि ॥
मधुमास सुखा निसि रुचि चंद । बहि गंधपवन छवि सीत मंद ॥
छं० ॥ १११ ॥

हुअ रोम पंचसरे अंच देह । कलमलिये ज्वलिये वनिता सनेह ॥
निसि प्रथम प्रहर तट गवन कीन । सुभ सोभ वागमन हुअ अधीन ॥
छं० ॥ ११२ ॥

सगपन्न धार इका लिय चढ़ाइ । जसैव इक अंग पवन पाइ ॥
पिष्ये सु वाग वानिक रसाल । निरधंत नयन सोभा विसाल ॥
छं० ॥ ११३ ॥

निर्जन बन में यक्षों के एक उपवन का वर्णन ।

दूह । ॥ उपवन धन बहल बरन । सीत पवन द्रुम जाल ॥
चिचरेष वल्लिय विटप । अवलवि ताल तमाल ॥ छं० ॥ ११४ ॥
तरु तल जल उज्जल अमल । टपकात फल रस भार ॥
कुंज कुंज विगसत बसन । तन बढ़ि धात अपार ॥ छं० ॥ ११५ ॥
पतत पत्र नहिं धर रहत । वानक वान उजास ॥
चंद जोति जल बानि बनि । होड़ होत रस भास ॥ छं० ॥ ११६ ॥

कवित्त ॥ फलन भार नमि साष । जीभ रस खाद विवसं षट ॥
सुभन सधन वरधंत । गीत संगीत कोक रट ॥
बँधि चहवच्चनि नीर । छल्लि छचन रंग धानिय ॥
मंडित मंडप गौष । सुभग सालनि छवि न्यारिय ॥
संभरिय राव बैठक वनक । कनक अलक कंचन पुरिय ॥
प्रथिराज मुदित भादक तनह । बाज राज नंथौ तुरिय ॥ छं० ॥ ११७ ॥

पृथ्वीराज का दरवान को जीत पर भीतर बगीचे में जाना ।

कट्टि धरनि पुरतार । भारु भर सेस ससंकिय ॥
उड्डि नाल असमान । उगि आकास चंद विय ॥
पत पंषिय भर हरिग । अंग थर हरिग रषि कन ॥

इक्क अवन भूमरिग । कठिन कवियान अथ तन ॥
 तुटिय पटाटि दवि अँग तुटि । विफरि अग तूरिय सु रहिय ॥
 सोमेस खर चहुआन सुअ । तास किति चदह कहिय ॥ छ० ॥ ११८ ॥
 वीग गिरद बर कोट । तास दरवान हुकाम किय ॥
 एकाकी हम रमत । कोइ न आवन लहै विय ॥
 बैठि दरह दरवान । जानि जमदंड हथ्य धरि ॥
 पिथ्य करह कमान । टक पचीस जोर जुर ॥
 लग्ये सु फिरन द्रुम द्रुम निकट । जयनौ जय दरसन भयौ ॥
 देपत सोम भुलिये नयन । मेन रति आनंग ठयौ ॥ छ० ॥ ११९ ॥

यक्ष यक्षिनी और पृथ्वीराज का वार्तालाप ।

दिधि जध्य प्रथनाथ । हाथ जुग जोरि नवनि किय ॥
 कवन काज इत अवन । नाम तुम कवन पुरुष चिय ॥
 जध्य नाम दुष दवन । नाम रवनी रस रसिये ॥
 नाटिक विविध विचित्र । करन आगम रस रसिये ॥
 सिर नाइ पिथ्य कीनिये नवनि । कछू मोहि अग्या कहौ ॥
 ख गध धूप मिष्टान फल । करौ प्रगट बन पुर लहौ ॥ छ० ॥ १२० ॥

यक्ष का कहना कि अवश्य कोई बड़े राजा हौ ।

दूहा ॥ कहिय जध्य प्रथिराज सम । बानक इक्क अनूप ॥
 दुरि पिथ्यो द्रुम सधन तर । तुम कोइ भूप अनूप ॥ छ० ॥ १२१ ॥

पृथ्वीराज का वहां पराना भांति की सुख सामग्री

मगवा कर प्रस्तुत करना ।

पक्षरी ॥ सेवकन बोलि करि हुकाम कीन । खगध धूप रस कल रसीन ॥
 आवत वस्त लग्ये न वार । जह तहँति आनि कीजे अमार ॥
 छ० ॥ १२२ ॥

मुप होत हुकाम सेवक प्रवीन । सब वस्त आनि अमार कीन ॥
 भरि कनक कुड बर कासमीर । अगमद जवादि अनपार भीर ॥
 छ० ॥ १२३ ॥

कपूर कलस तहं धरिय आनि । कुमकुमनि कुंडे सुभ भरिय थान ॥
केतकि कमल केवर कुसुम । मालती बेल जाती सुरगा ॥ छं० ॥ १२४ ॥

चपक फूल पड्डुर अपार । जहं तहँति आनि किन्ने अमार ॥
तंबोल तच बानक अनंत । वुध विविध जाहि भूखत गनंत ॥
छं० ॥ १२५ ॥

दारिद्र्य दाप केला रसीन । अधगोट नामपाती नवीन ॥
नारियर पिंड पञ्जूर आनि । विजौर और फल विविध बानि ॥
छं० ॥ १२६ ॥

घृत दुग्ध मिश्र पकवान डेर । आनंत तिनह लग्गी न बेर ॥
किय बिदा सब्ब सेवक बहोरि । दुरि बैठि पिश्र्य इक दृष्ट्य ओर ॥
छं० ॥ १२७ ॥

गंधर्व राज का आना और नाटक आरंभ होना ।

दूहा ॥ निमेष होत गंधर्व इक । संग नाटिक आरंभ ॥
तंतिताल बीना अदंग । संग अञ्जरि लिए रंभ ॥ छं० ॥ १२८ ॥

अप्सरारों का दिव्यरूप और शृंगार वर्णन ।

पद्मरी ॥ कुमकुमनि नीर कर सुष पधारि । अचवंत अभिय बर गंगधार ॥
करि गंध लेप अंगनि बनाइ । रचि कुसुम अंग गहने बनाइ ॥
छं० ॥ १२९ ॥

तंबोल बरनि कपूर पंड । फुनि कछे नित्य नाटक मंडि ॥
स्वर सपत ताल कल मनेहरंत । बनि बीन जंच हृदयन धरंत ॥
छं० ॥ १३० ॥

कटतार तार पट तार पाइ । संगीत भेद बरन्थो न जाइ ॥
रस राग रंग छत्तीस मंडि । धुनि धरत सिद्ध तन धर्म पंडि ॥
छं० ॥ १३१ ॥

जब रची रुचिर बीना प्रवीन । नारद नाद तंती अधीन ॥
रस सरस हास बरन्थो न जाइ । सुभ कर्मा धर्मा सुअ सोम पाइ ॥
छं० ॥ १३२ ॥

नाटक उठि फुनि बैठि देव । करि भोग भोज मिधान सेव ॥
हुअ चपति अन कपूर मडि । तबोल तच कर विरो पडि ॥
छ० ॥ १३३ ॥

सब सथ्य बहुरि इक रछौ जष्य । तिहि सथ्य इक गधर्व इष्य ॥
तिहि कछौ जष्य रसरछौ आज । इह कवन आनि सब सँचिय साज ॥
छ० ॥ १३४ ॥

पृथ्वीराज के आतिथ्य से प्रसन्न होकर गधर्व का उन्हे
एक सर्वसिद्ध कवच देना ।

तिहि कहौ जष्य जिहि कात काम । सोमेस पुच प्रथिराज नाम ॥
गधर्व कहौ मुष प्रसन होइ । इक देउ मच तन अभय सोइ ॥
छ० ॥ १३५ ॥

सुनि जष्य लीन प्रथिराज ताहि । मन मुदित अग मुष रहे चाहि ॥
गधर्व मच दीनौ स धौस । सिर धारि हथ्य दीनौ असौस ॥
छ० ॥ १३६ ॥

गधर्व जष्य बहुरे अकास । तिहि निसा पिथ्य तह किन वास ॥
छ० ॥ १३७ ॥

इति श्रीकविचंद्र विरचिते प्रथिराज रासके सुकवर्ननं नाम
सैतालिसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४७ ॥



अथ बालुका राइ सम्यौ लिप्यते ॥

(अडतालिसवां समय ।)

राजसूय यज्ञ सम्बन्धी कार्यों के सम्पादन करने के लिये
राजाओं को निमन्त्रण भेजे जाना ।

कवित ॥ राज राज सब काम । करें राजसु आरम्भ ॥
नीच काम अरु ऊच । अर्ध कामद प्रारम्भ ॥
नीति काम अरु धम्म । बाज गज क्रम परिहार ॥
देस देस पुरमान । दिए पहुपग अपार ॥
मचौ सुमत मति बधि कै । सबै देस फौजे फटी ॥
वर किति करन जुग जुग लगै । इह कामध जैचंद यटी ॥ छ० ॥ १ ॥

यज्ञ की सामग्री का वर्णन ।

नराज ॥ हियत सोधि राजसु गुराज जग्गि जोगय ।
सवल राज सामदड मेदि बध भोगय ॥
सु दान मान अपि पान दैवय न बोधय ॥
सवत्त वत्तमान रे अनेक निहि सोधय ॥ छ० ॥ २ ॥
सुवेन भार लाय एक मुत्ति भार साठय ।
रजक भार कोटि एक घातु भार नाठय ॥
तुरग भार लायए गजेंद्र गेह लप्यय ।
कपूर कासमीरय अनेक भार सप्यय ॥ छ० ॥ ३ ॥
पटवर स अबर सुगध धूप डवर ।
सद्यत लोय चारि वो सदासि 'नेस अतर ॥
सुमत नाम नोदरे प्रजा प्रसन्न सतर ॥

॥ छ० ॥ ४ ॥

षटानु अंस भाग विप्र संगने सुपत्रयं ॥
 सु षोडसा प्रमान दोन वेद वान अप्ययं ।
 विराम गर्व दर्वने सु मंचि मंच भागयं ।
 विचारि वीर राजसू जयति 'जोति जागय' ॥ छं० ॥ ५ ॥
 यश के हेतु आह्वान के लिये दसों दिशाओं में
 जयचन्द का दूत भेजना ।

दूहा ॥ राज जग्य आरंभ किय । सेवर सहित सँजोग ॥
 मिलि मंगल मंडप रचिय । जहाँ विविध विधि भोग ॥ छं० ॥ ६ ॥
 दिसि मंडल षँड षंडलह । पंग फिरे जु बसीठ ।
 बल बंधौ दल हिंदु जौ । बंधौ मेच्छे सो ढीठ ॥ छं० ॥ ७ ॥
 मत मंडित छंडित कलह । बल दीरघ प्रति बाम ॥
 कहै पंग अप डंच मति । रहै सु रक्षौ नाम ॥ छं० ॥ ८ ॥
 गाथा ॥ केकेन गया महि मंडलायं । वज्राए दीह दसहार्द ॥
 विपफुरे जास कित्ती । तेगया न विगया हूँती ॥ छं० ॥ ९ ॥

जयचन्द का प्रताप वर्णन ।

कवित्त ॥ स्वर्ग मंच जीतयौ । नाग जीतयौ मंच बल ॥
 बल जीते द्रिगपाल । चढ़वि है वै अभंग भर ॥
 सुगत माल द्रिगपाल । जित छल गोरे मारे ॥
 द्रव्य सबल बल अग्न । जग्य कारनह अधिकारे ॥
 चिहुं तेज चक्र ससि काल ज्यौं । तपै तेज ग्रीषम सु रवि ॥
 संसार मान नटप तेज बल । यौं सु धरा तौ तेज तवि ॥ छं० ॥ १० ॥
 गाथा ॥ पहुँची कालह बलियं । कालह नमा कित्तियं बलियं ॥
 जे नर कालह छलयं । ते कित्ती संजीवन करयं ॥ छं० ॥ ११ ॥
 जयचन्द का पृथ्वीराज को दिल्ली का आधा राज्य बांट
 देने के लिये संदेरा भेजने की इच्छा करना ।

पहरी ॥ उच्चरै वीर पट्टुपगराइ । हम मात तात द्विग विजय पाइ ॥
 मुकलै दूत वर मच काज । मातुलह बस प्रथिराज राज ॥ छ० १२ ॥
 हिंदू न जानि गुरु गुरुअ पति । चिचग राइ साहसह हत ॥
 धर धरनि बटि विभभाइ लखि । जानै सु राज जिन तजो गखि ॥
 छ० ॥ १३ ॥

बधौ समेत जिन बलह भूमि । वरयै सुराज तामस्त 'अतूमि ॥
 वर मिलै आइ पट्टुपग पाइ । दिल्ली समेत सोरो लगाइ ॥ छ० ॥ १४ ॥
 अप्यैज भूमि तुम सेव जाइ । ॥

जिम जिम सु बमौ तुम चित चढ़त । तिम तिम सु दान पगहु बढत ॥
 छ० ॥ १५ ॥

अनि ठौर घेद जिन करौ चित । अप्यै सु भूमि दस गुनिय हित ॥
 को करै पग सों बल प्रमान । दिखौ न तीन लोकह निदान ॥
 छ० ॥ १६ ॥

अब अमित मत इह तत जानि । गुरुवत तत मचौ सु ठानि ॥
 पय लगि सुनि रु परधान तव । पट्टुपग राइ वर हुकम सदा ॥ छ० ॥ १७ ॥

जयचन्द का पृथ्वीराज के लिये संदेश ।

कवित ॥ मातुल हम तुम इक । इकि बसह निरधारिय ॥
 आदि बस कमधज्ज । वरन छचिय अधिकारिय ॥
 तुम समरि चहुआम । बसौ अजमेरति वीर ॥
 पग देस सब भूमि । मंगै सो अख उरीर ॥
 यो कियौ मत ग्रह अप्य वर । सुमति बोलि परधान न्यप ॥
 छिति भति छिति जीपन घरा । सुवर स्वर साहस सु तप ॥ छ० ॥ १८ ॥

जयचन्द की आज्ञानुसार कवियों का जयचन्द की
 विरदावली पढ़ना और मंत्री सुमंत का जयचन्द
 को यज्ञ करने से मना करना ।

पद्मरी ॥ यय्यै सुमट्ट राजसू पंग । नर हरै पापकरवत्त गंग ॥

धुनि धुनि सु विग्र बोलेति बेद । तन करै निमल ग्रध करै छेद ॥

छं० ॥ १६ ॥

ग्रह ग्रहन हेम कसि कसि सु नारि । मानो कि स्वर ससि किन्न तार ॥

जगमगै हेम विधि विधि बनाइ । जिम निगम अंत वसि वरुन त्राइ ॥

छं० ॥ २० ॥

ग्रह ग्रहन कलस तौरन समान । कैलास सिपर प्रतपै सुमान ॥

ग्रह ग्रहन गौष रष्यत बनाइ । कैलास डरह ससि अक्ष पाइ ॥

छं० ॥ २१ ॥

ग्रह ग्रह कि पाट जगमग जराइ । कैलास लगि नवग्रह रिसाइ ॥

*कलि अंत पश्य कनवज्ज राइ । छं० ॥ २२ ॥

सतपती सील धर अम्भ चाव । सुनि रोस कियौ पद्मपंग राव ॥

मागधहु स्तुत बंदनि बुलाव । छं० ॥ २३ ॥

पुच्छ्यौ सु बंस कमधज्ज ग्रह । हम बंस जग्य किहि कियौ पुह ॥

जिहि बंस जग्य नन होइ राज । भुगतौ न भूप सुष सर समाज ॥

छं० ॥ २४ ॥

तुम बंस भए कमधज्ज स्वर । कीनौ सु राज राजरा भूर ॥

तब बंस भयौ बाहन नरिंद । अंतरिष रष्य चलि अग्न कांद ॥

छं० ॥ २५ ॥

तुम बंस भयौ पूरुर रूर । रथ चारि चक्र जिहि जीति स्वर ॥

सतसिंधु स्वर जिह रष्य चील्ल । तुम बंस भयौ नृप राज नील ॥

छं० ॥ २६ ॥

तुम बंस भयौ नलराइ अंद । नैषड्ड हार हीधयौ बंध ॥

पट चक्र भए कमधज्ज आदि । किनौ नरिंद जिह वरुन बाद ॥

छं० ॥ २७ ॥

जीमूत धन्यौ जिहि चक्र सीस । संसार किति कीनी जगीस ॥

* इस स्थान पर छंद के कुछ अधिक अक्षर खंडित मालूम होते हैं क्योंकि यहां के पाठ में अर्थ नितान्त खंडित होता है ।

को कहै पग सों दुष्ट आय । मई सुजग्य निहचैत राय ॥
छ० ॥ २८ ॥

वारुन भूमि हय गय अनग । परठंत पुन राजकु जग ॥
सोधिग पुरान बलि बस बीर । भूगोल लिपित दिपित सहैर ॥
छ० ॥ २९ ॥

छिति छत्र बध राजन समान । जितेति सकल हय गय प्रमान ॥
पुन्य सुमत परधान तय । अब करहु जग्य जिम चलहि कव ॥
छ० ॥ ३० ॥

उत्तर सुदीन मची सुजानि । कलिजुग नाहि विय जुग प्रमान ॥
करि भ्रम देव देवल अनेव । पोटसा दान दिन देहु देव ॥
छ० ॥ ३१ ॥

मो सीप मानि नृप पग जीव । कलिजुग नही अर्जुन सुभौव ॥
भुक्ति पगराव मची समान । लछ, लोछ अथ बोलहु अथान ॥
छ० ॥ ३२ ॥

जयचन्द का मंत्री की बात न मान कर यज्ञ के लिये
सुदिन शोधन करवाना ।

दूहा ॥ पग वचन मचीस उर । मन भिट्यौ न प्रमान ॥
ज्यौ साथक फुट्टै नही । गुरु पथ्यर परजान ॥ छ० ॥ ३३ ॥
पग परद्विय जग्य जब । बत्त विविध धर बज्जि ॥
बर बभन दिन धरहु सुभ । लगन महरत रज्जि ॥ छ० ॥ ३४ ॥

मंत्री का स्वामी की आज्ञा मानकर दिल्ली को जाना ।

मानि हुकम पहुपग कौ । चलि मची बुधि बीर ॥
कै साथै चहुआन को । कै धर बटै धीर ॥ छ० ॥ ३५ ॥
राज वचन सेवक सुभ्रम । तत्व वचन करि जानि ॥
दिस दिखी ढिखी धरा । सभरि वै परिमान ॥ छ० ॥ ३६ ॥

भुजगौ ॥ सभारिय राज चित पुनीत । जहा साधिय मच मची अनीत ॥

मनं दृत्त जान्यौ प्रितं वक्क स्वरं । मनो साधनं दृत्त संसार चूरं ॥

छं० ॥ ३७ ॥

निपं अक्ष जानै इसे स्वर पांचौ । मनो पंग देही दुती अंग सांचौ ॥

छं० ॥ ३८ ॥

सुमंत का दिल्ली पहुँचना ।

दूह । ॥ सुकलि धर पत्ते नृपति । दूत सु अक्ष सुचार ॥

मनो पंग देही दुती । सुवरि बुद्धि उद्धार ॥ छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज का सुमंत का यथोचित सत्कार और सम्मान करना ।

कवित्त ॥ मिलत राज प्रथिराज । करिय आदर अधिकारिय ॥

देव भगति परमान । देव जिम अचत सु चारिय ॥

वर मिष्टान सु पान । अर्घ्य अमृत फल धारिय ॥

रंग रंग घनसार । अंग भृगसद अधिकारिय ॥

मतवंत दृति छोड़े नहीँ । डर न चित्त नन उच्चरहि ॥

षट् धौस गए वित्तो सुभर । दै कगल गुन विस्तारिय ॥ छं० ॥ ४० ॥

गंत्री सुमंत का पृथ्वीराज को जयचन्द का पत्र देकर

अपने आने का कारण कहना ।

कवित्त ॥ हरन दक्ष ज्यों जग्य । सेव कीनी कुवेर वर ॥

यों सेवा प्रथिराज । जानि यहुपंग करै नर ॥

भगति भाव विश्राम । ताप जप जाप देव सम ॥

षट् सुदीह कगल प्रमान । उद्धयौ वीर अक्ष ॥

जं काह्यौ जुद्ध जैचंद वर । विधि विधान निरमान गति ॥

जैचंद मंत जौ गूढ़ कौ । काह्यौ राज राजन सुगति ॥ छं० ॥ ४१ ॥

साटक ॥ सोयं इन्द्रयग्रस्थ कारन वरं, जम्भकैव गंधर्व गुरं ॥

सोयं ता परचंड देवि बलयं, पंचे छठं बंधवं ।

नायं भीम द्रुयोध भूमित बलं, एवा किता अर्गजं ॥

सोयं भंगय राज राजन वरं, मातुल मातुल वरं ॥ छं० ॥ ४२ ॥

सुमन्त की बातें सुन कर पृथ्वीराज का अपने राज्य
कर्मचारियों से सलाह करना ।

पद्मरी ॥ तिष्ठि मत काज प्रथिराज राज । बोले सु वीर भर वर विराज ॥
प्रथिराज सथ्य सामत सत । इक अग अग पचौ सु रत्त ॥
छ० ॥ ४३ ॥

जानहि सु तत सा भ्रम खर । देपत नरिद वल कारि कलर ॥
बोली सु गुरुअ गोयद राज । आहुठ मभक्त सामत लाज ॥
छ० ॥ ४४ ॥

बोली सु धनिय धारा नरिद । आरभ सलप पाभार इद ॥
गभीर गुरुअ भारोति भुम्भि । साइरह मञ्चि नमनञ्चि पुम्भि ॥
छ० ॥ ४५ ॥

बोली वीर नरनाट स्वामि । भारथ्य वीर पारथ्य जामि ॥
छल छल छिति निदुदुर नरिद । जैचद वध भारथ्य कद ॥
छ० ॥ ४६ ॥

दुजराज गुरु पट भ्रम पवित । बोली अवर जैमत सत ॥
इहि विधि प्रमान सामत रत्त । बोली न बोली ते चित्त मत्त ॥
छ० ॥ ४७ ॥

सामतो की सत्कीर्ति ।

दूहा ॥ मत्ति धीर सामत सब । अति पवित्त गुन काज ॥
एक एक भुज लप्य वर । लप्य लप्य सिरताज ॥ छ० ॥ ४८ ॥

जयचन्द का यज्ञ के लिये पृथ्वीराज को बुलाना ।

पद्मरी ॥ पहुपग राव राजख जग्य । आरभ रभ कीनौ अचग्य ॥
जितराज सब सिध बार । मिलए कठ जनु मुत्ति हार ॥
छ० ॥ ४९ ॥

जुगिनिय पुरह सुनिभयौ घेद । आवहि न माल मभक्तह अमेद ॥
मुकले दूत तब तिन रिसाइ । असमथ्य सेस किम भूमि पाइ ॥
छ० ॥ ५० ॥

बंधो समेत सामंत सश्र्य । उत्तरेहि आनि दरबार अश्र्य ॥

सुनि दूत चले दिक्षिय सु थान । आजानबाहं जहं चाहूआन ॥

छं० ॥ ५१ ॥

पहुंचे सु इंद्र पश्र्यह सु थान । गुदराइ बत जैचंद नाम ॥

हजूर बोलि पढ़ाय राज । क्यों आइ इत सो जंपि काज ॥

छं० ॥ ५२ ॥

कन्नौज के दूत का पृथ्वीराज से मिल कर जयचन्द
का संदेरा कहना ।

तब दूत कहिय दिल्ली नरेस । आएस जंपि जैचंद नरेस ॥

राजसू जग्य आरंभ कीन । दस दिसन भूप फुरमान दीन ॥

छं० ॥ ५३ ॥

छिति छत्र बंध आए सु सव्य । तुम चलहु बेगि नह विरम अव्य ॥

फुरमान दीन चहुआन तोहि । कर छरिय दावि दरबान होहि ॥

छं० ॥ ५४ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों का जयचन्द के यज्ञ में जाने से नहीं
करना और दूत का कन्नौज वापिस आना ।

बुल्लै न बैन प्रथिराज ताह । संकारै सिंध गुर जननि चाह ॥

उचरे गरुअ गोयंद राज । कलि मझसु जग्य को करै आज ॥

छं० ॥ ५५ ॥

सतजुग कहहि बलिराय कीन । तिहि किति काज चिहुलोक दीन ॥

चेता सु कीन रघुवंसराइ । कुबेर कनक बरथौ सु आइ ॥

छं० ॥ ५६ ॥

धर अगा भुच द्वापर सु नाइ । तिहि पश्र्य बीर अरु हरि सहाइ ॥

इल दर्व गर्व तुम अप्रमान । बोलहुत बोल देवन समान ॥

छं० ॥ ५७ ॥

जानौव तुम्ह धनी न कोइ । निरवीर यहुमि कबहू न होइ ॥
जगलह वास कालिद कूल । जानै न राज जैचद मूल ॥
छ० ॥ ५८ ॥

जानहित देस जोगिन पुरेस । आनख बस प्रथिय नरेस ॥
कै बार साह बधयौ जेन । भजिय सु भूप भिरि भीमसेन ॥
छ० ॥ ५९ ॥

सभरि सकोप सोमेस पूत । दामित रूप अवतार भूत ॥
तिहि कथ सीस किम जग्य होइ । जो प्रथिय नही चहुआन कोइ ॥
छ० ॥ ६० ॥

देपौ सु सभा तिन सिंध रूप । मानै न जग्य मन अन्ध भूप ॥
आदरहु मद उठि चलि वसीठ । आभिनी सभा बुधजन बईठ ॥
छ० ॥ ६१ ॥

कन्नौज के दूत का अपने स्वामी का प्रताप स्मरण करके
पृथ्वीराज की ठीठता को धिक्कारना ।

कवित ॥ मन विचारि बसीठ । आप आयन दै तारी ॥
बछै जवुक मरन । बध्य पचानन भारी ॥
मरन लोइ बछैत । हथ्य जमदग्ध पोलै ॥
अजा मरन बछैत । बार दीपी सग डोलै ॥
बछई मरन कातर वितर । खर हक पचारई ॥
गामौ गमार घर बैठि कै । पग राइ बकारई ॥ छ० ॥ ६२ ॥

दूहा ॥ जौ वरपग नरिद है । हों जानू वर जोर ॥
ज्यो अगस्ति साइर पियौ । त्यों ढिस्ती धर तोर ॥ छ० ॥ ६३ ॥
जोवन वैवर विनै वर । कहै पग सो अज ॥
मत अवैठौ गैठ है । आन मान कमधज्ज ॥ छ० ॥ ६४ ॥

दिल्ली से आए हुए दूत के वचन सुन कर जयचन्द का
कुपित होना और चालुका राय का उसे समझा कर
शान्त करना । यज्ञ का सामान होना ।

पद्मरी ॥ फिरि चलिग तबै कनवज्ज संभू । भये मलिन मुष्य जनु कामल संभू ॥
तिन दूत पंग अग कहिय बैन । अति रोस कीन रग तैत नैन ॥

छं० ॥ ६५ ॥

बुल्यौ सुभंत परधान तब । कनवज्ज नाथ कारि जग्य अव्व ॥
बोलै सुभंच मंची प्रमान । उद्धरन जग्य कलि जुग्य पान ॥

छं० ॥ ६६ ॥

बालुका राइ बोल्यौ हकारि । साधन सु जग्य बहु जुद्ध सार ॥
पुरसानपान बंदेति भीर । सो भाग दसम अप्यै सरीर ॥ छं० ॥ ६७ ॥
ऐसै जु सज्जि चौसठि हजार । अप्यैति मेछ पहुपंग वार ॥
नीसान वार बज्जेति चंग । बझी अवाज दिसि दिसि अनंग ॥

छं० ॥ ६८ ॥

घोषंद बाद बालुकाराज । रषियै जग्य को रहै साज ॥
जब लगि गहौ चहुआन वाहि । तब लगि ताहि टरि काल जाहि ॥

छं० ॥ ६९ ॥

ए आसमंद न्यप करहि सेव । उच्चरहिं काम सो होइ देव ॥
सोवन्न प्रतिम प्रथिराज जानि । थपियै पवरि दरवार बानि ॥

छं० ॥ ७० ॥

सेंवर सँजोग अरु जग्य काज । बुध जननि बोलि दिन धरहु आज ॥
मंचीन राव परमोधि जामि । धुम्मे सवार नीसान ताम ॥

छं० ॥ ७१ ॥

सब सदन बंधि बंदरनि वार । काटंत हेम ग्रह ग्रह सु तार ॥
भूषन सु दान सुर सम अचार । आनंद इंद्र सुर सम बिचार ॥

छं० ॥ ७२ ॥

धवलियै धाम देवल सु चीय । तम हरन कलस रविव्यं व वीय ॥
धज भगन रोर जनु मधु अछीय । जनु रचिय बंभ कैलास वीय ॥

छं० ॥ ७३ ॥

इके वार संजोइय सपिन प्रति । मुसकाय मंद इह कहिय वत ॥
आचिज्ज एक सषि उरह अति । बदलीय बिद्धि मो मनह गति ॥

छं० ॥ ७४ ॥

संयोगिता के हृदय में विरह वेदना का संचार होना ।

गाथा ॥ वदरे मलय मरुत । जगुरे पिक पराग पर पच ॥

उतकठ भार तक्षा । मन मान सके मय मति ॥ छ० ॥ ७५ ॥

मानीय दाह वाले । पुत्तलिका पानि ग्रहनाय ॥

एकत सेज सहव्ये । लज्जा विथा विनया साई ॥ छ० ॥ ७६ ॥

चद्रायन ॥ कचन ग्रेह सु मोतिय वदर वार हुअ ।

ता ओपम वर भट्ट विचार सु एम जुअ ॥

मेर चरनन गग तरगनि जानकी ।

कि मेर चरन किरन भई लगि मान की ॥ छ० ॥ ७७ ॥

तिन ग्रेहनि में फिरत सजोगी सोभई ।

रति कौ रूप न होइ काम तन लोभई ॥

मनो मधुक मन मधि मन मधि ही करी ।

कोटि रति कौ तेज रति वह उन्दरी ॥ छ० ॥ ७८ ॥

अरिस्त ॥ अकुर पान चरावत वच्छ । मनो माननि मिस दिपि अनुच्छ ॥

सहचरि चरित परस पर वत्तय । मनो सजोइ सँजोग मनमध्यय ॥

छ० ॥ ७९ ॥

गाथा ॥ वज्जाइ गाह अवन । नयन चित्तेहि दिठ्ठ लगाह ॥

ग्रामान ग्राम लज्जा । आनगा अकुरी वाला ॥ छ० ॥ ८० ॥

संयोगिता का सखियों सहित क्रीड़ा करते हुए उसकी

मानसिक एवं दैहिक अवस्था का वर्णन ।

पहरी ॥ राजन अनेक पुत्रीति सग । पटवीय वरेप नन लसति अग ॥

के जुवति सग दासद सुरग । मिल लिपहि भाम नव नव अनग ॥

छ० ॥ ८१ ॥

सजोगि सग जुवती प्रबीन । आनद गान तिन कठ कीन ॥

।

॥ छ० ॥ ८२ ॥

गाथा ॥ आनन उछग चिबुकी । आलोली इछ सजोगी ॥

वरनीय पानि पत्तो । दीदास तामि अठ मक्तामि ॥ छ० ॥ ८३ ॥

पद्मरी ॥ कोमल किसोर किंचित सुरंग । अधरें तंमोर अर्धें दुरंग ॥
 सुभ सरल बाल वल्लीस थोर । अंकुरहि मान मनमथ्य ओर ॥
 छं० ॥ ८४ ॥

जुवन जुवति रचि कहहि बत । अवननि सीरे निकु नयन रत ॥
 मुकहि न लोह लज्जा सुरत । निरधनिय मनहु धन गहिय हस्थ ॥
 छं० ॥ ८५ ॥

गाथा ॥ हा हंत सा सचिन्ना । था सुंदरि कथ बर यामि ॥
 बालियं विधि विहिन्ना । संयोगीय जोगिनी पानी ॥ छं० ॥ ८६ ॥

संयोगिता की वय और उरा के स्वाभाविक
 सौन्दर्य का वर्णन ।

मोतीदाम ॥ वयजोग संजोग वसंतह जोग । कहै कविचंद समावरि भोग ॥
 अनं मधु मड्डु मधुं धुनि होइ । विना रस जोवन तीय अलोइ ॥
 छं० ॥ ८७ ॥

मनं भिन लीन वसंतत राज । सु इच्छत सैसव जोवन बाज ॥
 कहूं कहु अंकुरि कुंपरि नाहि । तहां विन सैसव जोवन जाहि ॥
 छं० ॥ ८८ ॥

कहै भमरौ जगि होपति आज । मई नय बार वसंतह राज ॥
 तहां बजि धुंधर जोवन भाइ । जगावहिं सैसव सेन सुनाइ ॥ छं० ॥ ८९ ॥
 दूहा ॥ सैसव रिति तुछ तुच्छ हुअ । कछु वसंत धरि भाव ॥
 मानों अलि दूतनि मई । नौदनि वेगि जगाव ॥ छं० ॥ ९० ॥

संयोगिता के यौवन काल की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन ।

पद्मरी ॥ अधर तपत पल्लव सु वास । मंजरिय तिलक पंजरिय पास ॥
 अलि अलक कांठ कलयंठ मंत । संयोगि भोग बर भुअ वसंत ॥
 छं० ॥ ९१ ॥

मधुरे हिमंत रितुराज मंत । परसपर प्रेम सो पियन कांत ॥
 लुट्ठहित मोर सुगंध वास । मिलि चंद कुंद फूले अकास ॥
 छं० ॥ ९२ ॥

बन बग्ग मग्ग हलि अ व मोर । सिर ढरत जानि मनमथ्य चोर ॥
चलि सीत मद् सहगध वात । पावक मनो विरहनी पात ॥

छ० ॥ ६३ ॥

कुह कुह करत कलयठ जोट । दल मिलहि जानि जानग कोट ॥
तरु पलव पीत अर रत्त नील । हरि पलहि जानि मनमथ्य पील ॥

छ० ॥ ६४ ॥

कुसमेप कुसुम नवधनुक साज । भगी सुपति गुन गरुअ गाज ॥
सजर सुवीन सो मनहु नेह । विद्वारि जानि जुअ जननि देह ॥

छ० ॥ ६५ ॥

जपलिय चलिय चपक सरूप । प्रजरहि भगट व्रोद्रप्य कूप ॥
कर वत्त पत्त केलुकि सुकति । विहरत रत्त विधुरत छत्ति ॥

छ० ॥ ६६ ॥

परिरम अनिल कदलि छपान । सिर धुनहि सरस धुनि जानतान ॥
भेकुेरि झमूर अभिराम रेम्भ । नन करहि पीय परदेस गम्भ ॥

छ० ॥ ६७ ॥

फूलिग पलास तजि पत रत्त । रन रग ससिर जीतौ वसत ॥
दिप्यहि तपत जिहि कत दूर । थकि वोलि वोलि जल रहिय पूरि ॥

छ० ॥ ६८ ॥

सजोग भोग जुवती प्रवीन । पै कठ नट्टि दुह भगिअ लीन ॥
रवि जोग भोग ससि नीय थान । दिन धन्यौ देव पचमि प्रमान ॥

छ० ॥ ६९ ॥

सोय जग्य उदीपन वाल काज । विलसन विलास मझौज साज ॥
पर उछव दपिन दीनौ मिलोन । विग्रहन देस चढि चाहुआन ॥

छ० ॥ १०० ॥

पृथ्वीराज का अपमान हुआ जान कर संयोगिता का दुखित
होना और पृथ्वीराज से ही व्याह करने का पण करना ।

श्लोक ॥ अन्यथा नैव पिप्यति । दुज वाक्य न मुंचते ।

प्रोपत जोगिनी नाथो । सजोगौ तत्र गच्छति ॥ छ० ॥ १०१ ॥

दूहा ॥ जगत वत्त जोगिन पुरह । सुनिय किति कमधज ॥

भनै अण्य विध्वंस मन । नमि सामंत सुरज ॥ छं० ॥ १०२ ॥

दूत वचन कगद सयन । थपि वत्त सासत्त ॥

चमकि चित्त चहुआन नटप । तमि सामंत विरत्त ॥ छं० ॥ १०३ ॥

सुनिय वत्त दिखौ नपति । थप्यो पोरि प्रथिराज ॥

अब जीवन बंछौ नपति । करहु मरन कौ साज ॥ छं० ॥ १०४ ॥

अपनी शूर्ति का दरवान के स्थान पर स्थापित होना सुनकर
पृथ्वीराज का कुपित होकर सामंतों से सलाह करना ।

कवित्त ॥ सो उभमै पहुपंग । जग्य मंडै अबुधि कर ॥

जो भंजौ इह जग्य । देव विध्वंसि धुंम परि ॥

कच करवत पाषाण । हृथ्य छुट्टै वर भंगौ ॥

प्रजा पंग आरुही । बहुरि हृथ्या नन लगौ ॥

प्रथिराज राज हंकारि वर । मत सामंत सु मंडि धर ॥

कौमास बीर गुजर अठिल । करौ स्हर एकट्ट वर ॥ छं० ॥ १०५ ॥

सब सामंतों का अपना अपना मत प्रकाशित करना ।

मत मंडि सामंत । गरुअ गोयंद उचारिय ॥

पंग जग्य तौ करै । भूमि नन बीर संहारिय ॥

साष बीर मश्चियै । गथन कंकन प्रति साजन ॥

बनसी मध्य समुद्र । मथन रन रतन सुराजन ॥

थरधंकि धंकि राजन गरै । पहुमि कही चहुआन नहिं ॥

निरबीर पहुमि सोइ होय वर । पंग जग्य कलजुग महिं ॥

छं० ॥ १०६ ॥

पंच स्हर एकंग । सश्च सामंत सत्त भर ॥

धाव सेन सजि सेन । राज प्रथिराज प्रीति नर ॥

राज गुरु दुजराम । राज रष्यन बल राषन ॥

अण्य सजिय सामंत । सजि सब स्हर एक मन ॥

सामंत स्हर षोषंद कजि । पंग भजि अगगर सुधर ॥

बालुकराव निंदह कड़िय । पंग मंग मंगै गहर ॥ छं० ॥ १०७ ॥

जयचन्द के भाई बालुकाराय को मारने के लिये
तेयारी होना ।

दूहा ॥ काज वीर बालुक सु कृत । सजि सेन चतुरंग ॥

तिन कारन भजन सु जगि । बाजि वीर अनभग ॥ छ० ॥ १०८ ॥

कन्ह चहुआन और गोइन्दराय आदि सामतो का

कहना कि कन्नोज पर ही चढ़ाई की जाय ।

पञ्चरी ॥ सुनि मत तत जुगिनि पुरेस । मनेव मेव मन मडि तेस ॥

काज मत सत जोगीय यान । सब बढ्यौ कोप भर आसमान ॥

छ० ॥ १०९ ॥

बुझाइ सबै भर राज काज । पमार सलय सम जैत आज ॥

निदुरह राव जामानि जाद । चदेन भूप मोहा सु बाद ॥ छ० ॥ ११० ॥

कैमास भासई तेज रासि । दाहिम बोलि अग्यै उहासि ॥

पुडीर चद लगा अभग । वगरी देव पीची प्रसग ॥ छ० ॥ १११ ॥

सामत स्वर मिलि एक थान । मतेव मत विधि चाहुआन ॥

तुम सुनिय तुम । , ॥ छ० ॥ ११२ ॥ ॥

हम लाज राज तुम सौस साज । तुम रचिय बुद्धि सो प्रात्यकाज ॥

तमि कहिय राव गोयद तव । भजौ निकट वनवज्ज सव ॥

छ० ॥ ११३ ॥

तब कही कन्ह सुनि चाहुआन । सजि सेन जुरौ कनवज्ज थान ॥

मचाइ कूह कनवज्ज थाह । पडहि सु रान विधि जग्य राह ॥

छ० ॥ ११४ ॥

उचरिग वत्त जामानि जह । सजि चढौ जूह कजि कूह नह ॥

भजियै देस कमधज्ज राज । उज्जारि थान जचान राज ॥ छ० ॥ ११५ ॥

पुकार कूह उह्ये करार । भजहि सु जेन भय जग्य भार ॥

उच-यौ चद पुडीर ताम । कैमास मत पुच्छौ सु हाम ॥ छ० ॥ ११६ ॥

मति सिधु सह गुन अगरेस । बुद्धत बुद्ध मनजा असेस ॥

आनंद सुनिय सामंत सब । भय मोद मंन अस सुनिय तब ॥
छं० ॥ ११७ ॥

कैमास ताम जंपै समेस । कमधजा सुवल दल अस हेस ॥
बालुकाराय षोषंद थान । भंजिये तास हनि जूह जान ॥
छं० ॥ ११८ ॥

दगियै धाम पुर नैर नेस । पुकार भार फुट्टै असेस ॥
बिगारै जग्य जैचंद राज । जस होइ किति सुअ सोम काज ॥
छं० ॥ ११९ ॥

दाहिंम मंत सुनि भर उहास । मनेव मंत सो धनि हास ॥
आनंद राज प्रथिराज ताम । यधि मंत पत निज निआ धाम ॥
छं० ॥ १२० ॥

कैमास का कहना कि बालुकाराय को मार कर ही यश
विध्वंस किया जा सकता है ।

कापित ॥ रषि थान षोषंद । राइ बालुक प्रमानं ॥
दिय अड्डौ चहुआन । जग्य मूलं रषि वानं ॥
रषि सेन समरस्थ । गरु आदर भर मनिय ॥
सो संभरि चहुआन । वीर अंकुरि चित्तवन्निय ॥
सामंत स्वर वर बोलि वर । मंति बैठ ढीलीम पहु ॥
जय जाम सिंध घरियार बजि । वीर वीर लग्गे सु पहु ॥ छं० ॥ १२१ ॥

गाथा ॥ दिढ़ करि मंच सहाऔ । पतौ धाम राज सा भूतं ॥
अंतर महल उहासौ । आअंभेस तस्थ चहुआनं ॥ छं० ॥ १२२ ॥

दूरारे दिन सभा मे आकर पृथ्वीराज का बालुकाराय पर चढ़ाई
करने के लिये महूर्त देखने की आज्ञा देना ।

अरिस्त ॥ बोलि तस्थ मंची कयमासं । राजा मानिय दू आमासं ॥
और सबै सांसंत सुरेसं । दिय सनमानि बहोरि नरेसं ॥ छं० ॥ १२३ ॥
गाथा ॥ सिंघासने सुरेसं । सम अरोहि धीर ढीलीसं ॥
भक्त पथोन विचारं । ॥ छं० ॥ १२४ ॥

दूहा ॥ बोल्यौ बभन खर तहा । कहौ सु जिय की बात ॥

सो दिन पडित देपि हम । जिन दिन चलै सधात ॥ छ० ॥ १२५ ॥

ब्राह्मण का यात्रा के लिये सुदिन बतलाना ।

दूहा ॥ तव बभन कर जोर कहि । सुनौ सु बात नरिद ॥

पुष्प नयित रविवार है । तिन दिन करौ अनद ॥ छ० ॥ १२६ ॥

उक्त नियत तिथि पर तैयारी करके पृथ्वीराज का अपने
सामन्तों को अच्छे अच्छे धोडे देना ।

पद्मरी ॥ रवि जोग्य पुष्प ससि तीय थान । दिन घन्यौ देव प चमि प्रमान ॥
पर उछह दिपन कीनौ मिलोन । विग्रहन देस चढि चाहुआन ॥
छ० ॥ १२७ ॥

साहनिय ताम सद्यौ सुरेस । विलहान वाह अप्यौ सुवेस ॥
हय मुकट मुकुट औराका बस । चहुआन कए अप्यौ उतस ॥
छ० ॥ १२८ ॥

आरव्व उच जति पपराव । समपौ सु राव गोयद ताव ॥
मानिक सहोदधि मध्य जात । निरपत नैन थकै न गात ॥
छ० ॥ १२९ ॥

चमकांत पुरिय विज्जल विभास । समयौ सु राव निदुदुरह तास ॥
लहराका तेज अग्गाध भाल । भापत छोनि पुज्य न ताल ॥
छ० ॥ १३० ॥

तुरकेस गात गरुअत भेस । समपौ सु राव पज्जून तेस ॥
लटि पाल जाति पधार मभक्त । समपौ सु राव पम्मार सज्जि ॥
छ० ॥ १३१ ॥

रेसमी रीस भानै न मग । कूदत मत पय घर अलग ॥
हथरोह सोह मनै सु भेस । विलहान जेत अप्यौ जु हेस ॥
छ० ॥ १३२ ॥

तेजाल चाल वरवाह बस । कैभास तास अप्यौ सु हस ॥

चेटकी चित्ररूपी रसाल । समपौ सु अइ जामोन ताल ॥
छं० ॥ १३३ ॥

सोहाल मंगल नाचंत थाल । गति रंभ जेम रचंत ताल ॥
जप जीह जीह जंपै सुभाइ । समपौ सु साज चावंडराइ ॥
छं० ॥ १३४ ॥

गति सुवर अमर महरेस ताजि । समदेहु राज पाहार गाजि ॥
रंगेस उंच लप्पन सु भेस । समपौ सु राव लंगी नरेस ॥
छं० ॥ १३५ ॥

रा राम देहु मदनैस साजि । माथुरह सरस कनकूय मांगि ॥
पटसूत पटे परसंग राव । परमार सिंध कंकन सुभाव ॥
छं० ॥ १३६ ॥

बगरी देव दै तेजदाम । सिंघली सिंध पामार ताम ॥
बहरी सु चाल तेजाल काल । समपौ सु राव भौंहा भुंहाल ॥
छं० ॥ १३७ ॥

परचई रोह जिम चित्त भाजि । महनसी सु जंगम देहु साजि ॥
हय बाज साज साजे सुभेस । सो देउ बरन बंधव सुरेस ॥
छं० ॥ १३८ ॥

बद्धंत कुरंगगति कुरंगवाह । बलिभद्र अप्पि उतंग राह ॥
सोहाल फाल कनकू सु देव । रंगाल राव विंझह बिरेव ॥
छं० ॥ १३९ ॥

महरीस जाति महरेस थान । आजानवाह अप्पौ लुहान ॥
कनकू कनक रूपी सु तेव । पहुमीस पाय मनो दशरथदेव ॥
छं० ॥ १४० ॥

गिरवर उतंग गरुअत्त गात । पाहार फट्टि गुरु पाइ घात ॥
साकति साज सबै सुभाइ । चहुआन समपौ अत्तताइ ॥
छं० ॥ १४१ ॥

सारसी खर रथ किति कीम । किंगन समप्पि लोहान धीम ॥
हैअवरह अवर अत देहु जाम । बोले समंगल गुरराम ताम ॥
छं० ॥ १४२ ॥

आएस दीन सा साहनेस । विलहान देहु अत अवर जेस ॥
सदेवे अप्प सुय सिलह दार । समदेहु सिलह अत गात सार ॥
छ० ॥ १४३ ॥

अदर प्रवेस पावक पुज्जि । आसीस मच दिय गरुअ गज्जि ॥
दिय अतिथ दान हय मगि राज । आनयौ ताम साकति साज ॥
छ० ॥ १४४ ॥

वर पाच जेम परठत पाइ । मडैति थाल जिम तत थाइ ॥
कलमोर जेम मडै कराल । मक्तमि पौठ मनु कटुताल ॥
छ० ॥ १४५ ॥

विस्ताल उअर अच्छौ पडच्छि । निरपत रथ्य स्तरिज्ज सच्छि ॥
मानिक मनोहर छव्वि लाल । हर वास भास गौसम विसाल ॥
छ० ॥ १४६ ॥

विन चसम चसम समकति दीस । लालप्पि लोह चपैति रौस ॥
अचवत सुच्छ अजुलिय अप्प । चमकत छाह भय तेज वप्प ॥
छ० ॥ १४७ ॥

उर जाइ सुद्धि रुचि राग वाग । वर नह जेम खेयत लाग ॥
मडत उड तडव सु उच । परसत पाइ मनु ध्यान रुच ॥
छ० ॥ १४८ ॥

अति उच वृद्ध भर पुरासान । पित मात विमल कुल समवान ॥
अनिय सु साजि सिगार पाट । विजति चोर जिम पुछ राट ॥
छ० ॥ १४९ ॥

चमकत पुरिय दामिनि दमकि । पटतार तार घरनिय धमकि ॥
मगेव चव्वौ चहुआन जाम । जै जया सबद आयास ताम ॥
छ० ॥ १५० ॥

पृथ्वीराज के कूच के समय का ओजस्व और शोभा वर्णन ।

दूहा ॥ चढि चसौ प्रथिराज हय । जै मुय बदी जपि ॥

विकसे स्तर सुमटु तन । कलच सु फातर कपि ॥ छ० ॥ १५१ ॥

जग्य विध्वंसे पंग कौ । धर लुट्टै परवान ॥
 मंति खर सामंत सह । चढ़ि चखौ चहुआन ॥ छं० ॥ १५२ ॥
 तैयारी के समय सुसज्जित रोना के बीप गें पृथ्वीराज
 की शोभा वर्णन ।

गाथा ॥ इक तौ सहबलयं । एक तौ होइ सहसयं वरयं ॥
 एक तौ दस दूनं । एक तौ परबलं लप्पं ॥ छं० ॥ १५३ ॥
 कवित्त ॥ सुबर बीर मिलि सकल । सेन राजी रंजन वर ॥
 वज्रपाट निरधात । राज चिहुं अप्परि मंगुर ॥
 मनो खर छुटि किरन । समुद छुट्टिय बडवानस ॥
 सजे सेन चतुरंग । राज आभंग बीर बल ॥
 घोषंद काज जीपन प्रथम । बालुकां भंजन सुभर ॥
 निहुर नरिंद पुंडीर भर । करन राज अगों सगुर ॥ छं० ॥ १५४ ॥

सैना सज कर पृथ्वीराज का चलना और कन्नौज राज्य
 की शोभा गें पैठ करे वहां की प्रजा को दुःख देना ।

दूहा ॥ गोडंडा घल मित्तरी । धर जंगली विहान ॥
 यों बंधे सह खर वर । चढ़ि चखौ चहुआन ॥ छं० ॥ १५५ ॥
 हे गै बधि बंधन विविध । धन सखी ग्रह बीर ॥
 चावहिसि धर पंग कौ । ज्यों कलपंतर तीर ॥ छं० ॥ १५६ ॥
 गथा ॥ जो धर पंग नरिंद । सो भंजे खरयं धीरं ॥
 ज्यों गुर खलत अंगं । सो लग्गे सिंधयं पानं ॥ छं० ॥ १५७ ॥

बालुका राय का परदेश की तरफ यात्रा करना ।

मुरिख ॥ संवर काम चखौ चहुआनं । बालुका परदेस प्रमानं ॥
 हे गें दल चतुरंगी पानं । अम भंजन मन उग्यौ भानं ॥
 छं० ॥ १५८ ॥

पृथ्वीराज की रोना की राख्या तथा उराके साथ गें
 जाने वाले योद्धाओं का वर्णन ।

हनुफाल ॥ चढि चल्थौ राज चुहान । बोलेव खर समान ॥
 गिन लिए खर सु भित्त । भर सहस सजि दह सत्त ॥ छ० ॥ १५८ ॥
 नीमान दून समान । मेरीय साद सुरान ॥
 बल बढिय राजस वीर । जनु उपटि समुद्र गंभीर ॥ छ० ॥ १६० ॥
 भय सकल एकत जाम । गुन सकल ग्रह विदु राम ।
 अगौ सु कान्ह चहुआन । ता पच्छ बलिभद्र जान ॥ छ० ॥ १६१ ॥
 उछग अग सनाह । सथ लिए खर सबाह ॥
 मझेस जगल देस । चढि चलिय दिसि नरेस ॥ छ० ॥ १६२ ॥
 भिसि सज्यौ जानि कराल । दाहत नाम सु ढाल ॥
 भिलि चलिग पोपंद पास । बडि वीर जुद्धस आस ॥ छ० ॥ १६३ ॥
 मन मुष्य साजहि जुद्ध । हनि ताहि कम्भहि मुद्ध ॥
 कलि कूह भचि कारार । धर अरिन कूटहि धार ॥ छ० ॥ १६४ ॥
 पिनि पेह लोपिय व्योम । दिसि विदिसि धुधरि धोम ॥
 रिधि मधि लुटहि अण्य । वर सख सख सुदण्य ॥ छ० ॥ १६५ ॥
 धर ढरहि भाजहि एक । मधि हनहि आप अनेक ।
 बहु भोल वख समोच । सम हरहि सहहि सोच ॥ छ० ॥ १६६ ॥
 सचरिय धाह विधाह । दहाय दिसि दिसि राह ॥
 ब्रल सैल व्योम तपूर । कलि कूह वृत्ति करूर ॥ छ० ॥ १६७ ॥
 सब नैर भगर कूक । सङ्घियै अतम जक ॥
 पोपद नर सुर यान । समपत अति उत्तान ॥ छ० ॥ १६८ ॥
 बालुका राय की प्रजा का पीडित होकर हाहाकार मचाना ।
 मुरिल ॥ छुट्टे दिमा दिसा चहुआन । समर काम समावर जान ॥
 परजा मिलिय करै बुवान । समरि भारथ रह रिसवान ॥
 छ० ॥ १६९ ॥

चाहुआन की चढाई का आतक वर्णन ।

कावित ॥ दिसि पहु उठिय धोम । भोम लगिय आयासह ।

निधि लुट्टिय चतुरंग । रंक हुअ राज राजसह ॥
 निधि पति निधि घट्टिय । सु रंक बट्टिय लच्छिय पन ॥
 बाला संधि विसंधि । राग ग्रीषम रिति सुष्यन ॥
 घरियार घरिय बट्टय घटै । सो भोषम परमानियै ॥
 निधि पति रंक रंका सु पति । विषम गति गुर जानियै ॥
 छं० ॥ १७० ॥

पृथ्वीराज का भुज्ज पर अधिकार करना ।

सुपति पति घोषंद । सुनिय बालुकाराय वर ॥
 धर धामह कमधजा । भुज्ज मंडिय कापाट भर ॥
 अरि भय किम औसेर । बट्टिय अगार नटप दीनिय ॥
 राज तेज यो लग्ग । जोग माया कम चीनिय ॥
 जघपि नपति बहु बल कियौ । नट विद्या चित्तह धरिय ॥
 प्रथिराज पानि जल बट्टि विषम । आगसि रूप होइ अनुसरिय ॥
 छं० ॥ १७१ ॥

धोम अंधि देखीय । कान संभरि पुकार वर ॥
 समै जागि लधि कलँक । जीव अरु रहै नहीं धर ॥
 रवि नट्टौ ससि छिप्यौ । चंद भग्गौ भग्गा सुर ॥
 पवन गवन नन करै । सीत पालै न अति वर ॥
 जो चलै मेर धूबह चलै । मिलै सात जोगी तदप ॥
 जो चलै अरक पच्छिम परक । बल छुट्टै बालुक वय ॥
 छं० ॥ १७२ ॥

पृथ्वीराज की चढ़ाई की खबर सुनकर बालुका राय का आश्चर्यान्वित और कुपित होना ।

धाह थाह धो घंद । सुनिय बालुक राव रव ॥
 लघु बंधव जैचंद । राइ संकेस असंभव ॥
 सो संभलि कलि कूह । जक छट्टिय दिसि दिसि दर ॥
 नह सुनियै अस्तुति । नयर सब गाजि गहक्षर ॥
 बालुका राइ इम उच्चरै । कहौ बत्त कारन सु कल ॥

मम करहु धाह धिर होइ करि । कवन तेग वधी सु कल ॥
छ० ॥ १७३ ॥

पृथ्वीराज का नाम सुनकर बालुका राय का सेना सजना ।

किन खौ सुअ तरनि । कहै नैरौपति सजम ॥
आज राज जैचद । कवन उद्देग करै दम ॥
तवै जाइ धाहून । सुनहि मबोस राउ सुअ ॥
दीलीवै चहुआन । तेन उज्जारि जारि सुअ ॥
सुनि बाद वादि नीसान किय । अण्य बोलि सज्जे 'सुभर ॥
सज होइ चढ़ौ बढौ सिलाह । अनौ बधि आधाढ बर ॥
छ० ॥ १७४ ॥

बालुका राय का सैन्य सहित पृथ्वीराज के सम्मुख आना ।

चढि आयौ चहुआन । देस विध्वसिय अगिय ॥
बर बालुका राइ । बीर बार्जे रन जगिय ॥
अवित ढौठ चहुआन । बरै बीर सुअ आनी ॥
धर धूसे धन सुट्टि । जग्य धूसे पगानी ॥
बर बीर धीर तन तोन बँधि । बालुकाराव सु भुक्किया ॥
प्रथिराज सेन सग्हौ विहर । ताजौ तुग सु नयिया ॥ छ० ॥ १७५ ॥

चाहुआन से युद्ध करने को जाने के लिये बालुकाराय
का हार्दिक उत्कर्ष और ओज वर्णन ।

चढ़त राव बालुका । आस लग्गी भो भग्गा ॥
सो ओपम कविचद । देव बानीन चिरग्गा ॥
ज्यौं नव बक्षम प्रीति । काम कामी सो जग्गा ॥
सोइ सनेह सुवध । प्रीति लागी तन लग्गा ॥
पुकार सथ्य साथे चल्यौ । कल सथ्ये गोली चलै ॥
रोर चमक साथे उठै । त्यों बर कवि ओपम पुलै ॥ छ० ॥ १७६ ॥

चहुआन। संभुहौ । राव बालुक उठि धायौ ॥
 छीन लगन पथ दूरि । बरन बरसें बर आयौ ॥
 तुच्छ दिवस काल बहुत । प्राय आतुर चित चाइय ॥
 सदै सेन संभूह । नीर रोसह बरलाइय ॥
 लाग्यौ रोस सामंत सय । अप्य थान नन तज्यौ किहुं ॥
 दिठ परत राइ चहुआन बर । बालुक वर साज्यौ समहुं ॥
 छं० ॥ १७७ ॥

चाहुआन राय की सेनसंख्या ।

दूहा ॥ सेन सहस्र वनीस भर । चव्यौ स जंगल जूह ॥
 नैर छंडि बाहिर चले । तब रज इप्पिय ऊह ॥ छं० ॥ १७८ ॥
 दोनों सेनाओं की परस्पर देखादेखी होना ।
 कवित्त ॥ षंधे षेत करसनी । बहर धावै आवहिसि ॥
 धन लूटत ज्यों रंक । लज्ज लम्गै न बरं तस ॥
 अंवरीष अम आप । जेम दुर्वासि चक्र कस ॥
 जिम देवासुर देव । सबद जिम तरै काव्य रस ॥
 अष्टत जुद्ध हिंदू दुहन । सुनर बीर लग्गे बिरद ॥
 संप्रति बीर बाराह बर । सुधिर भय निमल सरद ॥ छं० ॥ १७९ ॥
 बाधा ॥ रन डंबर अंबर उत्तानं । देखे डहर सेन सगरानं ॥
 सज किय सेन अप्य परसंसे । आप जाति गुन नाम सरंसे ॥
 छं० ॥ १८० ॥
 सुनियं तामं नाद निसानं । आयौ सेन समुष चहुआनं ॥
 दल दुअ ताम हुअदे ठालं । गज्जे नह सह झूझालं ॥ छं० ॥ १८१ ॥
 गाथा ॥ दल दुअ हुअ देठालं । गज्जे नाद बीर विसरालं ॥
 सज्जे सेन सु चालं । बंधे फौज कमध फसि कालं ॥
 छं० ॥ १८२ ॥

बालुका राय की सुसज्जित सेना को देख कर चाहुआन
 सेना का सन्नद्ध और व्यूहबद्ध होना ।

अरिस्त ॥ बँधी फौज देपी चहुआन । सज किय सेन आप सधान ॥
 वधे सिलह छर छरान । गज्जै सीस सुमर असमान ॥ छ० ॥ १८३ ॥
 सज्जि सेन सामत छर वर । गज्जे गेन सु लग्गि मधामर ॥
 वधे गरट चले गति मद । मानि छर सामत अनद ॥ छ० ॥ १८४ ॥
 दोनो हिन्दू सेनाओ का परस्पर युद्ध वर्णन ।

दूहा ॥ जीवतह कीरति सु लभ । मरन अपच्छर हर ॥
 दो हथान लङ्गू मिलै । न्याय करै वर छर ॥ छ० ॥ १८५ ॥
 चले सज्जि दूनो सयन । दिठ्ठे दिठ्ठ कलर ॥
 सामिधम्म सा क्रम गुर । सो समारै छर ॥ छ० ॥ १८६ ॥
 रसावला ॥ छिदु छिदु भिर । काल वृत्त सुर ॥
 एक एका गर । वीर डक कर ॥ छ० ॥ १८७ ॥
 तार बाजे हर । गेन लग्गा नर ॥
 अत दती जर । नाल कट्टै सर ॥ छ० ॥ १८८ ॥
 हत चौध चर । पात सोभै सर ॥
 भार बडप्पार । लोह लोह कर ॥ छ० ॥ १८९ ॥
 देवती सेन र । वज्र नाली कर ॥
 पग वीर हर । छर मत्ते जर ॥ छ० ॥ १९० ॥
 सिध छुट्टै पल । वीर मत्ते दल ॥
 ढाल ढाल ढल । वीर चपे मिल ॥ छ० ॥ १९१ ॥

बालुकाराय का युद्ध करना ।

कवित्त ॥ वर बालुका विसाल । सख बाहत उचारिय ॥
 पग भूमि रतनन । स हथ धार अधिकारिय ॥
 मझि ससुद बालुका । पुष्ट छीरा गल लग्गा ॥
 रतन पटू सत छडि । जिरह लय लरने लग्गा ॥
 दल मझि एम घोपद पति । ज्यो ग्रीपम भावसि रवै ॥
 डोलन सु चित्त वन बायते । चल पतन कर कानवै ॥ छ० ॥ १९२ ॥
 बालुकाराय की वीरता और उसका फुर्तीलापन ।

अंग चतेन बेहि हथ्य । सख लागत जड़ धारिय ॥
 लोह लगत सिलहान । दोष परगत्तिय हारिय ॥
 लोह संका नन करै । लाज संका न दिसा करि ॥
 छच अगा चूकंत । स्वर संकै न पग धर ॥
 नब बधुअ संका रत्ता गरुअ । कुल संकै कुल बधु सकल ॥
 कमधज जु चहुआन सौ । सुवर बीर धरि पंच छल ॥ छं० ॥ १८३ ॥
 धरिय पंच साधंत । स्वर साधै असि मर नर ॥
 बालुका अरि राज । सबै भगा जु कगा धर ॥
 पग पुच्छानन दियै । पेल असिवार परिमानं ॥
 मोष मह असि रेष । परज रज बने धानं ॥
 अति बीर सुग्रह तजि रोस वर । इम उकंस चहुआन रिन ॥
 निप जैत बीर विभ्रम भगति । सुवर बीर आरन धन ॥ छं० ॥ १८४ ॥

बालुकाराय का रणकौशल ।

बाज सख छितिमंत । बीर बरधंत मंच असि ॥
 सख धार बाजै प्रहार । वेताल लाल रसि ॥
 कमल विमल विछुरंत । कमल नंचत वर वरतन ॥
 इक चारि सिर चारि । नीर किनौ जु बीर गुन ॥
 सुर बचन रचन सुरलोक गति । काम धाम धामार तजि ॥
 बालुकाराव चहुआन सौ । दुतयि बीर भारथ्य सजि ॥ छं० ॥ १८५ ॥

सूरता की प्रशंसा ।

चर चालै पय रहै । मान चालै न अचल ह्युअ ॥
 मंत अचल कर सुचल । इक न चलंत स्वर भुअ ॥
 अति उत्तंग दिसि जोति । जोति अैसे गतिमानं ॥
 कुटिल चिया चंचल सु । बीज आव दिसि धानं ॥
 जिन मुष सु बीर निभल सु वर । सार भालै ते जलभल्ली ॥
 में मंत पंथ रुके सुवर । मुगति पंथ पंथा पुली ॥ छं० ॥ १८६ ॥

दूहा ॥ मुगति मग पंथा पुली । सवर थापि पति सूर ॥

जिन गुन प्रगटित पंड कुल । तिहि सँधारिग सूर ॥ छं० ॥ १८७ ॥

वालुकाराय का धिर जाना और उसका पराक्रम ।

कवित्त ॥ वीर कुड मडलिये । परिय वालुकाराय फुनि ॥
 चद मडि ओपम । मनो पावस्त मोर धुनि ॥
 सिधु समान भए । तेज बडवानस तुग ॥
 हेम मझिन्न नग धरिय । छर फिरि मेर सुरग ॥
 जयपत्त जुड बोलिय सुभग । ज बोल्थौ त कर कियौ ॥
 चहुअन सिधु लग्गे गिलन । 'चर अगस्ति मतह नयौ ॥
 छ० ॥ १६८ ॥

युद्ध स्थल का चित्र दर्शन ।

घोटक ॥ घनिक भयानक वीर हुआ । वर बज्ज निसान निसान धुआ ॥
 अमय अम घेद कटत वर । मिटि गावर सौस नवाइ गुर ॥
 छ० ॥ १६९ ॥

दुहु वीरन वीरह हथ्य धक । सु मनौ कर तोर निसान डक ॥
 दुहु वीर विरोधत हथ्यन ही । दुहु दौनह जानि गुमान गही ॥
 छ० ॥ २०० ॥

जु परे रुधि सौस कानछ धरे । सुमनों गिर तिदुअ अग जरै ॥
 गज दतनि छरे दुलगि फिरै । तिनकी उपमा कविचद धरै ॥
 छ० ॥ २०१ ॥

जल जावक धाम ग्रनार परै । निकसौ अनु मध्य भल्लग तिरै ॥
 सु किधौ ससि निकरि हथ्य धरौ । निकसो बल लागत फूल भरौ ॥
 घन धाव किये सिर छरे तुटै । तिन की उपमा कविचद रटै ॥
 मनो धर वामन मापन को । बलि रूप कियौ विधि आपन को ॥
 छ० ॥ २०२ ॥

वालुका राय का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना । पृथ्वीराज
 का उसके हाथी को मार भगाना ।

कवित्त ॥ भीर परी प्रथिराज । देपि बालुका मंत गज ॥
 चंपि भुट्टि दिद पानि । सीस बाहीय कुंभ रजि ॥
 दुट्टि सीस लुति वरसि । रुधिर भीजै लंगो अमि ॥
 सुभनों मग्ग पुति पान । चंपि निकलिय ओपम तम ॥
 जुद्धं स एह मंजौ जलह । आदि चंपि सो दिन चरिय ॥
 दैवत्त बलह प्रथिराज दुति । छंद चंदकवि उच्चरिय ॥ छं० ॥ २०३ ॥

पृथ्वीराज की सेना का पुनः दृढ़ता से व्यूहबद्ध होना ।

व्यूह का वर्णन ।

भुजंगप्रयात ॥ लंभारे सबै स्वामि प्रभामिति स्वरं । वरं वंसरम्मं असंसल नूरं ।
 तवै उच्चयौ .. दिराजं सहाजं । समं मंत ईसं सु दाहिम्भ राजं ॥

छं० ॥ २०४ ॥

समं साजियं फौजं सु औजं कमंधं । कौं साज आजं अनी अन्न मंधं ।
 तवै जौपि राजं सु दाहिम्भ द्यौ । नरनाह कंधं तुमं काम द्यौ ॥

छं० ॥ २०५ ॥

मुषं अग्ग कर्हं सु सामंत राजं । गुरुराव गोयंद सल दच्छ नाजं ।
 वरं सजियं बाइयं निदुदुरेसं । मध्यं रच्चियं अप्प राजगं तेसं ॥

छं० ॥ २०६ ॥

सचे सब रावे सु सामंत स्वरं । गुरुं बीर वाजिच वज्जे करूरं ॥
 चले फौल सज्जे समं भट्ट थट्टं । गहारं भरं सेन देवे गिरट्टं ॥

छं० ॥ २०७ ॥

बालुका राय का अपने वीरों को प्रचार कर

उत्साहित करना ।

तवै उच्चयौ जंच बालुक रायं । निजं नाम आभासि अप्पं सहायं ॥
 सनंसुष्प इष्पै अनी पाहुआनं । दहे देस सीसं गुरं ग्राम थानं ॥

छं० ॥ २०८ ॥

भयौ काम काजं जपं चंद आजं । निजं प्रभा मन्ने कुलं कथ लाजं ॥
 सुने गजियं दट्ट जुद्धं सनट्टं । मुषं रत्त नेनंतनं तेन बट्टं ॥ छं० ॥ २०९ ॥

दोनों सेनाओं में परस्पर घोर सग्राम होना । सग्राम वर्णन ।

मिल्यौ बोलु काराड गज्ज नरिद । सम सेल चहुआन करि पग दद ॥
सजी सेन चतुरग तारग रुप्य । लग्यौ चपि ग्रथिराज ता गज्ज मुप्य ॥

छ० ॥ २१० ॥

भरं भीर भारी उमारी कमान । भिरे सेन कमधज्ज अरु चाहुआनं
वले दून सेन मिल वान वान । मनो बूद भद मह मेध जान ॥

छ० ॥ २११ ॥

गजे स्तर स्तर लगे हथ्य वथ्य । दुअ उचरे आन ईस दुअथ्य ॥
बजी सार धार सम सार सार । मुप उचरे मार भार करार ॥

छ० ॥ २१२ ॥

सम वीर वाजिच वाजिच वाजे । धरक धरार सु गो गेन गाजे ॥
तुटै सीस दीस ररे रुड मुड । परे गज्ज भाजे सु तुटै मुमुड ॥

छ० ॥ २१३ ॥

फटै जठर सठर स विहार । फर फेफर डिभरु तुटि भार ॥
विष्ट्रै डर डिस्तर अतरेस । भमकत ओन सथोन अनेस ॥

छ० ॥ २१४ ॥

कटे कट्ट वाजत पग करार । मनो कट्ट कायारि कूटे कुहार ॥
उर । फार फूटत पट्टे उलट्टे । मिले हथ्यवथ्य सम भट्ट चट्टे ॥

छ० ॥ २१५ ॥

छुरी जम्भ दट्ट सनट्ट प्रहार । जराद जर तुट्टि उट्टत सौर ॥
तटकत टोप गुरज्ज प्रहार । फटै सीस दीसें विकट्ट विहार ॥

छ० ॥ २१६ ॥

मुडकत कथ कडकत हट्ट । फडकत फेफा सरे फस मट्ट ॥
दडकत ओन प्रहारे सपूर । गडकत कथ सु धायति जरं ॥

छ० ॥ २१७ ॥

धर सीस हकत धकक जीह । नचै पग कमध धप्यंत दीह ॥
हहकत हकत नाचत वीर । पल चारु गोमाय गाजत तीरं ॥

छ० ॥ २१८ ॥

यहं राइ चौसठि उपट्टि महं । नचै ईस मीमं डकै डक नदं ॥
गहै अंत गिद्धी झड़पंत तुट्टं । पलं चार चारं अहारंत लुट्टं ॥
छं० ॥ २१६ ॥

प्रसारं प्रवारं धनं ओन भारं । गहं राइ नादं नदी जेम नारं ॥
थलं मंस हड्डं लुथट्टं असेसं । गहै हंस चारी भरै हंस रसं ॥
छं० ॥ २२० ॥

हहकार हंकार छकार छकं । हवकं हवका धरे धीर धकं ॥
गहै केस केसं प्रहारै परेसं । हने छंडि आवद्य आवद्यनेसं ॥
छं० ॥ २२१ ॥

समं स्वर वध्यं लरै स्वर सध्यं । विनानं सु मल्लं पयं ढीक पच्छं ॥
कुलं अप्प ईषे वरै आन ईलं । उवासंत क्रसं रजे वीर रीसं ॥
छं० ॥ २२२ ॥

बिना पाइ घायं करै पग टेकं । हुये पंड पंडं विहडं दिसेकं ॥
महा जुद्ध आजुद्ध देषे अपारं । परे हथ्य सामंत सो स्वर भारं ॥
छं० ॥ २२३ ॥

बरे इष्य थोरप्य नीवीरे वृंदं । रसं वीर नारद नचै अनंदं ॥
इसों जुद्ध हूतें दुअं जाम वित्ते । मिरें मंत माहिष्य ज्यों मंस चित्ते ॥
छं० ॥ २२४ ॥

कन्ह और बालुकाराय का युद्ध, बालुकाराय

का मारा जाना ।

दिषे कन्ह चौहान बालुकरायं । उदै दिठु सोकी समं सज्जि घायं ॥
तवै बालुकाराइ उभारीय पगं । करै कन्ह हेलं सहेलं चिमंगं ॥
छं० ॥ २२५ ॥

हने बालुकाराइ सो पग रहट्टं । कछ्यौ कन्ह गल्लं सु सेलनि हट्टं ॥
हयौ सेल पंडं कमंडं सजरं । सिल्लै फौरि फुट्टै पटे पुट्टि भूरं ॥
छं० ॥ २२६ ॥

धरं गहारियं कन्ह सेलं जु नषे । पच्यौ बालुकाराइ सो भूमि घष्ये ॥
हन्यौ बालुकाराइ देष्यौ समथ्यं । सब देषि सामंत आमंत हथ्यं ॥
छं० ॥ २२७ ॥

भगी फौज कमधज्ज सा छडि पत । हन्यौ वालुकाराइ देख्यौ समथ्य
छ० ॥ २२८ ॥

कवित ॥ प-यौ राव सारग । वीर सज्यौ बडगुज्जर ॥
ईस सौस संभ-यौ । सोइ लीनौ स बधि उर ॥
गग दुचित नदि कपि । उमा भै दीन प्रमान ॥
सौस ईस ससिकठ । हथ्य बडगुज्जर यान ॥
रुधेव पच पचौ मिलिय । सबर वीर ततौ संगति ॥
पोपद राव भुभयौ सरस । स वर वीर भारथ्यपति ॥ छ० ॥ २२९ ॥

बालुकाराय के भारे जाने पर उसके वीर योद्धाओं
का जूझ जाना ।

परतन नर भर भीर । सिधु बढ्यौ चहुआन ॥
जे हसए उत्तरे । गयौ बहु हथ्य निधान ॥
कुल भारे रजपूत । रहे पथ्यर परिमान ॥

। राज चढ्यौ चहुआन ॥

बालुकाराइ भारे कुलह । पथ्यर ज्यौ महे रघौ ॥
चहुआन वार वज्जी विपम । तत वेर उड्डि न गयौ ॥ छ० ॥ २३० ॥

बालुकाराय की राजधानी का लूटाजाना ।

चाहुआन भय राज । सुभर बालुका राज वर ॥
अव लुट्यौ घर धेन । अवहि दक्षिभयै परधर ॥
धर किपाट बालुका । स्वर अतर सपत्ते ॥
पूरन आहुति दीय । पग जग्यह आहुते ॥
बालुकाराइ पजर प-यौ । देपि उभय चहुआन धर ॥
मोरिया भजि दोइ बधि धरि । चर नट्टा कासी बहर ॥ छ० ॥ २३१ ॥
तजि सु नारि भजि पीय । विसरि आतुर भय पजर ॥
पिय कोमल सुदरी । परत पिच्छल सहार धर ॥
कचन पत्त पराम । स्वर कल मोती धारे ॥
नूत पत्र परिहार । चद औपम विचारे ॥
तारक बाल मगलति ग्रह । कै नप सुदरि पारियै ॥

ओपम चंद बरदाइ कवि । जाते चालु विचारियै ॥ छं० ॥ २३२ ॥
बालुकाराय के साथ मारे गए वीरों की संख्या वर्णन ।

दूहा ॥ परत सु बालुकै राय रन । सहस पंच सम सथ्य ॥

उभय धटी मथ्यान उध । धनि सामंत सु हथ्य ॥ छं० ॥ २३३ ॥

ढिखी ईसय सत्त अत । परे सु कटि रन थान ॥

सवे सत्त सामंत कुसल । जै लखी चहुआन ॥ छं० ॥ २३४ ॥

बालुकाराय के शौर्य की प्रशंसा वर्णन ।

कवित ॥ धनि बालुकाराय । सेन सध्यौ चहुआन ॥

पंग जग्य बिगरंत । अंग नित मान सु सानं ॥

सार धार गिह्लोर । सेन धुंसे दुजान वै ॥

प्रथम शरि परि काए । बलि बारन बंभन वै ॥

सामंत सेन एकठु हुअ । संझुह सेन सु धाइया ॥

गोदंड संड नीसान बर । चंपि चुहान वजाइया ॥ छं० ॥ २३५ ॥

बालुकाराय के पक्षपाती यवन योद्धाओं की वीरता का वर्णन ।

पथ्यौ जुझ बालुका । भीर बज्जा पंधारं ॥

ते सम पंग कुमार । पंग बज्ज्यौ वर सारं ॥

मिलि सामंत सरोस । रीठ बज्जी शतारहर ॥

मनों मेघ महि बीज । बाल भंभरि ओराधर ॥

सौ सठि सहस भंभरि मिलिय । धनि सामंत सु हथ्य हिय ॥

भारथ्य पथ्य दुतौ विपम । चंद छंद बत्ते कहिय ॥ छं० ॥ २३६ ॥

चौपाई ॥ बज्जियं बीर आयास तूरं । गज्जियं काल आषाढ धूरं ॥

* सजी सेन नाइक दिन मानं । सजियं पति दंती विमानं ॥

छं० ॥ २३७ ॥

जैचन्द की सेना और मुस्लमान सेना का पृथ्वीराज
का सुख रोकना ।

* इस छन्द में नीचे की दोनो पंक्तिया तो चौपाई की हैं परन्तु ऊपर की दोनो पंक्तिया छन्द भुजंगमप्रयात ही की हैं । पाठ तीनों प्रतियों में समान है ।

भुजगप्रयात॥ मिले मीछ कमधज्ज अरु चाहुआन । वजी सार सार सुधार प्रमान॥

लगी डंवरी रज्ज आयास छाय । निसा पति गिह्वी रुधिछन्न पाय ॥

—

छ० ॥ २३८ ॥

तहा चद वरदाय ओपम तब्बो । मनो वाद गठी परे जगि रघ्वी ॥

मिले जोध हथ्य तिवथ्य बकारे । परे चद महीन छुट्टे पचारे ॥

छ० ॥ २३९ ॥

वजे धाड़ आघाय धाय घरक्री । मनो नीर ममके तिरजे तुरक्री ॥

लगी टोप तेग सु वूटत दीसै । मनो मुक्कि छुच्छू छुटे वीज दीसै ॥

छ० ॥ २४० ॥

धरी अद्ध दीह रछ्यौ ता प्रमान । तबै बाहु-यौ पग पाइक मान ॥

सबै भीर वदा तुरकाम पान । कहै पकरौ चाहते चाहुआन ॥

छ० ॥ २४१ ॥

धर्यौ पग मोरी सु पधार सारौ । निने रोकिथ कन् चहुआन भारौ ॥

छ० ॥ २४२ ॥

दूहा ॥ चर तिन आनि स वीट वर । मिलि रोवरी प्रथिराज ॥

पति पग हय जग परि । तिहु पुर बज्जन बाज ॥ छ० ॥ २४३ ॥

परि पारस भूत पग धन । लाग निसानति बान ॥

विटि सेन प्रथिराज वर । जानि समुद प्रमान ॥ छ० ॥ २४४ ॥

पृथ्वीराज की उक्त सेना पर चढाई और वीरों के

मोक्ष पाने के विषय मे कवि की उक्ति ।

कवित्त ॥ होत प्रात प्रथिराज । दख्यौ सामत खूर सँग ॥

पतुरानन वर दिव्य । पय्यौ चिता सजीव अँग ॥

सिरजत लग्यौ वार । भरत इन वार न लग्यौ ॥

चित्त चेत सिरजू सु जूह । उतकाठ सु भग्यौ ॥

इतनौ सु रह अदेह मनि । भरन गुह सत्राम मन ॥

ए जीव रचि फेर न परे । सुगति बध बधे सधन ॥ छ० ॥ २४५ ॥

दोनो सेनाओ का परस्पर मिलना ।

घरिय अड्डादिन चढ़त । खर छुटि जुरन सु बड्डे ॥
 अप्प अप्प मुष रोकि । अरिन मुष दोऊ सड्डे ॥
 अनौ मुप्प जरि मुप्प । सोइ उचाय सु डारिय ॥
 घरिय चार सौ चारि । जानि घरियार सु मारिय ॥
 तट छुटि कमंध सु बंधि उठि । भगर अट्ट नट विलथौ ॥
 चामंडराय दाहर तनौ । बर दुज्जन भर ठिक्खथौ ॥ छं० ॥ २४६ ॥

चहुआन और गुरुलमान सेना का धोर युद्ध ।

भुजंग प्रयात ॥ करी ठेलि दूनौ अनौ एकमेकां । षटं लप्प दूनं भिरे राव एकां ।
 पियै बारुनी सार तुट्टै दुहीनं । उतं उथ्थलै भेजि अज्जानि धीनं ॥
 छं० ॥ २४७ ॥

गड्डे मड्डि अग्गी सजोगीन होई । रजं सत्त सासत्त संसस्त्र लोई ॥
 लगे लोह तत्ते रुधिं घुट धुट्टै । परे कुंभ षग्गे अघं कन्न छुट्टै ॥
 छं० ॥ २४८ ॥

परे बस्थ बस्थं विरुक्कताय छुट्टे । मनो सुक्कि सारी दुअं हथ्थ छुट्टे ।
 बहे वान कमान जंबूर गोरं । सके उड्डि नाही सहां पंषि तोरं ॥
 छं० ॥ २४९ ॥

महावीर धीरं लरे ते तरफैं । मनो पंग जंगी बली पंग अप्पै ॥
 तहां बीर सों बीर बीरं डकारं । तहां कोपियं राम बारड उधारं ॥
 छं० ॥ २५० ॥

हयं अखावारं समेतं उठायौ । मनो तापरी ताप भाते उचायौ ॥
 घरी तीय तीयं सु भारथ्थ वित्थौ । रिनं संभरीराव चैवेर जित्थौ ॥
 छं० ॥ २५१ ॥

कन्नौज की सेना का भागना और पृथ्वीराज की जीत होना ।

कवित्त ॥ भगिय सेन सा पंग । भगिय चतुरंग भुज मोरिय ॥
 बर बालुका सु राय । सेन चहुआन ठंढोरिय ॥
 बर शृंगार प्रथिराज । हुअ सु तिन बेर प्रमानं ॥
 कायर हथिय प्रमान । समुद उत्तरि चहुआनं ॥

बालुकाराय भारौ कुलह । पारथ जिम मध्यह रघौ ॥
 दोहित पग कमधज्ज कौ । सभरि वै दध्यह अघौ ॥ छ० ॥ २५२ ॥
 वर बालुका सु राय नय । निधि लुट्टिय चतुरग ॥
 विध सुदेस वर भजनह । वज्जो वज्जि सु जग ॥ छ० ॥ २५३ ॥

बालुकाराय की स्त्री का स्वप्न ।

कवित्त ॥ जे भील गत हुत । सोइ कीनिय करतार ॥
 जध गति धरि लक । लक जधा मति सार ॥
 नेनह दिइ सरोज । केस अहि विध सु किन्निय ॥
 परवत सकु चढत । मेलि साई सुध वनिय ॥
 भय भजि राज प्रथिराज वर । गामनि जित राजन सु गति ॥
 तजि आस वास सासन सु पिय । सुवर वीर वीराधि मति ॥
 छ० ॥ २५४ ॥

बालुकाराय की स्त्री की विलाप वार्ता ।

मुजगप्रयात ॥ जिने साजते धूम धूमै नरिद । लगी धूम आयास सो भजि चद ॥
 तुरी वारज राय पोपद बह । तहा बालुकाराय सग्राम सह ॥
 छ० ॥ २५५ ॥
 तहा बालुकाराय दानै सु मानै । तिने भजिया भूप घटि चाहु आन
 पग पग पहे सु धका हलाई । जहा पारसीराव खर गुराई ॥
 छ० ॥ २५६ ॥
 छतेरी छनेरी भडैरी वरारी । तिन चद चदेरि नैरी निहारी ॥
 जिने तारिया कालपी कन्दराय । जिने मडिया जुद्ध प्रथिराज साथ ॥
 छ० ॥ २५७ ॥
 जिने आल पिडाइ राचक चके । वर रोरिया दाइ सग्राम सके ॥
 जिने जग्य जारे धरे गग पारे । जिने सभरी याट तहे निवारे ॥
 छ० ॥ २५८ ॥
 जिने भजिय भीम पुर भीम भजे । जिने भजिया जाय गोधग हजे ॥
 जिने भजिय जाय प्रथम सु कासी । भए खर सामत उत उदासी ॥
 छ० ॥ २५९ ॥

जिने भंजियं जाय मेवात ग्रामं । जिने बैर सों सेन सज्जे समानं ॥
जिने भंजियं भीम सोमैस भारी जिने राजधानीं सबें पाय पारी ॥

छं० ॥ २६० ॥

जिने आलगी जोग पंडे षषेली । जिने माथुरी मोह मोहंत लेली ॥
जि सारीपुरं रोरि पारा जगायं । छं० ॥ २६१ ॥

कियं दौन बंवारि प्रथिराज तोरी । पगं घीच पंगार बल्लोच मोरी ॥
तहां ग्रीव बंवारि अग्रीव फूटो । तहां गोधनं घेन चौनान लूटो ॥

छं० ॥ २६२ ॥

जिने देस पट्टेर जोरी विछोरी । ते तजें पो पीय कंठं सुगोरी ॥
तिनं तीर नह चालहं चाल शांषे । तहां शां परहि जेम गज शां प लब्धे ॥

छं० ॥ २६३ ॥

तिनं चीर संमीर शारंत तुट्टे । मनो रति रंजं तरं पत छुट्टे ॥
तिनं ग्रीव नगजोति रहि फुट्टि पव्वै । छं० ॥ २६४ ॥

तमंचे सिपर जमदाह लग्गे । ॥

तिनं भ्रमा प्रजारि मिटी अग्नानी । तहां चलहि तिन तेज मुषचंद रेनी ॥
छं० ॥ २६५ ॥

तहां बीज फल जानि घन कीर धार । तहां दसन बालमे दसनं छिपार ॥
तिनं सह सहरोस सहरोस संकी । तहां थर हरे थकि रही हीन लंकी ॥

छं० ॥ २६६ ॥

कव्वि रटि रटति पिय पीज जंपै । एम रिपु खनि प्रथिराज सु कंपै ॥
॥ छं० ॥ २६७ ॥

वाधा ॥ सेवर काम चढ्यौ चहुआनं । कंपै भै त्रिय दुज्जन वानं ॥
बर छुट्टत नीवी न सग्हारै । लेहिं उसास प्रहार प्रहारै ॥ छं० ॥ २६८ ॥

अंगुरि एक ग्रहै कर बालं । दूजै कीरे निवारति जालं ॥
थान थान विहवल भइ बालं । मुत्तिन उर बर तुट्टित मालं ॥

छं० ॥ २६९ ॥

सो ओपम कविचंद सु पाई । मनो हंस कटि पंछ त्रिलाइ ॥
छं० ॥ २७० ॥

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-12

THE PRITHVÍRÁJ RASO

OF

CHAND BARDAI,

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B.A.

WITH THE ASSISTANCE OF KUNWAR KANHYA JU

CANTOS XLVIII to LIV



महाकवि चंद वरदाई
द्वारा

पृथ्वीराजरासो

जिमको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए. ने

कुँवर कन्हैया जू की सहायता
से

सम्पादित किया ।

पन्ने ४८ से ५४ तक ।

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS AND PUBLISHED BY THE
NAGARI PRACHARINI SABHA BENARES

सूचीपत्र ।

.0

(४८) बालुकाराय प्रस्ताव	पृष्ठ १३२९ से १३२९ तक
(४९) पंगजग्य विध्वंस प्रस्ताव	” १३३१ ” १३३६ ”
(५०) संजोगता नेम प्रस्ताव	” १३३७ ” १३४६ ”
(५१) हांसीपुर प्रथम युद्ध	” १३४७ ” १३६८ ”
(५२) द्वितीय हांसी युद्ध	” १३६९ ” १४०० ”
(५३) पञ्जून महुवा प्रस्ताव	” १४०१ ” १४०५ ”
(५४) पञ्जून पातसाह युद्ध	” १४०७ ” १४१५ ”
टाइटिल पेज और विषय सूची रासोसार	” १३७ ” १६६ ”

दूहा ॥ गय मद्। चय च चला । गुर जधा कटि रच ॥
 पिय प्रथिराज सु रिपु कियौ । विपरित करन विरच ॥ छ० ॥ २७१ ॥
 कवित्त ॥ सुभट सतें सक्षर । घरिनि तिन पुलिथ सुरन बल ॥
 कुसुम कप धन उअर । ममरे भर करय जु अलि तन ॥
 कपि करग तारन । अब पल्लव कि कौर मति ॥
 धाह सवद उच्छलीय । कग कलाठ कठगति ॥
 सिर चिहर मोर विसहर गिलिय । भनिस चद कवियन वयन ॥
 चहुआन राव सोभेस सुअ । प्रथिराज इस तुअ दुअन ॥ छ० ॥ २७२ ॥
 पृथ्वीराज का बालुकाराय को मार कर दिल्ली को आना ।

हनिग राव बालुका । भजि पोपद मठापुर ॥
 लुट्टि रिद्धि नव दिद्धि । कनक पट ब्राल नग धुर ॥
 करत सास उदास । छोहि जोरौ वर दपति ॥
 फिथौ राज चहुआन । प्राण देवे हरि सपति ॥
 बाजत नद नीसान वर । धाह प्रकास हिलोर धर ॥
 भजेव जग्य जैचद नृप । थान वयठौ कपि पर ॥ छ० ॥ २७३ ॥

गत घटना का परिणाम वर्णन ।

सुनि विधात अब दुष्य । जायधे मानव दुष्य ॥
 चद दुष्ट अजह दहै । विरहिन श्रप रेप्य ॥
 रिपु जानत चहुआन । मत इह गत न कितौ ॥
 चय चचल गति मद् । गुरन जधा फिरि धतौ ॥
 पावर सुगति धरतौ तनह । मन अगम गिरि चढ़न कौ ॥
 विचारि बत्त भवपित्त मन । तौ बैठति हम गढ़न कौ ॥ छ० ॥ २७४ ॥
 बालुकाराय की स्त्री का जयचन्द के यहाँ जाकर

पुकार करना ।

दूहा ॥ रन हारौ पुकार पुनि । गई पग पंधाहि ॥
 जग्य विध्वसिय नृप दुलह । पति जुगिनिपुर प्राहि ॥ छ० ॥ २७५ ॥
 इति कविचद विरचिते प्राथिराज रासके बालुकाराय बधनो
 नाम अडतालिसमों प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४८ ॥



अथ पंग जग्य विध्वंसनो नाम प्रस्ताव ।

(उंचासवां समय ।)

यज्ञा के बीच में बालुकाराय की स्त्री का
कन्नौज पहुँचना ।

दूहा ॥ जग्य उजाये अठ्ठ दिन । अठ्ठ रहे दिन अग्य ॥

तेरसि माथह पुष्ट पप । सुदर पुकारह जग्य ॥ छ० ॥ १ ॥

यज्ञ के समय कन्नौजपुर की सजावट बनावट का
वर्णन और जयचन्द को बालुकाराय के
मारे जाने की खबर मिलना ।

पहरौ ॥ तिन समय ताम कानवज नरेस । कृत काम पुन्य सज्जे असेस ॥
सँवर सँजोग सम जग्य काज । विद्युरिय रिद्धि गति विविध रोज ॥
छ० ॥ २ ॥

भृगारि सहर विविध विनान । आनद रूप रज्जे उतान ॥
तोरन अनूप राजै सु भाइ । जगमगत घम हिम जरित ताइ ॥
छ० ॥ ३ ॥

वासन विचित्र उतान ताम । मडण्य उच सज्जे सु धाम ॥
वासनह अने विधि बधि वान । सोभत धज्ज बधे सु थान ॥
छ० ॥ ४ ॥

क्षोनी पवित्र सूझी सवारि । द्रावै सु मंडि सुर सम अपार ॥
गावत थानथानह सु गोव । मगल अनेक साजौ सु भेव ॥
छ० ॥ ५ ॥

जलजात माल तोरन कुसुम्भ । बहु रंग विद्धि सोभा सुरम्भ ॥
आये सु नपति अनेक थान । उद्धार भति पिति आसमान ॥
छ० ॥ ६ ॥

संभर संजोग लब्धे सु भूप । संपत्त लाज हय गय अनूप ॥
 देवंत अति उत्तान थान । प्रगटंत अप्प गुन आसमान ॥ छं० ॥ ७ ॥
 चित्तै सु चित्त कमधज्ज राइ । केहरि कौंठेर वर भुक्ति काय ॥
 संजोग सज्जि नयती प्रकार । सम करह साज हय गय सुभार ॥
 छं० ॥ ८ ॥

वाजे अनंत बेज्जे विवान । बहु न्यथ पारत रंजंत सोन ॥
 कौतिग सु राज राजै अनूप । प्रतयंत कंठ सो दिष्ट रूप ॥
 छं० ॥ ९ ॥

भूलंत नेन देषत विनान । मगंम चित्त साक्य जान ॥
 आतस चरित्त साजे अनेव । नाटिक कोटि नाचंत मेव ॥ छं० ॥ १० ॥
 देषहि विवान साजहि सु देव । वानिय प्रसाद कछु कहिय गेव ॥
 इहि विद्धि सत्त अह वित्त आम । अस आइ कुकि पर दार ताम ॥
 छं० ॥ ११ ॥

कर पंग मग आगें सु वीर । सर सुकि मुकि सुमनं प्रसीर ॥
 सुनियै न सह नीसान भार । दरवार भइय इत्ती पुकार ॥
 छं० ॥ १२ ॥

तम पुज्जि ताम जैचंद राज । अवगुन अग्रग किन करिय काज ॥
 उच्चंत ताम धाहू सउत्त । चहुआन राव सोभेस पुत ॥ छं० ॥ १३ ॥
 सब देस भंजि षोषंद थान । बालुकाराय हनि देषि प्रान ॥
 छं० ॥ १४ ॥

सात समुद्रों के नाम ।

दूहा ॥ घीर नीर दधि ईष धृत । वारुनि समुद्र लवन्न ॥
 इन सत्तन सम जफाने । बोलिय कमध वचन ॥ छं० ॥ १५ ॥

दसों दिशाओं और दिग्पालों के नाम ।

कवि ॥ पूरव दिसि पतिइंद । अग्नि कूँनह अग्निनेयं ॥
 दक्षिण यम नैरति । कूँन नैरति सुनेयं ॥

पच्छिम अधिपति वरुन । वाय कूँन वहवान ॥

उत्तर हेरि कुबेर । कून ईसह ईसान ॥

ऊरु ब्रह्म पाताल नग । मान पडि दिगपाल कौ ॥

प्रथिराज काल्हि आनो पकरि । तौ जायौ विजपाल कौ ॥

छ० ॥ १६ ॥

अरिल ॥ द्रोनागिर हनुमत उपारिय । अहकार उर अतर धारिय ॥

कहत चद हरि गर्व पहारिय । सायक घाँचे भारथ बग मारिय ॥

छ० ॥ १७ ॥

बालुकाराय का वध सुनकर जयचन्द का क्रोध करना ।

पहरी ॥ दै अधर दत कपौ रिसाइ । बुल्लो सरोस कमधज्जराइ ॥

धन भरौ लख वे सरस बाउ । करि सवालाय नौसान घाउ ॥

छ० ॥ १८ ॥

सज्जौ गयद सतरि हजार । अरु असीलख तिये तुषार ॥

पाइक कोरि धानुख धार । स्वाकोरि सजौ बके सुभार ॥ छ० ॥ १९ ॥

नव कोरि जोरि आतस बाज । इतनौ सेन छिनमेक साजि ॥

पकरो दुअन जिन जाइ भाजि । पूनौ सु आत को ठोर आज ॥

छ० ॥ २० ॥

गहिलेउ पिसुन पारो विपत्ति । जैचद कोपि बोल्यौ नपत्ति ॥

॥ छ० ॥ २१ ॥

दूहा ॥ जिति जगत जैपत लिय । दिसि मुरधर उपदेस ॥

छिति रष्यन छिति परस बर । सुनि पगुरे नरेस ॥ छ० ॥ २२ ॥

यज्ञ का ध्वस होना और जयचन्द का पृथ्वीराज के

ऊपर चढ़ाई करने की तैयारी करना ।

पहरी ॥ थकि वेद वेन विमान गान । आनद सकल सुनिये न कान ॥

करि चपि राव मुकौ निसास । बिग्नय्यौ जग्य मच्ची विसास ॥

छ० ॥ २३ ॥

बंधों सु चंपि अब चाहुआन । विगन्यौ जग्य निहचै प्रमान ॥
 जोगिनी राज चित्रंग जोइ । बंधों समेत प्रथिराज दोइ ॥ छं० ॥ २४ ॥
 सन्नाह राज बंधौ स बीर । निवार करों चहुआन श्रीर ॥
 आहुठराज प्रथिराज साहि । पीलों जु तेल जिम तिल प्रवाहि ॥
 छं० ॥ २५ ॥

संभरि जुन्दाइ बुझाइ राइ । इक बत कहा पिय सुनहु आइ ॥
 सुनियै न पुन्य सभ मय्य राज । जुव जसि जुवति अति करिग साज ॥
 छं० ॥ २६ ॥

पुञ्छीस ताम संजोगि बत । कहि धाह कोन मोपित विरत ॥
 उच्चरी ताम सहचरी एक । बंधी सु राज प्रथिराज तेक ॥ छं० ॥ २७ ॥
 दिखी नरेस सोमेस पुत । चहुआन पान देखे सउत ॥
 बालुकाराव सभ्यौ सु तेन । षोषंद भंजि पुर लुट्टि रेन ॥ छं० ॥ २८ ॥
 यह राव सुन कर संयोगिता का अपने प्रण को

और भी दृढ़ करना ।

सुनि अवन बत संजोगि तथ्य । चितां सुचित्त गंधर्व कथ्य ॥
 संजोगि जोग बर तुम्ह आज । प्रित लयौ बरन प्रथिराज साज ॥
 छं० ॥ २९ ॥

द्रिढ करिय मंच सम चित्त अति । पितु विरत बुद्धि छंडौ विमति ॥
 संजोगि ताम जंघ्यौ सु एम । मानों सु मुग्गह इह द्रुह नैम ॥
 छं० ॥ ३० ॥

चहुआन सुवर मोसति भति । छंडौ सु अवर लालिच अति ॥
 इम जंपि मंच सा निज धोम । छंडेव अज्य विधि थाह काम ॥
 छं० ॥ ३१ ॥

दूहो ॥ गंठि जुन्दाइ उन्दाइ निजु । राइ बरन निज दान ॥

श्रुति अनुराग संजोगि कौ । करहु न प्रभू प्रमान ॥ छं० ॥ ३२ ॥

समय उपयुक्त देख कर जयचन्द का संयोगिता के स्वयंवर
 करने का विचार करना ।

कवित्त ॥ बालवेस बय चढत । अम्म रथ्ये न पुनि ग्रह ॥

भूमि भूमि निप मिले । जानि वातूल तूल तह ॥

बर सजोगि प्रनाइ । राज बध्यौ चहुआन ॥

बधि बीर प्रथिराज । जग्य मडौ परवान ॥

सजै जु काइ भजै कवन । का जानै किम होइ फिरि ॥

पुनीय स्वयवर मडिकै । फिरि बधौ दुज्जन असुरि ॥ छ० ॥ ३३ ॥

दूहा ॥ रह सुमत न्यप चिति मन । वजौ अवाजन साज ॥

सुनि सजोगि कुमारि ने । वृत्त लीनौ प्रथिराज ॥ छ० ॥ ३४ ॥

यह सुन करे सयोगिता का चौहान प्रति और

भी अनुराग बढ़ना ।

कवित्त ॥ जग्य विध्वसिय पग । दुअन ओतान बढाइय ॥

सुनि सुनि रह सजोगि । चित्त वृत्त लीय प्रवाहिय ॥

बरो कि बर चहुआन । वार षोज अम्म सारिय ॥

कै छण्यो देउ प्रान । बरो मनमथ्य विचारिय ॥

मन मक्त बत्त इत्ती करी । प्रगट न वल बालह करी ॥

पहुपग मत बहु मानि कै । राज राज उचित फिरि ॥

छ० ॥ ३५ ॥

दूहा ॥ पग सुयवर थपि तह । सुनिय गुन्दाइय बत्त ॥

बर कमोद जिम सुदरी । रचि वचननि सुनि गति ॥ छ० ॥ ३६ ॥

मा मुरछौ मुक्किय धरनि । सुनिय सजोइय बाल ॥

सुहन सुहदौ बतरी । भुअन परहौ भाल ॥ छ० ॥ ३७ ॥

अप्य स्वयवर की जरहि । सय मुक्किय अरि काज ॥

सबै बीर सथ्यह दए । रहि कनवज सु राज ॥ छ० ॥ ३८ ॥

हालाहल की कौज रत । तुतर किय चहुआन ॥

अप्य अप्य कौं हई गई । घर जगरी विहान ॥ छ० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलते समय शत्रु की फौज

से धिर जाना ।

कवित्त ॥ गथ जंगल जगलियं । राज निरेवास देस करि ॥
 राजा रैवन जुथ्य । गयौ प्रथिराज मंत करि ॥
 प्रजा पुलिंद नरिंद । समर रावर धर रापी ॥
 चीय चीय सावित्र । थान थानं नृप पापी ॥
 सम हथ्य जुथ्य कौ काथ्य गै । सुवर काथ्य कविचंद कहि ॥
 प्रथिराज राज अरु वीर गति । विपन भग्ग आषेट गहि ॥
 छं० ॥ ४० ॥

राव रोना का भाग जाना ।

काइर मुक्यौ नरिंद । पुहप परजंत मधुप तजि ॥
 सुके सर तजिहति हंस । दुग्ग वन भृगन पति भजि ॥
 ज्यों कलहीत सु पंघि । तजै तरवर नन सेव ॥
 द्रव्य हीन कौं गनिक । तजैत पथ्यर करि देव ॥
 जल तजत कुंभ ज्यों मिष्ट दुज । जग्य पवित्र न मानइय ॥
 भजि थान थान अरि अत गयं । वरे लालचि सु प्राणइय ॥
 छं० ॥ ४१ ॥

टूहा ॥ मानि प्राण कौ लालसा । तजि सार्ई सों हेत ॥
 छंडि गए कायर सबै । रहै स्वर बधि नेत ॥ छं० ॥ ४२ ॥
 केवल १०६ साथियों सहिते पृथ्वीराज का शत्रु
 पर जै पाना ।

कुंडलिया ॥ पालिज्जै लहु पुत्र लों । मानिज्जै गुरु जेन ॥
 वर संकट सो भूत ने । सार्ई मुक्यो तेन ॥
 सार्ई मुक्यो तेन । सिंघ नन होइ न भिक्ष ॥
 सौ समंत छह स्वर । समं प्रथिराज इकस ॥
 धर धूसे वर पंग । कोस पंची मालिज्जै ॥
 मिथ्यौ जग्य कामधज्ज । धज्ज बंधे पालिज्जै छं० ॥ ४३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पंग जग्य
 विध्वंसनो नामे उन वारामो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४९ ॥

अथ संजागता नाम प्रस्ताव लिख्यते ॥

(पचासवां समय ।)

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना और कन्नौज के गुप्त
चर का जयचन्द को समाचार देना ।

“दूह । ॥ तिहि तप आषेटक अमें । थिर न रहै चहुआन ॥
जोगिनिपुर जो रप्यनह । दस सामत प्रधान ॥ छ० ॥ १ ॥
दूत दोइ जुगिनि पुरै । गय कनवज फिरि दिप्यि ॥
ढिल्लीवै ढिल्ली चरित । कहें पग सो सिप्य ॥ छ० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलते फिरना और सांझ होते ही साठ
हजार शत्रु सेना का उसे आ धरना ।

कवित ॥ इह अप्पानी धत । बैर कहुँ चहुआन ॥
महि प्रात अरु सक्त । भयति कपै 'पगान ॥
पच अग पचास । सोर ढिल्लिय रचि गहुँ ॥
यों कहत दुत वीथ । आय बन बीर सु ठहुँ ॥
दुसमन दुरग दैवान गति । अव कुरग जम्मी ततरि ॥
गज फुका जेम पूजौ जु इम । चढि अरि समुह नप्य भिरि ॥ छ० ॥ ३ ॥
सिध वचन 'चर मानि । पान असि लप्य सु फेर ॥
सुवर तप्य चहुआन । कोइ समुह नन हेर ॥
मेद नपति करिपान । कल् लिन्नौ उर भान ॥
मिलि ततार कम्पुज्ज । तारि कहुँ चहुआन ॥
वर हस छिपत एकत्त निसि । प्रात अचानक बढियै ॥
ढिल्ली वज कर वज वर । सठि सहस भर चढियै ॥ छ० ॥ ४ ॥

(१) ए क को गगान ।

(२) ए वर ।

* मो प्रति का पाठ यहा से पुन. आरम्भ होता हे ।

सिलह अगें करि लीन । गाम भगगें उत्तारिय ॥

सोदागिर ईसब । 'वीर बढिउ जस भारिय ॥

अंधारी नव भार । अप्प दूनो संपत्ते ॥

अठ्ठ पारि वर चढ्यौ । 'भेस जू जू वर मत्ते ॥

संजुरन बेन कारन सव । भाग चवथ्यै चढ्यौ ॥

बाजीद घान लूखे मनो । चूक 'चोंक वर बढ्यौ ॥ छं० ॥ ५ ॥

सब सामंतों का शत्रु सेना को मार कर बिड़ार देना ।

पार पार बाजीद । धाड़ अप्पौ नर कोई ॥

चूक चूक चिंतयौ । सब सामंत जगोई ॥

चूक वीर मानि कै । वीर 'कैमास जु आइय ॥

खर खर आहुटि । 'सब हंसीरह धाइय ॥

वर दीन एक अहीन जुध । निसि समूह कलहत वजि ॥

वर जगा दहु बढ्ह परे । 'जहां तहां हिंदू सु भजि ॥ छं० ॥ ६ ॥

फिर कहंत वन वीर । चरित दिखी चहुआन ॥

अप्पन न्यप आपेट । खर समूह सुलतान ॥

वर दाहिम कैमास । सिंघ चौकौ वर घल्ली ॥

आय अब्ब सामंत । बंध प्रथिराज सु चल्ली ॥

वर साम दान अरु भेद ढँड । कांका बंका न्यप किजियै ॥

सामंत मंत बंधि सु मति गति । सामि सँग्राम न छिजियै ॥ छं० ॥ ७ ॥

सामंतों की स्वामिभक्ति का वर्णन ।

एकदेह पहुपंग । बंधि 'निशकर निसंका भरि ॥

दुतिय देह पज्जून । सुरभ कूरमदेव वर ॥

चतिय देह तूंअर । प्रहार पांवार सलखी ॥

चतुर देह दाहिम । धरन नरसिंह सु रखी ॥

(१) ए. क. को.-वीर बढी ऊस भारिय ।

(२) ए. क. को.-भेद ।

(३) मो.-चूक ।

(४) मो.-कैमासह ।

(५) ए. क. को.-हसारह ।

(६) ए. क. को.-“जह नह हिजव सु भज” ।

(७) मो.-निडर, निड्डर ।

पचमी देह कै मास मति । बर रघुवस कनक विय ॥

षट देह गौर गुजर अठिल । लोछानौ लगुरि सविय ॥ छ० ॥ ८ ॥

जयचन्द का अपने मंत्री से संयोगिता का स्वयवर
करने की सलाह करना ।

तब सुमत प्रधान । पग सब सेन बुलाइय ॥

जु कछु मत मतियै । मत चहुआन सु धाइय ॥

प्रथम मूल दिजियै । व्याल आवै कौ नावै ॥

जिनहि नाहि दिजियै । लाभ सुदरि अकरावै ॥

मोमत मत चितै नृपति । बाल स्वयवर किजियै ॥

तापच्छ सिध एकहुई । फिरि दुज्जन भिरि भजियै ॥ छ० ॥ ९ ॥

दूहा ॥ इतनी बत जैचद सो । कही सुमत प्रधान ॥

बत मन्त्री जैचद नैं । अतर मत भए आन ॥ छ० ॥ १० ॥

मानि मत पहुपग ने । महल कहल उठि जाइ ॥

बर सवर सजोग कौ । पुच्छि जुनाई आइ ॥ छ० ॥ ११ ॥

जयचन्द का संयोगिता को समझाने के लिये

दूती को भेजना ।

चौपाई ॥ सुनी जत बर बैर जुनाई । सहचरि चरी सुरग बुलाई ॥

कहि बर बर उतकठ सु वाला । चिते पुच्छि विविरि बर माला ॥

छ० ॥ १२ ॥

सहचरि चरित वरन मोकली । मनो हरि कामन हरी इकली ॥

छ० ॥ १३ ॥

सति करन चित हरन । सतिका नाक तिहि ।

वर सुमतिका नाम । प्रबोधनि नाम जिहि ॥ छ० ॥ १४ ॥

दूहा ॥ सुस्थ सु राजन सुस्थ चित । सुस्थ विलस न धीर ॥

पुरुष जु क्रम क्रम सचरै । नेन सुता पन पीर ॥ छ० ॥ १५ ॥

(१) ए ठ का सुन्दर । (२) ए क का त्वर । (३) ए कृ को चरन ।

* मालूम होता है कि उपर की चौपाई के दो अंतिम दो प्रथम पद भूल से खंडित हो गए हैं ।

वार्ता ॥ राजा आयस दीनौ । सहचरी सलाम कीनौ ॥
 हमारी सौध धरौ । 'संजोगिता' कौ हठ दूरि करौ ॥
 दूतिका के लक्षण और उसका स्वभाव वर्णन ।

नाराच ॥ परठि पंगराय दुत्ति पुत्ति आलि मुकने ।
 तिसाम दाम दंड भेद मारसी विचष्यने ॥
 बच्चन चित चातुरी न ताहि कोइ पुजई ।
 हरंत मान भेजका मनोहरन सुगगई । छं० ॥ १६ ॥
 अवन्न नेन सेन सेन तार तार मंडई ।
 अनेक विद्धि सिद्ध साध ईस ग्यान पंडई ॥
 अनेक भांति चातुरीनि वित्त चित्त चोरई ।
 छिनेक में प्रसन्नवै जु जेम मेन डोरई ॥ छं० ॥ १७ ॥
 कलककल अलाप जाप ताप धृत्त संसई ॥
 त्रिपंड ज्यों मिठास वास सासता प्रसन्नई ॥
 अनेक बुद्धि लुद्धि सब्ब मुच्छि काम जगवै ।
 सु पाठई चतुर बत्त प्रथममन्त्र लगवै ॥ छं० ॥ १८ ॥
 रहंत मोन मोनही हसंतते हसावही ।
 विधम जोग भोष तेज जोर सों नसावही ॥
 अगोन कंठ पोत रूप उत्तरं दिवावही ।
 कपट ग्यान बत्त मंडि हट्ट सों छंटावही ॥ छं० ॥ १९ ॥
 प्रचारिका सु चारि जाइ अंगनै समुगगवै ।
 अनेक चित्त चातुरी सु आप मन 'सुगगवै ॥
 ॥ छं० ॥ २० ॥

गाथा ॥ चंचल चित्त प्रचारौ । चंचल नैनीय चंचला बेनी ॥
 थावर चित संजोई । थावर गति गुह्य गंमाहि ॥ छं० ॥ २१ ॥

दूती का संयोगिता से वर्णन ।

रासा ॥ अलस नयन अलसायत आदुरु प्रप्य किय ।
 किम बुद्धिय मो तात सकिस्त्रिय एक हिय ॥

तब बाले वर तात सथवर मडइय ।

कहि वर उतकठाइ माल उर छडइय ॥ छ० ॥ २२ ॥

चौपाई ॥ मिलि मडल रोजान्न सु बरई । सो उच्छव बधे सकरई ॥

देपि वाम भोली तजि अग । ते जमे दरवारह पग ॥ छ० ॥ २३ ॥

दूती की बातो पर कुपित हो कर सयोगिता
का उत्तर देना ।

कवित्त ॥ दै वर सेन सँजोग । सपि सहचरि सम बुलिय ॥

अवुक्त धात वज्रपात । काम बेमो दुप भुलिय ॥

परसमाद कै कित्त । ताहि गग । गुन गावै ॥

बक्ति पूत रस पढत । क्रन हीनह समभावै ॥

सहचरिय बतनि सुनिय सुवर । चित चल चित वत्त न बकिय ॥

वर भई समक्ति सजोगि पै । फिरि उत्तर तिन तव्व दिय ॥ छ० ॥ २४ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा और सयोगिता के विचार ।

दूहा ॥ जे बधे पित सकरह । जे पड़े पित लोन ॥

ते बड्डी जन बापुरे । वरै सँजोगी कोन ॥ छ० ॥ २५ ॥

रे सह सह सहचरिय गुन । का जानौ कुल वत्त ॥

जे मो पित बापह कहै । तेमो बधव अत्त ॥ छ० ॥ २६ ॥

तिहि पुत्री सुनि गुन इतौ । तात बचन तजि काज ॥

कै वहि गगहि सचरौ । पानि ग्रहन प्रथिराज ॥ छ० ॥ २७ ॥

सुनत राज अचरजि किय । हिथै मनि अनराव ॥

हौ वरि अवरहि देउ वर । दैवै अवर सुभाव ॥ छ० ॥ २८ ॥

तब पगुरि मन पगु करि । धाइ सबुझि वत्त ॥

तुम पुत्री गुन जानि हौ । कारहु दूरि छठ इत ॥ छ० ॥ २९ ॥

सयोगिता का वचन ।

चंद्रायना ॥ मो मन मक्त गुरू जन गुम्भक्त सु तुम कहो ।

जयत लाजो जीह सु उत्तर लहु लहो ॥

सत सेन सामंत खर छह भंडलिय ।

बरन इच्छ वर मोहिय हंति अषंडलिय ॥ छं० ॥ ३० ॥

धा का वचन ।

दूहा ॥ अन दिषि वृत लीजै नहीं । तात मात ^१बरजन्त ॥

पच्छ मनोरथ पुजि है । मानि सीष धरि ^२मन्त ॥ छं० ॥ ३१ ॥

कवित ॥ बचन समुह संजोगि । बाल उत्तर उच्चरिय ॥

अजहूँ कनक समूह । तुच्छ जानै नर नारिय ॥

मलया ^३पाम पुलिंद । करै इंधन वर चंदन ॥

अति परचौ जिहि जानि । काच कौजै अलि बंदन ॥

सो सरै पंच पंचौ भयौ । परचै नहिं चहुआन किय ॥

संयोगि क्रमा वर पुण्य गति । तैंत अली अलि व्रत लिय ॥ छं० ॥ ३२ ॥

साहचरी का वचन ।

सहचरी वाक्य ॥ गाथा ॥ मुगधे मुगधा रसया । अवरं जे भिन्न रस एवि ॥

लहुआ लुहान पुतं । तूं पुती राज ग्रहायं ॥ छं० ॥ ३३ ॥

पृथ्वीराज के वीरत्व का संकीर्तन ।

संजोगिता का वाक्य ।

कवित ॥ जिहि लुहार सुनि दुत्ति । साहि शंकर गढ़ि बंध्यौ ॥

जिहि लुहार गढ़ि षग । पंग जगह घर रुंध्यौ ॥

जिहि लुहार सांडसी । भीम चालुक अहि साहिय ॥

जिहि लुहार आरन । वरै वर भानस गाहिय ॥

पावक सबर वर नैरि सह । अनि मंडि जिहिं वारयौ ॥

भव भूत भविष्यत व्रत मनह । कुल चहुआनह तारयौ ॥ छं० ॥ ३४ ॥

दूहा ॥ अथवा राजन राज ग्रह । अथवा माय लुहानि ॥

विधि बंधिय पटुल सिरह । इह सुष गंधव जानि ॥ छं० ॥ ३५ ॥

(१) ए. क. को.-गुरु जन्त ।

(२) ए. क. को.-मन्त ।

(३) ए. पर मर क. को.-पमर ।

साटक ॥ आरनी अजमेर धुम्भि धमनी, कर मडि मडोवर ॥
 मोरीरा मर सुड दड दमनो, अग्नि उचिष्टा करी ॥
 रनथभ थिर थभ सीस 'अहिन, ज्वलदिष्ट कालजर ॥
 कप्यान चहुआन जान रहिय, घडनोपि गोरी घडा ॥ छ० ॥ ३६ ॥

सखी का वाक्य ।

सखी वाक्य ॥ तो पुची मरबट्ट यट्ट सबले, नीमच वैरागरे ।
 कर्नाटी कर चीर नीर गहनो, गोरी गिरा गुज्जरौ ॥
 निमीवे हथलेव मालव धरा, मेवार मडोधरा ।
 जिता तातय सेव देव नपती, तत्वान्थन कि वरे ॥ छ० ॥ ३७ ॥

श्लोक ॥ नमे राजन सवादे । नमे गुरु जन आग्रहे ॥
 वरमेक स्वय देहे । नान्यथा प्रथिराजय ॥ छ० ॥ ३८ ॥

सयोगिता की सकोच दशा का वर्णन ।

कविता ॥ अवननि सहचरि वचन । चित गुस्जन सभारिय ॥
 रसन वचन चाहत । पन सु अप्पनौ विचारिय ॥
 समभिलाप गध्रब्ब । भयौ किल किंचित नारिय ॥
 नथन उमडि गल विद । बदन अक्ष परि भारिय ॥
 उपमान इहै कविचद कहि । बाल जदिन मुर सभयौ ॥
 उपफेन अमौ मझझह रह्यौ । ससि कलक उपफनिगयौ ॥ छ० ॥ ३९ ॥

द्विग रत्ने करि बाल । भोंह बकौ करि पिभिक्षय ॥
 सो ओपम वरदाइ । चद राजस मन भजिय ॥
 सैसव जुवन नरिद । परसपर लरत विआन ॥
 मनु सम रप्यत बाल । दुहुन सो पौक्षत आन ॥
 भोहनि तीर जाने छुरी । दुहुन बीच अड्यौ करी ॥
 सो रूप देयि सजोगि कौ । उठि सहचरि मतह हरी ॥ छ० ॥ ४० ॥

दूहा ॥ जा जीवन वतह वयन । वयन गये मृत होइ ॥
 जा थिर रहै सोई कहौ । हो पृछू तुम सोइ ॥ छ० ॥ ४१ ॥

सरखी का वचन ।

थिर बाले वल्लव मिलनु । जौ जुद्धनु दिन होइ ॥

* गयौ जुवन कछु बनत नहिं । रति मंझै घट लोइ ॥ छं० ॥ ४२ ॥

संयोगिता का वचन ।

रति आग्रह तिन सों करहु । जो तुम सपौ समान ॥

जवाब जवाब लजा करों । मों तुम तात प्रमान ॥ छं० ॥ ४३ ॥

सरखी का वचन ।

तोसों मात न तात तन । गात सुरंगरि याह ॥

यों जोवन अस्थिर रहै । अंब कि अंजुरियाह ॥ छं० ॥ ४४ ॥

साटक ॥ जाने मंदिर हार चार चिहुरा वाढ़ंत चित्तानलं ॥

जाती फुल्लय 'पंक जस्य कलया, कंदर्प दीपं प्रभा ॥

शंकारे अमरे उडंत बहुला, फुल्लानि फुल्लंतया ॥

सोयं तोय संजोय भोग समया, प्राप्तेवसंते छबी ॥ छं० ॥ ४५ ॥

संयोगिता वचन (निज पण वर्णन) ।

कुंडलिया ॥ कहि सजोगि सुनि बत इह । मरन सरन भुहि एक ॥

किम अनि रावह लम्बिहै । दुल्लह जनम विसेष ॥

दुल्लह जनम विसेष । लज्ज सिगारम थकी ॥

बाहियवत चहुआन । आस सासा जिय रुकी ॥

बर गुग्जन विसाहनौ । हिंदु हृद बद्ध हियौ ॥

सुक जाई सवरीस । उमै पच्छै श्रुति कहियौ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

साटक ॥ इंद्रो किं अलि अन्यईय अनयो, चक्री भुजंगा सुरं ॥

चच्छी चारु विचार चारु भंवरे, चिंचीनि बंका करे ॥

तस्थानं कर पाद पल्लव वसा, बल्ली वसंता हरे ॥

चतुरे तव चतुराइ आनन रसा, सा जीव महना वरे ॥ छं० ॥ ४७ ॥

दूहा ॥ अभ्र आइ पहुयंग कै । बर चहुआन सु लेषि ॥

सुधि नहीं किर बोलु तुहि । रन पतह करि देषि ॥ छं० ॥ ४८ ॥

श्लोक ॥ सवादेव विनोदेव । देव देवान रञ्छित ।

अनुमाने प्रथाने वा । प्रानेस ढिलीखरं ॥ छ० ॥ ४८ ॥

दूहा ॥ देहि सही सजोगि दै । निकटति पग कुमारि ॥

जुगिनिवै जीवन मरेन । लै अलि अश्व विचार ॥ छ० ॥ ५० ॥

दूती का निराश होकर जैचन्द से सयोगिता का

सब हाल कह सुनाना ।

सुनत सहचरी पुत्ति वच । विनसच पुत्ति उदास ॥

उत्तर दीन सु उत्तरिथ । पग नरिदह पास ॥ छ० ॥ ५१ ॥

दुत्तिन उत्तर उत्तरिथ । बुद्धि वध परमान ॥

नट्य आगे बढिय न कछु । उत्तर दियौ न आनि ॥ छ० ॥ ५२ ॥

सयोगिता के हठ पर चिठ कर जयचन्द का उसे

गंगा किनारे निवास देना ।

सहचरि पग नरिद सजि । कहिय आइ अलि जाइ ॥

वर सजोगि न मानई । चित्त करहु समझाई ॥ छ० ॥ ५३ ॥

तव भुकि पग नरिद ने । तट गंगा किथ गेह ॥

कौ बुडवि जल मझि परै । कौ नैन निरप्ये देह ॥ छ० ॥ ५४ ॥

पोडस दान समान करि । दीने दुजवर पग ॥

धन अनप चहुआन कै । रप्यि सुरौ तट गग ॥ छ० ॥ ५५ ॥

गंगा किनारे निवास करती हुई सयोगिता को पाठिका का

योग ज्ञान उपदेश ।

भुकि तकिए गंगा तटह । रचि पचि उंच अवास ॥

चहति गहौ चहुआन कौ । मिटै बाल उर आस ॥ छ० ॥ ५६ ॥

भुजगी ॥ किए गग तट अवास सजोगी । रही सातपन्ने रु छडीं समोगी ॥

वसतारिवास दई सत दासी । वीथ बमनी मद्द नादीय पासौ ॥

छ० ॥ ५७ ॥

तिथ पान पानी सर्य दुद्ध धारै । करै वत बाला रहीता अधारै ॥

करै जोग ध्यान सलेष अलेष । सोइ सुष्यन चित्त चौहान देष ॥

छ० ॥ ५८ ॥

फिरै पंथिनी जीव जा ज्यों प्रमानं । इकं यदृ ध्यानं धरै चाहूँ आनं ॥
दलं पुब्व सेतं अवं दृन्न राजै । जदं ताव द्वार सिंधारेज साजै ॥

छं० ॥ ५८ ॥

दलं रत्न तायं गुनं होइ जब्बं । तवे नीद आलस्य आवै जु सब्बं ॥
दलं दक्षिणं रूप हब्बी प्रमानं । तहां क्रोध उप्पन्न सो मूढ़ जानं ॥

छं० ॥ ६० ॥

दलं ता वनै रत्ति नीलं बरानं । तहां पत्त उग्गं भनं जंम रानं ॥
दलं पच्छिमं स्याम वर्णं विराजै । तहां हास उग्गै विनोदंत साजै ॥

छं० ॥ ६१ ॥

दलं बाय कोनं नभं रंग साजी । तहां चिंति चितं उचाटं विचारी ॥
दलं उत्तरं पीत दृन्नक लज्जी । तहां भोग सिंगार कंचित्त भज्जी ॥

छं० ॥ ६२ ॥

दलं गौर दृन्नं इसानं जु होई । तहां लज्जा संका सु संगी सजोई ॥
संधी संधि दृन्नं मनं मद्द होई । तहां रोग चिंता चिदे।पं सलोई ॥

छं० ॥ ६३ ॥

इसो अंबुजं सास मन्नं वनाई । तहां मर्द अंसौ सुअं लोक पाई ॥
काहै बंभनी भोग संजोग सिध्दी । तहां गेन बंधं स्वयं जोति लप्पी ॥

छं० ॥ ६४ ॥

रांयोगिता का अपना हठ न छोड़ना ।

चौपाई ॥ तब इका दिन इम बंभनि बोलिय । सुत्तिय मन चहुँ आन संजों लिय ॥
कौ चहुँ आन ग्रहों कर राखिय । ना तए दृत्त संजोग सु हसिय ॥

छं० ॥ ६५ ॥

सुनि फुनि राज वचन इम जंपै । थर हर धर दिस्सिय पुर कंपै ॥
ज्यों रवि तेज तुच्छ जल मोनह । पंग भयं दुज्जन भय छोनह ॥

छं० ॥ ६६ ॥

इति श्री कवि वंद विरांचेते प्रथिराज रासाके रांयोगिता नेम
आवरनों नाम पचासमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ५० ॥

अथ हांसीपुरप्रथम जुद्ध नाम प्रस्तावलिप्यते।

(इक्यावनवां समय ।)

दिल्ली राज्य की सरहद्द में कन्नौज की फौज का उपद्रव करना ।

दूहा ॥ दुहि फौज जैच द फिरि । वर लभ्यौ चहु आन ॥

चंपिन उप्पर जाहि वर । रहै ठठुकि समान ॥ छ० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ मास एक पहुपग । फवज आहटि सु पुच्छी ॥

ढौली ते पच कोस । रक सुट्टी गहि लच्छी ॥

फिरि आए न्य पास । देस दोज अरि वस्ते ॥

राह रूप प्रथिराज । जगि पगह गहि गच्छे ॥

निम्मान भान क्लरम भुज । हासीपुर न्य रथियै ॥

सामत सबै कैमास विन । दुज्जन मुष्य सु दिष्यै ॥ छ० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का हासी गढ की रक्षा केलिये सामंतों को भेजना ।

हासीपुर सामत । कन् रथ्यौ परिमानं ॥

रथ्यौ भीम पुँडौर । सलय रथ्यौ सुत भान ॥

रथ्यौ जैत पवार । कनक रथ्यौ रधुव सो ॥

रथ्यौ देवह क्रान । रथ्यि उद्दिग क्रान गसी ॥

वगरी राव रथ्यौ न्यपति । रा चामड सु रथ्यियै ॥

सामत खर तेरह चिगढ । गोरो मुप दह दिष्यै ॥ छ० ॥ ३ ॥

हासीपुर का मोरचा पक्का करके पृथ्वीराज का शिकार

खेलने को जाना ।

दूहा ॥ न्य आषेटक मडि कै । दिल्ली रथि कैमास ॥

पच पच सामत सह । जुगिनि पुरह अवास ॥ छ० ॥ ४ ॥

दिल्ली वै आषेट वर । पहुपगनौ जु चास ॥

नैर सु रथ्यौ सेन सह । न्य हासी पुर पास ॥ छ० ॥ ५ ॥

कवित्त ॥ चढ़ि चहुआन नरेस । भंजि मैवास सबै वर ॥
 गुज्जर गोरी पंग । देस दच्छिन सु पति धर ॥
 विषम वाप ज्यो तूल । मूल सब अरिन उड़ाइय ॥
 बीर भोग वसुमती । बीर रस बीर अघाइय ॥
 चामंड राव गोरी दिसा । भोज कुँअर ढिखी करी ॥
 सामंत खर असिवर बलह । हांसीपुर अग्रह धरी ॥ छं० ॥ ६ ॥
 चहुआना समखर । सबै सामंत धरिवारं ॥
 सगपन सम जुत लाज । समै सामंत पुब धारं ॥
 आदर वर चहुआन । हथ्य अप्पे सुरतारं ॥
 हंस किरनि सम राज । राज सोभै हज्जारं ॥
 आसनी सीस हांसी पुरह । वर वरपै सुरतान दिसि ॥
 सत पच खर संग्राम रवि । सो नतु दै दैही प्रहसि ॥ छं० ॥ ७ ॥

बल्लोच पहारी का शहाबुद्दीन के साथ हांसी गढ़ पर
 पढ़ाई करने का षड्यंत्र रचना ।

हांसीपुर सामंत । सुनिय बालोच पहारी ॥
 है मारु पतिसाह । तेन वेगम पय धारी ॥
 अति बलवंत बलोच । भेद दीनौ पतिसाहं ॥
 हांसीपुर हिंदवान । देस अरि मिष्ट सुगाहं ॥
 तुम हुकाम जुड इन सों करो । अरु वेगम सथ्ये सुभर ॥
 मिलि सबै मंत तंतह करै । तौ कहुँ हांसी जु धर छं० ॥ ८ ॥
 दूह । ॥ हम सुमिया भुसवट कारहिं । तुम सहाय हम भीर ॥
 सब पंधार बलोच मिलि । घनि कहुँ ग्रह तीर ॥ छं० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज का एक वर्ष अजमेर में रहना ।

इक बरष प्रथिराज वर । रंछौ ग्रह तिप यान ॥
 चावहिसि धर भुगवै । वर इच्छा धर भान ॥ छं० ॥ १० ॥
 घर बीतिय सतिय छुरी । धर नागौर निधान ॥
 जिन भुजान ढिखी धरा । ते रष्ये परिमान ॥ छं० ॥ ११ ॥

बलोच पहार का पत्र पा कर शहाबुद्दीन का प्रसन्न होना ।

कवित ॥ यो चाहै नृप खर । चद चाहै चकोर मुष ॥
 बूडत नाव सु कीर । हथ्य वोहिथ्य बीर रूप ॥
 खकत नाजह भेध । प्रज्ज सारी अभिलापै ॥
 आहत तत्त अतरे । बाल सभृत गुन चापै ॥
 देपियै दुनौ चहुआन मुष । लज्ज पति परवत सु गुर ॥
 मका चलाइ बेगम नृपति । तत्त कथा आहत सुर ॥ छ० ॥ १२ ॥

शहाबुद्दीन का अपनी बेगमों को मक्के को भेजना ।

भुजगी ॥ सय सत बेगम दीनी नरिद । तिन लज्ज पानी मुष मेछ इद ॥
 मह बट्टि डट्टी लज मुष्य राची । दियौ पान निसुरति जा मुक्ति जाची ॥
 छ० ॥ १३ ॥
 भियानेति पन्नी किरं रान भट्टी । जुलाची चिकत्त विराजी सु घट्टी ॥
 मह माहु मती सु सामत भ्रम । दिये साहि गोरी सक बीर ब्रम ॥
 छ० ॥ १४ ॥
 घने हेम हून विभूती निनारी । तिनं देपि वब्बर अछ प्रहारी ॥
 मय मोह मका तिनी जात मन्नी । विय गेह ब्रम कम जात छिन्नी ॥
 छ० ॥ १५ ॥

हांसीपुर मे उपस्थित पृथ्वीराज के सामंतों का वर्णन ।

मोतीदाम ॥ मय वृत मध्य महा रस वान । उथौ अनु चद कलानि पिछान ॥
 हस्यौ नर बाहन नाग नरिद । सु मोतीयदाम पय पय छद ॥
 छ० ॥ १६ ॥
 रहे बर खर कलानिधि राज । मनो नृप तेज उदै गिरि साज ॥
 रहै अरि आसिय आसिय खर । मनो पवनसुत पश्य मूर ॥
 छ० ॥ १७ ॥
 रह्यौ बर बीर सु चामँडराइ । मनो सत पुत्र तिन धूम चाय ॥
 रह्यौ बर बीर चदेलाति खर । अरौ वन बाहन ज्यो नद पूर ॥
 छ० ॥ १८ ॥

विधि विधिना परिमान । देव देवा दिसि सगे ॥
 सुध मध्य विषम धियपति न्यप । परषि रघौ दिल्ली न्यपति ॥
 अगार सु सकल सुरतान की । दिपति दीप दिव लोक पति ॥ छ० ॥ २६ ॥
 बलोच पहार का आही वगमो के लिये ररता देने को
 पञ्जूनराय से कहना और रघुवंस राम का
 उससे नाही करना ।

मध्य पय सभरिय । चलन वेगक अधिकारिय ॥
 मिलि बलोच पाहार । राव चामड सु धारिय ॥
 जु कछु भेद सग्रह्यौ । दियौ तिन भेद प्रमान ॥
 विन अथा सामत । जगि लगिय आपान ॥
 बरजय राम रघुवंस गुर । गामौ बल लगा विहसि ॥
 पञ्जूनराव पावस पहर । अमर मोह भूले रहसि ॥ छ० ॥ २७ ॥
 दूहा ॥ सो नागौर सु रषि न्यप । अप दिल्ली पुर पास ॥
 न्यप अथा विन स्वर भर । करिग अटत सु वास ॥ छ० ॥ २८ ॥
 बड़े साज बाज के साथ वेगम का आना और चामडराय
 का उसे लूटने की तैयारी करना ।

कवित्त ॥ चदि मक्का वेगम । साहि जननी अधिकारिय ॥
 अति सु भ्रम माया न । क्रम विद्यान विचारिय ॥
 अष्ट लब्ध हाहून । पट्ट विय द्रव्य रजकिय ॥
 सो हथ्यौ बर बाज । जाइ पयह सा थकिय ॥
 सभरि सुकान चामड न्यप । लच्छि लोभ बल मत्त मुनि ॥
 बरजयौ बीर रघुवंस नर । तौ पनि चढ्यौ अभ्रम गनि ॥ छ० ॥ २९ ॥

वेगम के पडाव का वर्णन ।

साटक ॥ पास साइर भार मध्य सधन, पानीय मिष्टि गुन ॥
 एक रूपय रेख साहस विधि, रम्य हरम्य तल ॥

जानिजै वन हंस अग्न चकिती, नोरा वराधिं गुनं ॥
 साते तेज फिरता अंग समयं, अयं सु वेगम सुभं ॥ छं० ॥ ३० ॥
 बलोच पहारी का सामंतों के पारा जाकर शाह का
 वर्णन करना ।

कवित्त ॥ पाहारी बलोच । पास सामंत सपन्नौ ॥
 साथ अग्न सुरतान । भेद करि भेद सु दिनौ ॥
 है आभिष्ट सुवास । तमकि सब बीर सु हस्त्रिय ॥
 भर गोरी सुरतान । संग पुरसान सु चस्त्रिय ॥
 बर उमगि लच्छि गोरी ग्रहै । हों धंधार अगियान वर ॥
 सोधीर कोन चहआन कौ । लोइ लंक लुट्टे सधर ॥ छं० ॥ ३१ ॥
 सामंतों का रात को धावा करके वेगम को लूटना ।

तब सामंत सु तकि । चूक चिंतिय सब धार ॥
 अइ रयनि परि सोइ । जौर हिंदू भर आए ॥
 ग्रहि वेगम सब सस्थ । लुट्टि लिये पास धजीना ॥
 भजि बलोच केइ अहुगिह । सु वर रत्नी वह दीना ॥
 बुंवार सह दस दिसि भइय । अन चिंतत अनवत्त इय ॥
 दैवत्त गत ऐसी हुइय । लहिय 'घत्त रतवाह दिय ॥ छं० ॥ ३२ ॥
 दूहा ॥ इह कहंत पुकार वर । पाहारिय सौं घेद ॥

वेगम लुट्टि नरिंद भर । लूटि लच्छि भर भेद ॥ छं० ॥ ३३ ॥
 कवित्त ॥ पज्जूना कूरंभ । सबै सामंत हटकिय ॥
 सब अभंग सामंत । अग्न वन जग्न भटकिय ॥
 बारह पान बलोच । कंध संगह दिषि आइय ॥
 बिन अग्या प्रथिराज । मुकि हांसीपुर धाइय ॥
 उत्तर सुमग्न वंधी विषम । अइ सेन उपर परिग ॥
 वेगम लुट्टि वंधिप सथन । लच्छि अमगत सह भिरिगि ॥ छं० ॥ ३४ ॥
 दूहा ॥ अचरज सब सामंत कौं । कहि अव गुजार राम ॥
 जनति सुभर सुलतान कौ । अरु भर अवधह वाम ॥ छं० ॥ ३५ ॥

बिन पुरखै बड गुजरह । चूक कयौ सामत ॥

तिन सो ए वत्ती कहौ । गुन में दोस दियत ॥ छ० ॥ ३६ ॥

वेगम के सब साथियों का भाग जाना और वेगम का
सामतों से प्रार्थना करना ।

कवित्त ॥ भग्ना वर सब सध्य । रही वेगम अधिकारिय ॥

मृतक अग सग्रह्यौ । सख किन ग्रहि न हकारिय ॥

बार बार दिपि समुप । चीर द्रपदि ज्यो पचत ॥

उहित सह गोथ द । इहित पुहाय सु उचत ॥

अलख रु राम इकै निजरि । विषय बध बधे चलहि ॥

साधु म पथ जू जू कियो । मुगति पथ एके पुलहि ॥ छ० ॥ ३७ ॥

मुगति पथ नह भिन्न । एक पथ अधिकारिय ॥

एक नरक सग्रहै । एक मुक्तिय सु विचारिय ॥

अत हरअ है तिरै । कम्भ भारो सो बुडै ॥

हक अस सग्रहै । अहक सा पुरिसह छुडै ॥

ससार सकल बुझौ फिरै । कहै बध बध्यो न किहि ॥

बुडै सु इक सारग सुक । सु बुधि बुद्ध तत्तह लहहि ॥ छ० ॥ ३८ ॥

चौपाई ॥ असु सारग पत्तियै बधि । उडै साध है रायै सधि ॥

यो न विचारि सु चामड राइ । भेख कम्भ लग्गे गुन चाइ ॥

छ० ॥ ३९ ॥

धन द्रव्य लूट कर चामंडराय का हासीपुर को लौटना

और वेगमों का शहाबुद्दीन के यहा जा पुकारना ।

कवित्त ॥ लूटि सवर चतुरंग । लइय चामंडराय सधि ॥

मुकै कौ सग्रहै । के विषडे के विधि विधि ॥

के अहत किय लखि । केन लखीति समर्पिय ॥

फिरें सब पुरसान । दिसा गजनी स रथिय ॥

मावित्त मत कीनी नही । हैगै विधि लग्गे वियम ॥

चामंडराइ दाहरतनौ । मत मची कीनों सुयम ॥ छ० ॥ ४० ॥

चौपाई ॥ तजि गाम लुटिग बर संगी । हथ भिष्टन सब सस्य सुरंगी ॥

हांसियपुर फेरिय सुरथानं । पुकारौ गोरी सुरतानं ॥ छं० ॥ ४१ ॥

दूहा ॥ हीन बदन पत्नी तहां । जहँ गजनी सहोब ॥

सुद्धि बुद्धि पुच्छिय सकल । विवरि देत सब ज्वाब ॥ छं० ॥ ४२ ॥

बेगम का शाह के सुखजीवी सेवकों को धिक्कार देना ।

साटक ॥ ऐ गोरी सुरतान साहिब बरं । साहाब साहाबनं ॥

जैनं जीवत तस्य सेवक दृतं । मानस्य मर्दं जगं ॥

बीयं जाचत अर्थ बीय घनयो । घन पोषि जीवी धिंगं ॥

धिगता तस्यय सेवकाय वरयं । ना दीन सामानयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥

अरिस्त ॥ राजा पंडन मान प्रमानं । अग्या भंगन तस्य निधानं ॥

सो अप मृत्यक मृत्य समानं । आन सुनत सेवक न मानं ॥ छं० ॥ ४४ ॥

दूहा ॥ विष्णु सु पंडन वेद बर । नर पंडन निर ग्यान ॥

चिय पंडन इह में सुन्यौ । धिग जेवन सुरतान ॥ छं० ॥ ४५ ॥

माता के विलाप वाक्य सुन कर शाह का रांकुषित
और क्रोधित होना ।

दूहा ॥ पातिसाह अवनन सुनौ । जंपी मात निधान ॥

में ग्रम्भह गुरुयौ धन्यौ । सुंठिन षड्डी षान ॥ छं० ॥ ४६ ॥

कवित्त ॥ धरत ग्रम्भ दस भास । उदर भोगवै दुष्प तन ॥

सीत जाल बर उल्ला । सवर बरिषा सुमत्त मन ॥

ता जननी दुष देइ । पुत्र ग्रम्भं अधिकारिय ॥

ताहि पुत्र कौं गति । न साहि निहचै विचारिय ॥

सामृत्य काल बंधेति नक । कहत नयन गद गद बयन ॥

कहते सु वचन आवै नहीं । दिन विवान देषे सुपन ॥ छं० ॥ ४७ ॥

दूहा ॥ जाचंग्या प्रति दीन सों । करत सु देखी मात ॥

सुनि गोरी सुरतान कौ । भय तामस तन रात ॥ छं० ॥ ४८ ॥

शहाबुद्दीन का अपने दरबारियों से सब हाल कहना ।

गाथा ॥ सुनि गोरी सुरतान । सुनि साहाब खर सव्वान ॥

जा जीवत धरवान । भुगौ को तास अप्रमान ॥ छ० ॥ ४८ ॥

अति आतुर अप्पान । पानन पान पाइय पान ॥

हियै धकि धकि लगि कपान । दीय पवरि सवै फुरमान ॥

छ० ॥ ५० ॥

पक्षरी ॥ सुनि अवन खर साहब साहि । धकधकी लगि रस बीर छाहि ॥

प्रजरे रोस द्विग रत कोन । सौची कि अगि घृत होम दीन ॥

छ० ॥ ५१ ॥

तमतमे तेज वर भर करूर । बदन फट्टि किरने कि खर ॥

विफुरै हथ्य रस बीर पग । लधने सौह हथवार तग ॥

छ० ॥ ५२ ॥

फुरमान फट्टि पुरसान पान । वज्जेव सोर सुरवर निसान ॥

रतरे रपत उठे प्रमान । भदव कि मेघ धन रग आन ॥

छ० ॥ ५३ ॥

तगारपान सुविधान मीर । इहि रति मड बैर म तीर ॥

मची जु मच जेमत रूप । बोलियै सही सुविधान भूप ॥

छ० ॥ ५४ ॥

दरवार भीर गजवाज लोइ । पावै न मग भर सुभर कोइ ॥

पोलिथहि पग हथगय पलान । किरनानि किरन दुरिर छौ भान ॥

छ० ॥ ५५ ॥

बधौ समेत सामत खर । सुविधान साहि बोल्यौ करूर ॥

छ० ॥ ५६ ॥

शहाबुद्दीन का 'माता' की मर्यादा कथन करके

दिल्ली पर चढाई के लिये तैयारी का हुक्म देना ।

कवित्त ॥ हिरनकुस पाताल । जाय पग जग मडाइय ॥

सोवनपुर सुर लूटि । पकरि चिय काथा घाइय ॥

नारद आइ छंडाय । भयौ ग्रहलाद पुन तस ॥
 तिहि जननी संग्रहन । सुने उर मद्धि रेखि गस ॥
 मधवान सहित दिगपाल दस । मात वयर कज भंजि जिम ॥
 सुरतान कहत बहुआन भर । हों पनि गंजहु अब्ब इम ॥ छं० ॥ ५७ ॥
 थान थान फुरमान । फट्टि बंधन हिंदू दिय ॥
 विधिना सो निम्नयौ । भेटि सकै न दिषौ दिय ॥
 इला नाम धरि हियै । भेछ पुरसानह जोरिय ॥
 ज्यों वराम उच्चरै । सेन वोरन गढ़ तोरिय ॥
 हका हलाल बोलै न मुष । काफर एधर वर भई ॥
 दह बड़ै स्वर हम साहि कर । तो सलाम कर सुभभई ॥ छं० ॥ ५८ ॥

ततार खां का शाह की आशा । गान कर मदद के लिये
 फरमान भेजना ।

दिष ततार दह करि । सलाम उचार वरजिय ॥
 रहि न बोल ज्यों साहि । दिया उचार जु हकिय ॥
 धां ततार वरजे निसान । आसन उर पानं ॥
 जु कछु मत्त मत्तियै । हुकम दीना सुरतानं ॥
 मक्का मुकाम पीरान कौ । करिव आन बल बंधियै ॥
 मादरं पिदर मानें न दर । निमका हलाल न संधियै ॥ छं० ॥ ५९ ॥
 दूहा ॥ थान थान फुरमान फटि । बंधन हिंदु नरिंद ॥
 दै दुबाह सो निम्नयौ । को कहुँ कविचंद ॥ छं० ॥ ६० ॥
 कोक कहुँ विधिना लिषी । आज साह बल तेज ॥
 मानों सोत समुंद ने । तजि मजोद अमेज ॥ छं० ॥ ६१ ॥
 मरजादा सत्तों समुद । अमित उलंधी आज ॥
 मानों घन के देव दुति । नाग विरोधन पाज ॥ छं० ॥ ६२ ॥

शहाबुद्दीन की दृढ़ता का बखान ।

कवित्त ॥ नाग भूमि सिर तजै । चंद छंडै सुचंद कल ॥
 कलिन मान उभाई । पथ्य मुकै सुवान छल ॥

रघु सुग्यान छडई । भीम छडै बल वधै ॥

रूप छडि मारद । कद छडै हर सधै ॥

मुकै जु जोग जोगिद ज । कर पारस्त छडै गुनह ॥

इतने धीर छडै जदपि । साहि न कस मुकै मनह ॥ छ० ॥ ६३ ॥

दूहा ॥ मन मुकै सुकै सुदत । दत गोरी सुरतान ॥

सकल सेन सज्जे न्वपति । सुनहु तौ कह प्रमान ॥ छ० ॥ ६४ ॥

शहाबुद्दीन का राजसी तेज वर्णन ।

मुनिय मीर मीरन चवै । देपि सप्पिरह मीर ॥

जितौ कस सुरतान कौ । तितौ न दिष्यौ तीर ॥ छ० ॥ ६५ ॥

पहरौ ॥ देख्यो न जाइ आलम अदब । अरहरे भेष्य पुरसान सब ॥

कर जोरि जोरि सब रहे ठट्ट । उचरै सेन बोलत गट्ट ॥

छ० ॥ ६६ ॥

उभै सुमीर ढिग ढिग विसाल । बोलै न मुख सनमुख काल ॥

सुरतान निजरि बर भई ताम । दह बैर स्वर बर करि सलाम ॥

छ० ॥ ६७ ॥

अगुरी टेकि इल पा ततार । दह करि सलाम बोलथति बार ॥

जिय हुकाम जोइ सो मोहि देउ । उचरो मत सोजीव हेउ ॥

छ० ॥ ६८ ॥

शहाबुद्दीन का अपने योद्धाओं की खातिर करना ।

दूहा ॥ चौसठि बैर सुदत बर । फेरि फेरि सुरतान ॥

सो पहराए मत्त गुर । दै किताब परिमान ॥ छ० ॥ ६९ ॥

दै किताब पहिराइ चर । नर नरपति मन साहि ॥

आसी पुर जो भजई । इहै तत्र गुन आहि ॥ छ० ॥ ७० ॥

शहाबुद्दीन का अपने मंत्री से वीर चहुआन पर अवश्य

विजय प्राप्त करने का तरीका पूछना ।

सुन्यो मच मंत्री सुमत । कहत मच सुरतान ॥

जौ अंगन प्रति भंजियै । लिये ग्रह परिमान ॥ छं० ॥ ७१ ॥
 कवित्त ॥ पति प्रमान हकरिय । करिय जंगम सु सत गुन ॥
 अरि आवत संग्रहै । कागा चंपै सु काल मन ॥
 अरि निदुहुर साहरी । सबल मंची दृष्ट्यन ॥
 इतें होइ जो हथ्य । अरिन ग्रह संच सकै धन ॥
 जम जोति दून दह मंत गुन । सति मस्तरति बोलि बर ॥
 ततार घान पुरसान पति । करों मंत जा लेय धर ॥ छं० ॥ ७२ ॥

राज मंत्रियों का उपयुक्त उत्तर देना ।

न्यपति न्यपति जो होय । सोइ नह राज राज बर ॥
 चपति ग्यान जो होइ । वेद संग्यान तत नर ॥
 बेरं कोविद अछरि । काम अचपतिध म सुंदरि ॥
 इतें न्यपति जो होइ । भए न्यप तौर समुंदरि ॥
 तिहि कहे घान ततार बर । आसीपुर भंजन बलह ॥
 ता पच्छ लगे दिखि धरा । बैर वत बुझगै पलह ॥ छं० ॥ ७३ ॥
 दूहा ॥ षां ततार जंपै सुवर । हम बंदे सु विहान ॥
 जु कछु साह अग्या दियै । करे वने हमान ॥ छं० ॥ ७४ ॥
 सुने अवन ततार बच । हिंदवान लै जाइ ॥
 मात रीस बेगम भिटै । सोइ सु लुट्टै जाइ ॥ छं० ॥ ७५ ॥

शाह का ततार खां से प्रश्न करना ।

षां ततार वर बेन सुनि । दै आसन अरु पान ॥
 जु कछु मंत तुम उचरौ । सोइ करै सुविहान ॥ छं० ॥ ७६ ॥
 ततार खां का आसीपुर पर चढ़ाई करने को कहना ।

जवित्त ॥ करि सलाम ततार । मतौ सैमुह उचारिय ॥
 लच्छि सुभर प्रथिराज । सबै हंसीपुर धारिय ॥
 हसम हयगय मीर । सज्जि चतुरंग सेन बर ॥
 मीर बँदा पुरसान । मुकि रहै अप अर धर ॥
 सामंत बंध सुनि साहि बर । तब नरिंद अप्पन चढ़ै ॥

सो मति मत बधै नृपति । किति बोलि 'भर तर पढै ॥ छ० ॥ ७७ ॥
 हांसीपुर पर पढाई होने का मसौदा पक्का होना ।

या हसेन आहत मन । सुमति कियौ परिमान ॥
 आसी पुर भजन भरै । इह करि मत निधान ॥ छ० ॥ ७८ ॥

शहाबुद्दीन की आशा ।

कवित्त ॥ रे अमत ततार । मतौ जानै न प्रमान ॥
 ए हिंदू हम बधि । सीस लग्यै असमान ॥
 हम दल भजत देयि । तुम्ह गिनियै तिन मान ॥
 अब हम बचि कुरान । फतेनामा धरि पान ॥
 पापड सख अग्यो छिपै । मे भजो दुज्जन अरौ ॥
 चहुआन सेन हांसीपुरह । लुट्टि गाम उम्मा भरौ ॥ छ० ॥ ७९ ॥

ततार खा की प्रतिज्ञा ।

हांसीपुर पुर विपुर । करो सु विधान तेज वर ॥
 तो गजानिय सुद्ध । हासि भडौ जु अण्य धर ॥
 अरि भजे तन भजि । मार मारह करि मोरों ॥
 जौ बंधो सामत । साहि तसलीम सु जोरो ॥
 ता दिवस पान ततार हों । धार धार चढि उत्तरो ॥
 सुविधान आन चहुआन सों । जौन जुद्ध इतौ करो ॥ छ० ॥ ८० ॥

शाही दरवार में बलोच पहारी का उपस्थित होना ।

दूहा ॥ पाहारी बल्लोच तहँ । करि सलाम सुरतान ॥
 हम बदे हाजुर निजरि । दै हांसीपुर थान ॥ छ० ॥ ८१ ॥
 कवित्त ॥ सत बेर पाहरी । तेग बधौ जु अण्य कर ॥
 सब बहों सामत । बीटि पुरसान देउ धर ॥
 वान साहि साहाव । बीय सन मज्जिय अप्पिय ॥
 पा पुरसान ततार । पान विय सरद सु धपिय ॥

चतुरंग अनीं हिंदू दिसा । बर गोरी सजिय सुबर ॥
 जुमा रति ससि बंदि बर । चढ़े सेन सु विहान भर ॥ छं० ॥ ८२ ॥
 गजनी के राजदूतों का सिंध पार होना ।

दूहा ॥ सिंधु भुक्ति गये दूत बर । तजि गोरी सुरतान ॥
 कौ विधि पवर्त चंपई । अवनी उनमी भान ॥ छं० ॥ ८३ ॥

यवन सेना का हिंदुस्तान की हद्द में बढ़ना ।

कवित्त ॥ कूच कूच उप्परे । पान पुरसान ततारी ॥
 हसम हयगगय खर । दुसह दुजान मंकारी ॥
 दल बहल सु विहान । खर पच्छिम दिसि उठे ॥
 खज संकर गल बंधि । सिंध मद नद सु छट्टे ॥
 दिसि दुरग अभंग हांसीपुरह । सजिय सेन संमुह धवै ॥
 धर दहन बीर चहुआन की । हठ ततार संमुष चवै ॥ छं० ॥ ८४ ॥

तत्तार खां और खुरसान खां की अनी सेनाओं का
 आतंक और शोभा वर्णन ।

चोटा ॥ चढ़ि घान ततार सुरंग अनी । द्विगपाल चमकि निसान धुनी ॥
 पुर आसिय फेरि सुरंग ग्रसै । जनु भांवरि भान सुमेर लसै ॥
 छं० ॥ ८५ ॥

दिसि रत रपत उठंत बरं । मनो बहर भद्व के दुसरं ॥
 गुर गोरिय साहि सु संधि ग्रसी । सुनि राज नरिंद नरिंद रसी ॥
 छं० ॥ ८६ ॥

चमके चव रंगनि रंग दिसा । सु मनो जमके जमजोति जिता ॥
 षल की षल संकर अंदनता । सुमनो सुर दादर के जमिता ॥
 छं० ॥ ८७ ॥

रत रत मयूष इला चमकै । मनु इंदवधू नभ ते दमकै ॥
 चहुआन सुनी सुरतान दिसं । बड़ि आज अवाज सुराज रसं ॥
 छं० ॥ ८८ ॥

जिनके गुन वीर सुमत चवै । तिनके बल देवन तत्त अमै ॥
जमसे दरसे जम ते गरुअ । सुरतान तिपास रहे धुरय ॥ छ० ॥ ८८ ॥
पुमानय पानति अग्न अनी । तिनके बर पासन राज यनी ॥
ढलके ढल ढाल ढलकि लता । तिर साइर काइर त कलिता ॥
छ० ॥ ८९ ॥

अव कै न्वय गोरिय साहि बर । सुमनो घन भूमि उतार उर ॥
चढ़ि चलिथ उगि कला दुसरी । न्विप राज नरिद सु जुध हरी ॥
छ० ॥ ९१ ॥

सब सेन गरिष्ट इतौ बलय । न्वप राजन राजन सो कलय ॥
रन मुष् उठे बर कक लसी । दिमि बक विराजत पच्छ ससी ॥
छ० ॥ ९२ ॥

इतने गुन चार चरत कर । उतरे जमरोज नरिद घर ॥
जम रोज तजै ग्रह सिद्ध बर । चहुआन सुनी रन राज उर ॥
छ० ॥ ९३ ॥

तत्तार खा का पडाव दस कोस आगे चलाना ।

कवित ॥ कूच कूच उप्परे । राज अग्या नन मानै ॥
सुबर जूह सुरतान । सैन चावदिसि वानै ॥
उगन द्वार ज्यों प्रात । लेन उग्यौ बर गोरी ॥
तिमरलिंग जुलिकन । राज रजकन सु जोरी ॥
धनि धनि धनि गोरी सु बर । बलभग्ना भग्गौ न बल ॥
आसीस भजि ढिल्ली पुरा । नव लग्यो भेवात घल ॥ छ० ॥ ९४ ॥

दूहा ॥ जानि सकल गोरी सुबर । गरुअ मत्ति तत्तार ॥
ते भारथ्य सु दत्त पति । पत्ति ना लभ्यौ पार ॥ छ० ॥ ९५ ॥
पा तत्तार सुरतान बर । नर नाइक सुरतान ॥
दस कोसे आसौ हुतें । आय सपत्ते थान ॥ छ० ॥ ९६ ॥

शाही सेना का आसीपुर के पास पडाव डालना ।

कवित ॥ आय सपत्ते थान । वीर आसौ गिरि करि ॥
सरद काल ससि मित । परी पारस सुमत घर ॥

बहुरि चंद बरेदाय । साह लगा कस धारिय ॥
 चावहिसि रुंधये । मंत पावै न विचारिय ॥
 गढ़ एक सज्यौ साहस बली । सेन सजत लग्गी धरी ।
 चामंडराइ दाहरतनौ । अमर मोह भूली सुरी ॥ छं० ॥ ८७ ॥

शाही रोना का हंसीपुर को धेरना ।

चढ्यौ पान ततार । सोर हल्ले द्विगपालं ॥
 धुरि निसान धुनि पूर । नाद अंबर लागि तालं ॥
 पावस चंद सरइ । धटा धुंमरि ज्यों धेरै ॥
 ज्यों अषाढ़ रति भान । धुम धुंधरि नन हेरै ॥
 गोरी सपन सजिय सुभर । ज्यों छयल कुलटा सवसि ॥
 अवसान अचानक त्यों पुरह । हांसिय पान ततार ग्रसि ॥ छं० ॥ ८८ ॥

मुस्लमानी जातियों का वर्णन ।

पां पुरसान ततार । बीय ततार पंधारी ॥
 हवसी रोमी धिलचि । इलचि घूरेस बुधारी ॥
 सैद सैलानी सेष । बीर भट्टी मैदानी ॥
 चौगता चि मनोर । पीरजादा लोहानी ॥
 अन्नेक जात जानैति कुल । विरह नेज असि ग्रहि करद ॥
 तुरकाम बीच बल्लोच वर । चिंत पूर हांसी मरद ॥ छं० ॥ ८९ ॥
 दूहा ॥ सुनि अवाज निसुरति पां । पां ततार पुरसान ॥
 वे रज गुर सल्ले सजिय । मचिग जुझ विरुक्तान ॥ छं० ॥ १०० ॥

यवन रोना की ठूहरना वर्णन ।

कवित ॥ पां ततार रुतागा । वाम दक्षिण पध पंधी ॥
 पां निसुरति पहार । उमै सेना पग लप्पी ॥
 पान पान पुरसान । चंच चछु रचि कसानी ॥
 कांगुरेस गप्परह । जंध मंडे दल भानी ॥
 धिलची पुरेस भट्टी विहर । पंछ सु इन पच्छह सुवर ॥
 महनंग अंग मारफ पां । छत्र सीस धारिय सुभर ॥ छं० ॥ १०१ ॥

युद्ध वर्णन ।

हनूफाल ॥ परिधाय स्वर प्रकार । पावार वज्र सु भार ॥

कटि पोलि पग विहथ्य । भारथ्य ज्यो सुनि पथ्य ॥ छ० ॥ १०२ ॥

पग पगन वाहै पति । मनो वाज सेन कि पति ॥

भारथ्य कथ्यै जोति । असि अग विद्धि विमोति ॥ छ० ॥ १०३ ॥

वजि गुरज वीर प्रहार । सँग देहि चौसठि तार ॥

दुहु पास अत सरत । गिध गिधौ गिध गहत ॥ छ० ॥ १०४ ॥

तर बैलि चट्टि रुनाल । मनु गहिय सस सिवाल ॥

तुटि मुड तुड सुभट्ट । मनु भगार रचि नट्ट ॥ छ० ॥ १०५ ॥

रुधि छच्छ धर वर रुड । पावक भूर उठि कुंड ॥

कहि लेहु लेहु सु स्वर । भारथ्य वित्त कलर ॥ छ० ॥ १०६ ॥

पग भूर उठिक वार । भूर गिद्धि सी पति पार ॥

परिरभ रभ स आइ । तन तनक तनक न पाइ ॥ छ० ॥ १०७ ॥

मुकि मुक्कि माननि जाइ । फिरि पियन दधिन आइ ॥

मिस हारि रभ स अगि । इन सब मनोरथ भगि ॥ छ० ॥ १०८ ॥

कि अगनि दम्भै ताइ । तन धार धार सुला ॥

वर वीर रोस सुगति । तहा सोष इयि न मति ॥ छ० ॥ १०९ ॥

दल सुभर अलहन मन्नि । जुरिभोम कन् अलुन्नि ॥

उच्छरि अरौ अरि भीर । चानूर मुष्टक वीर ॥ छ० ॥ ११० ॥

घरि पच भिरि भारथ्य । दिन अस्ति भूप न तथ्य ॥ छ० ॥ १११ ॥

शाही फौज का बल कर के किले का फाटक तोड़ देना ।

कवित ॥ सुवर स्वर सामत । वीर विश्वाइ सु धार ॥

नपि कोट गढ ओट । कोट किय्याट ढकार ॥

सत छुथ्यौ सामत । राम पुथ्यौ रघुवसौ ॥

रे अभग सामत । साहि बधो बल गसौ ॥

विना नपति जो बध । किति चावदिसि चल्तै ॥

भार धार तन पडि । वीर भारथ्य न डुल्लै ॥

नन तजौ संत बल सत्त गहि । गरुअ अथ पंडोति षग ॥

उचरै लोइ इतौ करौ । करौ स्वर की रति नग ॥ छं० ॥ ११२ ॥

चामुंडराय के उत्कर्ष वचन ।

कवित्त ॥ विहसि राव चामंड । कहै रघुवंसराइ बर ॥

तुच्छ सेन सामंत । साहि गोरी अभंग भर ॥

दांति धात आघात । षग मगह कटारिय ॥

गुरज बीर गोरीस । सेन भंभरि भर भारिय ॥

महनसी मेर माऊ भरड । सरद तेज ससि मुष पुल्लौ ॥

पाहार बीर तूअर उत्तंग । सार धार नां धर दुल्यौ ॥ छं० ॥ ११३ ॥

युध होते होते शाम होजाना और युध बंद होना ॥

भिरिग स्वर सामंत । लुथ्यि आहुटि लुथ्यि पर ॥

सधन धाइ आवत । मेर तत्तार होइ बर ॥

चढ़ि हांसीपुर स्वर । धेत दुल्यौ न दीन दुहु ॥

उतरि मेर असि वरन । गहन जंपै न सिद्ध कहु ॥

बहु षग स्वर सामंत रन । भोगी पान पुरेस परि ॥

मिलि भेछ भेछ एकोन किहि । रहे सेन ठट्टे विहर ॥ छं० ॥ ११४ ॥

समरि संग तत्तार । बज्जि नीसान धेत रहि ॥

हय गय रन विच्छुरहि । रद्र भूमिअ सु बीर बहि ॥

निसचर बीर उभार । भूत प्रेतह उच्छव सुर ॥

बज्जि धाइ कहि उठत । नचै चौसठि रंभ बर ॥

नारद नह नंदी सु बर । बीरभद्र सुर गान बर ॥

इन भंति निसा बर मुहरी । बर हर हर बज्जे ससुर ॥ छं० ॥ ११५ ॥

प्रातःकाल होते ही पुनः युधारंभ होना ।

चौपाई ॥ भयौ प्रात बंछित सामंतह । सुगध महिल ज्यौं बंछै प्रातह ॥

कण नाह लोहान महा भर । रा बड़गुजार किहिन सुभर ॥ छं० ॥ ११६ ॥

गढ़ में उपस्थित सामंतों के नाम ।

कवित्त ॥ वर पीची अचलेस । गरुअ गोयद भहनसी ॥
 उद्दिग बाह पगार । नरा नरसिध समरसी ॥
 उमै बध मोरीय । राव रानिग गिरेस ॥
 देव क्रन सापुलौ । जुड पारथ्य बिसेस ॥
 सलधान भीम पुडीर भर । जैत पवार सु वगरी ॥
 चामड राइ कनक सुभर । रधुवसी सिर पधरी ॥ छ० ॥ ११७ ॥

दोनो सेनाओ में युद्ध आरंभ होना ।

दूहा ॥ प्रात उदित घायन मिले । प्रात धाइ धरियार ॥
 रोस लगे छिद्र तुरक । मनु बज्जत कठतार ॥ छ० ॥ ११८ ॥
 युद्ध का वर्णन और दस चोट में यवन सेना
 का परास्त होना ।

भुजगप्रयात ॥ असी अस्ति सन्त्र बधी पान बल्ल ।
 सु पग पितौ पान सो बीर चल ॥
 चवै चलि चार सबै रग बीर ।
 तजी गाम बार चढी धार धीर ॥ छ० ॥ ११९ ॥
 अए अस्त अस्त उपमा प्रमान ॥
 मनो घेत पडै किसान रिसान ॥
 मिले स्तर धार दल मेल सान ॥
 परी जानि बुद समुद्रेन पान ॥ छ० ॥ १२० ॥
 तजे कोट पान सबै स्तर घेरी ॥
 मनो भाव रमान सुम्भेर फेरी ॥
 परे पग जदो उजतीत सारी ॥
 मनो देवल बज्जि कल पार पारी ॥ छ० ॥ १२१ ॥
 घय भेदि घाय अधायत रासी ॥
 निकसी परै अइ सा स्तर कासी ॥
 कटे बध कावध सो बध पारी ॥

मनो बट्टि विम्भाय भग्नी सु कारी ॥ छं० ॥ १२२ ॥

पयं भजि सो डाक ही षग धारी ॥

मनों वामना रूप भै भीम भारी ॥

रुधी घट्ट ज्यों फुट्टि सन्नाह सारी ॥

तिनंकी उपगा कवीचंद धारी ॥ छं० ॥ १२३ ॥

मनो रंग रेजं ग्रहे रंग रारी ।

जलं जावकं सोभ पनार पारी ॥

हयं छिंछ उट्टी रुधी छिंछ तारी ।

हयं वक्रो जरड दूअड पारी ॥ छं० ॥ १२४ ॥

तिनंकी उपगा कवी तं कहाई ।

जलं जावकं पावकं को बुड़ाई ॥

ग्रही केस उड्डे उतमंग पथी ।

तिनंकी उपगा कवीचंद अप्पी ॥ छं० ॥ १२५ ॥

मनों अप्प ग्रहं अवानंति वारं ।

चली नभभ तें चंदनं सुकि धारं ॥

भगी धायन भूमि भा भान पारं ।

मनों सिद्धि संमद्धि लग्गी अगारं ॥ छं० ॥ १२६ ॥

बजी धाय अघाइनं ग्रीव पानं ।

फिरे केत रकी जलं मगिग मानं ॥

उडी छिंछ सबै दलं रुद्धि जखी ।

मनो दीपतो हिंदुनं हह काखी ॥ छं० ॥ १२७ ॥

षटं सत्त उभै सुरं लोक बखी ।

फिरी फौज ततार की धाड गखी ॥ छं० ॥ १२८ ॥

इरा युद्ध में खेत रहे जीवों की राख्या ।

कवित्त ॥ अड सेन अध परिग । परिग दंतौ सत्त एकं ॥

अयुत अयुत अस परिग । पयह को गनै असेकं ॥

दसत दून बानेत । घाय शहरी करि लिन्ने ॥

पंच पैंड पंचास । सेन भग्ना तिन दिने ॥

पछ पुछ पान अलील तब । अति आतुर असिवर परिय ॥
भगौ न भीर सो भीर सुनि । अब मजो हिंदू ररिय ॥ छ० ॥ १२६ ॥

अलील खा का प्रतिज्ञा करके धावा करना ।

सुनि सामत निसान । पान अलील उभ भरि ॥
मनह अग्नि धन वृत्त । आय डडूर समधरि ॥
हुगोरी घर कोट । राज 'अड्डो चहआनी ॥
सो उभमै कुन सूर । भोमि विलसै सुरतानी ॥
इह कहिसे सेन अगों धरिय । जाय सूर मुष पग्यौ ॥
तिन सार मार सामत दल । पच डोरि पच्छो गल्यौ ॥ छ० ॥ १३० ॥

दोनों ओर से बड़े जोर से लड़ाई होना ।

दूह । ॥ तमकि सूर सामत तब । भुकि लगै फिरि पग ॥
लपट भपट ऐसी बहै । ज्यो 'जज्जर बन अग्नि ॥ छ० ॥ १३१ ॥

लड़ाई का वाक्चित्र वर्णन ।

विराज ॥ छुटे अग्निबाज, मनो नभम गाज । चढ़े सूर सूर, नभे रक नूर ॥
छ० ॥ १३२ ॥

बहै बान भारी, मनो टिड्ड चारी । दुती सोभ आन, कबीका बधान ॥
छ० ॥ १३३ ॥

दिसाय नभल्ल, मनो नाग हल्ल । परै वष्य धाय, मनो वज्र लाय ॥
छ० ॥ १३४ ॥

करै कूह कैका, हुअ एकमेक । बहै पग्य धारी, अभूत सरारी ॥
छ० ॥ १३५ ॥

होवै घड घड, धर रुड मुड । बकै मार मार, मनो प्रेत चार ॥
छ० ॥ १३६ ॥

जुटै सूर हथ्य, मनो मल्ल बथ्य । परै भूमि सार, मनो सत्तवार ॥
छ० ॥ १३७ ॥

अए काले धेतं, बधे बंध नेतं । छुटी अंघि पट्टी, मनो अग्गी छुट्टी ॥
छं० ॥ १३८ ॥

षगे मग्ग चाहं, अरी वन दाहं । परे नाग ठानं, कलं कूट जानं ॥
छं० ॥ १३९ ॥

रनं नेज ठल्लं, मनो केलि पल्लं । लोहानो अजानं, दुढ़े पान टानं ॥
छं० ॥ १४० ॥

वहै संग भारी, निकाले करारी । तिनं घाव सहं, करै कुंभ नहं ॥
छं० ॥ १४१ ॥

जुरै चंद सेनं, कियं षंड जेनं । उठे छिंछ अंगं, मनो अग्गि दंगं ॥
छं० ॥ १४२ ॥

दुती ओप जानं, प्रवारी प्रमानं । पय्यौ पान अल्लो, धरारं विहल्लो ॥
छं० ॥ १४३ ॥

भगे साहि ठट्ठं, गए दसा वट्ठं । भट्टी पित्ति ताजं, दियं जित्ति बाजं ॥
छं० ॥ १४४ ॥

रामंतो की जीत होना और यवन सेना का परास्त
होकर भागना ।

कवित्त ॥ भइय जित्ति सामंत । सेन भग्गा सुरतानं ॥

अप्प स्हर सब कुसल । पित्ति रप्पी चहुआनं ॥

उभै सहस परि मीर । सहस इक बाज प्रमानं ॥

परिय दंति सतएक । करिय अच्छरि वर गानं ॥

जै जया सह आयास हुअ । धाव स्हर गोरी धरिय ॥

वित्तयौ कलह भारअ जिम । कहौ चंद छंदह करिय ॥ छं० ॥ १४५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके हांसी प्रथम जुच
वर्णननं नाम इक्यावनवो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५१ ॥

अथ द्वितीय हांसी युद्ध वर्णन ।

(वावनवां समय ।)

तत्तार खा का पराजित होना सुन कर शहाबुद्दीन का
क्रोध करके भाति भाति की यवन
सेना एकत्रित करना ।

कवित ॥ इसम हयगय लुट्टि । लुट्टि पष्पर रपतान ॥
तत्तारी पुरसान । होम भगौ सुरतान ॥
सुनि भग्ना सब सेन । हाय करि पट्टि सु हथ्य ॥
पुच्छि पवरि बर दूत । कहिय भारथ वत कथ्य ॥
रगतैत नेन साहाब भजि । पैगवर महमद भजि ॥
फिरि सज्यो सेन भसुचित्त करि । हासौपुर जौतन सु कजि ॥
छ० ॥ १ ॥

विअध्यरी ॥ सज्य सत मत सुरतान । दस दिसि धर दिन्ने फुरमान ॥
रुम्ह हरेव परेव परारिय । मर भभर भष्पर भर भारिय ॥ छ० ॥ २ ॥
सभरकद कसकद समान । बलक बलोच तकी मकरान ॥
कदल वास अधम इलास । रोहौ सोह उजबक रास ॥ छ० ॥ ३ ॥
धूनकार ऐराक घधार । साहबदीन मिले दल सार ॥
धुम्बर वृन सिरै तुछ रोम । जाति अनत गिनै वुन भोम ॥ छ० ॥ ४ ॥
घोरमुह। केइ सुप्पर क्रन । चप्प ककर मुघं रत ब्रन ॥
इन सर कथ विवाह अजोन । दुअ दुअ दुस्मि भयै दिनमान ॥
छ० ॥ ५ ॥

जानै धार अनौ बथ मल्ल । जानि गिरधर सिप्पर चल ॥
तानै सिनि गिनि जोर विभार । गोन चढ़ै जिन टक अधार ॥
छ० ॥ ६ ॥

बंधे दो दो तीन जुआनं । तिन साइक सत सत प्रमानं ॥
 साबद बेधिय लाघव सारं । पंप हनै यह दिष्ट प्रहारं ॥ छं० ॥ ७ ॥
 टारै अनी अनी साइकं । मुंठि अभूल रसै चित किछं ॥
 मंद अहार सबै फल आसं । पारसि ममक विवानि प्रहासं ॥ छं० ॥ ८ ॥
 करै रगव्य सरव्यर वानं । जानि कि वज्र विहंग बुलानं ॥
 बंधिय जूसन सारपि गातं । जानि जुरी नव नाथ जमातं ॥
 छं० ॥ ९ ॥

सजि पप्यर लप्यर है साजं । पंपपरी वर उडुन काजं ॥
 गज धुंमर धज नेजर वानं । जानि कि भद्व मेध समानं ॥ छं० ॥ १० ॥
 करिय ठमंक चढ्यौ हय नादं । फट्टिय जानि समंद अजादं ॥
 तर भंगर गिरि पडर धारं । उड्डिय रेन डिगे ट्रिग सारं ॥ छं० ॥ ११ ॥
 धर धुंमर लगि अंमर थानं । सुनियै भद्व न दीसै भानं ॥
 है गै रथ दल अंत न जानं । आसिय दिसि हलिय सुविहानं ॥
 छं० ॥ १२ ॥

वरन वरन की व्यूहवद्ध थवन सेना का
 हांसीपुर को घेरना ।

कवित ॥ साहब सुनि सुरतान । समुद लूहं रचि धाइय ॥
 अष्ट सेन रचि अष्ट । ईश्ट करि सेन बनाइय ॥
 एक लप्य सारइ । सुभर असवारति साजं ॥
 दंतौ पंति विसाल । अग्न सज्जे अगिवाजं ॥
 पावस आन मानों प्रगट । दिस दिसान नीसान दिय ॥
 आसीअ चिंत इक दौर करि । आनि सुभर घन घेरि किय ॥
 छं० ॥ १३ ॥

शहाबुद्दीन का सामंतो को किला छोड़
 देने का रांसेसा भेजना ।

दूहा ॥ घेरि सुभर साहाबदी । कहिय बत चर चार ॥
 कै भुभइहु बुगइह सपरि । कै निकरौ अग्न दुआर ॥ छं० ॥ १४ ॥

शहाबुद्दीन का सँदेसा पाकर सामतो का परस्पर सलाह और बादविवाद करना ।

कवित्त ॥ सुवर खर सामत । बीर बिरुम्हाड सु धार ॥
बडगुज्जर रा राम । राइ रावत सहार ॥
सम दुरग सो सीस । बीर लोकिग असमान ॥
कित्ति मुकति भर सुभर । बीर बीर बिरुम्हान ॥
कूरम राव पञ्जून दे । गयौ हरप सामत वर ॥
तम पयै मरन दीजै नही । मरहु तुम्ह जिन पर सु धर ॥ छ० ॥ १५ ॥
सुनिध मत कूरम । मतौ जानहि सु मरन वर ॥
जीवन मत जानत । सामग्रमजाइ भ्रम नर ॥
हम बीरा रस धज्ज । जोग जीतन सिर बधी ॥
हम अभज अरि भज । मत जानै जस संधी ॥
रुक्थौ हस पजर सु पच । सो पजर भजहिनि भिर ॥
जानियै अगत तनु तिनुक वर । अरि बधन बधेति फिरि ॥ छ० ॥ १६ ॥
सुवर बीर सामत । मन्त्र लगे बिरुम्हान ॥
रा चामंड जैतसी । राम बडगुज्जर दान ॥
उदिगवाह पगार । कनक कूरम पञ्जून ॥
पीची रा परसग । चद पुडौर स कन् ॥
महनग मेर मोरी मनह । दोज बीर वगारि सलष ॥
देवकन कुँअर अल्हन सुवर । लपिय सोभ भुज वर विलष ॥
छ० ॥ १७ ॥

सामतो का भगवती का ध्यान करना ।

दूहा ॥ निसि चिता सामत सह । उदिग वाह पगार ॥
मात बीर अस्तुति करै । सत्त सु मगन द्वार ॥ छ० ॥ १८ ॥
फुटि सरोवर नीर गय । अब कि वधै पालि ॥
तेमन सत पथान किय । इह भावी इह काल ॥ छ० ॥ १९ ॥
हासी के किले मे स्थित सामतो के नाम
और उनका वर्णन ।

कवित्त ॥ निडुरे बर हरसिंध । बीर भोंहा भर रूपं ॥
 वरसिंहरु हरसिंध । गरुअ गोयंद अनूपं ॥
 राज गुरू रा राम । बली बंभन रस बीरं ॥
 दाहिगौ नरसिंध । गौर सगगर रनधीरं ॥
 चालुक बीर सारंगदे । दई देव दुजान दहन ॥
 सुलतान सेन संसुह भिलै । गात जु हांसीपुर गहन ॥ छं० ॥ २० ॥
 चोपाई ॥ पुर हांसी दिसि दच्छिन कीनी । बीय स्वर सगहै अमु लीनी ॥
 चक्री चवसठि जोगिनिकारी । दिसि दच्छिन उर सगहौ भारी ॥
 छं० ॥ २१ ॥

कुछ सामंतो का किला छोड़ देने का प्रस्ताव करना परन्तु
 देवराव बग्गरी का उसे न मानना ।

कवित्त ॥ उदिग गयौ निकरै । सुतौ मरनह तें डरयौ ॥
 समर स्वर निकरै । सु फुनि अलंगे उत्तरयौ ॥
 चावंड रा निकरे । सुहड सांवला सहितौ ॥
 गोयंद रा गहिलौत । सु फुनि निकरै विगुतौ ॥
 साधुलौ स्वर भोंहा सुतन । कल कथा भारथ करै ॥
 इतने राव गए निकरे । देवराव क्यों निकरै ॥ छं० ॥ २२ ॥
 ए सामंत अभंग । भेर धुअ मंडल जामं ॥
 सेस सौस रवि चंद । सु भुअ मंडल अभिरामं ॥
 एउ टरें कोउ बेर । जोग जुग अंतर आयौ ॥
 अटल एक सामंत । जुड जोगा रस पायौ ॥
 दैवान देव गति अलंघ है । नन गुमान कोइ कर सकै ॥
 एकैक मत्त चूकै सबै । जित्त कोइ जाइ न सकै ॥ छं० ॥ २३ ॥

कवि का कहना कि समयानुसार सामंत

लोग चूक गए तो वया ।

राम चुक अग हथौ । सीय लिय रावन चुक्यौ ॥
 हनुअ बत्त नारह । भरथ चुकवि सर मुक्क्यौ ॥

विक्रम जीव जतन । काग आभिप मुप मडिय ॥
 इद्र अहल्या काज । सहस भग काया मडिय ॥
 नल राय दमती कारनै । और नाम जानौ न उन ॥
 सामत दोप लग्यौ इतौ । मतौ एक चुक्थौ न कुन ॥ छ० ॥ २४ ॥

देवराय वगरी का वचन ।

साहि मलिक साहाव । दीन जिहि द्वारै बहिय ॥
 जेन द्वार निकरौ । जेन निकरै न कहिय ॥
 सिर तुरक भर पडिह । सहित घर जाह सरीरह ॥
 हु समीछ पहुचेन । तनो निकलक सरीरह ॥
 साधुलौ स्वर सामित छल । देवराव कटि बटि भरै ॥
 ता नथि पुत बापह तनौ । भ्रम द्वार होइ निकरै ॥ छ० ॥ २५ ॥
 कलहन और कमधुज्ज का वगरीराव के वचनो

का अनुमोदन करना ।

सत छुटत गोयद । सत सामतन छुथौ ॥
 वर पीची अचलस । धार धारह तन तुथौ ॥
 सत छुथौ उदिग । मरन डर ड-थौ अबाहिय ॥
 सत छुटत नरसिध । लग उत्तगि पति नाहिय ॥
 मुखो न सत कमधज्ज ने । नाम वीर कलहन नृपति ॥
 वरि कनकराव परसग भर । दीपतन रवि तन दिपति ॥ छ० ॥ २६ ॥

सातों भाई तत्तार खा का तलवारे बाधना और हासी

गढ पर आक्रमण करना ।

मुकत सत तत्तार । तेग बधी सत बध्यौ ॥
 मिलि आए सुरतान । सेन गोरी ग्रह सध्यौ ॥
 आनि साहि साहाव । नैर हासीपुर चलयौ ॥
 सुन्या स्वर सामत । कोन निकरि सत डुल्यौ ॥
 लख्यौ सुमति आमत्त वर । बार बार वर बधियै ॥
 असि पच्छ कटि बधी सुवर । पडि पुरान कत सधियै ॥ छ० ॥ २७ ॥

*च-रायन ॥ भवे पङ्कली मंस सरु बल मुक्कई । काजी कला कुरान अगा नने चुक्कई ॥
तजि हांसीपुर जीव लभ्भ बंधी सधी । हिंदवान गढ़ भुक्ति गहा अप्पारही ॥
छं० ॥ २८ ॥

कवित्त ॥ सजे सीस गयनंग । रघ्यौ रूपे रन भांही ॥
सबल सेन सुरतान । परिय पारस परछांही ॥
हक्क धक्क किलकार । करै आसुर असमानं ॥
गोर नार जंबूर । बान रुक्के रह भानं ॥
पावें न भक्क पंथी पसर । विसर नइ बज्जे सबल ॥
सांपुलौ सुभर जुथौ समर । उदधि मगगल लग्गौ अनल ॥
छं० ॥ २९ ॥

दूहा ॥ भयौ प्रात फटुं तिमिर । मिलिध संग ततार ॥
करत कूंच तुट्टे सुभर । गढ़ लग्गे चिहुं वार ॥ छं० ॥ ३० ॥

अन्यान्य सामंतों की अकर्माण्यता और देवराय
की प्रशंसा वर्णन ।

कवित्त ॥ पां ततार गढ़ धेरि । ढोह बज्जे बज्जानं ॥
दो दस दिन सामंत । गहूक्क बज्जे परमानं ॥
पन्न पान सोवन्न । दीह तिन खरन पाइय ॥
गयौ बीर पाहार । नाम किन खरन साइय ॥
पारथ्य जीत भारथ्य सह । गोपिन रषि अपुबल तिथा ॥
हथ धनुष आइ बंनर बली । सीय कज्ज अपुसह किया ॥ छं० ॥ ३१ ॥
असापूर ततार । भूक्क बज्जी भग सुद्धी ॥
ईकल्लो देव कानं । बान अर्जुन भग बुद्धी ॥
और सबै सामंत । माहि बिसाह आलुद्धी ॥
भरन रहार उदिग । विहार बीरा रस बंधी ॥
सांपलौ खर सारंगदे । तिन बंधी लज्जी जगत ॥
उच्चरै खर सामंत सौ । जेन भिरत पच्छइ मरत ॥ छं० ॥ ३२ ॥

देवराव बग्गरी की वीरता ।

अनल भञ्ज देवराज । परे पारस दधि गोरी ॥
 लहरि सेन बाजत । धार झार। भक्तझोरी ॥
 बज्जि धार विभार । मार मारह मुष जणहि ॥
 स्वर भक्त रत्न रत्त । कलह कायर उर कपहि ॥
 लागि सार धार रुधि छछ घुटि । सहस स्वर उठहि लरन ॥
 आवट्टि सेन अछो सु अध । अद्ध अछ लग्गौ भिरन ॥ छ० ॥ ३३ ॥

युद्धारंभ और युद्धस्थल का चित्र वर्णन ।

भुजगी ॥ परे अछ अद्ध सु अछ अधान । भिरै अछ अछ रहै साह थान ॥
 अगे दत्त पती चले साह स्वर । प्रलै काल मानो हलै दक्षि पूर ॥
 छ० ॥ ३४ ॥

उतै पारसी मीरे बोलै करार । इतै सीस हकै धर मार मार ॥
 बहै स्वर स्वर लगै धार धार । मनो भक्तरी बज्जि देव सुधार ॥
 छ० ॥ ३५ ॥

गहै दत्त दत्ती उपारत स्वर । मनो भील कहुँ गिर कद मूर ॥
 परै पीलवान निसान सु पील । हन्यौ वज्जि सैल सप्रभ कपील ॥
 छ० ॥ ३६ ॥

बहै घग्ग धार धरगे निनार । मनो चक्क पिड बुलाल उतार ॥
 उठे ओन विद रत धार लग्गौ मनो लग्गि तिट्ठ प्रलै काल अग्गी ॥
 छ० ॥ ३७ ॥

बहै रत्त धार अपार सु दीस । मनो भद्र मरुभौ बहै नहि ईस ॥
 विद्ध बाह बाहै लगै स्वर सूर । मनो प्रीति हेत मिले आय दूर ॥
 छ० ॥ ३८ ॥

बहै जम्भदट्ट बहै पारवार । मनो मोय मग्ग किवार उघार ॥
 परै लुथ्थि पथ्थ उलथ्थति पान । मनो मीन कुहँ जल तुच्छ मान ॥
 छ० ॥ ३९ ॥

रजै ईस सीस करै रुडमाल । रमै भूत प्रेत किलकत नार ॥

ग्रहै अंत गिह्वी चढ़ै गेन मग्गं । मनो डोरि तुट्टी रमै वाय चंगं ॥
छं० ॥ ४० ॥

तिनं नह सद्धं विहंगं सुनानं । रजै ईम मानं सुरं सत्त पानं ॥
भरै षेचरी पच चौसठ्ठि चारौ । भवै भोभि ओनं पलं पल्लहारौ ॥
छं० ॥ ४१ ॥

भिरें जाम एकं अनेकं प्रकारं । परे स्हर सेनं कहै कोन पारं ॥
छं० ॥ ४२ ॥

देवकर्ण बग्गरी का वीरता के साथ मारा जाना ।

दूहा ॥ देवक्रान सुरलोक बसि । हथ नर धर गज भानि ॥
नाग असुर सुर नर सुरभ । बड़ि भारथ्य वषान ॥ छं० ॥ ४३ ॥

वीर बग्गरी का मोक्ष पाना ।

कावित्त ॥ जीति समर देवक्रान । धार पति चट्टिय धारं ॥
निगम अगा अजमेघ । द्रुमभ थल दुजा अचारं ॥
रथ रंभन भर थक्कि । रद्धि थक्यौ रथ लोचन ॥
बंध इंद्र सर बंध । मंदु वार । रहि सोचत ॥
शिव बंध सथ्य रथ ऊर चढ़ि । भूनिग तन गौ ब्रह्मपुर ॥
इह करिन कोइ करिहै नहीं । करो सु को रजपूत धर ॥ छं० ॥ ४४ ॥
देव क्रान वर वीर । धीर भर भीर अहीरं ॥
चौथालीस प्रमाण । तुट्टि तन धार सु धीरं ॥
थुति सदेव उचार । करै अस्तुति दै तारी ॥
सिर तुट्टै धर उट्टि । भिरन कट्टी कट्टारी ॥
अरि मुष्य गयौ चढ़ि चिंत अरि । तनु धारा हर बिंटयौ ॥
कायरन जेम तज्यौ न रन । करि कुट्टा जिम कुट्टयौ ॥ छं० ॥ ४५ ॥

इस युद्ध में गृत वीर सैनिकों की नामावली ।

भुजंगी ॥ पय्यौ देव क्रान सु भूनिंग जायं । जिने वास लोकं सयं बंभ पायं ॥
पय्यौ वीर मारु नवं कोट रायं । जिनें जूह लग्गे भुजं काम पायं ॥
छं० ॥ ४६ ॥

पन्थौ रानि गिरि राव बीर पताई । जिने धोन जहो ढहायौ पताई ॥
पन्थौ बीर मोरी उमै वध सथ्य । भजे जूह सप धली हथ्य वथ्य ॥
छ० ॥ ४७ ॥

पन्थौ पंच भाई सपच अभग । ढहे जूह वैरी लगै जूह अग ॥
पन्थौ साधुला खर नारेन इद । जिन जाम पेद्यौ करी दूरि दद ॥
छ० ॥ ४८ ॥

परे राव कूरेभ पञ्जून आय । जिने लोक मे लोक सलोक पाय ॥
पन्थौ पच पचायन पुज राज । जिने चपि वैरी कुलिगति बाज ॥
छ० ॥ ४९ ॥

पन्थौ बगरी रूप नर रूप नाह । भगीजानि मोरी तुटी जू सनाह ॥
पन्थौ वैर बाराह वैरी पचार । जिने सार झार दुझार हकार ॥
छ० ॥ ५० ॥

पन्थौ गुजरीराव रघुव सरोय । हय अस्ति सस्त्र किन कान पाय ॥
पन्थौ पग पिनी सु मची नरिद । भरत सजी पौसर किति कद ॥
छ० ॥ ५१ ॥

परे इतने खर भारथ्य विन्ते । डरे खर ते वार रिन मुक्ति पत्ते ॥
छ० ॥ ५२ ॥

एक सहस्र सिपाहियो के मारे जाने पर भी सामंतों का
किला न छोड़ना ।

दूहा ॥ रा देवग रेहत रन । सहस्र एक वर बीर ॥

तामे एक कमध पिलि । तिन संघारिग मीर ॥ छ० ॥ ५३ ॥

वाने विरद वकौ वहे । वकौ धान अलील ॥

दस सहस्र सम मीरे वर । तिन लीनो गढ कील ॥ छ० ॥ ५४ ॥

कोट मझि रजपूत सौ । तिन सही दरवार ॥

गिरद बाज चिहुकोद फिरि । मीर पौर सिरदार ॥ छ० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज को स्वप्न मे हासीपुर का दर्शन देना ।

हासीपुर प्रथिराज पै । चद सुपन बरेदाइ ॥

धवल वस्त्र उज्जल सु तन । पुकारिव नय राइ ॥ छ० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज प्रति हांसीपुर का वचन ।

हांसीपुर उच्चार वर । बीट सेन सुखितान ॥

अजहूँ हूँ भग्नी नहीं । करि उपर चहुआन ॥ छं० ॥ ५७ ॥

कवित्त ॥ उभै दीह गढ़ ओट । सस्त्र बज्जै सुवान अग ॥

अग्गवान कम्मान । सार सिंधुर अभंग जग ॥

ता पच्छै सामंत । मंत कौनौ परमानं ॥

नंषि कोट गढ़ ओट । सस्त्र लग्गे असमानं ॥

निप राज अच्यौ आसी सुन्यौ । सुपनंतर आसी कहिय ॥

ढिखी नृपति ढीली धरा । ढीली ह्वै अग्गे रहिय ॥ छं० ॥ ५८ ॥

हांसी पुच्छै पहूमि । राय तुं काइन भगिय ॥

भो बभौष पम्हारि । तेन भू दंड विलगिय ॥

तिन ए रस उच्चरै । चिया छल अक्ख गमिज्जै ॥

जै सिर पड़ै तो जाहु । कज्ज सार्दि छल किज्जै ॥

सहसा परि शुकुम्भौ मांपुलौ । एह अचिज्ज पिप्पन रहिय ॥

देवराव स्वर पंडे परिग । ताम तुरके संग्रहिय ॥ छं० ॥ ५९ ॥

हांसीपुर की यह गति जान कर पृथ्वीराज का खबड़ा कर
कैगार से रालाह पूछना ।

दूहा ॥ सुनिय वचन प्रथिराज ने । हांसी भारथ वित्त ॥

अम दुवारि निकरि सुभर । देवराव परि वित्त ॥ छं० ॥ ६० ॥

इह भविष्य चिंतै नृपति । भयो कलना रस चित्त ॥

एद्र बीर अरु हास रस । ए अपुख कथ वित्त ॥ छं० ॥ ६१ ॥

कवित्त ॥ सुनत राज प्रथिराज । बोलि कैमास मेहामार ॥

तम मंची मंचंग । मंच रखन सामंत वर ॥

हयति नठु गज नठु । नठु रधि वासह नठु ॥

सोच सु नठु सनेह । नठु गुन विद्य अनुठु ॥

त्यो सेन नठु हांसीपुरह । मंत उपजै सो करौ ॥

कैमास मंत मंती सुमत । मति उच्चारन विचरौ ॥ छं० ॥ ६२ ॥

दूहा ॥ मचि मंत कैमास कहि । राजन चित्त विचार ॥

ए सामत अमते मत । कोइ देवान प्रकार ॥ छ ॥ ६३ ॥

कैमास का रावल समरसी जी को बुलाने के लिये कहना ।

कवित्त ॥ कहै मचि कैमास । पास रावल जन भुक्कौ ॥

वह आहुठ नरेस । बाहि बिन मत सु भुक्कौ ॥

तुम आतुर अति तेज । और मिलिहै चित्र गौ ॥

जनु प्रजलती अगि । मदि घत सचि तरगौ ॥

इस मचि मच गिर राज दिसि । दिय पची समर विगति ॥

दिन दिवस अवधि पचमि कहिय । दिसि हासी आवन सु गति ॥ छ ॥ ६४ ॥

रावल समरसी जी का हासीपुर की तरफ चलना ।

दूहा ॥ सुनि रावरे आतुरे पच्यौ । पवन पवग प्रमान ॥

इक सगपन साहाइ पन । लपि घर विरद वधान ॥ छ ॥ ६५ ॥

हासीपुर को छोड़ कर आए हुए सामतों का

पृथ्वीराज से मिलना ।

कवित्त ॥ सुकि राज दुज दोइ । बेगि सामत बुलाए ॥

काछुक लज्ज काछु सहमि । मिलत सिर नीच नवार ॥

चामड रा जैतसी । राव बडगुजर कन् ॥

पौची राव प्रसग । चद पुडीर महन् ॥

पज्जून कनका उदग पगर । दोज वीर बगार सलय ॥

दोउ कत्र कउअर अलहन सुवर । मिले आय राजान भर ॥ छ ॥ ६६ ॥

मिलिग आय गोयद । नरे नरसिघ महाभर ॥

रेनराइ उदिग । विरदपागार बाह बर ॥

खर खर सजाम ग समर सामल अधिकारिय ॥

मिलत राज प्रथिराज । दिये आदर बर भारिय ॥

हम कज लज्ज तुम सौस पर । एह बति मन मत घरहु ॥

देवान गति निम्मान मति । भइय बत चित न घरहु ॥ छ ॥ ६७ ॥

दूहा ॥ कहिय स्वर राजन सुनहु । तिहि जीवन अप्रमान ॥
पति धर अरियन संगहै । तौइ न छंडै प्रान ॥ छं० ॥ ६८ ॥

पृथ्वीराज का राव रागंतों को रामदा बुदा
कर राखिना देना ।

कवित्त ॥ इक वार सुग्रीव । त्रिया तारा नन रषिय ॥
इक वार पारथ्य । चीर पंचत चष दिषिय ॥
इक वार श्रियपति । जमन अगौं धर छंडिय ॥
इक वार सुत पंड । भोमि छंडिय वन हिंडिय ॥
तुम स्वर नूर सामंत बल । कलह कथ्य भारथ करन ॥
सुरतान पान मोषन ग्रहन । महनरंभ बंछहु मरन ॥ छं० ॥ ६९ ॥
बोलि राज सामंत । कहिय तुम जुचनि अजार ॥
चंद्रसेन पुंडीर । राइ रामह बड़गुजार ॥
बोलि क-र नर नोह । बोलि चहुआन अताइय ॥
अचल अटल हरसिंघ । बोलि वरनं वर भाइय ॥
पञ्चनराव बलिभद्र सम । लोहानौ आजांन वर ॥
सजि सेन ताम चक्षहि न्यपति । उदधि जानि हस्तिथ गधिर ॥
छं० ॥ ७० ॥

पृथ्वीराज का रामंतों के राहित हारंगीपुर
पर चढ़ाई करना ।

कोलाहल कलकलिय । रत्त द्रिग वयन रत्त किय ॥
कहिय स्वर सामंत । मंत नीसान सह दिय ॥
राजन सो कुल जुद्ध । राव न सुनै अप क्रनह ॥
देस भंग कुलअंत । होइ नहिं देषत धनह ॥
प्रथिराज राज तामंक तपि । करि प्रथान हांसी दिसह ॥
नग नाग देव द्रिगपाल हलि । मनु भारथ पारथ रिसह ॥
छं० ॥ ७१ ॥

पृथ्वीराज के हारंगीपुर पर चढ़ाई की तिथि ।

दूह । ॥ तिथि पचमि चहुआन चढि । अति आतुर वर बौर ॥
 वर प्रधान पावास वर । इह सह परिगह तीर ॥ छ० ॥ ७२ ॥
 सुसज्जित सेना सहित पृथ्वीराज की चढाई का
 आतंक वर्णन ।

पञ्चरी ॥ सजि चल्थौ सेन प्रथिराज राज । मानहुँ कि राम कपि सौय काज ॥
 सामत नाथ कटि तोन धारि । मानो कि पथ्य गौ ग्रहन बार ॥
 छ० ॥ ७३ ॥
 रगतैत नैन अकुटी कराल । मानो कि ईस चयनेच झाल ॥
 बकुरिय मुख लागि भोह आनि । मानो कि चद बिय किरन बानि ॥
 छ० ॥ ७४ ॥
 बिहुफेर स्वर विच चाहुआन । मानो निधन परि परस मान ॥
 सजि सिलह स्वर अँग अग थान । मानो कि मुकुर प्रतिय बजानि ॥
 छ० ॥ ७५ ॥
 करि करी अग रज रजत दत । मानो कि जलद घेग बग पति ॥
 उभारि सुड गज लौहि बौर । मानो कि व्यव अहि मरुत मौर ॥
 छ० ॥ ७६ ॥
 मद अरहि पाट वरपत दान । मानो कि धराहर धार जानि ॥
 तिन मचत कौच हय कलत लार । मानो कि भद्र कद्रव मभार ॥
 छ० ॥ ७७ ॥
 घर स्थाम सेत रत पीतवत । मानो कि अभ्र पलव सुमत ॥
 चमकति अनिय दामिनि समान । बाजत वज्र धनधोर बान ॥
 छ० ॥ ७८ ॥
 उच्चरहि वृद्ध कवि मोर सोर । पप्योह चीठ सहनाथ रोर ॥
 ठनकत घट सादुरनि नह । मानो कि भद्र दादुर सबह ॥
 छ० ॥ ७९ ॥
 दिसि विदिसि धुध मुदियग भानि । तिस्र म इद्र बिय इद्र जानि ॥
 वरपत धार चढि व्योम मत । तिन उडिग रेन विच कौच मत ॥
 छ० ॥ ८० ॥

तिन कलहि पंषि पावै न ठौर । उप्पमा कौन जंपौस और ॥
 कलमलिय नाग परि कमठ भार । हलहलिंगदंति द्रिग मंत सार ॥
 छं० ॥ ८१ ॥

रथ धरहि स्वर अप अप्य मान । मानो छयल कुलटा मित्तान ॥
 सिर लगि थोम हथ धरहि राज । मानो कि कपिय गिरि द्रोण काज ॥
 छं० ॥ ८२ ॥

पत्तौ जु राज हांसीति थान । सजि सूर सेन दीने निसान ॥
 छं० ॥ ८३ ॥

रावल का पहुआन के पहिलेही हांसीपुर पहुंच जाना ।

दूहा ॥ चव्यौ राज प्रथिराज वर । सुनि चित्रंगी भीर ॥
 वर हांसी सामंत सह । बीटि धान वर वीर ॥ छं० ॥ ८४ ॥
 कवित्त ॥ इन अर्गौ वर वीर । समर हांसीपुर पत्तौ ॥
 रन रत्तौ रन सु । अम्भ आग्रगा विरत्तौ ॥
 चतुरंगनि वर सज्जि । वीर चतुरंग सपत्तौ ॥
 कूंच कूंच उप्पार । दीह चौ पंच सु जत्तौ ॥
 सु वर राव रावल समर । अमर बंध जत अमर जत ॥
 आवाज बढ़ी तब भीर वर । सेन संगत हांसी विरत ॥ छं० ॥ ८५ ॥

सागरसी जी के पहुंचते ही यवन रोना का उनसे भिड़ पड़ना ।

दिसि पति पति पत्तीय । मेर लजपति सु धारी ॥
 सबर सत्त जंपन सु । वीर किति सम वर चारी ॥
 ब्रह्म रूप जीति न सु । ब्रह्म आहुठ सपन्नौ ॥
 लब्धौ रूप ततार । रंका लभै वित मन्नौ ॥
 लगि जका सूकरस पियन वर । छुधा क्रोध लगि वीर रस ॥
 वर भिरन धान पुरसान दल । बल प्रमान धोलीति अस ॥
 छं० ॥ ८६ ॥

डिठ्ठ ढाल ढलकंत । समर चतुरंग रंग रन ॥
 बंधि फवळा सुवीर । वीर उचरंत मंत मन ॥
 हरवल धान ततार । करै करवलति घुरेसी ॥

तुड समर लागि नही । आनि बधी बल गसी ॥
 सुप रुक्क भेलि भार महन । नाहर राव नरिद तन ॥
 सावग समर दिसि दिसि षिनह । सुभर शुद्ध मच्यौ गहन ॥
 छ० ॥ ८७ ॥

समर सिंह जी की सिपाहगीरी और फुरतीलोपन का वर्णन ।

महन रभ आरंभ । समर बधीत समर बर ॥
 अमर नाम बर अमर । मुक्ति सामत ललैभर
 पुर हासी बर पत । पूर दक्षिण दक्षिण बर ॥
 मिले सूर कर बर कलूर । बधीति सिरी सर ॥
 बधि सनाह विलगे समर । करि भर धाड़ अपुध भर ॥
 हकारि सूर पच्छिम परिय । वज्र मेर वज्जे सुभर ॥ छ० ॥ ८८ ॥
 तमकि वीर चित्र ग । बाज उप्पर बर नयिय ॥
 मनहु कस सिर वज्र । चिलह उप्पर धर पयिय ॥
 सथ्य सूर सामत । हथ्य किरवान उभारिय ॥
 मनहुँ चद विय व्योम । परिग रारिय चनरारिय ॥
 धरि च्यार धार धारह हरिय । भरिय नरेनर चितारिय ॥
 औसरिय सेन अध कोस क्रम । कलह केलि ऐसी करिय ॥
 छ० ॥ ८९ ॥

यवन और रावल सेना का युद्ध वर्णन ।

रसावला ॥ दोज 'रूर बह, उडीरेन जह । निसी जानि भह, वहै वान सह ॥
 छ० ॥ ९० ॥
 सुकै गज मह, वहै घग जह । सुमै रथ्य हह, नचै वीर बह ॥
 छ० ॥ ९१ ॥
 वज्रै पग सह, धटा वज्जि भह । पमजाल यह, प्रलै अगि नह ॥
 छ० ॥ ९२ ॥

चिसूली अनहं, बजै धाय रुहं । जनौं धट्ट बहं, कहं जोग सहं ॥
छं० ॥ ८३ ॥

मगी मुक्ति हहं, धगं सोर पहं । उअं ताप उहं, कवीचंद चंदं ॥
छं० ॥ ८४ ॥

सुमै रस्थ हस्थं, ॥ रसं रोस भानी, अमं सेन दानी ॥
छं० ॥ ८५ ॥

जकी जोग माया, चितं जोग पाया । ॥ छं० ॥ ८६ ॥

रामरसी जी की वीरता का बखान ।

कावित ॥ ॥ कै छुट्टा मदमोष । सिंध छुट्टा पल काजै ॥
कै तुट्टा बयवाज । बीच कोलिंग विराजै ॥
कै रस संका छुट्टि । वधम दोइ छुट्टि विलुझा ॥
लज्जा रतन विषगंत । उमै रंकहु आलुझा ॥
बर सेन उररि निसुरति धां । दइ दुवाह उप्पर परी ॥
चित्रंगराव शवर समर । सुबर जुझ एतौ करी ॥ छं० ॥ ८७ ॥

रामरसी जी के भाई अगररिंह का गरण ।

मिलिग धाइ अधधाइ । समर धायौ जु समर बँध ॥
धार धार तन उधरि । गयौ सुर लोक रंभ कँध ॥
पठ सु पंच अरि ढाहि । पंच मिलि पंच प्रपते ॥
दइ दुवाह रन अमर । अमर भौ बोलन जते ॥
हर हार कंठ आनंद मध । सुनि सँग्राम दुभार बन ॥
दुअ हस्थ दरिद्री द्रव्य ज्यों । रछ्यौ पिष्वि तं चिय नयन ॥
छं० ॥ ८८ ॥

युद्ध स्थल का चित्र वर्णन ।

*मोतीदाम ॥ जु रुथ्यौ रन रावल मंगत अनौ । सु मनौं ससि मंडल अधू अधनी ॥

* छन्द मोतीदाम चार जगण का होता है । रासो में भी तथा और जगह चारही जगण का मोतीदाम माना गया है । परन्तु यह छन्द चार सगण का है । भाषा के प्रचलित दो एक पिंगल ग्रन्थों में इस प्रस्तार का छन्द ही नहीं मिला अतएव इसका नाम वैसाही रहने दिया है ।

बजि घग्ग उन्नगत घग्ग बजै । घरियारन के सुर मझ लजै ॥

छ० ॥ ८६ ॥

गज घग्ग उड तह मुत्ति भरै । तिनकी उपमा कविचद करै ॥

मनि मै ग्रह रत्ति प्रनार चली । जल जावक नागिनि पौरि हली ॥

छ० ॥ १०० ॥

कहि हथ्यर हथ्य सु हथ्य परी । तिनकी उपमा कविचद धरी ॥

मुष से सहते जल धार धसी । निकसी जुइ एक प्रवाह गसी ॥

छ० ॥ १०१ ॥

छित रावर भारथ राज धनी । कहि भगिय घान ततार अनौ ॥

छ० ॥ १०२ ॥

अरिस्त* ॥ पा ततार सुनि बेन नेन सोय । लसे कागै बर भग्गा जे भान ॥

ओट जिन कोटह सुहर । लै दस्तक कर चुमि तु ड डहूँ बहूँ कर ॥

पा पुरसान ततार । भजि भजै सुर सुभर ॥ छ० ॥ १०३ ॥

यवन सेना की ओर से ततार खा का धावा करना ।

कावित ॥ बाज नधि ततार । बाजि पुरतार बजि घग्ग ॥

पच अग्ग सौ भौर । सग धाए पयान मग ॥

जुइ कथ्य कर हिदु । तूल जिम बाय उडाइय ॥

मेर लाज पज्जून । सत्त साइर वर पाइय ॥

घरि एक किभ बज्जी सकल । बर उप्पर पावार करि ॥

निष्ठ करि घान ततार कहि । हिदुमेअ सहिये अपरि ॥ छ० ॥ १०४ ॥

घोर युद्ध वर्णन ।

पहरौ ॥ बर लुथ्य लुथ्य आलुथि पलथ्य । नचि प्रेत नाद वीर ततथ्य ॥

नारद नद निस सुनि समौर । सारद सिद्ध तिन तत्त वीर ॥

छ० ॥ १०५ ॥

चौसठि धाइ सह खूर सचि । पच पचीस कावध नचि ॥

* यह उक्त वास्तव में कोई छन्द नहीं है । इस की प्रथम पंक्ति साठक छन्द की मृत्ति के समान है । दूसरी गाथा मी, तीसरी उल्लास की और चौथी रास की है । इससे मालूम होता है कि यहाँ के कई एक छन्द नष्ट हो गए हैं, उनका कुछ शेषांश मात्र रह गया है ।

बजि घाइ सह सहीन हइ । सुनि ईस सह नंदी अनइ ॥
छं० ॥ १०६ ॥

सत पंच मुक्ति तरवार बूव । तत्तारे गात अरवार हूव ॥
बधि चाल जाल उचाल पाव । पगवाह विहय्यन स्वर लाव ॥
छं० ॥ १०७ ॥

तन बंधि संग सो लोह कट्टि । मानो कि समुह जल मीन चट्टि ॥
उठि छिंछ रक्त तीरत भाइ । मानो पलास बन फुल्लि नाइ ॥
छं० ॥ १०८ ॥

वर बुगिफ साहि कर वज्र वाय । रुधि पियत भीम सभिन काय ॥
उतमंग हक धर नचि धाव । झम वहै पग्न को विज लाव ॥
छं० ॥ १०९ ॥

दूहा ॥ अनुध जुद्ध हिंदू तुरक । मये अनादि जमनूत ॥

इन ततार संभुष अनी । उतै समर अवधूत ॥ छं० ॥ ११० ॥
बेसावला ॥ धार धारं चढ़ी, बोलि बीरं बढ़ी । पग्न जालं जढ़ी, लोह दूनो कढ़ी ॥
छं० ॥ १११ ॥

दून बानं गढ़ी, बीर जै जै पढ़ी । लथ्य लुथ्यं बढी, हथ्य दो दो चढ़ी ॥
छं० ॥ ११२ ॥

जोग माया रढ़ी, जुद्ध देषै ठढ़ी । देवि रथ्यं चढ़ी, पुष्प नंघै गढ़ी ॥
छं० ॥ ११३ ॥

उतमंगं बढ़ी, अंत तुढ़ी कढ़ी । ईस देषै ननं, पुतनं रंजनं ॥
छं० ॥ ११४ ॥

स्वरे कढ़ै इसं, बान कढ़ी जिसं । छं० ॥ ११५ ॥

इरी युद्ध के समय पृथ्वीराज का आ पहुँचना ।

दूहा ॥ षोडस दूक पंचह सुभर । समर परिग संधाम ॥

नव घट्टी अंतर परिग । सुत सोमेस सुताम ॥ छं० ॥ ११६ ॥
कवित ॥ मझि पहर विप्यहर । समर सामंत जुद्ध मिलि ॥

(१) ए.-भूमि ।

(२) ए.-जाल ।

(३) को. कृ.-पुततं ।

नवनि नीच करि नीच । जुद्ध सग्राम सार मिलि ॥
 विमुष न भौ परि वध । जुद्ध सामत खर मिलि ॥
 अनी एक करि मेर । घाड़ अरि जुट्टि पग पुलि ॥
 पुरसान पान दल ठेलि बर । चख सौ चौरग वजि ॥
 थिर भए खर रथ दिपत पर । कायर चलि जंगम ग्रहजि ॥
 छ० ॥ ११७ ॥

भुजगी ॥ कठे लोह खर करूँति ताय । चले सस्त्र हथ्य न चालत पाय ॥
 मिलै हस हस चलै अश्व कैसे । जनो नीधनी नार पिय अग्न जैसे ॥
 छ० ॥ ११८ ॥

नन डोलि चित भरनति खर । चिया कुभ चित चलै हथ्य जूर ॥
 प्रतप्या प्रमान समान न खर । बुझै पच पच नन दीप दूर ॥
 छ० ॥ ११९ ॥

तुट्टै सिप्पर टूक सा टूक सथ्य । कला चद्र राहे उमै भूप तथ्य ॥
 कलै निक्षयौ बार सनाह फुट्टै । तिनकी उपमा कवीचद जुट्टै ॥
 छ० ॥ १२० ॥

मनो केतकी पल्लव व्रत जुट्टी । रघी राह भेद दुहु अग फुट्टी ॥
 लगे धार धार दुधार प्रहार । बर काइर भास चित विचार ॥
 छ० ॥ १२१ ॥

कर मीडि दूनों सिर धुनि जत्ती । मनो मणिका जाति पच्छै सुरती ॥
 सुमित्र कपी जानि लवालजाय । उपमा इन की नन भूलि पाया ॥
 छ० ॥ १२२ ॥

वजी भक्त लगे असमान सीस । उठे पच दह दून धावत दीस ॥
 नही मानवे दानवे नाग लोय । कछौ बाहु भारथ्य जिम पथ्य जोय ॥
 छ० ॥ १२३ ॥

परे समर शूर पट्ट ति पच । लगे धार धार भए रचरच ॥
 सबै धाव सामत खर प्रकार । पय्यौ वगरी रा चढ्यौ धार धार ॥
 छ० ॥ १२४ ॥

भरं राज प्रथिराज पंचास पंच । गयौ राव चावंड रंछोरि अंचं ॥
॥ छं० १२५ ॥

अमर की वीर मृत्यु और उराको मोक्ष प्राप्त होना ।

कवित्त ॥ पञ्चौ अमर धावास । ग्रिद्ध संमुह उड्ढावै ॥
बल घट्टै तन घट्टि । कित्त धट्टी नर जावै ॥
स्वामि विनुष नह भयौ । स्वामि कारज तन भग्गी ॥
साम दान अरु भेद ! दंड तीने पथ लग्गी ॥
ब्रह्मपुर स्वामि सेवक सु भ्रम । गयौ मोह माया सु पथ ॥
जग हृथ्य राइ सुर लोका बसि । सली जुग्न भारथ्य कथ ॥
छं० ॥ १२६ ॥

अमर गयौ पुर अमर । देवि घर घरह उछवि करि ॥
रचिय भोग आरंभ । देव भूषन सुरंग वर ॥
वर वर करि भग्गरी । सौ कि रानी पुकारौ ॥
धूप दीप साधा सु । पुहप वृष्टह उच्छारी ॥
तन पवित्र भ्रम भ्रन धन तन । गौ सुरलोका अचिज्ज नह ॥
अघ रोकि नपति जोवन वर । षग्न भग्न पुरसान लह ॥
छं० ॥ १२७ ॥

पृथ्वीराज के पहुँचते ही शाही सेना का बल हारा होना ।

कुंडलिया ॥ जै कित्ती रत्ती उभा । भुगत सुरत्ती पान ॥
चाहुं आन बल बढ़त वर । बल घथ्यौ सुरतान ॥
बल घथ्यौ सुरतान । साहि भौ पूरन चंदं ॥
राज नपति बियचंद । बीर बीर रस मंदं ॥
विधि विधान निरमान । पान दिषिय तिहि बतहय ॥
इल पंचौ संगहै । राज पट्टियत जैतिजय ॥ छं० ॥ १२८ ॥

पृथ्वीराज का यवन सेना को दबाना ।

दूह । ॥ जै बट्टी जै जै सकल । पौल तन धरि ढाल ॥
बल गौरी बल संग्रहै । ज्यों चंपै बर काल ॥ छं० ॥ १२९ ॥

ज्यों चपै वर काल गुन । हर चपै विध कद ॥

रवि चपै किरनावली । ज्यों चपै नरिद ॥ छ० ॥ १३० ॥

रावल और चहुआन की सम्मिलित शोभा वर्णन ।

अरिस्त ॥ वर सभरि चहुआन निवास । उत चित्र ग नरिदह साम ॥

फिरि गोरी पारस अधिकारी । मनो चद बहर विच सारी ॥

छ० ॥ १३१ ॥

दूहा ॥ राजत वीर शरीर गति । छिति मिच्छिति वर राज ॥

मनहु भूप भूआल कौ । वर वसत रितराज ॥ छ० ॥ १३२ ॥

रणस्थल की वसत ऋतु से उपमा वर्णन ।

कवित्त ॥ वर वसत वर साज । स्वर लगा चावदिसि ॥

रक्त रुधिर समरग । छित राजै अहत वसि ॥

फेरि अछौ सुरतान । चद बध्यौ उडगन वर ॥

निस नखिच ज्यो प्रात । सेन दिधौ जुमच वर ॥

नर गिरहि भिरहि उठहि लरत । पट पटति न सुभट घट ॥

पाहुनौ सुभट गोरी कियौ । दाहिभौ चावड यट ॥ छ० ॥ १३३ ॥

दूहा ॥ सु चिय हार सम परि सुथिर । यो सुवरे समेत ॥

सार धार वर देषियै । सार ग्रहारन प्रेत ॥ छ० ॥ १३४ ॥

मुख्य मुख्य वीरों के मारे जाने से शाह का हतोत्साह होना ।

कवित्त ॥ गुरज उभम तिय तेग । तोन विध सत सुरग ॥

छह कामान सर सहस । लोह सौ वीर अभग ॥

ए तुट्टै वर अग । तोन थका सुर थान ॥

अग अग निरमलौ । किति सारथी सु आन ॥

तिहि परत गयौ गोरी निपति । परत पान चौसठि घर ॥

तिन जपि चद वरदाइ वर । नाम जु जू ए सब विवरि ॥ छ० ॥ १३५ ॥

यवन सेना के मृत योद्धाओं के नाम ।

चिभगी ॥ वर पान ततार, भोरिय डार नेह उधार, परिधान ॥

हबसी षट बंधं, जम गुन संधं, रति रन रंधं, आरुद्धं ॥
 असि बर बर गहारी, पान प्रहारी, कुंत कटागी, वर बंधं ॥
 छं ॥ १३६ ॥

गोरी घर काले, शस्त्र न गाले, अंग विहाले, परि छीनं ॥
 सर बीरति भारे, परि रस सारे, बजि घर धारे, घर ईनं ॥
 महनंसिय मेरं, परि घर घेरं, जुग परिसेरं, पुरसानं ॥
 पुरसानत पानं, चौसठि यानं, रन पति पानं, चहुआनं ॥ छं ॥ १३७ ॥
 उन रंग अष्टतं, गुन गुर तत्तं, साइय मंतं, पढ़ि दैनं ।

... .. ॥

उड़ि साइका खरं, नभ तका खरं, धरि परि जूरं, घर पूरं ॥
 ॥ छं ॥ १३८ ॥

गहलारे गग्गं, ओड़न तग्गं, मन मत पग्गं, पै नग्गं ।
 जानिय किन कालं, बजि रन तालं, मीर सु हालं, अति अंगं ॥
 प्रारथ्य मुगत्ती जस रथ जुत्ती, जल कंद धुत्ती, रन पुत्ती ॥
 अभिमान डकारं, बजि रन सारं, जगत उभारं, जम कर्त्ती ॥
 छं ॥ १३९ ॥

गोरी परि लीनं, छित रस भीनं, रन दुहु दैनं, करि दैनं ॥
 ॥

दैवत सु रत्तं, मन करि गत्तं, कर छित सत्तं, रन गत्तं ॥
 ॥ छं ॥ १४० ॥

घर घर घर तुट्टै, असि रन जुट्टै, तन आहुट्टै, मति पुट्टै ॥
 नव जोग समानं, दोवर धोनं, पति सन मानं, वर फुट्टै ॥
 इन खर समानं, देवन जानं, रन अभिमानं, भड़ भग्गा ॥
 मोहन्नी भग्गा, तन पग लग्गा, जुगति सु जग्गा, प्रति लग्गा ॥
 छं ॥ १४१ ॥

यवन वीरों की प्रशंसा ।

कवित्त ॥ पूब धोन आकूब । पूब मारु धिति मारु ॥
 पूब बेर तत्तार । पूब मंडी धिति तारु ॥

धूव पान पुरसान । धूव जा भारथ पडै ॥
 धूवर गोरिय सेन । जेन भग्गापग मडै ॥
 अदिहार साह गौरी सुवर । सुदिन राज प्रथिराज वर ॥
 तित्तने परे सोरी घरे । सुवर वीर वीर सु रर ॥ छ० ॥ १४२ ॥

हिन्दू पक्ष की प्रशंसा ।

बलि भट्टी महनग । गरुअ गव्वह गज्जिय धर ॥
 इन लरत सामत । साहि चव्थौ दिमिय पर ॥
 जोगिन पुर जोगिद । आदि चच्चर चौर गौ ॥
 इद्र जोग जुध इद्र । इद्र कल इद्र अभगौ ॥
 नग नग नरिद नग वर सजहि । रजहि सेन सामत सह ॥
 नयथौ कोट आसौ पुरह । सुवर वीर लग्गे भगह ॥ छ० ॥ १४३ ॥

सामंतों का वीरतामय युद्ध करना ।

लग्गे भग्ग सामत । अग नचे चच्चर रज ॥
 इक्क मत आमत । इक्क देयै धावत घन ॥
 महन मत आरभ । रभ लग्गा चावटिसि ॥
 एक सख वरपत । एक वरपत वीर असि ॥
 जोगिद्राइ जग छथ्य तुअ । सुवर वीर उप्पर करन ॥
 कललकराव कप्पन विरद । महन रभ मच्च्यौ सुरन ॥ छ० ॥ १४४ ॥

युद्धस्थल का वाक् चित्र दर्शन ।

भुजगौ ॥ सह रभ आरभ सार प्रकार । नचै रग भैरू ततथ्ये करार ॥
 तहा पत्तयौ तत्त चिचग राज । मनो गज्जिय देव देवाधि साज ॥
 छ० ॥ १४५ ॥

महा मत मत सु तत हकारे । मनो वीर भद्र सु भद्र डकारे ॥
 भनक्क त पग्ग उपप्पा निनारी । मनो वीज कोटी कलासौ पसारी ॥
 छ० ॥ १४६ ॥

दुहु बाह वीर सहस्र भुजान । कहै कौन कक्षी बल जा प्रसान ॥

रसं तार तारं जिते तार वग्गे । मनो मानही देव भा देव भग्गे ॥

छं० ॥ १४७ ॥

बहै बाह वाहं करारेति तथ्यं । परे रंग चंगं अरथ्यौ सरथ्यं ॥
नचै बीर पायं अनकंत षग्गं । मनो तार वज्जो सु देवाल अग्गं ॥

छं० ॥ १४८ ॥

करे कंस कांसी बजे जानि नैनं । इसे सार सो सार वज्जै स धैनं ॥
उनके उनाही गुमानं न भग्गे । करी धान पुरसान पुरसान भग्गे ॥

छं० ॥ १४९ ॥

बहै बान कमान आवत्त तेजं । लगे अंग अंगं रहै नाहि सेजं ॥
सुरं धीर धीरं धरे पाइ अग्गं । मनो चचरी जानि आवत्त नग्गं ॥

छं० ॥ १५० ॥

ढिलै अंग अंगं परै बथथ ठारे । मनो लगिगय चार ज्यो मत्तवारे ॥
उमै बीर बाहै सु बोलै प्रचारै । सहै अंग अंगं दुधारे दुधारै ॥

छं० ॥ १५१ ॥

इते चार चारं सु देषे प्रकारै । चळ्यौ खर खर मथ्यान मझारे ॥

छं० ॥ १५२ ॥

धोर युद्ध उपस्थित होना ।

गाथा ॥ मथ्यानं वरे भानं भानं । तेजोय खरयो 'भुष्यं' ॥

चचर सी चवरंगं । उचारं मत्तयो बेनं ॥ छं० ॥ १५३ ॥

भुजंगी ॥ चरं चारि मतं सजे खर खरं । नमो डंबय्यौ भान उग्यौ करूरं ॥
दुअं बीर धार सु चौहान मोरी । मनो घेत पडै किसानंत गोरी ॥

छं० ॥ १५४ ॥

कहै हक बाजी विराजंत लखे । सुभे दंग लगै जु पोवक प्रखे ॥
दुअं सेन हकै विहकंत न्यारै । बकै जानि वटं सु बंदी पुकारै ॥

छं० ॥ १५५ ॥

रन रग रत्त विराजै सु भूमी । मनो मंगल पुत्त की आनि लूमी ॥
उदै हस हस द्रुम डाल डाल । मनो नाग मथ्य बरें अग्नि चाल ॥

छ० ॥ १५६ ॥

रती रत्त अग्नि सुगती ज रत्ते । मनो मान ईसे नम देवदत्ते ॥
भय नेन ऐसे द्रिग देव जैसे । ॥ छ० ॥ १५७ ॥

परे गज बाजी परे रथ्य छीन । महा मत मती लगे लोह पीन ॥

छ० ॥ १५८ ॥

पृथ्वीराज के वीर वेष और वीरता की प्रशंसा ।

कवित्त ॥ पृथ्वीराज गज सहित । तेग वकी सिर धारिय ॥

घनह कोर बिय चद । वीर उज्ज ली सुधारिय ॥

सेन चमर सम भिजि । रही लट एक समिजिय ॥

स्याम सेत अरु पीत । अग अगन हत दग्गिय ॥

काजलन कूट ते उत्तरहि । चिय नदी सग्राम तिथि ॥

चिचग राव रावर चवै । सुवर वीर भारथ्य कथ ॥ छ० ॥ १५९ ॥

भारथ्यह चहुआन । समर रावर सम गोरिय ॥

विध विधान निरमान । उभै भारथ्य स जोरिय ॥

भारथ्या पारथ्य । समर रावर प्रथिराज ॥

मेर मडि सायर समडि । बडि गिरि राज ॥

जित्ति कित्ति पन साइ सो । भिरन करन वीरत्त गुर ॥

चामडराइ दाहर तनौ । भारथ्या लीनी सुधर ॥ छ० ॥ १६० ॥

पृथ्वीराज के युद्ध करने का वर्णन ।

भुजगी ॥ धरा भ्रम भारी सु लीनी नरिद । मनो मेनिका देव जुड सुकद ॥

कमड हँकारे हके हाक बज्जी । कहै सौर भारी उदै सौर रज्जी ॥

छ० ॥ १६१ ॥

सनकत वान सनकत पग । मनो बीज के बाल अग्रास जग ॥

दुहु दीन दीन चहुवान गोरी । हडूदूत घेलत बालक जोरी ॥

छ० ॥ १६२ ॥

नियं अंग देहं इकं अंग जान्यौ । जिनै मुक्ति कौ रूप अंगं पिछान्यौ ॥
गजं दंत कट्टे करै सख भारी । तिनै पञ्च तारी दियै हथ्य तारी ॥

छं० ॥ १६३ ॥

उदै इंद कट्टे रबी कोर मानं । इसे पग तेगं भूमकै प्रमानं ॥
पटे हथ्य आरे उतारे निनारे । मनो सारसी हथ्य कीने चिकारे ॥

छं० ॥ १६४ ॥

उड़ै सह बानं विवानंत रुकै । तिनं मारुतं सहगं सह सुकै ॥
छवी छवि रतं उड़ै छिछ भारी । मनो मत मेधं वरष्यै करारी ॥

छं० ॥ १६५ ॥

परं नाग नागं हलै नाग जानं । तहां संगमं मान आवै न पानं ॥

छं० ॥ १६६ ॥

युद्ध का आंतिक वर्णन ।

कविता ॥ सगन संग आवइ न । नाग भिंजै नागिन रुधि ॥

परे नाग हलहलिय । नाग भागै कमठु सुधि ॥

भननि सीस मुक्यौ । इहै दंपति विचारै ॥

तिहिन संग आवै न । संग नागन हकारै ॥

धरि एक भयौ विभ्रमत मन । बहु रिस हार सिंगार किय ॥

नव रस विलास नव रस सुकथ । राज उठि संग्राम लिय ॥ छं० ॥ १६७ ॥

कवि कृत वीर-मत-मुक्ति वर्णन ।

सोइ संग्राम सोइ साम । सोई विश्राम मुगती ॥

सोइ सदेव समदेव । ताह अछरि रस मती ॥

जु कुछ मुकति तिन असिय । सार बज्जे नह अंगं ।

असिय जनं किय अग्नि । जोग जुट्टे धन जंगं ॥

विन जोग विरह भारथ्य विन । स्वर भेद भेदै न कोइ ॥

पारथ्य पंच पंचौ सुबर । गयौ स्वर भेदेव सोइ ॥ छं० ॥ १६८ ॥

वीररा प्रभात वर्णन ।

सुजंगी ॥ चढ़े ज्वान अष्यं नषं काम रंगं । परे पल्लभा सोइ भगवते सुरंगं ॥

चढे कोतर कोक कोक पुरान । रबी तेज भग्नी सची चार पान ॥
१६६ ॥ छ० ॥

मुदे स्तर सस्ति सरोज पुष्प । गय मुदित पच आरह अर्घ्य ॥
कमोदत मोद घर वै प्रमान । तहा कादर सो सदिष्य तथान ॥
छ० ॥ १७० ॥

प्रफुल्लत वीर चक चक थान । इक मुक्ति बछै इक सामि पान ॥
चिया कत बछै वियोगी सँजोग । रन स्तर बछै अछी अरु भोग ॥
छ० ॥ १७१ ॥

भई सिधरेनी वर दीह ऐसें । मनो सधि बाल विराजत जैसें ॥
दुहु सेन बज्जे निसान दुरत्ते । तहाँ पय पपी रहे थान जत्ते ॥
छ० ॥ १७२ ॥

दुव सेन वेन निवती प्रकार । दोज वीर छेडे तजे बाज सार ॥
बिना नौद पानी बिना अन धार । रहे एक हिंदू सद्धिदान सार ॥
छ० ॥ १७३ ॥

भयै मेच्छ बाजी रन जे करारे । तके वीर कज्जी बिना अग्नि सारे ॥
भयै मस चोर धिग जा प्रकार । इसी रैन विज्जी दुहु दीन भार ॥
छ० ॥ १७४ ॥

उरखीति मीरत वारति पान । हसे रग रग रस वीर पान ॥
इसी रैन दोज गई नठि नठ्ठी । गई कायर कटु स्तरत मिठ्ठी ॥
छ० ॥ १७५ ॥

कवित ॥ रही रति आरति । तत्त लगी परिमान ॥

जुद्ध जूझ सुरतान । मच कीने परिमान ॥

भान पथानन होइ । लोह जिते पाथान ॥

सार धार निरधार । सार उद्धार समान ॥

पुरसान घान तत्तार रन । दिसि रत्ती रत्तीत अप ॥

भारथ्य कथ्य भावै भवन । सुबर वीर वीरत जप ॥ छ० ॥ १७६ ॥

प्रात काल होते ही दोनों सेनाओं का सन्नद्ध होना ।

दूहा ॥ वर भग्नी जग्गीति निसि । दोज दीन परमान ॥

बचि सिपारे तीसचव । करि निवाज सुरतान ॥ छ० ॥ १७७ ॥

प्रभात वर्णन ।

कवित्त ॥ क्रम उधरीय किपाट । चौर भग्गंत रोर तनु ॥
 चका चक्री जंमिलहि । उधरि सत पत्र भत्त जनु ॥
 अंग भंगि सम अमहि । बज्जि मारुत सौरभ चलि ॥
 गय उडगन ससि धटिय । बढिय आकास किरनि कर ॥
 सेविधि सुरंग व्यापार घन । रवि रत्तौ मुष दिष्यौ ॥
 भासकर सहसकर क्रमकर । नवकर कमुद विसिष्यौ ॥
 छं० ॥ १७८ ॥

कांठभूषन ॥ कांठय भूषन छंद प्रकाराय । वारह अञ्जरि पिंगल भासय ॥
 अट्टय संजुत भत्त प्रमानय । कांठयभूषन छंद वषानय ॥ छं० ॥ १७९ ॥
 उगि रतं रत अंमर भासय । भानु सुदेव दिवालय थानय ॥
 पाप हरै तन क्रम प्रगासय । कौ जम तात जमुन्य भासय ॥
 छं० ॥ १८० ॥

तात करन्य पूरन पूरय । बंध कमीदनि को मत स्वरय ॥
 बंध जवासुर औषम थानय । अर्क पलासन काम विरामय ॥
 छं० ॥ १८१ ॥

कौ सुनि तात सनौ सर स्वरय । भास करं कलना मति पूरय ॥
 है कर सस्त्रति भाष प्रकारय । तारय नाथ दिनं मति तारय ॥
 छं० ॥ १८२ ॥

हैवर ओष करं गिर पारय । मानहुं देव दिवालय साजय ॥
 भंजन कुंज अस्त्रवत षंडय । सो धरि ध्यान धरंत विचरय ॥
 छं० ॥ १८३ ॥

एक घरी धरि ध्यान स दिष्यय । मुक्ति स लब्धिय संपन अष्यय ॥
 छं० ॥ १८४ ॥

सूर्य की स्तुति ।

कवित्त ॥ सरद इंद प्रतिव्यंब । तिमर तारन गयंद घर ॥
 ब्रह्म विष्णु अंजुल । उदंत आनंद नंद हर ॥
 इक चक्र चिहुं दिसै । चलत दिगपाल तुंग तन ॥

कमल पानि सारौ अरुन । ससार जियन जन ॥

उडग वीर छच्छव पवन । निरारम सतह सुमुप ॥

कविचद छद् इम उचरै । हरो मित्त दोइ दीन दुप ॥ छ० ॥ १८५ ॥

सूरवीर लोगों का युद्ध उत्साह वर्णन ।

दूहा ॥ सो जगत मगी सु कर । कळे लोह करि छोह ॥

दै दिवान देवत गति । हाइ हाइ रति रोह ॥ छ० ॥ १८६ ॥

कवित्त ॥ हाइ हाइ । अरिष्ट गरिष्ट ॥

चाहआन सुरतान । वीर भारथ्य वरिष्ट ॥

दै दुवाह अति धाह । पग्य पोलै छिति तोलै ॥

सस्त्र वीर बाजत । देव देवासुर डोलै ॥

डकनि डहकि जोगनि लसथ । लसै लोह देवर धसै ॥

चामडराय दाहरतनौ । राज भ्रम्म चित्त बसै ॥ छ० ॥ १८७ ॥

सामंतों की रणोद्यत श्रेणी का क्रम वर्णन ।

उडू दिसा सामत । अह उभै दुहु पास ॥

रा चामड जैतसी । सलप हूरिवा सुवास ॥

लोहानौ आजान । बलिय पावार सभारिय ॥

दै दिवान दैवत । वर्ज लैहै अधिकारिय ॥

महनसी मेर पछै नृपति । मुगति हथ्य कट्टी निजरि ॥

दैवत वाह दैवत गति । सुवर वीर ठट्टे उसरि ॥ छ० ॥ १८८ ॥

यवन सैनिकों का उत्साह ।

१ सौ मीरन सगमति । वज्जि नौसान घेत रहि ॥

* मालूम होता है कि या तो यदा न कुछ छन्द नष्ट हो गए हैं या क्रम में कुछ गड़बड़ पड़ गया है । छंद १६८ से छन्द १८९ तक जो क्रम वर्णन है, उसके आगे युद्ध सम्बन्धी वीररम के छन्द होने चाहिए । तिस के बाद मृतकों का मरणा या युद्ध की प्रशंसा इत्यादि होनी चाहिए । परन्तु छन्दों के खंडित होने के मिश्रण हमारे विचार से छंदों का लौट फेर भा हुआ है । छन्द १४३ से लेकर छन्द १५८ तक का पाठक्रम उग्र बेसिलसिले पड़ता है । इसलिये संभव है उन कि प्राचीन समय में खुल पत्र पर पुस्तकों लिखा जाती थी लेखक की असावधानी से गड़बड़ हो गया हो । परन्तु पाठ क्रम में तीनों प्रतिया समान होने के कारण हमने कुछ लौट फेर करना उचित न समझ कर केवल यह टिप्पणी मात्र दे दी है । पाठक स्वयं विचार कर देखें ।

हय गय नर विच्छुरै । रुद्र भौ बीर बीर नह ॥
 निस वर वर उभरहि । भूत प्रेतन उच्छव सिर ॥
 बज्जि धाव हक्के । निधाव चौसठि रंभ वर ॥
 नारह नह सहह सुभर । बीरभद्र आनंद भर ॥
 इहि भंति निसा सुर सुंदरी । भर हर हर वज्यौ सुभर ॥ छं० ॥ १८८ ॥

युद्ध का अक्षम आनन्द कथन ।

भय विभात लागि गात । रत्त रत्त रन मत्थौ ॥
 हिंदवान तुरकान । जुद्ध अंबर अंगत्थौ ॥
 अगति मग पाइन । सुगति मारग बहु चल्यौ ॥
 अश्वमेद बहु दान सख । सम एक न पुण्यौ ॥
 स्वामित्त धरम कीनौ जु इम । मन उछाह अच्छे रहसि ॥
 ना करी कोइ करिहै न को । करौ सु कौ रवि चक्र गसि ॥ छं० ॥ १८९ ॥

दूहा ॥ चक्र चरित सोमंत ग्रसि । निज निवर्त नग नाम ॥

चाहुआन सुरतान सौं । बजि ऐसी असि ठाम ॥ छं० ॥ १९० ॥

युद्ध में मारे गए वीरों के नाम ।

कवित्त ॥ गयौ घान तत्तार । पय्यौ पुर सानति धानं ॥
 पय्यौ हिंदु वर रूप । भीम परि परि रन भानं ॥
 पय्यौ भट्टि बलिभद्र । मान परिमान न मुक्यौ ॥
 पय्यौ जंगलीराव । बीर दहिमा दल रुक्यौ ॥
 अजमेर जोध जोधा परिग । पर किलहन बन बीर बँध ॥
 उप्पारि धान हुस्सेन लिय । चढ़ि अच्छरि मोरै सु कँध ॥
 छं० ॥ १९१ ॥

तत्तार खां का मनहार होकर भागना ।

दूहा ॥ इन परंत तत्तार गौ । ग्रब सु नंथ्यौ साहि ॥

लज्ज ग्रब मै मै दुय्यौ । जस सु जोति बल नाहि ॥ छं० ॥ १९२ ॥

खेतदारना होना और लाशों का उठवाया जाना ।

कवित्त ॥ गौ ततार तजि रन । पहार दुख्योति समर बर ॥
 वजि निसान आटत । जीति पुरसान सहर भर ॥
 उप्पारिग सामत । बीस तिथ डोल प्रमान ॥
 डोला तेरह तीस । समर उप्पारि समान ॥
 दल जल जिहाज रावर समर । धजा कित्ति उड्डी फहरि ॥
 हय गय सु लुट्टि पुरसान दल । होइ फकीर छुट्टेति फिरि ॥
 छ० ॥ १६४ ॥

युद्ध मे मृत वीरों के नाम ।

परिग घान पावास । गौर हासीपुर धारी ॥
 परि प्रताप सागर । नरिद रन सहर दिभारी ॥
 पन्थौ कहै चेल । पन्थौ राजा नव भान ॥
 परि मोरौ महनग । जग जीते जुग जान ॥
 पाँवार परिग पूरन पह । पहर एक भारथ्य करि ॥
 केसर नरिद केसर वलह । तेग चित्ति कौरति लहरि ॥
 छ० ॥ १६५ ॥

दूहा ॥ जीति समर भारथ्य बर । निप सम करि जुध ताम ॥
 दुडि घेत भारथ्य परि । कहि कविद्र तिन नाम ॥छ०॥१६६॥
 कवित्त ॥ जगलवै बर मगि । भगि ततार सपन्नौ ॥
 परिग सुभर प्रथिराज । जैत बधव सलपन्नौ ॥
 परिय पुत महनग । सिध नाहर नाहर हर ॥
 कण्ठ पुत दुति कण्ठ । चद रधुवस चद बर ॥
 नरसिध पुत हरसिघटे । परिग सु किलहन राम तन ॥
 वीरभू वीर मालहन परिग । मलहन वास विरास मन ॥
 छ० ॥ १६७ ॥

हासी युद्ध सम्बन्धी तिथि वारो का वर्णन ।

हासीपुर दिन सत । तीथ वामर अग्या बर ॥
 धाव बाधि भर सुभर । ठेलि दुज्जन प्रवाह धर ॥
 वार सोम सप्तमी । राज प्रथिराज सँपत्तौ ॥

भर रष्यवि अरि भंजि । मिलिय रावल रन रत्तौ ॥
 सामंत रष्य भारथ्य जिति । गवन रष्य नन राज अंग ॥
 वर मिलि समंद सलिता सुवर । जलन देपि एकह सुमग ॥
 छं० ॥ १६८ ॥

रावल और पृथ्वीराज का दिल्ली को जाना ।

जीति घान तत्तार । पारि हांसीपुर नीरं ॥
 जीति समर भिरि समर । रुधिर रत लत सरीरं ॥
 प्रथु सामत प्रथिराज । सुने सामंत सु कथ्यं ॥
 जय्य कथ्य अरि करिय । डोलि नन स्तर सु रथ्यं ॥
 छलि कै अमंत मुकै न वल । तजि हांसी सन्हौ भिरिय ॥
 रुंधयौ चक्र जुगिनि सु वर । वीर वीथ संमुह फिरिय ॥
 छं० ॥ १६९ ॥

दूहा ॥ दिल्ली सह सामंत सथ । अमर सुक्रत ढिग थान ॥
 समरसिंघ रावर सुभर । ग्रह लै गौ चहुआन ॥ छं० ॥ २०० ॥

रावल का दिल्ली में बीस दिन रहना ।

भावभगति बहु विद्धि करि । हम लज्जा तुम भीर ॥
 इक अरौ कमधज्ज गिनि । इक सहाबदी मीर ॥ छं० ॥ २०१ ॥
 बालुका सझौ समर । और विश्वंस्थौ जग्ग ॥
 उभै वत पुञ्चै बहुत । फेरि उ-हाई अग्नि ॥ छं० ॥ २०२ ॥
 दिवस पंच मनुहारि करि । पहुँचायो चिचंग ॥
 बीस अश्व गज पंच सजि । दै पहुँचाए रंग ॥ छं० ॥ २०३ ॥

इति श्री कवि वंद विरचिते प्रथिराज रासके द्वितीय हांसीपुर
 जुद्ध नाग वावनमों प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ५२ ॥



अथ पञ्जून महुवा नाम प्रस्ताव लिख्यते ।

(तिरपनवां समय ।)

कविचन्द की स्त्री का पूछना कि महुवा युद्ध क्यों हुआ ।

दूहा ॥ सुक सुकी सुक समरिय । बालुक कुरम जुड ॥

कोट महुवा साह दल । कहौ आनि किम रुड ॥ छ० ॥ १ ॥

कविचन्द का उत्तर देना ।

कवित्त ॥ गयौ साह गजनै । हारि कुरंभ पग भट्टिय ॥

सब लुट्टे गजवाजि । हेम मानिका नग वट्टिय ॥

अति उर लगिय दाह । हारि कुरंभ सम लडिय ॥

सह बालुक कामध । उभय पञ्जून सकिडिय ॥

अध्वैव ताम ततार वर । करौ कूच उत गहर ॥

महुवा दिसान चपै धरा । वीर पञ्जून सु बधि वर ॥ छ० ॥ २ ॥

खुरसान खा का महुवा पर आक्रमण करना ।

दूहा ॥ पठ्यौ पान ततार वर । कोट महुवा थान ॥

घा निसुरति रमो नदी । वर कौनो अगिवान ॥ छ० ॥ ३ ॥

कियो कूच गोरी गहर । लहर महुवा थान ॥

पा खुरसान घुरेस पा । पाइल लख्य ग्रमान ॥ छ० ॥ ४ ॥

शाही सेना का वर्णन ।

कवित्त ॥ चय्यौ साह सुरतान । पान घोयौ फिर दूढन ॥

सम कुरंभ चहुआन । धरा मोह अब मडि रन ॥

लख्य एक असवार । सहै वानह सम वारन ॥

पाइक अयुत त्रिपच । सग ततार सु धारन ॥



बलिराज जेम दानव बलिय । तेम प्रकारन मद्धि मढ़ ॥

उड़गन कि चंद ततार दल । इम धेयौ मोहव गढ़ ॥ छं० ॥ ५ ॥

निदुदुर का पृथ्वीराज के पारा दूत भेजना ।

दूहा ॥ रष्यन गढ़ थानौ नृपति । बहु दिन बीर पजून ॥

पठये इत सु राज पै । निदुदुर मन साजन ॥ छं० ॥ ६ ॥

दूत कहिय दारुन षबर । फौज साह सुरतान ॥

पारस राका दल प्रबल । कोट महुवा घान ॥ छं० ॥ ७ ॥

राजा का दरबार में कहना कि महुवा की रक्षा के लिये
फिरो भेजा जावे ।

सित सु मत्तह सूर वर । सकल लरन सुरतान ॥

को अगिवान सु किजियै । जुद्ध महुवा थान ॥ छं० ॥ ८ ॥

फौज दिष्य चहुआन की । सबै सूर रनधीर ॥

मद्धि राज प्रथिराज पति । हाहुलिराव हमीर ॥ छं० ॥ ९ ॥

सब लोगों का पज्जून राय के लिये राय देना ।

नेज बाज नीसान सजि । चढ़े सकल सामंत ॥

कूरंभ बिन को अंग में । अनी लष्य हैमंत ॥ छं० ॥ १० ॥

कवित्त ॥ पुष्छि राज प्रथिराज । समर रावर अधिकारिय ॥

को दुंठारह राइ । षग मगह संभारिय ॥

भोसें बोलि नरिंद । 'सेन दै नेन मिलाइय ॥

ए कूरंभ नरिंद । साह सम राह सु आहिय ॥

बोलयो जाम जहाँ सुबर । चिचंगी रावर सुभर ॥

इन सम न कोइ कूरंभ बर । बीर न को रविचक्र तर ॥ छं० ॥ ११ ॥

पज्जून राय की प्रशंसा ।

इन जितौ जंगलू । भेदि कव्यौ ततारिय ॥

बह्म पुच कै वार । जुद्ध अरियन सिर गहारिय ॥

इन मेहरा पै जाय । पेदि कथौ बालुकी ॥
 इन गिरिनार पजाइ । लियौ छोगा चालुकी ॥
 इन नंयि पोटि आवू सिपर । अजै वीर अजपाल हित ॥
 केवरा वीर केवर हतिग । करै वीर आनद घिति ॥ छ० ॥ १२ ॥
 इन पगानो वीर । बाद घोषद पहारिय ॥
 इन देवगिरि जुरिग । बधि मोहिल जुघ धारिय ॥
 इन जालौरय जाय । दर्द भाटी महनसिय ॥
 बधि जोध अजमेर । बैर भज्यौ मलअसिय ॥
 प्रथिराज राज सनमान दिय । ढिल्लिय घर अविचल धरा ॥
 सत्राम खर कूरम ढिग । नको वीर वीरमरा ॥ छ० ॥ १३ ॥

पृथ्वीराज का पञ्जून राय को जागीर और सिरोपाव
 देकर आज्ञा देना ।

दूहा ॥ मानि राज प्रथिराज बर । समर मिलिग पञ्जून ॥
 बर हासी हिसार दिय । गढ दीने दह दून ॥ छ० ॥ १४ ॥
 कवित्त ॥ दीने छत्र मुजीक । सत्त नीसान चोर बर ॥
 रतन हेम हय गय । समूह आदर अनत भर ॥
 सुधर वीर अति धीर । कण्ठ कण्ठन बुझायौ ॥
 अप्पि मरुवा लाज । बाजि बर वीर चढायौ ॥
 सुरतान साह गोरी चढिग । घा ततार अगिवान करि ॥
 जतयौ सिधु अरु विदथ बिच । मीर सुसान गुमान धरि ॥
 छ० ॥ १५ ॥

दूहा ॥ सगुन सरभर सुभ असुभ । जिह्वा जहर मुनिद ॥
 धले साह कारन कारन । नह पुच्छ्यौ नरिद ॥ छ० ॥ १६ ॥

पञ्जून की प्रतिज्ञा ।

कवित्त ॥ सुनि ततार बर वीर । तोन बध्यौ गोरीय भुक्ति ॥
 दैवकाल उपज्यौ । छित्ति छचीन रहै लुकि ॥
 अति आतुर पतिसाह । हम स हिंदु सामन्ता ॥
 ज्यौ रोजा सों भुक्ति । वदथ छडै जघवता ॥

क्लरंभ सकल बरबंधि कै । हौं बंधन गोरी करौं ॥

महुवा सु दिसा चंपी धरा । सुबर बौर कित्ती धरौं ॥ छं० ॥ १७ ॥

पज्जूनराय और शहाबुद्दीन का मुकाबिला होना ।

दूहा ॥ षरिग सहाब महुव्य धर । दिखी दहिन छंडि ॥

पहुंच्यौ तहां पजून पै । आनि सु भारथ मंडि ॥ छं० ॥ १८ ॥

युद्ध वर्णन ।

विराज ॥ सुरत्तान गोरी, कढ़ी तेग जोरी । पजूनं सपुत्तं, मलैसिंह जुत्तं ॥

छं० ॥ १९ ॥

भिरै बीर वीरं, बजे सह तीरं । भजै कोटि धारी, वयन्नं करारी ॥

छं० ॥ २० ॥

कारं कुंत हस्यै, महावीर बुल्लै । मलैसिंह हथ्यं, दिषै कोटि सथ्यं ॥

छं० ॥ २१ ॥

रधिं धार धारं, वहै ज्यों प्रनारं । खयं वीर वीरं, महामत्त तीरं ॥

छं० ॥ २२ ॥

जिनै सुष्य पानी, झुलै षग बानी । उठे उठि धावै, मनं भत्त भावै ॥

छं० ॥ २३ ॥

छुटै वीर वीरं, रुलंते सरीरं । कहै चंद बानी, उमाते प्रमानी ॥

छं० ॥ २४ ॥

पज्जून राय की वीरता ।

दूहा ॥ भीर सु भंजत वीर बर । चढ्यौ भान मथ्यान ॥

जे क्लरंभ करै सु झर । देव मनुष्य प्रमान ॥ छं० ॥ २५ ॥

यनि सुकत पज्जून को । मलयसिंह वलिमद्र ॥

खामि सह बंधन हसहि । कट्टन भीर नरिंद ॥ छं० ॥ २६ ॥

चिभंगी ॥ क्लरंभा बाले, सिंधुर टाले, असिमेर गाले, झुमगाले ॥

धानं मुलतानं, से पुरसानं, तन तुरकानं, भय भानं ॥

गजदंत सु कट्टै दै पग चट्टै, कंद उकट्टै, भिक्षानं ॥

* नरजे बल कारी, सुर बर सारी, उत्तम चारी, बल धारी ॥
छ० ॥ २७ ॥

यवन सेना का भाग उठना ।

कवित ॥ भगौ दल पुरसान । पान पीरोज उपारे ॥
पूव पान आकूव । पूव सिर तेग प्रहारे ॥
मारु राव नरिद । पारि पप्पर परिहारी ॥
दुवै अग बलिमद्र । धाव दुअ अग विचारी ॥
पद वार चढायौ पित मे । जै बज्जा घन बज्जया ॥
प्रथिराज भाग ज ज जियै । कूर भराव सु रज्जया ॥ छ० ॥ २८ ॥

पञ्जून राय की प्रशंसा ।

प्रथीराज साहन समूह । दल मिलिग मुहुसै ॥
तिनह दलह रावत । डरै डगमगै न डुसै ॥
सभरि राव नरेस । फिरे पिछवाह न दिथौ ॥
नलह बस नल बर । नरेस दस दिसि दल रखौ ॥
गहि सेल सकजर सिर हयौ । भर भजन जग डग सुअ ॥
पञ्जून महुव्यै जीति रन । जैत पच कूर भ तुअ ॥ छ० ॥ २९ ॥

पञ्जून राय का दिल्ली आना और शाह का गजनी को जाना ।

दृह । ॥ जीति महुव्या लीय बर । दिल्ली आनि सु पथ्य ॥
ज ज कित्ति कला वढी । मलैसिह जस कथ्य ॥ छ० ॥ ३० ॥
गयौ साह फिरि गजने । बहु दल रिन में कट्टि ॥
उमै हारि असि पति लही । उर अति रोस अचट्टि ॥
छ० ॥ ३१ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पञ्जून महुवा
जुद्ध नाम त्रेपनों प्रस्ताव. सपूर्णम् ॥ ५३ ॥

अथ पजून पातसाह जुद्ध प्रस्ताव लिख्यते ।

(चौवनवां समय ।)

और सामतों को महुवा मे छोड कर पज्जून
का नागौर जाना ।

कवित्त ॥ रष्ये कण्ठ नरिद । सलप रष्ये बड गुज्जर ॥
उदिग बाह पगार । साह साईं भुज पजर ॥
रष्य निड्दुर वीर । वीर रष्ये सु पवार ॥
किलहन दे तूअर । उतग किलन सिर सार ॥
पज्जून महीवे जीति वर । पुच रष्यि वलिभद्र वर ॥
तिय बध मलैसी पलहसी । सुवर चित चिता सुभर ॥ छ० ॥ १ ॥
दूहा ॥ ए सब रष्यि पज्जून सग । दै साईं सिर भार ॥
वर नागौर सु रष्यिया । किलन सार प्रहार ॥ छ० ॥ २ ॥

मनहीन शाह का गजनी को जाना और पज्जून राय को
परास्त करने की चिता करना ।

कवित्त ॥ गयौ साह गज्जनै । तज्जि भौहव महत सम ॥
उमै हारि सिर धार । छडि हय गय प्राक्रम भ्रम ॥
बडिय दु प घटि सुख । सक छायाह भात फुनि ॥
गयौ साह पन एम । पाग बधो कूरम हनि ॥
पठ्ये दूत नागौर दिसि । संभरि आपेटक स पुह ॥
श्रीफल सु आनि आसेर गढ । दिसि जुगिनिपुर गम तह ॥
छ० ॥ ३ ॥

धम्मायन का गजनी को समाचार देना ।

दूहा ॥ चलयौ राज दिल्ली दिसा । सुर घर सुभर सु रष्यि ॥
अभाइन काइथ कुटिल । कगद गोरी लिखि ॥ छ० ॥ ४ ॥

गोरी पै गय दूत वर । धान 'साहि सुरतान ॥

वर क्लरंभ चरित्र दिषि । धर नागौर प्रमान ॥ छं० ॥ ५ ॥

शहाबुद्दीन का मंत्री से पज्जून राय के पास दूत भेजने
की आशा देना । इधर रोना तय्यार करना ।

कवित्त ॥ कहै साहि साहाब । अहो तत्तारपान सुनि ॥

धर नागौर प्रमान । धान पज्जून रषि फुनि ॥

संभरिवै जहों दिसान । आसेर सु हिंडिय ॥

व्याह विनोद सुरंग । नृपति देवास समंडिय ॥

फुरमान लिखौ क्लरंभ तन । गहिय मान फिरि कहिहौ ॥

कै पाइ आइ पतिसाह गहि । कै बंधिरु वधु घंडिहौ ॥ छं० ॥ ६ ॥

पञ्चरी ॥ लख तीन मीर अवसान सधि । चहुँआन धरा कामना किधि ॥

दस सहस करी मते प्रमान । आपाढ़ सु गयौ मेघ जानि ॥

छं० ॥ ७ ॥

पाइक सहस चीसह चित्रअच्छ । दह धाव इक टारंत स्वच्छ ॥

साबह वेध साइक भग्ग । दिष्येव साइ बंधंत घग्ग ॥ छं० ॥ ८ ॥

साइक साइ वर हने तीर । असि वरहु पंच कटि बाज बीर ॥

सिंगिनिय उमै वर धार दीस । गुन चढ़त तेन वर टंक बीस ॥

छं० ॥ ९ ॥

क्लरंभ दीसा फुरमान लिखि । सिर ताव भाव बहु बैन अषि ॥

फुरमान लिखि सुरतान बीर । मुक्कले दूत नागौर तीर ॥ छं० ॥ १० ॥

पज्जून तेगवर छंडि हथ्य । कै मंडि जुद्ध सुरतान सथ्य ॥

छं० ॥ ११ ॥

यवनदूत का नागौर पहुंचना ।

दूहा ॥ गयौ दूत नागौर धर । जहं क्लरंभ वर बीर ॥

सम सहाव संभर करन । आयो जोजन तीर ॥ छं० ॥ १२ ॥

पज्जूनराय का हँसकर निधड़क उतर देना ।

कवित्त ॥ हसि पञ्जून नरिद । कहै सुरतान साह वर ॥
 जीव डरै लखवै । सो न कूरभ होहि नर ॥
 सो न होहि रघुवस । तेग छडै मरन डर ॥
 हम छडै जव तेग । सूर उगै न दीह पर ॥
 बसै न पवन गगा थकै । गवरि तजै वर ईस वर ॥
 पञ्जून नाम कूरभ मो । साहि जान चिता न कर ॥ छ० ॥ १३ ॥
 कहै राज पञ्जून । बीर कूरभ चेत वर ॥
 हम सलाह सुरतान । हम सुरभ्ये दिसिय घर ॥
 हम रवि मडल भेदि । जाम लगि सत न छडै ॥
 पड पड धर ढारि । सीस हर हर सु मडै ॥
 सुरतान सुनिब चिता न करि । मडि जौति नागौर दिसि ॥
 कूरभ अबल लज्जा सुभर । मेर जेम करतार कसि ॥ छ० ॥ १४ ॥
 दूत का गजनी जाकर शाह से पञ्जून राय का सदेसा कहना ।

दूहा ॥ गयौ दूत गज्जन पुरह । दिय दुवाह सुरतान ॥
 भगि अवर चक्रित सुभर । कूरभ तजै न मान ॥ १५ ॥

शहाबुद्दीन का कुपित होना ।

कवित्त ॥ तमकि साहि सुरतान । पान ततार बुलायौ ॥
 हम सुधान जगलो । जुड चहुआन चलायौ ॥
 पोषदा वर बाद । मारि गम्भार सु जितौ ॥
 डूगोरी साहाबदीन । लोकह परि लितौ ॥
 पञ्जून सुनिब सामत सम । आय पाय सुरतान परि ॥
 कै अण्णि कोट नागौर तजि । कै सु साहि सनमुष्य लरि ॥
 छ० ॥ १६ ॥

इधर नागौर में किलेवन्दी होना ।

दूहा ॥ पुच्छि कन्ह बलिभद्र वर । मलैसिह दुअ वध ॥
 चलहि साह समुह सरन । लज्जह कावलि कथ ॥ छ० ॥ १७ ॥
 वर पञ्जून बरजिया । नृपतिन दिसी ढाड़ ॥

को रखै ढुंढा रहा । उभै पूत सँग लोइ ॥ छं० ॥ १८ ॥

तात सु अग्या मानि बर । साजि कोट नागौर ॥

सकल खर सामंत मनि । मरन सरन किय और ॥ छं० ॥ १९ ॥

पञ्जून राय की बीर व्याख्या ।

कवित्त ॥ सकल खर सों कहौ । बीर कूरंभ उचारिय ॥

न रहै तन धन तरुनि । किरनि वेताइन चारिय ॥

वापी कूप दृष्यत । सरित सर वर गिरि जैहैं ॥

मठ मंडप वर कोट । कोटि पाषंड सचै हैं ॥

अप कित्ति कित्ति जैहै न जग । रहै मग धिची सुबर ॥

पञ्जून द्रहु नागौर गहि । साधन सार समग कर ॥ छं० ॥ २० ॥

थवन सेना का नागौर गढ़ घेर कर नोल पलाना ।

पड्यौ ॥ सुरतान घेरि नागौर गढ़ । मानो कि मझि प्रकार मढ़ ॥

भर बाज करिय पावस प्रमान । मानो नधिच भधि एम जान ॥

छं० ॥ २१ ॥

सावाति भांति चिहुं दिसा लगि । अंजनी सुतन दै लंक अग्नि ॥

गोखा अवाज दस दिसा घोरि । बंधनह पाज कपि करिय सोर ॥

छं० ॥ २२ ॥

दस दिसा धान गढ़ बंदि दीन । अप अप्प ठौर चौकीस कीन ॥

चय लष्य मीर नाधित प्रमान । येन्यौ सु मझि पञ्जून भान ॥

छं० ॥ २३ ॥

राजपूत सेना का धवड़ाना और पञ्जूनराय का
उरो धैर्य देना ।

कवित्त ॥ घेरि साह नागौर । पंति मंडी सु पंति पर ॥

दैव काल सामंत । सत्त छूटंत बीर वर ॥

पथ गोपी लुट्टई । बहित बारह सत छुथौ ॥

दुर्जोधन बल बंधि । सिंधु बंधी जल छुथौ ॥

जानथौ सत सुरतान बर । सकल स्वर सामंत डर ॥
 जयै सु चंद कूरभ जस । प्रथीराज जितौ सु भर ॥ छ० ॥ २४ ॥
 पज्जून रु बलिभद्र । बोलि कूरभ करारो ॥
 सत छुथौ नहि साह । सत मो सतह सारो ॥
 उदिग बांह पगार । सुनह सामंत सवाहौ ॥
 सक फौज गोरी । नरिद पती गज गाहौ ॥
 पचौसे पंच नह अंगरौ । फेरि काल फुनि फुनि परौ ॥
 ज करो सव सामंत मिलि । बोल रहै जुग उभरौ ॥ छ० ॥ २५ ॥

पज्जून राय का यवन सेना पर रात को धावा मारना ।

तेग तमकि पकरिग । सकल सामंत स्वर बर ॥
 पच बध कूरभ । कोटि रप्ये पहार भर ॥
 उधारिय गढ पौरि । अह निसि बौर सु तने ॥
 रतिवाह करि चाह । कूा करि स्वर सपत्त ॥
 राजाधिराज सामंत सर । तमकि तमकि तेग कसी ॥
 ससिपाल जोति ज्यों लज्ज फिरि । कूरभ आनन में बसी ॥
 छ० ॥ २६ ॥

मुसल्मान सेना के पहलुओं का जोर मचाना और सेना
 का सचेत होना ।

विराज ॥ बसी मुप्य लज्जी, सिला धूर रज्जी । दिसा उत्तराय, सु बौर पठाय ॥
 छ० ॥ २७ ॥

किय कूच मत्र, हलाल अनत । लगे लोइ चौकी, मनो नारि सौकी ॥
 छ० ॥ २८ ॥

दुअ इक थीय, भजे पुट्टि दीयं । चढे पान पान, समझी गुरान ॥
 छ० ॥ २९ ॥

सबै सेन धायौ, धय जैति नायौ । मजून सपृत, मिलै सिंह जूत ॥
 छ० ॥ ३० ॥

नषे कोट पाटं, हुआ जोट थाटं । कटे कोट डेरा, कियं साह घेरा ।

छं० ॥ ३१ ॥

मसंदं हजारं, ग्रहे तेग सारं । सुरतान पायौ, मनसुष्य धायौ ॥

छं० ॥ ३२ ॥

सबै स्वर सजी, मंडे जानि पजी । पुले पग राजी, बलीभद्र साजी ॥

छं० ॥ ३३ ॥

भुजं ओट कोटं, पहारंति जोटं । भुषं सुष्य आई, सहसा दिपाई ॥

छं० ॥ ३४ ॥

जकी जोग माया, हरी रूप पाया । तुटै अंग अंगं, विभंगं त्रिभंगं ॥

छं० ॥ ३५ ॥

छनंकेति तीरं, परं वज्र श्रीरं । पथं पल्ल धायौ, सुरतान आयौ ॥

छं० ॥ ३६ ॥

मिलै सिंह साहं, विवंधो विवाहं । उड़ै चाल टोपं, ति कूरंभ कोपं ॥

छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ इक ओर वीरग बर । कियौ गहगाह स्वर ॥

परि सुरतानह उषरै । अति आतुर गति कूर ॥ छं० ॥ ३८ ॥

हिन्दू और मुसलमान दोनों सेनाओं का युद्ध ।

पा पुमान ततार तब । सुनिय कूह दल सथ्य ॥

सहस बीस गप्पर लिये । आयो वीर समथ्य ॥ छं० ॥ ३९ ॥

नापि पाट पखून रिन । पत्ते गप्पर कोट ॥

सहस बीस गप्पर मसद । लगि करी जम जोट ॥ छं० ॥ ४० ॥

दोनों में तलवार का युद्ध होना ।

कवित्त ॥ सहस बीस गप्पर गुराय । ततार धान रहि ॥

नव दूलं कटि बाज । वीर बलिभद्र हथ्य बहि ॥

मुरारि मुरारि मारुफ । बान कम्भानति नगौ ॥

मुक्ति बान कम्भान । तेग कट्टी सालगौ ॥

बजि धाड़ निधाड़ अधाय घट । वर बसत जिम दिप्पि भर ॥

फुल्लै सु जानि केसु सुरग । यौ दीसै वर वीर नर ॥ छ० ॥ ४१ ॥

दूहा ॥ लरत पिप्पि बलिभद्र कौ । हरपि पजून सुचित्त ॥

को रष्यै कविचद इह । हम समान तुम मित ॥ छ० ॥ ४२ ॥

परे दौरि हिदू सुभर । उसर साह साहोव ॥

औसरि लगि आसुर सयन । मद्यति वेर किताव ॥ छ० ॥ ४३ ॥

पज्जून राय के पुत्रो का पराक्रम ।

भुजगी ॥ पच्यो पान जलाल सें तीन जाम । भई वारहू फौज सौ एक ठाम ॥

लरत सु वीर प्रमान प्रमान । वजे बस नस करष्ये कमान ॥

छ० ॥ ४४ ॥

मिलै सिह धायौ लपे वीर धीर । गही बग्ग बलिभद्र आनुज वीर ॥

दुअ वीर तेग हुडा होड वाहै । मनो चचरी चक्र डकेस गाहै ॥

छ० ॥ ४५ ॥

निय भ्रम रष्ये सदा व्रत ग्रह । हड़हड़ पेलात बालक जेह ॥

मुरी धार धार मुरै हथ्य नाही । गहीदत बग्ग कटारी समाही ॥

छ० ॥ ४६ ॥

भारे पग पग चिनगीत उहुँ । मनो किगन भद्व रेनि चहुँ ॥

इलाह इलाह कहै पान जादे । इसे वीर वीर महो माह वादे ॥

छ० ॥ ४७ ॥

करै मुष्य पृत पजून दुहाई । प्रलै काल मानो उमै सेस धाई ॥

दुअ वाह वीर बहै वीर भग्गो । इसे खर कूरभ के हथ्य लगो ॥

छ० ॥ ४८ ॥

काहै मेछ रष्य सख्य प्रमान । किणो मानव लोह लै देव जान ॥

द्रुम ढाल ढाल दुव सकारके । लग्यौ अस बस सु बस परके ॥

छ० ॥ ४९ ॥

बहै वान फामान दीसै न भान । अमै तथ्य गिह सु पावै न जान ॥

मलै सिह हथ्य पच्यौ बथ्य गोरी । मनो फूल माला लई हथ्य जोरी ॥

छ० ॥ ५० ॥

सगे लोह अंगं परे जंग धानं । पय्यौ धान पुरसान तह धेत धान
॥ छं० ॥ ५१ ॥

दूहा ॥ बाज राज नंथौ सु भर । मलै सिंह कूरंभ ॥
दस हथ्यौ बढि घग्ग लौ । तन तरंग सूरंभ ॥ छं० ॥ ५२ ॥
इनि जिते भग्गौ सु अरि । बर बंध्यौ सुरतान ॥
दुअ सु लब्ध को अंग मै । धनि कूरंभ प्रमान ॥ छं० ॥ ५३ ॥

पञ्जून राय का शहाबुद्दीन को पकड़ लेना और
किले में पला जाना ।

कवित्त ॥ पूव धान मारुफ । पूव दल मलिय मलैसी ॥
बंध्यौ गोरी साहि । भांति करिकें जु प्रलै सी ॥
सब लज्जै सामंत । सौस संमुह न उठावैं ॥
सुवर भाग प्रथिराज । बीर कूरम्भ सु गावैं ॥
लै गयौ साह चहुआन पै । जस बज्जाग्रह बज्जाया ॥
कूरंभ वस सुत मलैसी । बंधे साह सुरजिया ॥ छं० ॥ ५४ ॥

यवन सेना का भागना ।

मुन्यौ धान ततार । साहि गहि कोट पयट्टौ ॥
सुरतानह सब सेन । संकि आतुर वर नट्टौ ॥
छंडि करी सें सत । बुगर आतुर अध है वर ॥
हसम हेम डेरा । जरीन बरभर दर कज्जर ॥
हुअ प्रात आइ पञ्जून भर । करि हसगा हैवर गिरद ॥
कविचंद किर्त्ति उज्जल उदित । राका निसि चंदह सरद ॥
छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज का दंड लेकर शहाबुद्दीन को पुनः छोड़ देना ।

छंडि राज सुरतान । सुजस सिर कूरंभ धारिय ॥
सहस बाज दस पंच । डंड गैवर सुकारिय ॥
कहै राज सुनि साह । तुम सु नरनाह कहावहु ॥

वार वार प्रौढा प्रमान । दड करि घर जावहु ॥

कोरान करीम करम तजि । हम सु पैग पौरान किय ॥

झारम समह मुर घेत यसि । पोय लग्न पुरसान किय ॥ छ० ॥ ५६ ॥

दूहा ॥ दड मडि सुरतान सिर । छडि द्यौ चहुआन ॥

औ सु भ्रम हि दवान कुल । करिग चद बघ्यान ॥ छ० ॥ ५७ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पञ्जून कछावाहा
पातिसाह ग्रहन नाम चौअनौ प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५४ ॥



(१) इस पंक्ति में एक मात्रा अधिक होती है और “ दड ” शब्द का प्रयोग खटकता है, परंतु अथयुक्त है और किसी भा प्रान्ति में पाठभेद नहीं है ।